दायरे

[उपन्यास]

दायरे

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियागज, दिल्ली-६
द्वारा प्रकाशित

प्रथम सस्करण १९७२

आवरण नीला चटर्जी

छाया प्रिण्टर्स
शाहदरा, दिल्ली-३२
द्वारा मुद्रित

DAYARE (Novel)
by Gurudutt

दायरे
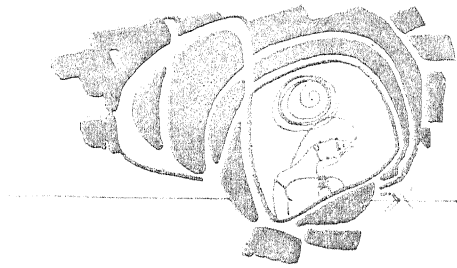
ससार के प्राय प्राणी
कोल्हू के बैल की भाँति जन्म ने
उपरान्त जन्म मे
ससार रूपी कोल्हू चलाते है।
वे समझते है कि प्रगति कर रहे है
परन्तु आदि सृष्टि मे आज तक
मानव वहाँ का वहाँ ही रहा।
खून-पसीना एक कर रहा है
जो उस आदि काल मे था—

प्रथम परिच्छेद

१

प्रथा के विपरीत 'वाण्टेड' का विज्ञापन हिन्दुस्तान टाइम्स दैनिक पत्र मे एक 'ब्लाक' मे प्रकाशित हुआ था। इस कारण कुमारी सिद्धेश्वरी का ध्यान इस ओर खिच गया। उसने समाचारो को पढने से पूर्व इस विज्ञापन को ही पढा। लिखा था—

WANTED

a bride for a widower M P from Bihar Write post box 4372

सिद्धेश्वरी ने विज्ञापन पढा और समझा कि कोई प्रौढावस्था के मेम्बर पार्लियामेण्ट की पत्नी का देहान्त हो गया है और वह बूढे मिया किसी जीवन-साथी की आवश्यकता मे है। वह मुसकरायी और समाचार पढने लगी। एक समाचार पर दृष्टि चली गयी जो इस प्रकार था कि गजेन्द्रनाथ ससद सदस्य का पार्लियामेण्ट मे बैठे-बैठे हृदय की गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। एकाएक उसके मन मे विचार आया कि क्या पत्नी की खोज मे ही श्रीमान् स्वर्गधाम को चल दिये है ? उसने समाचार-पत्र का पन्ना उलटा और पुन विज्ञापन को पढा। दोनो, विज्ञापन और समाचार मे समानता पा अपने अनुमान पर विश्वास कर हस पडी।

एक-दो ससद सम्बन्धी समाचार पढ उसका पत्र पढने मे चित्त नही लगा। आज वह कुछ देर से उठी थी। प्राय प्रात सात बजे उठा करती थी। आज उसकी नीद सवा आठ बजे खुली थी। उसने अभी अपने कॉलेज मे पढाई कराने के विषय मे अध्ययन भी करना था और स्नानादि से निवृत्त

भी होना था। इस कारण उठी तो उसकी दृष्टि सामने रखे चाय के प्याले पर चली गयी। यह उसकी बूआ उसको जाग, समाचार-पत्र पढते देख उसके पलग के पास तिपाई पर रख गयी थी।

सिद्धेश्वरी लडकियो के एक कॉलेज मे प्रोफेसर थी। वह इतिहास पढाने के लिए नियुक्त थी। वैसे उसने दो विषयो मे एम० ए० किया था, इतिहास मे और मनोविज्ञान मे। अभी वह डॉक्टरेट करने का विचार कर रही थी। उसने विश्वविद्यालय अधिकारियो को अपने अनुसन्धान का विषय लिखकर भेजा हुआ था। विषय था—'Emancipation of Women' (स्त्रियो का विमोचन)। अभी तक विषय स्वीकार नही हुआ था। इस पर भी वह इस विषय पर इतिहास और मनोविज्ञान दोनो की दृष्टि से अध्ययन कर रही थी।

उसने चाय के प्याले को हाथ लगाकर देखा कि चाय ठडी तो नही हो गयी। वह पीने के योग्य गर्म थी। वह प्याला उठा चुस्की लगा चाय लेने लगी।

चाय पीते-पीते उसका ध्यान पुन 'वाण्टेड' (आवश्यकता है) वाले विज्ञापन पर चला गया। विचार आया कि इस विशेष 'ब्लाक' मे विज्ञापन देने से कम से कम दो सौ रुपया व्यय हुआ होगा। कदाचित् इसने कुछ अन्य पत्रो मे भी विज्ञापन प्रकाशित करवाया हो। ऐसे मजेदार और जरूरतमन्द व्यक्ति के दर्शन हो सकते''। इस समय उसको हृदय की गति से एक बिहारी एम० पी० के देहान्त की बात स्मरण आ गयी। वह मुसकरायी और 'बाथरूम' मे चली गयी।

आधा घटे मे स्नानादि से निवृत्त हो वस्त्र पहन वह अपने 'स्टडी-रूम' मे आ बैठी और उस दिन पढाने वाले पाठ की तैयारी करने लगी।

साढे दस बजे बूआ ने 'स्टडी-रूम' के बाहर खडे हो कहा, "बेटा! अल्पाहार का समय हो गया है।"

सिद्धेश्वरी ने अपनी नोटबुक बन्द की और खाने के कमरे को चल पडी।

सिद्धेश्वरी माता-पिता-विहीन लडकी थी। उसके माता-पिता देश-विभाजन से पूर्व पजाब, सियालकोट के रहने वाले थे। २० अगस्त, सन्

१९४७ को सियालकोट मे मुसलमानो ने लूट मचा दी तो पूर्ण परिवार वहा से भागा। उन दिनो सिद्धेश्वरी तीन वर्ष की बच्ची थी और उसकी बूआ भगवन्ती विधवा हो अपने भाई के घर मे रहती थी। सिद्धेश्वरी भगवन्ती की गोद मे थी और सिद्धेश्वरी के माता-पिता दूसरे बच्चो को लिये हुए भागने के लिए घर के तागे मे सवार हो रहे थे। भगवन्ती अपने भूषणो और नोटो मे कुछ नकदी को कपडो के नीचे छुपाने के लिए पीछे रह गयी थी।

इतने मे घर के बाहर बच्चो की चीखे सुनायी दी। वह समझ गयी कि क्या हो गया है? उसने सिद्धेश्वरी को उठाया और मकान के पिछले द्वार से भाग निकली।

यह एक अति दुख और कष्टमय कथा है कि वह किस प्रकार सिद्धश्वरी की जान बचाती हुई कठूआ, जम्मू और वहा से पठानकोट होती हुई पहले अमृतसर और फिर दिल्ली मे पहुच गयी। वहा उन भूषणो और नकदी के सहारे उसने अपने और माता-पिता-विहीन बच्ची के पालन-पोषण और शिक्षादि का प्रबन्ध किया।

वह स्वय दसवी श्रेणी तक पढी थी। अत वह अपने रहने के मकान मे छोटे बच्चो को पढाने का प्रबन्ध कर जीविका चलाने लगी थी।

समय पाकर सिद्धेश्वरी बडी हुई, पढ-लिखकर योग्य हुई और लडकियो के एक सरकारी कॉलेज मे प्राध्यापक पद पर नियुक्त हो गयी। प्रोफेसर होने के उपरान्त उसने मनोविज्ञान मे एम० ए० किया और अब वह 'डॉक्टरेट' करने की चिन्ता कर रही थी।

कुछ दिन से भगवन्ती सिद्धेश्वरी को कह रही थी कि उसे अब विवाह कर माता-पिता के कुल को आगे चलाना चाहिए। सिद्धेश्वरी को इसमे कुछ भी सार प्रतीत नही होता था। उसे अपने पढने मे अधिक रस आता था।

आज सिद्धेश्वरी खाने के कमरे मे आयी तो भगवन्ती ने अपना आग्रह आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "बेटा! गुजरावाला के सेठ लक्ष्मीचन्द के लडके के विषय मे पुन सन्देश आया है।" सिद्धेश्वरी कुछ डाट के भाव मे बूआ को विवाह करने से न करने वाली थी कि उसे प्रात 'हिन्दुस्तान

टाइम्स' मे पढे विज्ञापन की याद आ गयी । उसने कह दिया, "बूआ ! आज समाचार-पत्र मे एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है ।"

"क्या विज्ञापन है ?"

सिद्धेश्वरी उठी और अपने बेड-रूम मे से समाचार-पत्र उठा लायी। समाचार-पत्र बूआ के सामने रख बोली, "बूआ, पढ लो ।"

बूआ ने पढा—बिहार राज्य निवासी एक विधुर ससद सदस्य के लिए पत्नी की आवश्यकता है। पोस्ट बाक्स न० ४३७२ ।

बूआ ने पूछा, "तो तुम इससे मिल लो और मैने लक्ष्मीचन्द के लडके को अगले रविवार मध्याह्न के भोजन के समय यहा बुलाया है। उसे भी देख लो और स्वय ही निश्चय कर लो ।"

"पर बूआ ! एक यह समाचार भी छपा है। वह भी पढ लो।" सिद्धेश्वरी ने पराठा दही के साथ खाते हुए मा को मृत्यु के समाचार पर अगुली रखकर पढने को कह दिया ।

बूआ ने पढा और पूछा, "तो तुम समझती हो कि यह वही है जिसे पत्नी की आवश्यकता है ?"

'बूआ ! यह मरने वाला भी विधुर था और बिहारी था। साथ ही एम० पी० भी था ।"

"इस पर भी यह वह नही हो सकता ।"

"मुझे विश्वास है कि यह वही है। यह स्वर्गधाम मे अपनी पत्नी की खोज मे चला गया है ।'

बूआ मुसकरायी और बोली, "मेरा मन कहता है कि यह वह नही है। जो पत्नी की अभिलाषा करता है उसका हृदय दुर्बल नही हो सकता। मरने वाले की आयु पैतालीस वर्ष लिखी है ।"

"हाँ। और उसके पीछे बचने वालो मे उसकी पत्नी नही लिखी। दो बच्चे ही लिखे है ।"

"मै समझती हू कि ये निर्णयात्मक सकेत नही कि पत्नी की खोज वाला वही एम० पी० है जो कल ससद मे बैठा-बैठा मर गया है। देखो बेटी, इसको लिखो कि वह रविवार को यहा मिल सकता है ।"

"बूआ ! वह मर चुका है ।"

"सम्भव है कि तुम्हारा पत्र उसे वहा से वापस ले आये।" इस पर बूआ-भतीजी दोनो हसने लगी।

भगवन्ती ने हसते हुए कह दिया, "मैने लक्ष्मीचन्द के पुत्र शिवकुमार को तो यहा रविवार के दिन बुलाया है। तुम्हारी इच्छा हो तो इस एम० पी० को भी लिख दो।"

सिद्धेश्वरी को मजाक सूझा। उसने 'ब्रेक फास्ट' समाप्त किया, हाथ धोये और अपने 'स्टडी-रूम' मे जा अपने पैड पर दो पक्तिया लिख दी

Your advert 10th Mar H T daily. See me You may find your want fulfilled

Siddheshwari

यह पत्र लिख बूआ के सामने रख बोली, " बूआ! इसे पोस्ट बाक्स नम्बर पर भेज दो। यदि इस जहान मे हुआ तो दर्शन हो जायेगे।"

बूआ समझी कि बेटी के मन मे विवाह की इच्छा उत्पन्न हो गयी है। इससे प्रसन्न-वदन उसने पुत्री द्वारा लिखा पत्र उठा लिया और समाचार-पत्र के साथ एक ओर रखते हुए कह दिया, "भेज दूगी।"

यह मगल का दिन था। रविवार को अभी पाच दिन थे। इस कारण उस दिन मिलने के लिए आने वाले सेठ लक्ष्मीचन्द के लडके शिवकुमार का विचार मन से निकाल वह अपने कॉलेज के काम मे लीन हो गयी। जहा तक उस विधुर ससद सदस्य की बात थी, उसको विश्वास हो चुका था कि उसका हृदय की गति रुकने से देहान्त हो चुका है। उसके विपय मे तो वह दया के भाव के अतिरिक्त अन्य कोई विचार मन मे रखती ही नही थी।

कॉलेज मे लडकिया उसके स्वतन्त्र विचारो के विषय मे जानती थी। अन्य प्राध्यापक भी उसके प्रगतिशील विचारो से अवगत थे। एक अन्य कुमारी प्राध्यापिका थी। नाम था सुधा खोसला। दो कुमारियो मे परस्पर घनिष्ठता बन रही थी।

उस दिन सिद्धेश्वरी कॉलेज के तीन 'पीरियड' पढाई करा 'स्टाफ रूम' मे आयी तो मिस खोसला को वहाँ बैठे देख प्रसन्न-वदन उसके समीप बैठ गयी। मिस खोसला एक पत्र लिख रही थी। सिद्धेश्वरी ने

समीप कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, "क्या लिख रही हो, सखी ?"

खोसला ने मुसकराते हुए कह दिया, "ट्राइग टू हुक ए फिश।" (एक मछली को पकडने के लिए वसी लगा रही हूँ)।

"ओह ! मछली अथवा मच्छ ?"

"यही मतलब है।"

"कौन है वह भाग्यशाली ?"

खोसला ने पत्र सिद्धेश्वरी के सामने कर दिया। सिद्धेश्वरी ने पढा। मिस खोसला ने लिखा था—'आपका विज्ञापन हिन्दुस्तान टाइम्स के दस मार्च के अक मे पढा है। यदि आप मुझे निम्न पते पर मिल ले तो इस विज्ञापन के विषय मे वार्तालाप हो सकता है। मेरी लडकी एक सरकारी गर्ल्स कॉलेज मे प्राध्यापिका है। मै उसके लिए उपयुक्त वर की खोज मे हू।"

नीचे लिखा था—योअर सिंसेयर्ली,

रामनाथ खोसला,

पता ऊपर छपा था।

सिद्धेश्वरी ने पत्र पढा तो उसकी हसी निकल गयी। मिस खोसला को हसी का कारण समझ नही आया। उसे प्रश्नभरी दृष्टि मे अपनी ओर देखते हुए पा सिद्धेश्वरी और भी खिलखिलाकर हस पडी।

"क्या बात है, सिद्धेश्वरी जी ! इस व्यक्ति को जानती है क्या ?"

"तुमने पढा नही ?" सिद्धेश्वरी ने अपने हसने का कारण बताते हुए कहा, "आज ही, मेरा अभिप्राय है कि दस मार्च को ही पत्र मे एक अन्य समाचार प्रकाशित हुआ है कि एक बिहारी एम० पी० का लोकसभा मे बैठे-बैठे हृदय की गति बन्द होने से देहान्त हो गया था।"

"तो तुम जानती हो कि वह और यह एक ही व्यक्ति है ?"

"मुझे विश्वास है।"

इस पर मिस खोसला ने पत्र फाड डाला और मेज के नीचे रखी 'वेस्ट पेपर बास्केट' मे डाल दिया। सिद्धेश्वरी ने गम्भीर भाव धारण कर कहा, "यह क्या किया ? मेरा अनुमान गलत भी तो हो सकता है।"

"पर सिद्धेश्वरी बहन ! तुमने कहा है कि तुम्हे विश्वास है। अब

विश्वास अनुमान हो गया ?"

"यह अनुमान के विषय मे कहने का ढग है।"

"वाह ! इसमे ढग की बात कैसे आ गयी ?"

"इतिहास मे अनेक स्थलो पर ऐसा किया जाता है। लक्षणो से अनुमान लगा उसे निश्चित रूप मे लिख दिया जाता है।"

"परन्तु मै इतिहास तो नही लिख रही थी।"

सिद्धेश्वरी को अपने लिखे पत्र का स्मरण हो आया। इस कारण उसे सुधा के पत्र फाड डालने पर शोक लगने लगा। उसने कहा, "पिताजी के पैड का क्या और कागज भी है या एक ही लायी थी ?"

"मै तो उनका 'पैड' ही उठा लायी हू।"

"तो निकालो उसे। इस विधुर महोदय को पत्र लिख दो। मेरी बूआ कहती थी कि यह मरने वाला नही भी हो सकता।"

"तो तुम्हारे घर मे भी इस विवाह के प्रत्याशी की चर्चा हुई है ?'

"हा ! और बूआ को प्रसन्न करने के लिए मैने भी इसको पत्र लिखा है।"

"ओह ! तो फिर मै नही लिखूगी।"

"क्यो ?"

"एक डबल एम० ए० का विवाह पहले होना चाहिए। मै तो सिगल एम० ए० हू।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए कहने लगी, "मै तो विवाह करूगी नही। वह पत्र तो बूआ को प्रसन्न करने के लिए लिखा है। तुम तो एक 'डॉमेस्टिक ऐनीमल' की भाति अपना रेवड बनाना चाहती हो।"

२

यह बात दोनो सखियो मे कई बार पहले भी विवाद का विषय बन चुकी थी। इस कारण मिस खोसला को अटपटा प्रतीत नही हुआ। उसने अपने 'ब्रीफ केस' मे से अपने पिता का पत्र लिखने वाला 'पैड' निकाला

और पुन पत्र लिखने लगी।

उसने पत्र लिखा और अपने पिता का नाम रामनाथ नीचे लिख दिया। इस पर सिद्धेश्वरी ने पूछा, "तुम्हारे पिता ने यह पत्र स्वय क्यो नही लिखा ?"

"उन्होने मुझे उनका नाम लिखने का अधिकार दे रहा है।"

"तो उनकी जानकारी मे पत्र लिख रही हो ?"

"हा। आज प्रात काल उन्होने मुझे यह विज्ञापन दिखाकर कहा था, 'इस विडोअर के विषय मे भी विचार कर लो।' "

"मैने 'बाक्स नम्बर' नोट कर लिया और उनके 'पैड' को यहाँ ले आयी हू। विचार था कि यहा पत्र लिखने मे सुभीता रहेगा। वहा छोटी बहन को पता चल गया तो हसी उडायेगी।"

"अब यहा बडी बहन हसी उडा रही है।"

"तुम्हारी हसी तो रोज सुनते-सुनते अभ्यास हो गया है। मुझे विश्वास है कि जब तुम्हारा विवाह होगा तो तुम मुझसे डवल रेवड एकत्रित कर लोगी।"

"तो इस बात के लक्षण तुम्हे मुझमे दिखाई देते है ?"

"जिस बात की जब कोई जोर-जोर से निन्दा करता है तब उसके लिए उसका मन अत्यन्त व्याकुल होता है।"

"बहुत खूब। परन्तु खोसला, मै इस कहावत को असत्य सिद्ध करने का निश्चय कर चुकी हू।"

"मुझे तुम्हारा निश्चय पूरा होते देख अति प्रसन्नता होगी। परन्तु मेरा मन कहता है कि तुम पुत्र-पुत्रियो और पौत्रो-दोहतो मे घिरी हुई अभि-मान से सिर ऊचा किए घूमती दिखाई दोगी। केवल पच्चीस-तीस वर्ष की ही देर है।"

"और मै क्या कल्पना करती हू कि आज से पचास-साठ वर्ष उपरान्त मै एक रात पलग पर सोऊँगी और सुबह पलग पर मेरा शरीर होगा। मेरे पडोसी आएगे और मेरे निधन पर शोक प्रकट करते हुए मेरा दाह-सस्कार करेगे। वे रोएगे, शोक अनुभव करेगे, परन्तु मैं तो अपने सुख-शान्ति का जीवन समाप्त कर चुकी हूगी। जीवन का रस मै ले चुकी हूगी और जीवन

की कटुता उनके लिए छोड जाऊगी ।"

"और यह भयानक चित्र तुम कल्पना किया करती हो ?"

"इसमे भयानकता क्या है ?"

"यही कि मत शरीर पलग पर पडा होगा और उसका सस्कार करने के लिए कोई होगा नही । जब कई दिन तक वह शरीर उठाया नही जायेगा और शरीर बदबू करने लगेगा तब बदबू से पडोसियो को सन्देह होगा और वे घर का द्वार तोड भीतर आयेगे और प्रोफेसर मिस सिद्धेश्वरी एम० ए० हिस्टरी, एम० ए० साईकालॉजी, डी० लिट्० के शव को बदबू करते हुए वहा सड रहा देख उसकी मूर्खता पर शोक मनाएगे ।

"म्युनिसिपल के स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी आयेगे और शव को 'पोस्ट-मार्टम' कराने के लिए ले जायेगे। घर की शुद्धि कराने के लिए डी० डी० टी० छिडकने वाला स्क्वैड आयेगा और घर के सामान की नीलामी कर सफाई तथा दाह-कर्म का व्यय वसूल करेगा ।"

यह सब व्याख्यान सुन एक बार तो सिद्धेश्वरी की रीढ की हड्डी मे ठडक दौड गयी, परन्तु तुरन्त ही अपने को सम्भालकर वह खिलखिलाकर हस पडी और बोली, "मै तब नही हूगी । सिद्धेश्वरी के नाम की वस्तु नही रहेगी ।"

"देखो खोसला ! पिछले तीस-चालीस वर्ष मे हम स्त्रियो ने बहुत प्रगति कर ली है। मेरी बूआ सुनाया करती है कि उनके विवाह के समय उनकी आयु पन्द्रह वर्ष की थी और उनकी मा दिन-रात चिन्ता मे घुलती रहती थी कि कही लडकी बिगड न जाये और बिना विवाह के पेट मे बच्चा न बना बैठे। जिस दिन विवाह हुआ तो माता-पिता ने हलके चित्त से उन्हे विदा किया था। उनकी मा वियोग से तो रोती थी, परन्तु वैसे अपना कर्तव्य पालन कर सकने पर प्रसन्न थी ।

" और मै अब तेईस वर्ष की हू तथा बेधडक दिल्ली की सडको पर घूमती हू । अकेली थियेटर-सिनेमा देखने जाती हू और अपनी सखी-सखाओ से यौन विषयो पर ऐसे बाते करती हू कि मानो साग-भाजी की चर्चा हो रही है ।

"देखो न, कितनी दूर निकल आयी है हम। बूआ विधवा होने के

उपरान्त स्कूल मे भरती हुई थी और पाच वर्ष मे मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर सकी थी। उन दिनो, बूआ बताती थी कि, कभी उनकी मा, कभी भाई उन्हे स्कूल तक छोडने और स्कूल से लेने आया करते थे। है न स्त्री वर्ग को 'लिबरेशन' (बंध विमोचन) की यात्रा। पग-पग करती हुई भूमण्डल की स्त्रिया कहा से कहा पहुच गयी है।

"आज से पचास वर्ष पूर्व दमिश्क के बाजारो मे आलू, टमाटर की भाति सडको पर स्त्रिया बिका करती थी। और जद्दा मे स्त्रियो के दलाल उन स्त्रियो को भेडो की भाति हाकते हुए स्थान-स्थान पर बिक्री के लिए ले जाया करते थे।

"इग्लैड मे भी 'हाई पार्क' मे एक शिलिग पर स्त्री मिल जाती थी और आज इग्लैड मे कानून हो रहा है कि गर्भपात कराने के लिए स्त्री को केवल यह लिखकर देना होगा कि उसकी आर्थिक स्थिति बच्चे पैदा करने और पालन करने योग्य नही। बस डाक्टर सहज गर्भपात कर देगा।

"मुझे याद है कि जब मै तीन वर्ष की थी तो मेरी मा ने मेरे छोटे भाई को जन्म दिया था। मैने पूछा था, 'मा! यह कहा से आया है?' तो मा का मुख लज्जा से लाल हो गया था। उसने कुछ दूसरी बात कर यह चर्चा टाल दी थी।

"और आज अविवाहित लडकिया और लडके परस्पर जनन-क्रिया की बाते ऐसे करते है कि मानो, वे शतरज के खेल पर चर्चा कर रहे है।"

सखी की बाते सुन मिस खोसला के मन मे अपने जीवन सम्बन्धी विचारो पर भी सन्देह होने लगता था और वह अपने मन के भावो को स्मरण कर अपने को पिछडी हुई लडकी अनुभव करने लगती थी।

परन्तु जब घर पर वह अपने बहन-भाइयो को हसते-खेलते, हसी-मजाक करते देखती थी तो उसके मन मे पारिवारिक जीवन के गुणो का अनुभव होने लगना था। उसे सिद्धेश्वरी के विचारो मे कही भूल का अनुभव होने लगता था।

इसके अतिरिक्त जीवन-सघर्ष की बात भी थी। उसका पिता राम-नाथ खोसला केन्द्रीय मन्त्रालय के कृषि विभाग मे सुपरिन्टेडेण्ट था। साढे नौ सौ रुपया वेतन घर पर लाता था। घर पर खाने-पीने तथा पाच भाई-

बहनो कीपढाई, वस्त्रादिक के व्यय मे उसका वेतन प्राय मास समाप्त होने से दो-चार दिन पहले ही समाप्त हो जाता था। कई बार ऐसे अवसर आये थे जब उसे किसी पुस्तक खरीदने के लिए दस-बीस रुपयो की आवश्यकता पडी तो पिता कह दिया करते थे, "आज महीने की पचीस तारीख है। दो-चार दिन ठहरो तो रुपये मिल जायेगे।"

वह विचार किया करती थी कि सिद्धेश्वरी का कथन भी सत्य ही है। कोल्हू के बैल की भाति जीवन भर परिवार के कार्यो मे लगे रहने मे भला क्या लाभ है ? जन्म के समय परिवार के कार्य आरम्भ होते है और वे कार्य जीवनान्त तक चलते रहते है। सिद्धेश्वरी कहा करती थी कि क्या लाभ हुआ कोल्हू के जुए मे गरदन देने का ? मनुष्य समझता है कि उसे चलते हुए अस्सी वर्ष हो गए है। वह बहुत मार्ग चल आया है, परन्तु होता यह है कि वह वहा का वहा ही चक्कर काट रहा होता है।

सुधा ने दीर्घ श्वास छोडा और पत्र को तह कर लिफाफे मे बन्द कर उस पर पन्द्रह पैसे का टिकट लगा डाक के डिब्बे मे डालने चली गयी।

इसके चार दिन उपरान्त की बात है। शुक्रवार का दिन था। सिद्धेश्वरी कॉलेज के 'स्टाफ रूम' मे बैठी एक पुस्तक पढ रही थी। पुस्तक का नाम था 'मॉडर्न विमैन'। वह पुस्तक को कॉलेज के पुस्तकालय से निकलवाकर अभी लायी थी। वह पुस्तक पढने बैठी तो फिर बैठी ही रह गयी।

उसका विचार था कि पुस्तक घर जाकर पढेगी। यहा तो वह तनिक उसमे लिखे विषयो पर दृष्टिपात करना चाहती थी, परन्तु पढने लगी तो उसे समझ आया कि उसका रुचिर विषय है। वह इसमे लीन हो गयी और फिर वह भूल गयी कि वह कॉलेज का काम समाप्त कर घर जा रही थी।

इस समय विद्यालय की एक अन्य अध्यापिका वहा आयी और सिद्धेश्वरी को पढने मे लीन देख उसके कन्धे पर हाथ रख उसका ध्यान पुस्तक से हटाकर बोली, "सिद्धेश्वरीजी ! प्रधानाचार्या आपसे मिलने के लिए परेशान हो रही है।"

"क्यो, क्या बात है ?" सिद्धेश्वरी ने पुस्तक से सिर उठा पीछे खडो अधेड आयु की प्राध्यापिका की ओर देख पूछ लिया।

"उसने बताया नही। मै किसी अपने काम से वहा गयी थी तो वह

बोली कि सिद्धेश्वरी से अत्यावश्यक काम है। मै तो समझी थी कि तुम घर चली गयी होगी, परन्तु तुम तो अभी यहा ही हो। मैने प्रधानाचार्या से कहा था कि यदि कोई आवश्यक काम हो तो मुझे बता सकती है। मै उधर ही जा रही हू। इस पर वह कहने लगी, 'मै अभी चपरासी को उसके घर भेज देती हू।' "

इस पर सिद्धेश्वरी ने पुस्तक बन्द की और कह दिया, "अच्छा, शारदा जी ! मै अभी प्रधानाचार्या जी से मिल लेती हू। परन्तु आपकी छुट्टी स्वीकार हुई अथवा नही ?"

श्रीमती शारदा रानी ने प्रसूति काल के लिए छुट्टी की याचिका की हुई थी और अपने बडे पेट से कॉलेज की सब प्राध्यापिकाओ और लडकियो मे चर्चा का विषय बनी हुई थी। सिद्धेश्वरी को ज्ञात था कि उसने छुट्टी मॉगी हुई है, परन्तु प्रधानाचार्या चाहती थी कि यदि कुछ अधिक कष्ट न हो तो शारदा जी कॉलेज की 'टर्म' (सत्र) पूरी कर ही प्रसूति-गृह मे जाये।

परीक्षाए तीन अप्रैल से आरम्भ होने वाली थी और शारदा जी की गिनती के हिसाब से प्रसव चौदह-पन्द्रह अप्रैल को होने वाला था।

शारदा ने सिद्धेश्वरी के समीप बैठते हुए कहा, "मै इसी विषय पर बात करने प्रधानाचार्या जी के पास गयी थी। वह कहती है कि पन्द्रह मार्च से परीक्षा की तैयारी के लिए पढाई बन्द हो जायेगी। पढाने वालो को कॉलेज मे हाजिरी भरने के लिए और यदि कोई लडकी कुछ समझने के लिए आये तो उनकी सहायता ही करनी होती है। यह इतना हल्का काम है कि इसके लिए छुट्टी न ली जाए तो ठीक होगा। मैं मान आयी हू, परन्तु छुट्टी तीन महीने की ही चाहती हू। मै इतनी छुट्टी पाने का अपना अधिकार समझती हू। प्रधानाचार्या मान गयी है कि जिस दिन से छुट्टी आरम्भ होगी उस दिन से तीन मास की छुट्टी वेतन सहित मिल जायेगी।"

"और शारदा जी ! आपको चलने-फिरने मे कष्ट नही होता ?'

"कुछ अटपटा तो लगता है। मुझे दूसरो से तनिक अधिक झूमकर चलना होता है। वैसे कष्ट कुछ नही है। डाक्टर तो कहता है कि थोडा चलना-फिरना ठीक ही रहेगा।"

"तो छुट्टी फोकट मे ले रही थी ?"

"फोकट मे नही। मैने परिश्रम किया है और परिश्रम करने जा रही हू। हमारी सरकार ने यह हमारा अधिकार माना हुआ है कि इस परिश्रम के प्रतिकार मे तीन मास का वेतन मिले। साथ ही कॉलेज मे काम से अवकाश मिले।"

सिद्धेश्वरी मुसकराती हुई साथ बैठी अपनी साथिन प्राध्यापिका का मुख देख रही थी। बात शारदा ने ही की। "मैं तुम कुमारी प्राध्यापिकाओ को विवाह न करते देख विस्मय किया करती हू कि कैसे आप अपना काम चलाती है ?"

"कौन-सा काम ?" सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया।

शारदा ने बात बदल दी। उसने कहा, "पर तुम लोग भी क्या करो ! जैसा भाग्य मे बदा होता है वैसा ही होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम और तुम्हारी सखी ' हा ''मिस खोसला ' पूर्वजन्म मे अपने पतियो से झगडती रही हो जो इस जन्म मे तुम्हे कोई पुरुष पति-रूप मे प्राप्त ही नही हो रहा।"

इस पर सिद्धेश्वरी हस पडी। हसती हुई पूछने लगी, "तो विवाह करने से पूर्वजन्म को देखने की दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो जाती है ?"

शारदा रानी ने मुसकराते हुए कहा, "पूवजन्म ही नही, वरच जन्म-जन्मान्तर की बाते किया स्पष्ट होने लगती है।"

"मै विस्मय करती हू," सिद्धेश्वरी ने गम्भीर भाव बनाकर कहा, ' कि तुम जैसी सरल चित्त स्त्रियो को अध्यापन-कार्य मिल कैसे जाता है ?"

"सरल चित्त से तुम्हारा मतलब मूर्ख है न ? मै अपने को मूर्ख नही मानती। साथ ही मेरी 'सर्विस फाईल' तुम से अधिक श्रेष्ठ है। लडकियो के मेरे विषय के परीक्षा-परिणाम सर्वथा सन्तोषजनक होते है।"

"अच्छा मौसी !" 'मौसी' का शब्द सिद्धेश्वरी ने शारदा को चिढाने के लिए प्रयोग किया था। शारदा समझती थी कि कुछ अन्य प्राध्यापिकाए भी कभी उसे बडी आयु का भास कराने के लिए 'आण्टी' तथा 'मौसी' कह-कर पुकारा करती थी। मजेदार बात यह थी कि शारदा रानी इस प्रकार सम्बोधन किये जाने पर रूष्ट नही हुआ करती थी। इसके उत्तर मे कहने वालियो को 'बेटी' कहकर सम्बोधन कर दिया करती थी। सिद्धेश्वरी ने

बात बदल दी। उसने पूछा, "मौसी, यह कितनीवी सन्तान होगी ?"

"चौथी।"

"नियम से एक अधिक हो रही है। अब बस कर दो, अन्यथा 'मैटर्निटी लीव' और सुविधाए छिन जायेगी।"

"क्यो ?"

"परिवार नियोजन मे तीन के बाद बस कहा है। यदि मौसी जैसी स्त्रिया प्रेरणा से नही मानेगी तो फिर प्रतिबन्धात्मक कानून बनाना पडेगा। मौसी, यह 'सोशल क्राइम' है।"

शारदा अभी भी हसी का उत्तर हसी मे ही दे रही थी, "बेटी सिद्धेश्वरी ! मै तो, आप जैसी तपस्विनियो का, दो भी पैदा न करने के जुर्म का प्रतिकार दे रही हू। समाज की परम्परा भी तो चलानी है न ?"

इसी समय कॉलेज का चपरासी 'स्टाफ रूम' के द्वार पर खडा हो कहने लगा, "बहन जी ! आपको प्रधानाचार्या जी बुला रही है।"

"किसे ?" शारदा ने पूछ लिया।

"छोटी बहन जी को।" चपरासी का अभिप्राय सिद्धेश्वरी से था।

दोनो मौसी-भानजी मे रुचिकर वार्तालाप बन्द हो गया।

३

"देखो सिद्धेश्वरी ! रजिस्ट्रार का पत्र आया है कि तुम्हारे 'थीसेज' के विषय मे अनुसन्धान बोर्ड ने तुम्हे 'इण्टरव्यू' के लिए बुलाया है।"

इतना कह प्रधानाचार्या ने अपनी मेज के दराज मे से रजिस्ट्रार का पत्र निकालकर उसे दे दिया। सिद्धेश्वरी के 'इण्टरव्यू' की तारीख अगले दिन की ही थी। तारीख और समय पढ उसने प्रधानाचार्या का धन्यवाद किया और कह दिया, "कल मेरा कोई 'पीरियड' नही है। मै कॉलेज से अनुपस्थित रहूगी। 'इण्टरव्यू' बारह बजे के समय है।"

"हा, अपनी उपस्थिति सोमवार को आकर लिख देना।"

सिद्धेश्वरी प्रसन्न थी। उसको समझ आया कि गाडी कुछ तो आगे

चली है। वैसे तो वह अपने विषय पर तैयारी अभी से कर रही थी।

वह प्रधानाचार्या के कार्यालय से निकलकर घर को चल दी। कॉलेज के फाटक पर एक अमेरिकन शिवर्ले गाडी खडी थी और उसके समीप एक कुछ बडी आयु का व्यक्ति सिर से पाव तक खद्दर के कपडे पहने खडा था। उम आदमी के समीप दरबान खडा कुछ बता रहा था। जब सिद्धेश्वरी फाटक पर घर जाने के लिए आयी तो दरबान ने साथ खडे व्यक्ति को धीरे से कुछ कहा और वह व्यक्ति आगे बढ हाथ जोड नमस्कार कर पूछने लगा, "क्या आप सिद्धेश्वरी जी है ?"

"हा, बताइये ?"

"मै वह 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे विज्ञापन देने वाला पत्नी की खोज मे विधुर हू।"

"ओह ।" सिद्धेश्वरी कहने वाली थी कि 'तो आप जीवित है ?' परन्तु उसने यत्न से अपने मुख से निकलती हुई बात रोक ली और हाथ जोड नमस्ते करते हुए कह दिया, "तो आप यहॉ ही आ गये है ?"

"हा। यह इस कारण कि आपके पत्र मे अन्य कोई पता लिखा भी नही था।"

सिद्धेश्वरी को स्मरण आ गया कि उसने भेट के लिए कोई स्थान अथवा समय लिखा नही था। पत्र लिखने समय तो वह मन मे विश्वास किये हुए थी कि विज्ञापन देने वाला मर चुका है। इसी कारण भेट के लिए स्थान, समय लिखने की ओर उसका ध्यान ही नही गया था। वह यह भी समझ गयी कि उसने उत्तर अपने छपे 'लेटर-पैड' पर हाथ से ही लिख दिया था।

इस पर आगन्तुक व्यक्ति ने सामने खडी प्रत्याशी पत्नी की घबराहट को दूर करने के लिए कह दिया, "मुझे आपका सक्षिप्त उत्तर बहुत पसन्द आया है।" उसने तुरन्त बात बदलते हुए कहा, "आप इस समय किधर जा रही है ?"

"जा तो घर ही रही हूँ। परन्तु··।" सिद्धेश्वरी कहने जा रही थी कि वह उन्हे घर पर ले जाना नही चाहती। साथ ही वह इस आशा मे कि विज्ञापन देने वाला तो स्वर्ग अथवा नरक मे धक्के खा रहा होगा, इस भेट

के लिए तैयार नही थी। उसने अभी यह भी विचार नही किया था कि इस भद्र पुरुष को किन शब्दो मे अस्वीकार करेगी। अत कहती-कहती रुक गयी थी। उसके रुकने पर उसकी बात को पूरा करने के लिए सामने खडे पुरुष ने कह दिया, "अभी आप अपने घर का पता बताना नही चाहती, यही विचार कर रही थो न ? परन्तु वह तो मै कार्यालय से पता कर चुका हू। मै विचार कर रहा था कि सायकाल आपकी मा के सामने आपसे मिलने का यत्न करूगा। इस समय आप आती दिखायी दे गयी तो चपरासी ने बताया कि आप ही सिद्धेश्वरी देवी है।"

"जब आप घर का पता जान गये है तो फिर वहा ही आ जाइये। मेरी मा तो है नही। बूआ है। वह मा से भी अधिक प्यार करती है। उनके सामने ही बात हो जायेगी।"

सिद्धेश्वरी इस व्यक्ति को अपने पति के रूप मे कल्पना कर अपने मन की प्रतिक्रिया पर विचार कर रही थी। एक बात तो उसे समझ आयी थी कि पुरुष रोबवाला है। सहस्रो को अगुलियो पर नचानेकी सामर्थ्य रखता प्रतीत होता है।

वह देख रही थी कि गाडी भी अच्छी सुन्दर और कीमती है। इसमे बैठ घूमने का रस आयेगा। सामने खडे व्यक्ति का दोष-रहित सर्वथा धवल खद्दर का कुर्ता-धोती, पाव मे चप्पल और सिर पर खद्दर की टोपी पहने देख बहुत प्रभावित हुई थी। इस पर भी वह वस्त्रो, आयु और साधनो से अतिरिक्त अपने मे एक विशेष ओज और आकर्षण रखता प्रतीत हुआ था। उसने कहा, "मैं यह विचार कर रही हू कि मै अपने घर आपको निमन्त्रण देने का अधिकार भी रखती हू अथवा नही ?"

"परन्तु देवी जी ! आपने निमन्त्रण तो दे रखा है। उसी से तो मैं यहा पहुचा हू और आपके घर जा रहा हू।

"अब तो मैं आपको निमन्त्रण दे रहा हूँ कि चलिए, मैं आपको आपके घर तक पहुँचा देता हूँ। मैं उधर ही जा रहा हूँ।"

वह अनुभव कर रही थी कि वह एक ससद सदस्य के सामने खडी है जो अपनी वाक् चातुरी से लाखो को अपने पीछे लगा सका है।

"मै यही विचार कर रही हू कि आपकी गाड़ी मे घर चलू अथवा

आपको अपने साथ बस मे चलने के लिए कहू । मै तो बस मे ही अपने घर पटेल नगर मे जाया करती हू ।"

"ठीक है। आप तो मुझे घर चलने का निमन्त्रण नही दे रही। यहा तो मै आपके घर का पता पूछने आया था। यहा से वहा स्वत' ही जा रहा था। यह तो मै आपको घर तक 'लिफ्ट' देने की बात कह रहा हू। मेरे पास यह गाडी है। बस तो है नही। इस कारण गाडी मे चलने का ही निमन्त्रण दे सकता हू। आपका बस मे चलने का निमन्त्रण पाने का सौभाग्य फिर कभी प्राप्त कर सकूगा।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए बोली, "आपके साथ इतनी बढिया गाडी मे बैठने मे डर प्रतीत होता है। यह भागती भी तो बहुत तेज़ होगी।"

वह पुरुष डर की बात समझ गया था, परन्तु उसने इस ओर सकेत नही किया और कह दिया, "डरने की बात नही। यह उलटती नही। यह साठ-सत्तर मील की गति पर भी 'ब्लाइण्ड कार्नर' घूम जाती है।"

"तब तो चलिये।" सिद्धेश्वरी ने कहा। वह देख रही थी कि मौसी शारदा रानी फाटक की ओर आ रही है। इससे उसके आने से पूर्व वह वहा से भाग जाना चाहती थी। जैसे विचार वह अपनी साथिनो तथा छात्राओ से प्रकट किया करती थी, उनसे इस व्यक्ति से बातचीत करते देखी जाकर वह हसी का विषय बन जाने की आशका करती थी। इस कारण उसे जल्दी वहा से भाग जाने मे ही कल्याण समझ आया।

वह गाडी की ओर बढती हुई बोली, "तो गाडी आप चलायेगे ?"

"हा। चिन्ता न करे। मैं बहुत ही कुशल ड्राईवर हू।"

"आपके पास ड्राईविग का लायसेस तो होगा ही ?"

वह हस पडा और बोला, "आइये, डरिये नही।"

जब वह पुरुष 'स्टेयरिग' पर बैठा तो सिद्धेश्वरी उसके समीप अगली सीट पर ही बैठ गयी।

गाडी चलाने वाले व्यक्ति ने साथ बैठी दुबली-पतली लडकी को आश्वस्त करने के लिए कहा, "मेरा नाम कमलेश कुमार सिह है। वैसे मुझे के० के० सिह के नाम से लोग जानते है।"

"बाप-दादाओ की बहुत बडी जमीदारी थी। वह समाजवादी सरकार

के पेट मे चली गयी है। स्वराज्य के आगमन से पूर्व पिता जी को ठीक ही सूझी थी। वह यह कि उन्होने कई वर्ष पहले से ही भूमि के अतिरिक्त सम्पत्ति बनानी आरम्भ कर दी थी। जमीदारी जब्त होने के समय पिता जी के पास पचास लाख का सोना था। साथ कलकत्ता की दो जूट मिलो मे हिस्से थे।

"पिता जी के देहान्त के तुरन्त उपरान्त मैंने सब सोना बम्बई मे ले जाकर बेच दिया और वहा टाटा और सिंधिया के हिस्से खरीद लिये। इस थोडी-सी सावधानी का परिणाम यह हुआ कि अब मैं करोडपति हू और अपने समद के चुनाव मे पाच लाख का होम कर सका हू।"

'परन्तु आपने • " अब सिद्धेश्वरी ने साहस कर पूछ लिया, "इस खिलौने के लिए इतना धन व्यय क्यो किया ?"

मिस्टर सिह ने अपनी बगल मे बैठी कुमारी की ओर ध्यान से देखा और कहा, "मै अपने को एक कुशल मनोवैज्ञानिक मानता हू और अपने उसी ज्ञान से यह समझ रहा हू कि मुझे आपको अपने मन के रहस्यो मे साझीदार बनाने मे सकोच नही करना चाहिए। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपसे मै अपनी गुह्यतम मन की बाते भी कहने का अवसर पाने वाला हू।

"देखिये, एक क्षत्रिय वश मे उत्पन्न क्षत्रिय स्वभाव रखता हुआ मै देश की राजनीति से अपने को पृथक् नही रख सका। मेरे पिताजी भी तीन वार प्रान्तीय कौसिल के सदस्य चुने जा चुके थे। उनका देहान्त सन् १६५१ मे हुआ था। उस वर्ष स्वराज्य काल के प्रथम निर्वाचन हुए थे और वह उस समय बीमार पडे थे। अत वे निर्वाचन नही लड सके।

"उनके देहान्त के उपरान्त सन् सत्तावन के तदनन्तर सन बासठ और अब सन् सत्तासठ के निर्वाचन मे मै ससद सदस्य निर्वाचित होता रहा हू।"

"तो आप काग्रेस से टिकट पा निर्वाचन लडते रहे है ?"

"नही। मै काग्रेस का सामान्य सदस्य भी नही हू। काग्रेस के टिकट तो बिकाऊ होते है और मै उसे क्रय करने की सामर्थ्य और योग्यता रखता हू, परन्तु मैने उसका सदा तिरस्कार किया है। इस बार भी एक लाख रुपया व्यय करने पर टिकट मिल सकता था। इसका प्रस्ताव किया गया

था। ऐसा करता तो पाच लाख जनता मे व्यय न करना पडता। पचास-साठ हजार पर ही काम चल जाता, परन्तु मुझे काग्रेस को पराजित करने मे रस प्राप्त होता है।"

"पर आप खद्दर तो पहनते है ?"

"यह है नहले पर दहला। जिन हथकण्डो से काग्रेस जीतती है, उन्ही हथकण्डो से उसे पराजित करने के लिये यह पहनता हूँ। काग्रेस ने जन-साधारण को मूर्ख बना अपना उल्लू सीधा करने के लिए कई उपाय प्रयोग किये है। मै उन सब उपायो का प्रयोग करना भी अपना अधिकार मानता हूँ।"

"तो आप किस दल की ओर से चुनाव लडे है ?"

"मै निर्दलीय हू।"

"यह तो महान स्वार्थपरता है।"

"हा। जब एक व्यक्ति किसी सम्पूर्ण दल की स्वार्थपरता को पराजित कर अपने स्वार्थ को पूर्ण करे तब वह महान स्वार्थी तो होगा ही। अकेले का स्वार्थ पूर्ण दल के स्वार्थ को जो पराजित कर सका है।"

सिद्धेश्वरी ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि ऐसा धूर्त व्यक्ति उसका पति नही हो सकता। यह ठीक था कि इस व्यक्ति के प्रथम परिचय के समय तो उसका सकल्प कि वह विवाह नही करेगी, ढीला पड गया था। उसका गम्भीर ओजस्वी मुख, उसकी बढिया 'फॉरेन मेड' मोटरगाडी, उसकी खद्दर की पोशाक और सतर्क व्यग्यात्मक बात करने का स्वभाव, सब उसके सकल्प को गिराने वाले सिद्ध हो रहे थे। परन्तु उसकी जीवन-मीमासा सुन कि वह धोखेधडी से निर्वाचन लड अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ससद सदस्य बना है उसको पुन अपने सकल्प पर दृढ होने की प्रेरणा देने लगा था।

गाडी चलाता हुआ पुरुष लडकी को बात करने के लिए ही कहने लगा, "कदाचित् आप यह विचार कर रही है कि मै एक महान छलिया व्यक्ति हू। इस कारण मुझसे बचना चाहिए। परन्तु देवी जी, मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मै छलियो के साथ ही छलना करने मे सिद्ध हू, परन्तु निश्छल व्यक्तियो के साथ मेरा व्यवहार सदा सरल, सत्य और

सुखद होता है। इसी कारण मेरे निर्वाचन-क्षेत्र के सब भले और बुद्धिमान लोग मुझे ही मत देते है। वे जो सरल-चित्त होते है और राजनीतिक दलो की छलना मे फस जाने वाले होते है, उनको महान छलियो की छलना से बचाने के लिए मै किचित मात्र छलना खेलता हू। परन्तु यह सरल-चित्त प्रजा को छलने के लिए नही, वरच उनको छलियो के चगुल से बचाने के लिए।

"मै जो जो वचन प्रजागण से करता हू, वह पालन करता हूँ। पहले दो निर्वाचनो मे भी मै निर्दलीय प्रत्याशी के रूप मे सफल हुआ था और मै ससद के प्रत्येक सत्र के उपरान्त अपने मतदाताओ को अवगत कराता रहता हू कि मैने किस-किस विषय पर काग्रेस के साथ मत दिया है और किस-किस विषय पर काग्रेस के विरुद्ध और वह क्यो। अपनी इस कार-गुजारी को बहुत सरल और प्रभावी भाषा मे मतदाताओ तक पहुचाने का यत्न करता हू। जब मैं लाखो निर्वाचनो पर व्यय करता हू तो एक लाख रुपया अपने कार्य की सफाई पर भी व्यय करता हू। इसका परिणाम अभी नक तो यह हुआ है कि मै तीन निर्वाचनो मे भारी बहुमत से विजयी होता रहा हू। इस बार भी मै अपने मतदाताओ को अपने कार्य से अवगत करने के लिये यत्न कर रहा हू।

"वास्तव मे मुझे विवाह करने की आवश्यकता भी इसी कार्य मे सहायक ढूढने के लिए हुई है।"

"तो आपको पत्नी की आवश्यकता नही? आपका विज्ञापन भी एक छलना ही था?"

"पत्नी की आवश्यकता तो पिछले सात-आठ वर्ष से अनुभव हो रही है। मेरा पहला विवाह तब हुआ था जब मै बीस वर्ष की वयस का था। यह सन् १९५० की बात है। वह बेचारी मेरा साथ चार वर्ष से अधिक नही दे सकी। मै उससे बहुत प्रेम करता था और उसी प्रेम के नाते मैने अभी तक विवाह नही किया था। इस बीच मे कई बार विवाह करने की उत्कट इच्छा और आवश्यकता अनुभव हुई थी, परन्तु इस बार चुनावो मे एक स्त्री साथी की भारी आवश्यकता अनुभव हुई है और यह मेरी पूर्व की आवश्यकताओ को उग्र कर रही है। अत मै विज्ञापन देने पर विवश

हो गया था।

"मै एक देहात का रहने वाला हू । वहा ही मेरे परिचित और सगे-सम्बन्धी है। अत किसी देहाती लडकी से विवाह तो बिना विज्ञापन के भी हो सकता था। मेरी इच्छा हुई थी कि किसी नगर की पढी-लिखी, सभ्य और सुशील लडकीसे विवाह करूँ। इसी कारण विज्ञापन एक अग्रेजी के समाचार-पत्र मे ही दिया था। अभी तक जितने भी पत्र आये है, उनमे से चुस्त, सक्षिप्त और अर्थयुक्त उत्तर आपका ही था और मै आपके किसी बडे सम्बन्धी से मिलने चल पडा हूँ।"

"तो आप मुझसे मिलने नही आये ?"

"योजना तो यही थी कि आपके किसी सम्बन्धी के द्वारा ही आपसे भेट करू, परन्तु भाग्य मे इससे उलट बदा प्रतीत होता है। अर्थात् आपके द्वारा आपके सरक्षक से मिलने जा रहा हू।"

इस समय गाडी पटेल नगर सनातन धर्म मन्दिर के समीप जा पहुची थी। मिस्टर सिह ने कहा, "यहा तक का पता तो आपके कॉलेज के क्लर्क से मिल गया था। आगे पता करना था प्रोफेसर सिद्धेश्वरी जी का मकान कहा है ? वैसे मकान का नम्बर भी पता है। परन्तु अब आप साथ है तो इस सब झगडे की आवश्यकता नही होनी चाहिए। बताइये, आपका मकान किधर है ?"

सिद्धेश्वरी ने हाथ के सकेत से बताया। मिस्टर सिह ने गाडी उधर ही घुमा दी। सिद्धेश्वरी ने सकेत से एक मकान के बाहर अपने नाम का पट्ट लगा दिखाया तो गाडी उसके बाहर खडी हो गयी। दो-मजिला मकान था। सिद्धेश्वरी और उसकी बूआ ऊपर की मजिल पर रहते थे। नीचे की मजिल पर मालिक मकान रहता था।

सिद्धेश्वरी मिस्टर सिह को लेकर ऊपर की मजिल पर गयी तो द्वार को ताला लगा था। सिद्धेश्वरी ने अपने पर्स मे से चाबी निकाल द्वार खोलते हुए कहा, "मालूम होता है कि बूआ कही घर से बाहर गयी हे। आइये, आप बैठिये। वह आ जायेगी।"

सिद्धेश्वरी ने मिस्टर सिह को बैठकघर मे एक सोफा पर बैठाकर पूछ लिया, "चाय लेगे अथवा कोल्ड ड्रिंक ?"

"अभी कुछ नही। यदि आपको कष्ट न हो तो बैठिये। इतनी देर तक आपका अन्य विषयो मे परिचय प्राप्त कर लू। आपकी माताजी तो नही है। और आपके पिताजी ?"

सिद्धेश्वरी मिस्टर सिह के सामने एक स्टूल पर बैठ गयी थी। उसने बताया, "मै अभी तीन वर्ष की बच्ची ही थी कि जब देश-विभाजन हुआ था और हम पजाब के एक नगर सियालकोट से भागने पर विवश हुए थे। मेरे माता-पिता और एक भाई तो भागते हुए मुसलमानो की भीड से मार डाले गये थे, परन्तु मेरी बूआ मुझे अपनी गोद मे उठा भाग बच जाने मे सफल हो गयी थी।

"बूआ ने बताया कि जब वह यहा आयी थी तो पहले नई दिल्ली गोल मार्केट के पास एक मकान मे रहने लगी थी। उस समय सब भूषण और नकदी जो बूआ मेरे साथ बचाकर ला सकी थी, वे पाच हजार रुपये के लगभग थे। बूआ ने सब नकद कर दिया और उसमे से कुछ व्यय कर वहा बच्चो का एक स्कूल खोल लिया। पहली से पाचवी श्रेणी तक की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया और एक-दो महीने मे स्कूल चल निकला। छ मास मे दो सहायक अध्यापिकाए भी रखनी पडी। बूआ का कहना है कि वह अपने और मेरे व्यय से अधिक आय करने लगी थी।

"बूआ यह तीन वर्ष पूर्व तक करती रही। तब मै यहा इस कॉलेज मे प्राध्यापक नियुक्त हो गयी थी। मेरा वेतन छ सौ रुपया लगा तो बूआ ने स्कूल बन्द कर दिया और हम गोल मार्केट वाला मकान छोड इस स्थान पर आ गये है।

"हमने घर पर कोई नौकर नही रखा और निर्वाह योग्य मिल जाता है।"

इस प्रकार परिचय देते-देते आधा घटा व्यतीत हो गया और तब बूआ आ गयी। अब सिद्धेश्वरी ने पहले परिचय कराया, "यह मेरी बूआ जी भगवन्ती देवी है। और बूआ, यह वह सज्जन है जिनका आपके कहने पर मैंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे समाचार पढ मिलने के लिए पत्र लिखा था।"

४

भगवन्ती देवी बाजार से कुछ फल खरीदने गयी थी। फल और कुछ अन्य आवश्यक सामान क्रय करते हुए पौन घटा से ऊपर लग गया था। आने पर इस नवागन्तुक का परिचय प्राप्त कर बूआ ने सिद्धेश्वरी से कहा, "तो जाओ, तुम चाय तैयार कर लाओ।"

इसका अभिप्राय यह था कि भगवन्ती इस व्यक्ति से बातचीत सिद्धेश्वरी की अनुपस्थिति मे करना चाहती थी। सिद्धेश्वरी समझ गयी और अपनी 'नोट-बुक' उठा अपने कमरे मे चली गयी। वहाँ नोट-बुक रख और कॉलेज के वस्त्र बदल रसोईघर मे चली गयी। वहा जल गरम करते हुए तथा 'सैण्ड विचिस' इत्यादि तैयार करते हुए विचार करने लगी कि वह तो विवाह न करने का सकल्प कर चुकी है और यह व्यक्ति तो उससे विवाह करने यहा तक आ पहुचा है। इसे कुछ तो उत्तर देना ही पडेगा।

एक बात से उसे सन्तोष था कि मिस्टर सिह कहते थे कि वह उससे मिलने नही आये, वरच उसकी मा से मिलने आये है। इस पर वह समझती थी कि बूआ मिस्टर सिह से बात कर अवश्य उससे सम्मति लेगी। तब वह बता देगी कि उसने विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है।

इस प्रकार मन मे इस व्यक्ति से छुट्टी पाने का ढग विचार कर वह चाय तैयार करने मे लगी रही।

एक बार वह बूआ की 'बास्केट' से फल और अन्य सामान निकालने बैठक मे आयी थी। वह बूआ को गम्भीर भाव मे मिस्टर सिह से वार्तालाप करते देख आयी थी। उसे कुछ ऐसा समझ आया था कि बूआ इस व्यक्ति से कुछ अधिक प्रसन्न नही। इससे सन्तुष्ट हो वह फलो मे से सन्तरे और सेब निकाल उन्हे ही छीलने लगी। वह उन्हे दो प्लेटो मे सजाने लगी।

इस समय उसके मन मे एक विचार विद्युत की भाति दौड गया। वह यह समझी कि घरेलू सेवा-कार्य का यह उसका श्रीगणेश है। इस विचार के आते ही उसके पूर्ण शरीर मे कपकपी हो उठी। उसके मन मे स्त्री जाति के उद्धार की वे सब कल्पनाए आने लगी जो वह पिछले चार-

पाच वर्ष से मन मे सजो रही थी। उसे अपने शोध-पत्र की तैयारी मे बहुत-कुछ अध्ययन और मनन करना पड रहा था।

वह विचार कर रही थी कि मानव समाज ने आदिकाल से ही स्त्री वर्ग को दास-वृत्ति दे रखी है। अब बीसवी शताब्दी के समाप्त होने तक अपने वर्ग को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र ही नही, वरच पुरुष वर्ग पर शासन करने योग्य बनाना उसका जीवन-कार्य है। इसी कारण जब लग्न से वह प्लेटो मे फल सजा रही थी तो समझी थी कि वह परम्परागत दासता से प्रेरित हो वह यह कर रही है।

अत उसने फलो को सजाना बन्द कर दिया और 'सैण्ड विचिस' को भी ऐसे ही एक ढेर मे रख प्लेट उठा बाहर बैठक मे आ गयी। इसी भाति उसकी बूआ उसे रखकर खिलाया करती थी।

सिद्धेश्वरी ने खट से प्लेटे बैठकघर की 'सेन्टर टेबल' पर रखी और चाय के लिए प्याले और पानी लेने चली गयी। इस खट से रखने पर भगवन्ती मुसकरायी और अपने मन के भाव को छुपाते हुए बोली, "देखिये, आपने अब और कुछ भी लडकी से नही कहना। आप इस रविवार को ठीक बारह बजे यहा आ जाइये। उससे विवाह के लिए एक अन्य प्रत्याशी उस समय आने वाले है। उस भेंट के उपरान्त ही मै लडकी के विवाह की बात उसकी सम्मति से करूगी।"

इस समय सिद्धेश्वरी चाय के बर्तन एक ट्रे मे रखे हुए लेकर आ गयी और दोनो के सामने फलो की प्लेटे रख बोली, "बूआ, बस अथवा कुछ और ?"

"और क्या लायेंगी ?" मिस्टर सिह ने पूछ लिया, "मै समझता हूँ कि इतना भी बहुत कुछ है।'

'मिठाई भी हो सकती है। केक, पेस्टरी भी हो सकते है।"

'नही, नही, देवी जी। इतना कुछ पर्याप्त है।"

चाय पीते हुए ससद मे उस दिन हुई नोक-झोक का वर्णन होता रहा। मिस्टर सिह ने बताया कि स्वतन्त्र दल के आक्षेपो का खण्डन करते हुए उसने कहा, "जैण्टलमैन। लुक इन टू योअर स्लीव्ज। देयर इज दि स्नेक ऑफ ग्रीड फार लीडरशिप, हाईडिंग टू बाइट दि लीडर्स ऑफ अदर

पार्टीज। गैट रिड ऑफ दैट एण्ड दैन यू कैन थिंक ऑफ फारमिग गवर्नमैण्ट इन दिस बिग कौण्टिनेट।[1]

"तो मा जी, पूर्ण भवन तालियो से गूँज उठा।"

इस चुस्त वक्तव्य पर तो सिद्धेश्वरी भी फडक उठी और समझ गयी कि सामने बैठा व्यक्ति एक कुशल 'पार्लियामेण्टरियन' है।

इस पर उसने केवल मुसकरा दिया।

चाय समाप्त हुई तो मिस्टर सिह ने उठ विदा होने के लिए हाथ जोड दोनो बूआ-भतीजी को नमस्ते की और सिद्धेश्वरी से यह कह दिया, "आपकी बूआ जी ने मुझे रविवार को मध्याह्न के भोजन पर आमन्त्रित किया है। मैने आने का विचार व्यक्त किया है। तब तक के लिए नमस्ते कहता हू।"

इतना कह बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये वह सीढियो की ओर चला तो सिद्धेश्वरी प्रथानुसार उसे छोडने नीचे तक आयी।

गाडी मे बैठते हुए मिस्टर सिह ने कहा, "आपकी बूआ जी की बातो ने मेरे मन पर बहुत प्रभाव उत्पन्न किया है और मैं उनके परिवार से अधिक समीप के सम्बन्ध की आशा लिये जा रहा हू।"

इतना कह उसने गाडी चला दी। सिद्धेश्वरी के हाथ उठे और नमस्कार करने जुड गये।

जाती हुई शिवर्ले की गाडी को देखते हुए सिद्धेश्वरी विचार कर रही थी, कितने वर्ष प्रोफेसर पद पर कार्य करने से वह ऐसी गाडी की मालिक बनने की आशा कर सकती है। अपने सात सौ रुपया मासिक वेतन मे से मकान का भाडा और भोजन-वस्त्रादिक का व्यय निकालकर वह उन दिनो एक सौ रुपया प्रति मास बचाती थी। वह मन मे कल्पना कर रही थी कि हिन्दुस्तानी 'ऐम्बेसेडर' अठारह हजार की मिलती है और यह यदि मिल भी जाये तो अवश्य चालीस-पचास हजार की होगी। अर्थात् गाडी खरीदने के लिए चालीस वर्ष की कमाई चाहिए।

---

१ भले लोगो! अपनी आस्तीन मे देखो। वहा तुम्हारे नेतागीरी के लोभ का साप दूसरे नेताओ को डसने के लिए छुपा बैठा है। उससे मुक्ति पाओ तो फिर इस विशाल महाद्वीप मे सरकार बनाने के स्वप्न ले सकते हो।

इस पर वह विचार करने लगी कि इस गाडी को रखने के लिए कोठी भी दो लाख रुपये की लागत की होनी चाहिए।

उसके मुख से अनायास निकल गया, "दि कर्स्ड सोशल आर्डर।" और एक ठडा सास लेकर वह ऊपर चली आयी।

भगवन्ती वही बैठकघर मे बैठी लडकी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। सिद्धेश्वरी के आने मे देर होती देख वह समझने लगी थी कि दोनो किसी प्रकार की बात कर रहे होगे।

जब सिद्धेश्वरी बैठकघर मे आयी तो बूआ ने पूछ लिया, "क्या कह रहा था यह महापुरुष ?"

सिद्धेश्वरी को समझ आया कि बूआ ने उसे महापुरुष कहकर उसके धन-दौलत पर व्यग्य कसा है।

सिद्धेश्वरी को इस प्रकार उस पर व्यग्य कसा जाता सुन सन्तोष हुआ। उसने मुसकराते हुए बैठकर कहा, "उससे तो कोई विशेष बात हुई नही। मै तो उसकी आलीशान मोटरगाडी ही देखती रह गयी थी।"

"तो बहुत बढिया गाडी मे वह आया था ?"

"हा, बूआ। मेरा विचार है कि चालीस-पैतालीस हजार के दाम की अवश्य होगी।"

"सब भाग्य का खेल है।"

"नही, बूआ। इसमे भाग्य कहा से आ गया ? मनुष्य समाज मे यह सम्पत्ति-निर्माण की प्रवृत्ति तो लोभ, मोह और काम की उपज है।"

"हा। परन्तु बेटी, इस प्रवृत्ति की उत्पत्ति ही तो कर्म और सस्कारो का फल होता है। मनुष्य का जन्म, मरण और विवाह पूर्वजन्म के कर्मों के अधीन होता है। इसी कारण एक सैनिक घमासान युद्ध मे जाकर भी बचकर जीवित लौट आता है और एक सामान्य व्यक्ति गद्देदार पलग पर लेटा-लेटा मर जाता है। यही बात जन्म और विवाह की है।"

"और बूआ! तुम्हारे कर्म-फल मे दूसरा विवाह नही था, यह कैसे जानती है आप ? यदि उस समय पिताजी हठ करते तो तुम भी आज चार-पाच बच्चो की मा होती।"

"जैसे तुम्हारे माता-पिताजी हुए थे ? नही बेटी, इन बातो मे किसी

का बस नही। मेरी इच्छा तो प्रथम विवाह के समय भी नही थी, परन्तु उस समय मै अल्पायु थी। साथ ही मेरी एक सहेली सोहनी थी जिसका विवाह हो चुका था और वह मुझे विवाह के रसो का वर्णन करती रहती थी। इस प्रकार मै मौन, ऐसे विवाह-वेदी की ओर धकेली जाती अनुभव करती थी कि मानो बलि का बकरा देवी के दरबार की ओर ले जाया जा रहा हो।

"परन्तु भाग्य की विडम्बना ही तो थी कि सब प्रकार से हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ तुम्हारे फूफा एक दिन चल बसे। वह एक बच्चा छोड गये थे, परन्तु कुछ काल उपरान्त वह भी चल बसा। तुम्हारे पिता तथा माताजी ने मुझे विवाह के लिये कहा था, परन्तु अब मै पन्द्रह वर्ष की बच्ची नही थी और साथ ही एक विधवा होने से अपने विषय मे स्वय निर्णय करने का अधिकार पा चुकी थी। मैने विवाह नही किया।"

"तो बूआ, विवाह मे रस नही आया ?"

बूआ अपनी कुमारी लडकी के सामने विवाहित आनन्द के विषय मे कहने से सकोच करती थी। बूआ को बात करने मे सकोच अनुभव करते हुए देख लडकी हस पडी। उसने पूछा, "बूआ, तुम्हारा विवाह किस सन् मे हुआ था ?"

"सन् उन्नीस सौ सैतीस मे।"

"इसे अब तीस वर्ष व्यतीत हो चुके है। इन तीस वर्षो मे बीस वर्ष तो स्वराज्य काल के है और हमने इस काल मे तीव्र गति से उन्नति की है। सन् उन्नीस सौ चालीस का काल बहुत पीछे रह गया है। हम मीलो आगे को प्रगति कर चुके है। अब देखो, मै विवाह से पहले ही डबल एम० ए० पास कर चुकी हू और ऐसी आशा प्रतीत होती है कि मै दो वर्ष मे पी० एच-डी० की उपाधि प्राप्त कर लूगी। मै कल बोर्ड के सामने 'इण्टरव्यू' के लिये जा रही हूँ।

"बूआ, मै वह सब कुछ जानती हू जो तुम बताने मे सकोच करती हो।"

"तो सुनो ! रस तो आया था। विवाहित जीवन अति रसमय था, परन्तु मेरे मन मे एक अन्य धुन सवार थी। वह विवाह से पूर्व भी थी,

परन्तु उसे प्रकट करने के लिए छोटा मुह और बडी बात प्रतीत होती थी। मैं सासारिक दु खो से छुटकारा पाने की इच्छा करने लगी थी। यह इच्छा विवाह और प्रसव के उपरान्त तो अति प्रबल हो गयी थी। उसी के अधीन मैंने विवाह करने से इनकार किया था।"

"और बूआ! दु खो से छुट्टी मिली है!"

"बहुत अशो मे मिल गयी है। जिन दिनो मै मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी कर रही थी और एक मास्टराइन से पढा करती थी तो मैने अपनी इच्छा उस अध्यापिका को बतायी तो उसने मुझे 'गीता' पढने को कहा।

"परीक्षा के उपरान्त मैंने गीता, पहले केवल हिन्दी मे अनुवाद, तदनन्तर श्लोक और अर्थ सहित खरीदी और बाईस वर्ष से पढ रही हू। ज्यो ज्यो मै उसे पढती हुई मनन करती हू तो मुझे दु.खो से छुटकारा मिलता जाता है।"

सिद्धेश्वरी यह तो जानती थी कि उसकी बूआ नित्य श्रीमद्भगवद्-गीता का पाठ करती है। परन्तु वह इस पाठ को ऐसा ही समझती थी जैसे कि किसी मन्दिर मे बैठा कोई मूर्ति की पूजा करता हो। उसे मूर्ति पूजा निरर्थक प्रतीत होती थी और इसी प्रकार एक-दो सहस्र वर्ष पूर्व रची पुस्तक पढना।

वह न तो परमात्मा के अस्तित्व मे आस्था रखती थी और न ही दु खो से निवृत्ति के लिए परमात्मा की सहायता मे।

उसने मुसकराते हुए पूछ लिया, 'बूआ! यदि तुमको मैं सुई चुभोऊ तो तुम्हे पीडा नही होगी क्या ?"

भगवन्ती हस पडी और बोली, "तुम इतना पढने के उपरान्त भी अभी पाच वर्ष की बच्ची ही प्रतीत होती हो। देखो बेटी, कष्ट दु ख से भिन्न वस्तु है।

"जब तुमको गोद मे लिये हुए मैं घर के पिछवाडे से भागी और पैदल ही जम्मू पहुची थी तब मार्ग मे जो कष्ट हुआ था उसे अब भी स्मरण कर मेरे शरीर मे कपकपी हो उठती है। परन्तु तुमको जीवित यहा दिल्ली ले आ सकने से अति सुख अनुभव हुआ था। मै दो मास मे दिल्ली पहुच पायी थी। दो महीने मे स्नान करने तथा वस्त्र बदलने का अवसर और

स्थान नही मिला था। दिल्ली मे पहुच मेरे पूर्ण शरीर पर जुए रेगने लगी थी। सिर के बाल साधुओ की लटाए हो रही थी। किसी भले व्यक्ति ने बताया कि उस क्वार्टर से एक मुसलमान क्लर्क पाकिस्तान गया है और क्वार्टर खाली पडा है। मैं अभी उसमे ठहर सकती हू। मैने क्वार्टर खाली पडा देखा तो उसमे टिक गयी।

"दो मास की पूर्ण यन्त्रणा मे मुझे कष्ट तो अपरिमित हुआ था, परन्तु जब रात सोने के उपरान्त तुम्हे जीवित अपनी छाती से लगा तुम्हारे हृदय की गति को अनुभव करती थी तो अति सुखी होती थी। उन कष्ट के दिनो मे दु ख तो हुआ ही नही। अपने और तुम्हारे बच जाने पर सुख ही अनुभव होता था।"

"तो दु ख और कष्ट भिन्न-भिन्न भाव है ?"

"तो तुम नही जानती ? इतने वर्ष तक स्कूल-कॉलेज मे क्या पढती रही हो ? तुम परीक्षा के दिनो मे सारी-सारी रात जागकर पुस्तको को पढती थी तो क्या दु ख अनुभव करती थी ?"

सिद्धेश्वरी मनोविज्ञान की स्नातिका होने से यह सब कुछ जानती थी, परन्तु बूआ के ज्ञान की परीक्षा ले रही थी।

साथ ही अति कष्टप्रद स्थिति मे सुख अनुभव करने को वह भ्रम (delusion) मानती थी। कष्ट तो दु ख का बाहरी स्वरूप (outward manifestation) ही मानती थी। जब मनुष्य बाहर और भीतर मे अन्तर मानता है तो वह एक प्रकार की अर्ध चेतनावस्था मे होता है। वह अपने आपको धोखा दे रहा होता है। इस प्रकार मानती हुई कष्टो की निवृत्ति ही दु खो से छुटकारा मानती थी। इस कारण वह यह समझी थी कि बूआ को गीता के पाठ ने एक प्रकार की अर्धमूर्च्छित अवस्था मे कर रखा है और वह उससे मोह मे फसी हुई पूर्ण चेतना को प्राप्त नही हो रही।

इस पर भी वह बूआ के मन की इस अवस्था से भारी लाभ अनुभव कर रही थी। वह कभी-कभी अपनी बूआ के बिना स्थिति की कल्पना करती थी तो समझती थी कि उसके प्रति मोह से उसे भारी लाभ पहुचा है। उसे धुधली-सी स्मृति उस काल की थी जब देश-विभाजन के उपरान्त उसकी

बूआ उसे गोद मे उठाये स्थान-स्थान पर लिये घूम रही थी। उस कष्टमय अवस्था की वर्तमान कॉलेज की प्राध्यापिका की स्थिति से तुलना करती थी तो बूआ की अर्धमूर्च्छित अवस्था से सुख अनुभव करती थी। अब वह बूआ के सरक्षण मे रहती हुई मान और प्रतिष्ठा पाती अनुभव कर रही थी।

परन्तु वह बूआ के भ्रम को निवारण करने के स्थान मिस्टर सिह के विषय मे बात करने लगी।

५

"बूआ, यह भद्र पुरुष कह रहा था कि वह तुम्हारी वार्त्ता से अति प्रभावित हुआ है। क्या कहती रही हो उससे ?"

"कुछ विशेष बात नही हुई। उसने कहा था, 'मा जी ! मै आपसे आपकी लडकी पत्नी के रूप मे मागता हू।' "

"इस पर मैंने कहा, 'लडकी पढी-लिखी है। सज्ञान आयु की है। आप यत्न करिये। यदि वह मान जायेगी तो विवाह हो जायेगा।"

"वह बोला—'मा जी। आपकी स्वीकृति चाहता हू कि मै उसे अपने घर पर ले चलने के लिए राजी कर लूँ।'

'कहाँ है आपका घर ?'

'बिहार मुँगेर जिला के एक देहात मे है। परन्तु भगवान ने साधन दिये है कि भूमण्डल के किसी भी कोने मे घर बना सकता हूँ।'

'तो लडकी को ले जाने के स्थान उसी के साथ रहने क्यो नही आ जाते ?'

"इसमे कुछ भी कठिनाई प्रतीत नही होती, परन्तु विवाह के उपरान्त ही तो आ सकता हू।'

'विवाह के पूर्व भी आ सकते हो। उसके भाई के रूप मे। और यदि वह आपसे विवाह करना मान गयी तो पति के रूप मे आना हो सकेगा।'

'माँ जी !' वह बोला, 'इससे समाज मे मेरी भी और आपकी लडकी

की निन्दा भी हो सकती है ।'

"मैंने कहा था, 'मूर्ख समाज की निन्दा से आप डरते है तो फिर आप ससद का कार्य कैसे कर सकते है ? तब तो आप जीवन भर मूर्ख जनता का आदेश ही पालन करते रहेगे और किसी का भी कल्याण नही कर सकेंगे ।'

"इस पर वह टुकर-टुकर मेरा मुख देखता रह गया । कदाचित् वह इस प्रकार की भर्त्सना की मुझसे आशा नही करता था । उसे चुप देख मैंने कह दिया, 'देखिये, लडकी के विषय मे विवाह का प्रस्ताव लेकर एक अन्य युवक भी इस रविवार मध्याह्न के भोजन के समय आ रहे है। आप भी आ जाइये तो लडकी को निर्णय करने मे सुविधा रहेगी ।"

"पर बूआ ! तुम उनको मेरे लिये प्रतिस्पर्धा करने का निमन्त्रण दे रही हो ?"

"नही, बेटी ! तुम्हारी नीलामी नही कर रही । इसके विपरीत तुम्हारे सामने चुनाव का क्षेत्र विस्तृत कर रही हूँ ।"

"पर यदि उनको पृथक्-पृथक् बुलाती तो क्या अच्छा नही था ? यदि मैंने दोनो को अस्वीकार कर दिया तो दोनो भारी असमजस मे पड जायेंगे । मेरी भी स्थिति अति अस्पृहणीय हो जायेगी । अभी तक तो मैने विवाह न करने का सकल्प किया हुआ है ।"

'देखो बेटी, होगा यह कि दोनो प्रत्याशी आयेंगे और तुम्हे अवसर मिलेगा कि तुम दोनो को देखो, सुनो और फिर अपने मन मे विचार करने के लिए सामग्री सचय कर लो । मैं उनको स्वय उनके यहाँ पहुचकर अपना निर्णय बताने की बात कह दूगी । पीछे जैसा तुम चाहोगी वैसा ही मै इनमे जिसके विषय मे तुम्हारी रुचि हुई, उसको टेलीफोन से अथवा स्वय जाकर बात कर आऊगी ।"

"अधिक सम्भावना तो यही है कि मैं अभी विवाह नही करूगी । मुझे इसकी आवश्यकता अनुभव नही होती । मैं कल अनुसन्धान बोर्ड के सामने उपस्थित होने वाली हू । मुझे पूर्ण आशा है कि मुझे अनुसन्धान करने की स्वीकृति मिल जायेगी । तब दो वर्ष के लिए मेरे पास इतना काम होगा कि मैं विवाह के विषय मे विचार भी नही कर सकूगी ।"

"ठीक है। अनुसन्धान के विषय मे तो तुम्हारी कल पेशी है और विवाह के विषय मे इन भद्र पुरुषो की पेशी परसो है। परसो तुम अधिक निर्णायक स्थिति मे होगी। जैसा तुम कहोगी वैसा ही होगा।"

इस आश्वासन से आश्वस्त हो सिद्धेश्वरी उस दिन की घटना पर विचार करने अपने कमरे मे चली गयी।

वह अपने पलग पर विचार करने लेटी तो सो गयी और उसमे स्वप्न देखने लगी। विचित्र स्वप्न था। इसमे पर्वत, नदी, नाले, सागर, जहाज और मोटरगाडियो की भरमार रही।

वास्तव मे वह अनेकानेक विचारो से ग्रसित थकावट अनुभव करती हुई लेटी तो सो गयी। पीछे नीद खुलने के उपरान्त वह उठ पलग पर बैठी हुई स्वप्नो पर विचार करती रह गयी।

जागने पर वह यह समझी कि उसका मन विवाह के विरुद्ध उतना नही रहा जितना कि मिस्टर सिंह से मिलने के पहले था। वह इसका कारण नही समझी। कभी-कभी वह इसमे कारण उसकी बढिया मोटर गाडी समझती थी। परन्तु इस विचार को अति हीन मान वह उसे मन से निकाल किसी अन्य विषय पर विचार करने लगती थी।

उस दिन और रात उसके मन की यही स्थिति रही। प्रातःकाल वह उठी। स्नानादि से निवृत्त हो वह 'इण्टरव्यू' के विषय मे विचार करने लगी। विषय पर सब प्रकार के प्रश्नो और विषय का इतिहास और उसकी भूमिका पर विचार कर बोर्ड के सदस्यो के सम्मुख अपनी परीक्षा की तैयारी मे लगी रही।

ग्यारह बजे वह विश्वविद्यालय इतिहास कक्ष को चल दी। पौने बारह बजे वह 'इण्टरव्यू' वाले कमरे के बाहर जा पहुची। अभी तक बोर्ड के पाच सदस्यो मे दो ही आये थे। अत वह कमरे के द्वार के बाहर खडी अपने बुलाये जाने की प्रतीक्षा करती रही। साढे बारह बजे एक अन्य सदस्य पहुच गये। अब बहुसख्या मे सदस्य आ जाने पर वह भीतर बुला ली गयी।

एक घटा भर विषय पर वार्तालाप होता रहा और सिद्धेश्वरी ने अपने शोध-लेख की पूर्ण रूपरेखा बता दी। उसने बताया, "मनुष्य पशुओ,

की सन्तान है। इस कारण आदि विचारशील मनुष्य मे अपने पूर्वजो की पशु-वृत्ति उपस्थित थी और नर-मर्दीन का प्रयोग वैसे ही करता रहा जैसे कि पशुओ मे होता है।

"सभ्यता के विकास के साथ-साथ स्त्री का मूल्य बढा। सभ्यता के इस स्तर पर पुरुषो को युद्धो के कारण जनसख्या को स्थिर रखना अत्यावश्यक हो गया। जनो की आवश्यकता बढने के साथ जननी की भी आवश्यकता बढ गयी। तब वह उसे सुन्दर भूषण, वस्त्रो और शृगार-प्रसाधनो से युक्त करने लगा। इस पर भी इसका मुख्य मानवोपयोगी कार्य अधिक से अधिक सन्तान उत्पन्न करना ही रहा।

"मनुष्य अपनी पूर्ण चतुराई और नीति-कुशलता के होने पर भी युद्धो से बच नही सका। इस कारण मानव जाति की परम्परा को चालू रखने के लिए नारी को पुरुप की मूर्खता का दण्ड सन्तान उत्पन्न करने का भोगना पड रहा है।

"बीसवी शताब्दी की तकनीकी उन्नति ने एक ओर तो मानव समाज मे कम से कम जनो से अधिक से अधिक कार्य सम्पन्न करने की क्षमता उत्पन्न कर दी है। इस कारण अब युद्धो मे मरने के लिए कुछ अधिक मानवो की आवश्यकता नही रही। एक एटम बम्ब चलाने वाला सैकडो डिविजन सैनिको का काम कर सकता है। दूसरी ओर जीवन-निर्वाह के लिए भी एक व्यक्ति सहस्रो के लिए अन्न-अनाज उत्पन्न कर सकता है।

"इसके अतिरिक्त प्रकृति ने भी वासनाओ का जाल बिछाकर नारी को मा बनने पर विवश कर रखा था। विज्ञान की प्रकृति पर विजय ने नारी को इस दासता से भी मुक्ति दिला दी है। अब नारी गर्भ धारण करने से मुक्त हो गई है। वह भी अब पुरुषो की भाति निर्भय होकर यौन-क्रियाओ को स्वेच्छा और स्वच्छन्दता से करती हुई जीवन चला सकती है। इस पर भी अभी नारी के उद्धार मे बहुत बाधाए है।

"मेरे अनुसन्धान का विषय नारी के पुरुष और प्रकृति की दासता से उद्धार और उस पूर्ण यात्रा मे नारी के मार्ग मे आने वाली बाधाओ को पार करने के सघर्ष का इतिहास है।"

बोर्ड के सामने सिद्धेश्वरी के अपने विषय की रूपरेखा को सुनकर

बोर्ड के एक सदस्य के मुख से अनायास ही निकल गया, "ब्रेवो।"

सिद्धेश्वरी इस प्रशसा से मुसकरायी और चुप रही। तीनो सदस्यो ने अनुसन्धान करने वाली छात्रा को अपना आशीर्वाद दिया और पूछ लिया, 'आपका गाइड कौन है ?"

"विश्वविद्यालय के साईकॉलोजी विभाग के हैड श्री एम० अश्विनी चैंटियर।"

अन्त मे यह बताया गया कि बोर्ड सिद्धेश्वरी देवी के गाइड से मिलकर अन्तिम निर्णय करेगे।

एक बजकर बीस मिनट पर भेट समाप्त हुई और वह वहा से कॉलेज चली गयी। अपनी हाजिरी लगाकर वह 'स्टाफ रूम' मे पहुची तो वहा मिस खोसला बैठी एक पुस्तक पढ रही थी। सिद्धेश्वरी ने उसके कन्धे पर हाथ रखा तो वह पुस्तक से आखे उठा कन्धे पर हाथ रखने वाले की ओर देखने लगी और बोली, "ओह ! सिद्धेश्वरी, सुनाओ। तुम्हारे अनुसन्धान के विषय मे क्या हुआ ?"

सिद्धेश्वरीने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "आज बोर्ड से 'इण्टरव्यू' हुआ है। मैने अपने अनुसन्धान का विषय वर्णन किया तो बोर्ड अत्यन्त प्रभावित प्रतीत होता था। सब सदस्य कह रहे थे कि विषय अति रोचक और मानव-कल्याण का सूचक है। वे अपने भावो से मुझे मेरे काम की सफलता के लिए आशीर्वाद देते प्रतीत होते थे।"

"तो सब सदस्य उपस्थित थे ?"

"पाच मे से तीन थे। यदि तीनो एकमत हुए तो बहुमत से मुझे अनुसन्धान की स्वीकृति मिल जाएगी।"

"आज मिसेज सेठी कह रही थी कि बोर्ड के दो सदस्यो ने तो तुमसे भेट करने से भी इनकार कर दिया है।"

"मिसेज सेठी यह कैसे जानती है ?"

"मिस्टर चतुर्वेदी उनके पति के गहरे मित्र है। अवश्य उन्होने ही कहा होगा।"

"हा। वह तो आज की मीटिंग मे आए नही थे। मिसेज सेठी से मिलूगी। यदि चतुर्वेदी मिस्टर सेठी के मित्र है तो उनसे घर पर भेट कर

अपनी बात समझाने का यत्न करूगी ।"

मिस खोसला की बात सुन जितना उल्लास उसे 'इण्टरव्यू' से हो रहा था, वह सब ठडा पड गया । इससे उसका चित्त कॉलेज मे ठहरने का नही रहा । वह उठी और मिसेज़ सेठी को ढूढने निकल पडी ।

मिसेज सेठी भी कॉलेज मे प्राध्यापिका थी । वह प्रधानाचार्या से मिलने गयी हुई थी । अत सिद्धेश्वरी प्रधानाचार्या के कमरे के बाहर खडी हो मिसेज सेठी के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगी ।

कुछ ही देर मे प्रधानाचार्या और मिसेज सेठी दोनो बाहर निकली तो प्रधानाचार्या ने सिद्धेश्वरी को बरामदे मे खडे देखा । प्रधानाचार्या ने उसे सम्बोधन कर पूछ लिया, "तो आप आ गयी है ? मैने तो आपको छुट्टी दे रखी थी ।"

"मुझे मिस खोसला से कुछ काम था । इस कारण उससे मिलने के लिए कॉलेज ही आ गयी हू ।"

'तो यहा मुझसे मिलने के लिए खडी थी ?"

"जी, नही । मिसेज सेठी जी से कुछ काम है ।"

मिसेज सेठी समझ गयी कि सिद्धेश्वरी खोसला से मिलकर आ रही है । उसे स्मरण था कि उसने अभी-अभी खोसला को अनुसन्धान बोर्ड के एक सदस्य के विषय मे कुछ कहा है । इससे उसने अनुमान लगा लिया कि मिस खोसला के पेट मे बात नही समायी । इस कारण वह सब बात सिद्धेश्वरी के सम्मुख उगल गयी प्रतीत होती है ।

अत कुछ उद्विग्न मन से उसने प्रधानाचार्या से छुट्टी ली और सिद्धेश्वरी से बोली, "तो आओ, स्टाफ रूम मे चलते है ।"

"मै आपसे पृथक् मे बात करना चाहती हूँ ।" सिद्धेश्वरी ने कह दिया ।

"तो चलो, मेरे घर पर चलो । वहा चाय पीते हुए बात भी कर लेगे । वहा से अधिक पृथकता अन्य कही नही मिलेगी ।"

सिद्धेश्वरी यही तो चाहती थी । अत दोनो मिसेज सेठी के घर को चल पडी ।

मिसेज सेठी का घर राजेन्द्रनगर मे था । दोनो ने कॉलेज के बाहर

से स्कूटर भाडे पर लिया और राजेन्द्रनगर मे जा पहुँची। मिसेज सेठी के दोनो लडके नरेन्द्र और गजेन्द्र एक पब्लिक स्कूल मे पढते थे। वे अपनी स्कूल की बस मे से घर के द्वार पर उतर रहे थे। सिद्धेश्वरी ने बस पर लिखा स्कूल का नाम पढा। वहा 'लाहौर मौण्टिसेरी स्कूल' लिखा था। उसने मिसेज सेठी से पूछा, "तो बच्चे यहा पढते है ?"

सेठी ने कुछ अधिक कहने के स्थान नरेन्द्र को आवाज दे कह दिया, "नरेन्द्र ! बहनजी को नमस्ते करो। यह मेरी कॉलेज मे 'कोलीग' (सहयोगी) है।"

नरेन्द्र और गजेन्द्र दोनो ने हाथ जोड नमस्ते कह दी। गजेन्द्र जो अभी 'इनफैण्ट क्लास' मे पढता था, बोला, "माताजी, मौसी से कहू कि चाय बनेगी ?"

"हा।" मिसेज सेठी ने कोठी के भीतर चलते हुए कह दिया, "यह लडका जानता है कि घर मे कोई मेहमान आये तो चाय पी जायेगी और फिर चाय के साथ कुछ विशेष खाने को बनेगा। यह खाने का चट्टू है।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। वह सेठी के घर पहली बार ही आयी थी। अत वह घर की सजावट और फिर उसमे के फरनीचर को देख रही थी। उसने पूछ लिया, "यह मकान अपना है अथवा भाडे पर लिया है ?"

"अपना है। जब सेठी जी पाकिस्तान से आए थे तो उन्होने यह क्वार्टर उन्नीस सौ रुपये का सरकार से निन्यानवे वर्ष की 'लीज' पर लिया था। पीछे सरकार ने दाम बढाकर साढे तीन हजार कर दिया था। तब सेठी जी का काम कुछ चलने लगा था। उन्होने विवाह किया और फिर घर-गृहस्थी मे भी वृद्धि आरम्भ कर दी। मेरा विवाह हुआ तो नरेन्द्र के पिता ने अपने क्वाटर के बगल वाला क्वार्टर भी ले लिया और तीन वर्ष हुए है, हमने दोनो क्वार्टर मिलाकर यह दो-मजिला मकान बना लिया है। हम नीचे की मजिल पर स्वय रहते है और ऊपर का फ्लैट चार कमरो का हमने चार सौ रुपये महीने पर किराये पर दे रखा है।"

"तो काम मे भी बहुत वृद्धि हुई है ?"

"हा। नरेन्द्र के पिता बताते है कि वह अपनी मा, छोटे भाई और अपनी विधवा मौसी के साथ दिल्ली पहुचे थे। दो दिन और रात स्टेशन

के प्लेटफार्म पर रहे। फिर चादनी चौक मे एक धर्मशाला मे रहे, तदनन्तर पहाडगज मे एक भाडे के मकान मे। इस समय उनको अपनी पाकिस्तान मे रह गयी सम्पत्ति के 'क्लेम' की दस हजार रुपये की रकम स्वीकार हो गयी। उन्होने उसमे से यहा एक क्वार्टर ले लिया और शेष रकम से करोल बाग मे एक दुकान पाच हजार की पगडी पर ले ली।"

इस समय बच्चे भीतर मौसी को चाय के लिए कहने चले गए थे।

'अब भगवान की कृपा है।" मिसेज सेठी ने आगे कहा, "कि मेरे यहाँ आने पर दुकान खूब चल निकली है और घर मे भी यह मकान पचास हजार की लागत से बना लिया है और " मिसेज सेठी मुसकराती हुई सिद्धेश्वरी के मुख को देखती रह गयी।

जब सेठी बात करती-करती रुक गयी तो सिद्धेश्वरी पूछने लगी, "हा, और क्या?"

"मै आपके विचार जानती हू। इस कारण यह समझ कि आपको वह बात रुचिकर नही होगी, विचार करने लगी थी कि बताऊ अथवा नही?"

"तो कुछ बच्चो की बात कहने जा रही थी?"

"हा। तुमने देखा है, दो तो बस मे से उतरे थे। मुझे बहुत प्रिय है। एक लडकी है। यहा सालवान स्कूल मे पढती है। इस समय आठवी श्रेणी मे है और एक अन्य घर मे आने की तैयारी मे है।"

"ओह! तो यह चौथा है? अभी और की भी इच्छा है?"

"पाचो मे परमेश्वर मानती हू। यदि उसकी कृपा रही तो एक के लिए और यत्न करूगी।"

"परन्तु बहनजी!" सिद्धेश्वरी ने हँसते हुए कहा, "यह तो बहुत ही 'अन-सोशल' (असामाजिकता का) कार्य होगा।"

"बात यह है कि आप मनोविज्ञान, यूरोपियन विद्वानो का लिखा-पढी है। दुर्भाग्य यह है कि परीक्षा पास करने के लिये वह पढना पडता है और मै समाजशास्त्र सस्कृत साहित्य मे से पढी हू।

"मै शास्त्री, एम० ए० हू। इस कारण मेरी पहुच दोनो भाषाओ के साहित्य मे है। शास्त्री तो मैंने पजाब लाहौर मे ही कर लिया था। एम० ए० दिल्ली मे आकर किया है। इससे मेरी बुद्धि आपकी बुद्धि से कुछ

विलक्षण हैं।

"माता-पिता जन्म से ब्राह्मण परिवार के है, परन्तु विचार से आर्य-समाजी है। उन्होने मुझे बचपन से ही सस्कृत पढाई। मैं पन्द्रह वर्ष की आयु मे शास्त्री पास कर चुकी थी। फिर यहा आकर मैंने कैम्प कॉलेज मे पहले मैट्रिक, फिर एफ० ए०, बी० ए० और अन्त मे अग्रेजी साहित्य मे एम० ए० किया है।

"मै नौकर तो विवाह के उपरान्त हुई थी।"

इस समय नरेन्द्र और गजेन्द्र दोनो वस्त्र बदल मौसी को साथ लेकर आ गये। उनकी मौसी ट्रे पर चाय का सामान उठाये हुए थी।

जब सामने रखी तिपाई पर सामान लगाया जा रहा था तो सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया, "और नरेन्द्र के पिता कितना पढे है ?"

मिसेज़ सेठी ने मुसकराते हुए कहा, "मुझसे बहुत अधिक पढे प्रतीत होते है। इस पर भी मैंने कभी पूछा नही। मेरे माता-पिता ने, विवाह से पूर्व पूछा होगा। परन्तु न तो उन्होने कभी मुझे बताया था और न ही मैने इनसे कभी पूछा है। एक बात मैं जानती हू कि मै पढी-लिखी हुई भी उनसे कम ज्ञानवान हू।

"उनके ज्ञान का एक लक्षण तो तुम यह देख ही रही हो। यह मकान अति सुन्दर और सुखप्रद बनवाया है। साथ ही वह घर का सब व्यय और मेरा पॉकेट व्यय तक वह ही देते है। मेरा पूरा वेतन प्रति मास बैंक मे जाता है।"

"तब तो आप बहुत धनी हो गयी होगी ?"

"हा। अच्छी-खासी धनवान हू। नरेन्द्र के पिता नगर के प्राय पढे-लिखे लोगो से मेल-जोल रखते है। कवियो और साहित्यकारो से उनका विशेष अनुराग है। हमारे घर मे मास मे एक बार विद्वानो का समारोह भी हुआ करता है। यह प्राय महीने के अन्तिम रविवार को हुआ करता है।

"नरेन्द्र के पिता जी की इस रुचि को देख मुझे ऐसा अनुभव होता है कि उनका ज्ञान मुझसे बहुत अधिक है। वह स्वय भी कविता करते है और साहित्यिक विषयो पर बहुत जानकारी रखते है।"

चाय पी जा रही थी। अब मिसेज सेठी ने पूछ लिया, "सिद्धेश्वरी जी, आप मुझसे कुछ बात करने आयी है न ?"

"हा। वह बच्चो से पृथक मे करूगी।"

"ठीक है।" उसने नरेन्द्र-गजेन्द्र को कह दिया, "देखो, तुम्हे अब अपना स्कूल का काम करना चाहिए।"

दोनो बच्चे उठे और अपने कमरे मे चले गये। सिद्धेश्वरी को बच्चो को इस प्रकार मा का कहना मानते देख विस्मय हुआ था। परन्तु उसने अपने मतलब की बात कहनी उचित समझी। उसने कहा, "मिस खोसला बता रही थी कि मिस्टर सेठीजी का परिचय चतुर्वेदीजी से है और उन्होने मेरे विषय मे कुछ सेठी जी से कहा है।"

"हा। यद्यपि यह बात आपको बताने की नही थी, परन्तु खोसला को अजीर्ण का रोग प्रतीत होता है जो उसके पेट मे कोई बात पचती नही। अब आपको पता चल गया है तो मै बताती हूँ कि वह कह रहे थे कि उन्होने बोर्ड के अध्यक्ष को लिखा है कि तुम्हारे अन्वेषण को वह न केवल व्यर्थ का प्रयास मानते है, वरच कुतर्क के लिए निमन्त्रण भी समझते है। उन्होने बोर्ड को लिख दिया है कि छात्रा को कह देना चाहिये कि अपने जीवन का अनमोल समय किसी उपकारी काम मे लगाये।"

सिद्धेश्वरी भौचक्की हो मिसेज सेठी का मुख देखती रह गयी। कुछ देर मौन रह अपने विचारो को सुव्यवस्थित कर बोली, "मेरी चतुर्वेदीजी से भेट करा दे तो मैं अपने विषय की व्याख्या उनके सामने करना चाहती हू।"

"यह कोई कठिन बात नही। शर्त केवल यह है कि वह 'इण्टरव्यू' पूर्ण रूप मे गुप्त होगा और उसका कोई प्रमाण अथवा साक्षी नही होना चाहिए।"

"पर आप तो बैठ-सुन सकती है ?"

"हा, यदि प्रोफेसर साहब चाहे तो। इस पर भी यदि कही किसी ने इस भेट की मुखबरी कर दी तो मैं सर्वथा झूठ बोल दूंगी कि भेट नही हुई।"

"हा। जब भेट गुप्त होगी तो यह होगा ही।"

"परन्तु चतुर्वेदी जी बनारस गये हुए है। जब आयेगे तो आपको उनसे पूछकर बता सकूगी।"

सिद्धेश्वरी जानती थी कि उसके अनुसन्धान का मामला पिछले छ मास से लटक रहा है। इस कारण कुछ दिन की और देर से कुछ हानि नही होने वाली। इस कारण चुप रहो।

६

सिद्धेश्वरी मिसेज़ सेठी का मकान और बच्चे देख अति प्रसन्न हुई थी। सेठी की लडकी के दर्शन नही हुए थे। वह उस समय स्कूल गयी हुई थी। मौण्टिसेरी स्कूल मे तो शनिवार को दो बजे ही छुट्टी हो जाती थी, इस कारण लडके तो घर आ गये थे, परन्तु लडकी को सप्ताह के छहो दिन चार बजे ही छुट्टी होती थी।

इस पर भी उसे कुछ ऐसा समझ आया था कि जिस प्राध्यापिका की वह एक गाय से तुलना किया करती थी, वह तो समृद्ध और अति सभ्य तथा बुद्धिशील प्रतीत हुई थी।

वह विस्मय कर रही थी कि क्या सत्य ही मिस्टर सेठी की शिक्षा के विषय मे उसकी पत्नी नही जानती अथवा जान-बूझकर वह बहाना बना गयी है जिससे कि उसे मुख से बताना न पडे कि मिस्टर सेठी आठवी-दसवी श्रेणी तक पढे है। वह मन ही मन कल्पना करने लगी थी कि मिस्टर सेठी की योग्यता अवश्य काली कमाई करने मे होगी जो दस सहस्र की पूजी से खा-पीकर भी, लाख रुपये से अधिक की सम्पत्ति एकत्रित कर ली है।

वह घर लौटती हुई विचार कर रही थी कि मिसेज सेठी सस्कृत पढी है। इस कारण उसके विचारो मे और एक इतिहास तथा आधुनिक मनोविज्ञान की स्नातकोत्तर पढाई की हुई मे अन्तर तो होना ही चाहिये। वह उसे अपने से बहुत पिछडा हुआ प्राणी ही समझ सकी थी। वह मन मे कल्पना कर रही थी कि वह अतीतकाल के विचारो से ओत-प्रोत उससे

सहस्रो मील पीछे अन्धकार मे भटक रही है और वह स्वय तो सहस्रो मील की यात्रा कर एक प्रकाशमय युग मे विचर रही है।

इस प्रकार के विचारो से मन मे गर्व करती हुई वह पैदल ही अपने घर जा रही थी। फुटपाथ पर चलते हुए उसे सामने से सर्वथा श्वेत क्रीम रग की शिवर्ले गाडी आती दिखायी दी। उसे समझ आया कि यह मिस्टर सिह की है। वह देखना चाहती थी कि गाडी कौन चला रहा है। इससे उसके मन मे उठे विचार की पुष्टि हो सकती थी। परन्तु उसके ध्यानपूर्वक गाडी की ओर देखने से गाडीवाले को समझ आया कि वह उससे कुछ बात करना चाहती है। इससे उसने गाडी सिद्धेश्वरी के नजदीक खडी कर दी।

गाडी मिस्टर के० के० सिह की ही थी। उसने गाडी खडी कर झुककर गाडी की खिडकी मे से सिद्धेश्वरी की ओर देखते हुए पूछ लिया, "किधर से आ रही है ? आपका कॉलेज तो दूसरी ओर है।"

"मै एक सखी के घर गयी थी। वहा से लौट रही हू।"

"तो आइये, मैं आपको घर पर पहुचा दू।"

"नही, आप क्यो कष्ट करेगे ?"

"आइये। कष्ट कुछ नही होगा। थोडा-सा पेट्रोल ही फुकेगा। और मै तो आप पर इससे लाखो गुना अधिक व्यय करने की योजना बना रहा हूँ।"

"ओह!" सिद्धेश्वरी गाडी मे बैठने के प्रलोभन को सयम मे नही रख सकी।

उसने गाडी मे अगली सीट पर बैठते हुए कहा, "आप इधर कहा आये थे ?"

"आया था इधर एक अन्य विवाह करने की इच्छुक लडकी के पिता से मिलने। किसी कॉलेज की ही एक मिस खोसला है। उसके पिता ने अपना पता साउथ पटेलनगर लिखा था। वहा पहुचने पर पता चला है कि श्रीमान अभी अपने कार्यालय से नही लौटे। मै अपना कार्ड वहा छोड आया हू और वहा एक प्रौढावस्था की स्त्री से बातचीत कर आया हू। सम्भवत वह मिसेज खोसला प्रतीत होती थी।"

"और आपको मिस खोसला नही मिली ?"

'नही। वह कॉलेज से नही लौटी थी। उस प्रौढावस्था की स्त्री के पूछने पर मैंने अपना काम बता दिया तो वह मुझमे रुचि प्रकट करने लगी। उन्होने बताया कि मिस्टर खोसला पाच बजे के उपरान्त कार्यालय से आते है। लडकी तो अभी आने ही वाली है। मै उनसे छ बजे पुन आने के लिए कहकर दो घटे कही व्यतीत करने का विचार कर रहा था कि आप मिल गयी है। इस समय का सदुपयोग करने के विचार से ही आपको घर पहुचाने का प्रस्ताव किया है। यदि घर पर आपकी बूआ हुई तो उनकी शिक्षाप्रद बाते सुनने का भी अवसर मिलेगा।"

"परन्तु उन्होने तो आपको रविवार को आने को कहा है ?"

"हा। परन्तु पहले न आने की बात नही कही थी। देखिये, मेरा विचार है कि यदि आप स्वीकृति दे तो थोडी मिठाई और नमकीन यहा से मोल लेता चलू ?"

"किसलिए ?" सिह गाडी को साउथ पटेलनगर की मार्केट की ओर ले जा रहा था। वे सनातन धर्म मन्दिर वाली सडक पीछे छोड आये थे।

सिह ने कहा, "क्या जाने आपकी बूआ आज भी फल लायी हो अथवा नही ?"

"वह अवश्य लायी होगी। और फिर घर पर मिठाई तो रखी ही है।"

"पर आज मै अपनी रुचि की ले चलना चाहता हू।"

इस समय मोटर एक हलवाई की दुकान के सामने खडी हो गयी। सिह नीचे उतर हलवाई की दुकान से मिठाई चयन करने लगा तो सिद्धेश्वरी भी उसके पास ही आ खडी हुई। दुकानदार सिद्धेश्वरी को जानता था। इस कारण हाथ जोड नमस्ते कर कहने लगा, "आपकी माता जी अभी-अभी आयी थी और तीन-चार किलो मिठाई ले गयी है। उनकी बास्केट मे बहुत से फल भी थे।"

सिह ने मुसकराकर कह दिया, "वह कल की दावत का प्रबन्ध कर रही प्रतीत होती है।"

सिह ने तो केवल एक किलो मिठाई ली। साथ ही कुछ नमकीन ले ली।

दाम सिंह ने ही दिया और दोनो गाडी मे बैठ सनातन धर्म मन्दिर की ओर लौट पड़े।

गाडी मकान के नीचे खडी कर सिंह ने कहा, "देखिये, आपकी बूआ घर पर है अथवा नही ?"

सिद्धेश्वरी लपककर ऊपर गयी और तुरन्त लौट आयी। उसने कहा, "बूआ तो घर पर है नही। सम्भवत वह अभी मार्केट से लौटी नही। हम आगे निकल आये है।"

"अच्छा, ऐसा करिये, गाडी मे बैठ जाइये। मै आपको थोडा गाडी मे घुमा लाता हू और उनके लौटने पर यहा आयेंगे।"

"व्यर्थ मे पेट्रोल फूकने से क्या लाभ होगा ? आइये, ऊपर चलकर बैठिये। बूआ आती ही होगी।"

'नही। आज बात " वह आगे कह नही सका। दूर से भगवन्ती-देवी एक झल्लीवाले के साथ आती दिखायी दी। झल्लीवाले के सिर पर कुछ सामान लदा था।

सिंह ने कहा, "वह देखो, आपकी बूआ जी आ रही है।"

सिद्धेश्वरी उधर ही देखने लगी जिधर से उसकी बूआ आ रही थी। दोनो गाडी के बाहर समीप ही खडे थे।

भगवन्ती देवी आयी तो दोनो को वहा खडा देख विस्मय करने लगी। उसने आते ही पूछा, "यहा सडक के किनारे खडे क्या कर रहे है ! इन्हे ऊपर क्यो नही ले गयी ?" बूआ ने सिद्धेश्वरी को सम्बोधन कर कह दिया।

"यह कल की भाति आज एक अन्य लडकी के पिता से मिलने आये थे। वह घर पर मिले नही। इस कारण सडक पर मटरगश्ती कर रहे थे। मै अपनी एक सखी के घर से आ रही थी कि यह मिल गये और समय गुजारने के लिए आपसे बातचीत करने के लोभ मे यहा चले आये है।

"बूआ, आप घर पर थी नही। इस कारण यह कह रहे थे कि थोडा और सडक नाप आए तब तक आप आ जायेगी।"

"अच्छा। अब पेट्रोल फूकने की आवश्यकता नही। चलो ऊपर, चाय यहाँ ही पी ले और लडकियो के माता-पिता से भेट पीछे हो सकेगी।"

सिद्धेश्वरी लपककर ऊपर चढ गयी थी। झल्लीवाला सामान उठाये लडकी के साथ मकान पर चढ गया। मिस्टर सिह ने मिठाई और नमकीन के डिब्बे गाडी मे से निकाले और गाडी को ताला लगा भगवन्ती के साथ ऊपर जाने की सीढिया चढने लगा तो भगवन्ती ने पूछ लिया, "यह क्या उठा लाये है ?"

"मुझे सन्देह था कि आप घर पर नही होगी। अत. कही आपकी घर पर प्रतीक्षा करनी पडी तो सिद्धेश्वरी जी से बैठकर चाय लूगा।"

"और यह सडक पर खडे-खडे होने वाला था ?"

सिह मुसकराया और बोला, "माताजी ! यह बात नही। मै देख रहा था कि सिद्धेश्वरी जी ऊपर आने का निमन्त्रण देती है अथवा नही। वह निमन्त्रण देने ही वाली प्रतीत हो रही थी कि आप आती दिखायी दे गयी।"

दोनो बैठकघर मे बैठ गये थे। सिद्धेश्वरी ने सामान रसोईघर मे रखवा लिया और झल्लीवाले को विदा कर दिया।

सिह को सोफा पर बैठा भगवन्ती पूछ रही थी, "और उस दूसरी लडकी का मकान कहां है ?"

"यही साउथ पटेलनगर मे ही है।"

"और कितनी अर्जिया आयी है आपके विज्ञापन के प्रतिकार मे ?"

अर्जियो की बात सुन सिह हस रहा था कि सिद्धेश्वरी झल्लीवाले को विदा कर बूआ के सामने आ खडी हुई। बूआ ने कह दिया, "चाय बनाने रख दो और ··"

आगे मिस्टर सिंह ने कहा, "और आज यह मिठाई और नमकीन साथ लाना।" इतना कह उसने हाथ मे पकडा डिब्बा आगे कर दिया।

भगवन्ती ने मुसकराते हुए कहा, "यह आप उस दूसरी लडकी के घर ले जाना। मै यहा के लिये बहुत कुछ ले आयी हू।"

"वह कल के लिए रहने दीजिये। कल भी तो मै आने वाला हू।"

"यह भी तो हो सकता है कि आपको आज वाली लडकी अधिक रुचिकर समझ आये और कल इस घर तक आने का कष्ट न करना पडे।"

"वह तो आपने पहले ही कह रखा है कि मै आपका पुत्र और

सिद्धेश्वरी जी का भाई बन यहा आ ही सकता हू ।"

"हा । यदि कल किसी अन्य मुलाकात करने वाली के घर न जाना पडा ।"

सिद्धेश्वरी रसोईघर मे चली गयी । सिह बता रहा था, "वैसे तो एक दिन के विज्ञापन के उत्तर मे पाच प्रस्ताव आ चुके है । कदाचित् कुछ और भी आए । इन पाच मे मैने दो ही का चयन किया था । एक सिद्धेश्वरी देवी और दूसरी एक मिस खोसला है । वह भी किसी कालेज मे प्राध्यापिका है । एक प्राध्यापिका से भेट कल हो गयी थी और दूसरी से आज करने गया था । वहा एक स्त्री के दर्शन हुए है जो सम्भवत प्राध्यापिका जी की मा थी । उन्होने बताया था कि देवी जी के पिता जी पॉच बजे के उपरात आते है । मै छ बजे का समय दे दो-ढाई घटे कही व्यतीत करना चाहता था । इतने मे सिद्धेश्वरी जी राजेन्द्रनगर की ओर से आती मिल गयी । आपसे कुछ और शिक्षा ग्रहण करने चला आया हू ।"

भगवन्ती ने मुसकराते हुए कह दिया, "मै तो कुछ पढी-लिखी नही । अत मै एक ससद सदस्य को क्या शिक्षा दे सकती हू ?"

"वैसे तो जिसे आजकल शिक्षा कहते है, उससे मै भी वचित ही हू । मै घर पर ही एक अध्यापक जी से पढा हू । किसी स्कूल, कॉलेज की परीक्षा पास नही की । परन्तु माता जी, मैं अपने को लाखो देशवासियो से अधिक शिक्षित समझता हू । यदि ऐसा न होता तो भला मै इतने अधिक मत लेकर कैसे ससद सदस्य बन जाता ?"

"इस निर्वाचन मे मै अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी से पौने दो लाख अधिक मत लेकर निर्वाचित हुआ हू । उनको पचपन हज़ार मत मिले है । वह भी काग्रेस का पूरा बल उनके साथ था, तब । अन्य प्रत्याशियो की तो ज़मानत भी ज़ब्त हो गयी है ।"

भगवन्ती विस्मय मे मुख देखती रह गयी । एकाएक उसने पूछ लिया, "आपके मास्टर जी ने क्या पढाया था आपको, कि आप लाखो को मूर्ख बना सके है ?"

मिस्टर सिह हस पडा । हसते हुए बोला, "माता जी ! मै इसे इस प्रकार मानता हू कि मेरे मास्टर जी ने मुझे एक ऐसा जादू सिखाया है कि

मैं दूसरे जादूगरो का जादू उतारने मे सफल हो जाता हू ।"

"और अपना जादू चढा देते है ?"

"यह भी कहा जा सकता है, परन्तु एक जादू के सिर पर रहते दूसरा जादू नही चढाया जा सकता। इस कारण पहले जनता का मस्तिष्क पूर्व नशे से मुक्त करना ही होता है, तब अपना नशा चढा सका हूँ ।"

"मेरे अध्यापक महोदय ने पहला काम करने मे मुझे कुशल बनाया है। वह सम्पन्न होने पर दूसरा काम तो सुगम ही है।

"देखिये, माता जी ! दोनो कार्यो को करने मे विशेष रूप मे पहले नार्य को करने मे मुझे बहुत धन व्यय करना पडता है। धन का अभाव धन से ही उतरता है। वह मै पहले उतारता हू। पीछे परमात्मा के आशीर्वाद से अपना रग उन पर चढाता हू ।

"मेरे मास्टर जी ने कहा कि भगवान् विष्णु एक महान लोकपाल थे। वह अपना लोकपाल का कार्य न कर सकते, यदि दैत्यो की पालिता लक्ष्मी उनकी भार्या बनना स्वीकार न कर लेती। उस लक्ष्मी के भरोसे से ही वह दैत्यो और देवताओ, दोनो मे मान-प्रतिष्ठा और पूजा के योग्य हुए थे।

"अत लक्ष्मी को मैने वरा है और उसके प्रयोग से मैने दैत्य, दानवो और देवताओ मे प्रतिष्ठा उपलब्ध की है। यह तीसरा निर्वाचन मैने अपने मास्टर जी की शिक्षा का लाभ उठाते हुए ही जीता है।"

'परन्तु बेटा ! रिश्वत देकर वोट प्राप्त करना तो महा पाप है।"

"मै इस प्रकार नही समझता। लोग धन, मान, प्रतिष्ठा और पदवियाँ पाने के इच्छुक काग्रेस के पीछे भागे जा रहे है। मैने उनको उनकी सब इच्छित वस्तुए बिना उनके अपने को वेचने के उपलब्ध कराने का यत्न किया है और फिर वहा से मिलने वाली रिश्वत की परछाई दूर कर दी है। मै इसको इतना ही पुण्य-कार्य समझता हू जितना किसी निर्धन अबला को पेट भरने के लिए अपने को किसी धनी के पास वेचने के हेतु उसको धन देकर उसके पेट भरने का प्रबन्ध करना है।

"मुझे वे मत देते है अथवा नही देते, यह धन के अतिरिक्त दूसरी बात है। उसके लिए धन नही, वरच प्रेरणा देता हू। माता जी, आप विस्मय करेगी कि धन तो मैं उनको भी देता हू जिनके विषय मे मुझे

विश्वास होता है कि वह मत कांग्रेस को दे रहे है। उनके मस्तिष्क मे एक फफूद जमी होती है। वह मेरी बातो से नही उतरती। कारण यह कि कांग्रेस ने अपने दीर्घ काल के प्रचार से यह जमायी होती है।"

७

भगवन्ती राजनीति को इतनी गहराई तक नही समझती थी। इस कारण वह अभी सिंह की बातो को समझ ही रही थी कि सिद्धेश्वरी चाय का सामान ट्रे मे लगाये हुए आ गयी। आज उसने सामान को वैसे पटक-कर तिपाई पर नही रखा जैसे पहले दिन रखा था। साथ ही सामान ढग से प्लेटो मे सजाया था। इस रखने मे अन्तर को सिंह ने भी अनुभव किया। उसने मुसकराते हुए कहा, "अब तो सिद्धेश्वरी देवी सरस्वती देवी के सौम्य भाव मे प्रतीत होती है।"

"तो पहले कुछ और थी ?"

"कुछ कहू तो देवी जी नाराज भी हो सकती है। इस पर भी जब माता जी ने पूछा है और आज 'मूड' कुछ ठीक प्रतीत होता है तो कहता हू। कल दुर्गा भवानी कोप मे प्रतीत होती थी।"

"पर क्यो ?" भगवन्ती को स्मरण आ गया था कि पहले दिन फल और सैण्डविचेस प्लेट मे ऐसे रखे थे कि मानो कूडा-कर्कट बटोरकर ले आयी हो। साथ ही प्लेट को खट से तिपाई पर रखने का शब्द उसने भी सुना था। भगवन्ती का विचार था कि सिंह ने कुछ कहा है और लडकी को नाराज कर दिया है। इसी कारण उसने उसे कहा था कि अब वह लडकी से कुछ न कहे। उसने आज सब सामान ढग से सजाकर लाया गया देखा था। इसी कारण उसने पूछा था कि कल वाला व्यवहार क्यो था ?

सिंह ने यह कहकर बात टाल दी, "देवी-देवताओ की प्रसन्नता और कोप का कारण हम निम्न कोटि के मानव जान नही सकते। यह तो देवी जी ही बता सकती है कि कल क्या अपराध हो गया था और आज उस अपराध का निवारण किस प्रकार हुआ है ?"

"अच्छी बात। यह मै सिद्धेश्वरी से ही आपकी अनुपस्थिति मे पता करूगी।"

जब सिद्धेश्वरी सामने स्टूल पर बैठ चाय बनाने लगी तो भगवन्ती ने मुसकराते हुए कह दिया, "मिस्टर सिह के विज्ञापन पर तुम्हारी सहेली सुधा खोसला के पिता ने भी इनको लिखा प्रतीत होता है।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए उसने कहा, "मुझे यह विदित है। यह मिस्टर खोसला से ही मिलने के लिए आये हुए है।"

"ओह ! तब तो बात गम्भीर प्रतीत होती है। दो शिकारियो ने एक सिह को फासने का योजनाबद्ध प्रयास किया है। दोनो ने सिह के दोनो मार्गों पर जाल बिछा रखा है और ये सिह को फासे बिना छोडेगे नही।"

"परन्तु यदि आपको नही फसना तो अन्य मार्ग भी तो खुले है। आप उधर को मुख कर सकते है।" सिद्धेश्वरी ने मुसकराते हुए पूछा, "कितने उत्तर आ चुके है आपके विज्ञापन के ?"

"मै बताऊगा नही। शिकारी उनसे भी षड्यन्त्र कर सकते है।"

भगवन्ती ने बात बदल दी। उसने कहा, "यह कहते है कि इन्होने किसी भी स्कूल-कॉलेज की परीक्षा पास नही की।"

"बूआ ! इस पर भी यह किसी योग्य अध्यापक के पढाये-लिखाये प्रतीत होते है; अन्यथा देश की चोटी की सभा का सदस्य बन सकना सम्भव न हो सकता।"

"हा, यह तो इन्होने भी बताया है। किसी अध्यापक से घर पर ही पढे है। उस अध्यापक ने इनको पढाया है कि निर्धनो को धन देना उनको अपने को सस्ते दाम पर बिकने से बचाना है। अत दान की बहुत महिमा मानते है।"

"बहुत अच्छे मास्टर प्रतीत होते है। क्या नाम था उनका भाई साहब ?"

"भाई साहब ?"

"हाँ। यदि मिस खोसला मिसेज़ सिंह बन सकी तो भाई से जीजा जी बन जायेगे।"

"परन्तु देवी जी ! मै तो अभी आपके जाल मे ही फसने के लिए

उत्सुक प्रतीत होता हूँ। इसी कारण आपका मुझे भाई साहब कहकर सम्बोधन करना कानो मे रटक उत्पन्न कर रहा है।"

भगवन्ती ने इस वाद-विवाद को बढने से रोक कह दिया, "विवाह से पूर्व ससार की सब बडी आयु की स्त्रिया मा और बराबर की युवतिया बहन ही होती है। आयु मे छोटी बेटी भी कही जा सकती है। विवाह के उपरान्त उनमे से ही एक पत्नी बन जाती है। यही लोक प्रथा है। यदि ऐसा न माने तो घोर अव्यवस्था उत्पन्न हो जायेगी।"

"इस रूप मे मै देवी जी के इस सम्बोधन को स्वीकार करता हूँ। मै आजकल के कालेज के छात्र-छात्राओ के व्यवहार को पसन्द नही करता जो अपना जीवन-साथी ढूँढते हुए ससार के सब प्राणियो को पति-पत्नी पद का प्रत्याशी मानते है।"

"परन्तु मैने तो आपके विषय मे ऐसी किसी भावना का सकेत नही दिया।"

"हाँ। आप आज के युवक-युवतियो से कुछ विलक्षण अनुभव हुई है। इसी कारण आज अनामन्त्रित चाय लेने चला आया हूँ।"

"आप मिस खोसला से मिल ले। मेरी शुभ कामना आपके साथ है। साथ ही वह आपकी गृह-रूपी फुलवारी मे अति सुन्दर पुष्प प्रदान करने की इच्छा रखती है।"

"मैं कामना और स्पृहा रहित व्यक्तियो की गतिविधियो मे अधिक रुचि रखता हूँ। निष्काम भाव से जीवन चलाने वालो को कर्मयोगी कहा गया है।"

सिद्धेश्वरी इस एक ही वाक्य मे तीन-चार पारिभाषिक शब्दो के प्रयोग से सिह का मुख देखने लगी। सिह मुस्कराता हुआ चाय की चुस्की लगा रहा था। जब उसने सिद्धेश्वरी के मुख पर प्रश्नभरी मुद्रा देखी तो कह दिया, "देवी जी समझी नही। यह कुछ गूढ विषय है। इसे मै एक दिन समझाऊँगा।"

इस प्रकार नोक-झोक होते-होते साढे पाँच बज गये। सिद्धेश्वरी ने घडी मे समय देख कहा, "अब आपको जाना चाहिये। सखी सुधा और उनके पिता जी आपकी प्रतीक्षा कर रहे होगे।"

सिंह ने भी अपनी घडी मे समय देखा और उठ खडा हुआ। उसने कहा, "अच्छी बात है। कल बारह बजे भोजन करने आऊँगा।"

"हाँ।" उत्तर भगवन्ती ने दिया, "मै आपकी प्रतीक्षा करूगी।"

जब सिह चला गया तो भगवन्ती ने सिद्धेश्वरी को समीप बैठाकर कहा, "मै चाहती हूँ कि तुम कल दूसरे लडके को भी देख लो और तब किसी प्रकार की इच्छा व्यक्त करो।"

"पर, बूआ, मैंने अभी विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है। मेरा जीवन कार्य मुझे किसी दूसरे क्षेत्र मे आमन्त्रित कर रहा है।"

"किस क्षेत्र मे आमन्त्रित कर रहा है?"

"मै आज अनुसन्धान बोर्ड के सम्मुख 'इण्टरव्यू' देने गयी थी। मै वहाँ से आशा से भरी हुई आयी हूँ। मैने अपने अनुसधान के विषय का बोर्ड के सम्मुख निरूपण किया तो सब सदस्य पुरुप होते हुए भी मेरे विवेचन से अति प्रभावित हुए थे। मेरी विषय की पूर्ण विवेचना पुरुष वर्ग के नारी पर अत्याचार की एक लम्बी कथा थी। वे मेरे कथन पर मनोद्‌गार से भरकर मुझे मेरे कार्य पर आशीर्वाद देते प्रतीत हुए थे।

"एक के मुख से तो अकस्मात् 'ब्रैवो' शब्द निकल गया था।"

"वह कोई मूर्ख पुरुष प्रतीत होता है।"

"इसमे क्या मूर्खता है?"

"तुम बताओ, तुम्हारी इच्छा पुरुष-सगत की होती है अथवा नही?"

"बूआ! सगत कई प्रकार की होती है। तुम किस प्रकार की सगत की बात कहती हो?"

"तुम निपट मूर्ख हो अथवा मुझे मूर्ख बना रही हो। चौबीस वर्ष की युवती होकर मुझसे पूछती हो कि पुरुष की सगत के क्या अर्थ है?"

"पर, बूआ, मेरे अनुसधान-कार्य मे मेरे गाइड एक पुरुप है। वह विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञान विभाग के हैड है। अब यह भी तो एक प्रकार की सगत ही है।"

"तो तुम इसे पुरुष-स्त्री की सगत का नाम देती हो? तभी तो कहा है कि तुम मूर्ख प्रतीत होती हो। यह एक अध्यापक और छात्रा की सगत कहलाती है। वह पुरुष न हो स्त्री भी हो सकती थी और तुम एक लडकी

न हो लडका भी हो सकती थी। दोनो के सम्बन्धो मे अन्तर नही होने वाला था।"

सिद्धेश्वरी देख रही थी कि बूआ उद्विग्न हो उठी है। ऐसे भावावेश मे उसने उसे कभी नही देखा था। वह सदा सौम्य भाव मे ही रहती थी। बूआ के माथे पर त्योरी देख उसने बूआ को शान्त करने के लिये कह दिया, "बूआ, नाराज हो गयी हो ?"

"तुम पर नही। तुम्हे शिक्षा देने वालो पर और तुम्हारी शिक्षा पद्धति पर। तुम्हारे अमूल्य जीवन के बीस वर्ष इस शिक्षा को प्राप्त करने मे व्यय हो गये। मेरे गाढे पसीने की कमाई के सहस्रो रुपये इस शिक्षा पर व्यय हो गये और तुम शब्दो के अर्थ भी अभी नही समझती।"

"बूआ। समझती हू। इसे आजकल की भाषा मे यौन-सम्बन्ध कहते है। पुरुष-स्त्री सम्बन्ध नही।" सिद्धेश्वरी ने समझा था कि वह अपनी अल्प शिक्षित बूआ को उच्च शिक्षा का रहस्य बताने जा रही है।

बूआ के माथे से त्योरी उतर गयी और उसने कहा, "तो मेरा अनुमान ठीक ही है कि तुमने न केवल मेरे सहस्रो रुपये इस शिक्षा प्राप्त करने मे व्यर्थ गवाये है, वरच अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग भी नाली मे वहा दिया है।

"यह बताओ, तुम विश्वविद्यालय मे पढती हुई जिन-जिन अध्यापको से पढती रही हो, उनमे पुरुष भाव रखती रही हो अथवा एक अध्यापक मात्र का ?

"देखो, इसको अग्रेजी मे कहते है 'बीटिंग अबाउट दि बुश।' (शाय-बाय बात करना)। यह बताओ कि तुम्हारी ईच्छा यौन-सम्बन्ध की होती है अथवा नही ?"

अब सीधा उत्तर देने पर विवश हो वह बोली, "बूआ। होती तो है। परन्तु वह इच्छा जीवन भर किसी पुरुष से बध जाने के अतिरिक्त भी तो पूरी हो सकती है।"

'ठीक है। हो सकती है। अनेक है जो ऐसा करती फिरती है। परन्तु इसके दुष्परिणामो को तुम नही देखती और मैं देखती हू। ये परिणाम न केवल मनोवैज्ञानिक है, वरच शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक भी है।"

"शारीरिक तो सयम से रहने पर पार पाये जा सकते है। आर्थिक परिणाम अब नही रहे। मै बहुत से पुरुषो से अधिक धन उत्पन्न कर रही हू। एक-आध पुरुष की पालना अपनी आय से कर सकती हू। सामाजिक दुष्परिणाम भी नि शेष किये जा रहे है। समाज को अब बच्चो की उतनी आवश्यकता नही रही जितनी कि पचास-साठ वर्ष पूर्व थी।"

बूआ इन सब बातो पर मनन कर चुकी थी और इन बातो के महत्व, परन्तु इन युक्तियो की व्यर्थता के विषय मे समझ चुकी थी। उसने अपनी अबोध भतीजी को समझाया, "अच्छा, यह बताओ कि भोजन स्वादिष्ट हो तो खाना चाहिये न ?"

"और यदि उसके खाने से पेट मे विकार हो तो उसको पचाने के लिये ओषधिया पता की जा चुकी है।"

"हा। चूर्ण आसव अरिष्ट इस काम के लिये आविष्कार किये जा चुके है।"

"और कभी इनसे भी पेट की पीडा न हटे तो जुलाब की औषधिया भी है।"

"हा।"

"और दुनिया मे मिठाइया अनेक है। हलवाई भी नगर मे बहुत है और मिठाइया स्वादिष्ट भी होती है।"

"तो इससे क्या सिद्ध हुआ ?"

"सिद्ध यह हुआ है कि नित्य नये हलवाई की दुकान से मिठाई खाया करो, नित्य नयी स्वादिष्ट मिठाई का रस पान किया करो। फिर अनेको चूर्ण और हाजमे की दवाइया भी बाजार मे बिकती है। उनको प्रयोग कर लिया करो। कभी चूर्णादि प्रभाव न उत्पन्न करे तो जुलाब ले लिया करो।

"और निश्चय जानो कि पाच-दस वर्ष मे ही सग्रहणी जैसे भयकर रोग से पीडित जीवन-कार्य समाप्त करने से पूर्व परलोक गमन कर जाओगी।

"देखती नही हो कि नित्य हृदय की गति बन्द होने से लोग परलोक गमन कर रहे है। ये सब स्थान-स्थान की मिठाइया और पकवान खाते

हुए उसे हजम करने के लिये चूर्ण और जुलाब लेते हुए ही हृदय रोग मे ग्रसित हुए है।

"तुम्हारा अनुसन्धान और नारी उद्धार की योजना के आरम्भ होने से पूर्व ही तुम किसी कीडे-मकौडे की योनि मे जा अपनी प्रकृति से विवश हो सृष्टि रचती फिरोगी।"

"मै इतना पढ-लिखकर कीडे-मकौडो की योनियो मे क्यो जाऊगी ? और फिर मरने के उपरान्त मै क्या हूगी, कैसे कोई कह सकता है ?"

"तुम जो पुरुष-स्त्री सम्बन्ध के अर्थ नही जानती, उसे अध्यात्म ज्ञान की शिक्षा तो अन्धे के सामने रोने के समान होगा। देखो बेटी, मै समझाती हू कि तुम पुन पहली श्रेणी की पढाई से आरम्भ करो। अनुसधान कार्य तो बहुत ऊचा है। यह तो ऋषियो-महर्षियो का काम है। तुम तो अभी ज्ञान-विज्ञान का अ-आ, इ-ई, उ-ऊ भी नही समझती।"

सिद्धेश्वरी हस पडी और बोली, "अच्छा बूआ। तुम भी बच्चो को पढाने का कार्य करती रही हो। मैं तुम्हारे स्कूल मे भरती हो जाती हू। बताओ, कौनसी पुस्तक से पढाई आरम्भ होगी ?"

"हा। मैं समझती हू कि यदि जिज्ञासा के भाव से पढोगी तो मै पढाने का यत्न कर सकती हू और आशा कर सकती हू कि जीवन मे अति सुख की भागी बन सकोगी।"

"तब तो, बूआ, अवश्य पढूगी। अति सुख की खोज मे ही तो मैं अनुसन्धान-कार्य आरम्भ करने वाली हू।"

"पहले तो यही अनुसन्धान का विषय है कि सुख किसको होता है ?"

"शरीर को।" सिद्धेश्वरी बूआ को प्रसन्न कर विवाह बन्धन से बाहर रहने की स्वीकृति प्राप्त करने की आशा मे प्रसन्न वदन बैठी बात करने लगी थी।

"परन्तु तुम तो शरीर को अत्यन्त कष्ट भी देती रही हो। कम खाती हुई, सर्वथा सादा भोजन करती हुई, सामान्य और निर्धनो के से वस्त्र पहनती हुई भी तुम सुखी अनुभव करती रही हो। जब परीक्षा के दिनो मे पढती-पढती और नोट लेती हुई रात-रात भर जागती रहती थी तो कभी बीमार भी हो जाती थी। परन्तु इससे द्विगुण उत्साह से फिर पढने मे लग जाती

थी। क्या यह शरीर के सुख के लिये करती थी ?

"कभी-कभी तो ज्वर रहते भी कालेज चली जाती थी। यह सब शरीर के लिये किया जाता था क्या ?"

"तो किसके लिए किया जाता था ?"

"शरीर के अतिरिक्त कोई तुममे है। शरीर को कष्ट देकर भी वह अपना कल्याण पढाई मे लगे रहने मे मानता था।

"और देखो। मैने तुम्हारी कुछ तो सेवा की है। उस सेवा मे भारी कष्ट भी सहन किया है। वह क्या इस शरीर के लिये ही इस शरीर को कष्ट दे रही थी ? यह विरोधाभास नही क्या ?

"तुम यह भी कह सकती हो कि तुम भावी जीवन मे सुख की आशा मे पढाई का कष्ट सहन कर रही थी। तब इस वर्तमान शरीर मे और आज से दस-बीस वर्ष उपरान्त शरीर मे कुछ साझी बात तो होनी चाहिये। शरीर तो क्षण-क्षण मे बदलता चला जाता है। वह वस्तु ही तुम हो जो बाल्यकाल के शरीर मे थी। अब युवा शरीर मे है और वृद्धावस्था के शरीर मे भी रहेगी। कुछ तो इन सब अवस्थाओ मे एक सार चलने वाली वस्तु है।

"देखो बेटी। वह तुम्हारी आत्मा है। उसी के लिए तुम शारीरिक कष्ट सहन करती हो, क्योकि उससे आत्मा को सुख मिलने वाला है।"

सिद्धेश्वरी को आज पता चला था कि कुछ ऐसी विद्या भी है जिसमे उसकी बूआ उससे अधिक ज्ञान रखती है। उसकी युक्तियो ने लडकी का मुख बन्द कर दिया था। सबसे विचित्र बात उसे यह प्रतीत हुई थी कि शरीर तो प्रति क्षण बनता और बिगडता है। यह कहा जाता है कि छ वर्ष मे शरीर के सब कोषाणु सर्वथा नवीन हो जाते है। तब कुछ तो आज और कल मे साझा होना चाहिए। क्या वह आत्मा है ? इस प्रश्न के उपस्थित होने पर उसने पूछ लिया, "बूआ! माना कि कुछ है जो शरीर के अतिरिक्त है। ऐसे तो पेट मे कइ प्रकार के कृमि, वायरस, वैसिलाई इत्यादि कीटाणु रहते है। इसी प्रकार आत्मा भी होगा। प्रश्न तो यह है कि उससे मेरा क्या सम्बन्ध है ? मैं क्यो उसकी चिन्ता करू ?"

"परन्तु तुम शरीर नही हो। तुम किसी के लिये शरीर को कष्ट दे

रही हो और यदि तुम आत्मा भी नही तो तुम क्या हो ?"

"यह मै नही जानती ।"

"तुम उसका नाम नही जानती न ? मैने उसका नाम बताया है कि उसे आत्मा कहते है। यदि तुम उसका कुछ अन्य नाम रखना चाहती हो तो बता दो। कुछ लोग उसे रूह कहते है। दूसरे उसे 'सोल' अथवा 'स्पिरिट' कहते है। तुमने उसे कुछ अन्य नाम दिया है तो बता दो ? पर मै कहती हू कि उसको नया नाम देने से क्या लाभ होगा ? उसका यही नाम स्वीकार क्यो नही कर लेती ?"

"तो वह आत्मा का रग-रूप और स्वरूप तथा उसके कार्य क्या है ?"

"मै समझती हू कि एक दिन के लिए इतना पाठ पर्याप्त है। इतना भली-भाति समझ और हृदयगम कर लो तो फिर दूसरे प्रश्नो को भी समझाया जा सकता है।"

"तो दूसरा पाठ कब ?"

"पहले पाठ की परीक्षा के उपरान्त ।"

"तो बूआ, वह तो तुम अभी ले सकती हो ।"

"मौखिक नही। इस विद्या मे परीक्षाये क्रियात्मक होती है। देखो निष्काम भाव से अपने को परमात्मा पर छोड दो।"

"वह कहा है ?"

"नेचर का नाम लिया करती हो न ?"

"हा ।"

"बस अभी उसी को परमात्मा समझ लो। आजकल के पढे-लिखे लोग नामो पर बहस करने लगते है। शब्दो से बताये पदार्थ के गुणो पर बहस तो हो सकती है, परन्तु नाम पर वितण्डावाद मूर्खता के लक्षण है।

"बस अपने मे स्वार्थ और राग-द्वेष की भावना छोडकर अपने को 'नेचर' पर छोड दो और देखो कि क्या परिणाम होता है।"

अपनी डबल एम० ए० की योग्यता, अपनी बाते करने मे सतर्कता और व्युत्पन्नता से उसे विश्वास था कि मिस्टर सिह खोसला पर उसे उपमा देगा। वैसे मिस खोसला उससे अधिक उज्जवल रग और तीखे नख-शिख रखती थी। उसकी सब सहेलिया उसे एक सुन्दर लडकी मानती थी, इस कारण मिस्टर सिह के उन दोनो मे चुनाव पर सिह की रुचि और बुद्धिमत्ता की परीक्षा समझती थी।

अगले दिन वह बहुत प्रात काल से ही अपने शोध के विपय पर अध्ययन कर रही थी। साढे ग्यारह बजे उसने काम बन्द किया और दस-पन्द्रह मिनट आराम कर वह वस्त्र बदलने लगी। स्त्री सुलभ स्वभाव से वह चोली और साडी के रगको अपने मुख के रग से अनुकूलता पर विचार करने लगी। एक साडी निकाल उसने पहनी। वह पसन्द नही आई। फिर दूसरे रग की निकाल अपने कन्धे पर रख दर्पण मे अपने को देखने लगी।

एकाएक उसके मन मे विचार आया कि वह तो अपनी दुकान सजा रही है। इससे उसके मन मे प्रबल प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई और उसने सब रेशमी वस्त्र जो उसने पहनने के लिए निकाले थे, अपने 'वार्डरोब' मे रख दिए और श्वेत सूती धोती, चोली निकाल ली। उसे पहन पुन अपने को दर्पण मे देखने लगी। अब फिर विचार आया कि जब अपना प्रदर्शन ही नही करना तो फिर बारम्बार दर्पण मे क्या देख रही है? इससे वह अब दर्पण से दूर हट बैठ गई और बाहर बैठक घर मे आने वालो की प्रतीक्षा करने लगी।

सबसे पहले मिस्टर सिह आए। आज तो उसने सिह की मोटर के हार्न का शब्द पहचान लिया। इससे वह बाहर बैठकघर पर कान रख सतर्क हो बैठ गयी।

बैठकघर मे से मिस्टर सिह की आवाज आई, "माता जी! मै आ जाऊ?"

"आओ बेटा! तुम तो ठीक समय पर आ गए हो। दूसरे लोग फरीदा-

बाद से मोटरगाडी मे आने वाले है।"

"तो ठीक है। हम उनकी प्रतीक्षा मे तो है ही।"

"कल मिस खोसला को देखा है ?"

"हा, मा जी। लडकी तो अच्छो-खासी सुन्दर है, परन्तु···।"

"परन्तु क्या ?" सिह को आधा वाक्य बोल चुप करते देख भगवन्ती ने पूछ लिया।

"कुछ नही। केवल यह कि अति सरल चित्त लडकी है। उसके पिता तो सब समय लेन-देन की बात करते रहे और लडकी अपने घुघराले बालो की लट को अगुली पर लपेट-लपेट उनका प्रदर्शन करती रही।"

"बस। इसको ही तुमने अवगुण समझा है ?"

"यह गुण तो है, परन्तु इसका प्रदर्शन चित्त की सरलता प्रकट करता है। मैं इस वस्तु को देखने नही गया था।"

"तो किस वस्तु की आकाक्षा लेकर गए थे ?"

"यह अभी नही बताऊगा। इस विषय पर अपने मन के भावो का विश्लेषण करना पडेगा। सिद्धेश्वरी जी कहा है ?" सिह ने बात बदल दी।

"वह वस्त्र बदल रही है। दूसरे लोग आ जाए तो वह भी आ जाएगी।"

"ठीक है। तब तक आपसे उपदेश सुनने का सौभाग्य मिलेगा।"

"भला मै आपको क्या उपदेश दे सकती हू ? देखो बेटा, परमात्मा की डोर पकडकर इस भव सागर को पार कर सकोगे। एक बात समझ लो कि सब प्राणी परमात्मा ने ही बनाए है और प्रत्येक मे उसकी श्रेष्ठ विभूति कही न कही छुपी रहती है। परमात्मा का आश्रय लेने वाले व्यक्ति मे ऐसी कुशलता आ जाती है कि वह हस हो जाता है जो इस ससार रूपी लस्सी मे से जल पृथक कर दूध का पान करता रहता है।"

"यही तो कर रहा हू। पर माता जी, मै उस पात्र की खोज मे हू जहा दूध अधिक हो और जल कम।"

"यह भी कर सकते हो कि जितना भी दूध किसी पात्र मे मिले उतने पर ही सन्तोष कर लो।"

"यह बात तो खोज समाप्त होने पर ही विचारणीय हो सकती है।"

"परन्तु क्या इस अनमोल जीवन को खोज मे ही व्यतीत करने का विचार है ?"

"पर जीवन तो अनन्त है। कठिनाई केवल इतनी है कि प्राणी मे जीवन के एक भाग की बाते दूसरे भाग मे विस्मरण होने लगती है। मै उनको स्मरण रखने का उपाय कर रहा हू।"

"यह तो तुम बहुत अच्छा कार्य कर रहे हो।"

इस समय नीचे दूसरी मोटर आकर खडे होने का शब्द हुआ। इस पर भगवन्ती ने कह दिया, "मालूम होता है कि फरीदाबाद वाले आ गए है।"

वह उठकर द्वार तक गई और एक प्रौढावस्था की स्त्री के साथ एक युवक सीढिया चढता दिखाई दिया।

भगवन्ती ने हाथ जोड नमस्ते करते हुए उनका स्वागत किया। भगवन्ती ने उनको बैठकघर मे ले जाते हुए पूछ लिया, "तो भाई साहब नही आए ?"

"शिव के पिता जी की बात कर रही है ? वह अकस्मात् काम पड जाने से बम्बई चले गए है। मुख्य व्यक्ति तो शिव ही है।"

इस समय सिद्धेश्वरी बैठकघर मे आ गई। भगवन्ती ने बैठे बैठे ही सिद्धेश्वरी को अपने समीप बैठने को कहा और उसे आने वालो का परिचय करा दिया। उसने कहा, "देखो बेटी ! यह है श्री शिवकुमार जी। मैने इनके विषय मे ही तुमसे बताया था कि यह फरीदाबाद से आने वाले है। यह इनके साथ इनकी माता जी है ?"

"और बहन जी ! यह मेरी लडकी है। इसने एम० ए० इतिहास और मनोविज्ञान मे किया है। दो विषयो मे एम० ए० करने के उपरान्त यह अब डाक्टरेट की तैयारी कर रही है।"

"क्या विषय अनुसन्धान के लिए विचार किया है ?"

उत्तर भगवन्ती ने ही दिया। सिद्धेश्वरी ने परिचय के समय केवल हाथ जोड बस मुस्करा दिया था और चुपचाप बैठ गई थी।

सिह देख रहा था कि कितना अन्तर है सिद्धेश्वरी और मिस खोसला मे। जहा मिस खोसला अपने सबसे बढिया वस्त्र पहन शृ गार कर और

सुगन्धित द्रव्य लगाकर आई थी, वहा सिद्धेश्वरी अति साधारण वस्त्रो मे और बिना शृ गार के सामने बैठी थी। साथ ही वह सर्वथा निश्चल और मौन थी।

भगवन्ती ने बताया, "विषय की स्वीकृति अभी मिली नही। कल अनुसन्धान बोर्ड के सामने इसका 'इण्टरव्यू' हुआ था। अभी बोर्ड ने विषय की स्वीकृति नही दी। कदाचित वह विषय को बदलने की सम्मति देगे।"

"परन्तु क्या लाभ होगा डाक्टरेट करने से ?" शिव की माता सुहागवन्ती जी ने पूछ लिया।

मिस्टर सिह के मन मे उत्तर देने का विचार आया, परन्तु वह बोला नही। भगवन्ती ने मुस्कराते हुए सिद्धेश्वरी की ओर देखा। इस पर भी सिद्धेश्वरी ने उत्तर नही दिया और केवल मुस्करा दिया।

शिव कुमार ने बात बदल दी। उसने कहा, "पिता जी को भी पढने-लिखने का बहुत शौक है और उन्होने पिछले पन्द्रह वर्ष मे एक बहुत बडा पुस्तकालय बना लिया है। इस समय उनके पुस्तकालय मे पाच-छ हजार के लगभग पुस्तके है। अब उन्होने अपने एक क्लर्क को विशेष एलाउंस देकर पुस्तकालय को ठीक ढग पर रखने का आदेश दे रखा है।"

बात सुहागवन्ती ने ही आगे चलाई। उसने कहा, "शिव भी पढने-लिखने मे बहुत रुचि रखता है।"

"यह तो होनी ही चाहिए।" भगवन्ती ने कहा, "परन्तु आज के काल मे बहुत से अनाधिकारी भी लेखक बन रहे है। इस कारण पुस्तको का चयन एक समस्या बन रही है।"

अब शिव कुमार ने बोलने का साहस किया, "अब घर पर एक डाक्टरेट होने वाली आएगी तो निस्सन्देह पुस्तको का चयन ठीक हो जाएगा। अभी तक तो चयन मे मुख्य भाग पिता जी का है। कुछ-कुछ मै भी सुझाव देता रहता हू।"

"किस विषय मे शिव जी की रुचि है ?"

"मै तो 'फिक्शन' अधिक पसन्द करता हू।"

उत्तर भगवन्ती ने ही दिया, "यह रुचि तो सराहनीय है, परन्तु 'फिक्शन' विषय नही। यह तो अनेकानेक विषयो का रुचिकर माध्यम मात्र

है।"

इसके साथ ही भगवन्ती ने बात बदलकर सिद्धेश्वरी को कह दिया, "अब भोजन लगा दो।"

वह उठी और खाने के कमरे मे चली गई। अब सिह ने बातो मे हस्तक्षेप करते हुए कहा, "एक व्यापारी के लिए तो जासूसी उपन्यास अधिक लाभप्रद हो सकते है।"

शिव हस पडा। सिह गम्भीर भाव मे बैठा रहा। भगवन्ती ने बात चला दी, "अपने प्राचीन साहित्य मे भी पुराणो की बहुत महिमा है। लोग उन्हें बहुत ही रुचि से पढते और सुनते है।"

"परन्तु उसमे तो अनहोनी गप्पे कही जाती है?" शिव कुमार ने अपनी सम्मति बता दी।

"उतनी ही जितनी कि किसी भी उपन्यास मे हो सकती है। इस पर भी वे सब गप्पे शिक्षाप्रद ही है।"

"शिक्षा तो सबमे होती है। केवल झूठ मे से सत्य का पता करना अति कठिन हो जाता है।"

"हा। उसके लिए हस की सी योग्यता चाहिए।"

इस समय बैठक के द्वार पर आकर सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "बूआ, सब तैयार है।"

"तो चलो, बहन जी!" भगवन्ती ने कह दिया।

सब भोजन-गृह मे जा बैठे। वास्तव मे सब कुछ तो पहले बूआ ने ही सजा रखा था। केवल सब्जिया ही गर्म करनी थी। चपाती के स्थान पर बाजार से भठूरे मगवाए हुए थे। साथ चावल थे।

सबने हाथ धोए और खाने पर बैठ गए। शिव कुमार, सिद्धेश्वरी के समीप बैठ गया था और शिव तथा भगवन्ती के बीच सिह बैठा था। भगवन्ती और सिद्धेश्वरी के बीच सुहागवती बैठी थी।

शिव कुमार छोटे से मकान मे दम घुट रहा अनुभव कर रहा था। वह अपनी फरीदाबाद वाली कोठी के ड्राइग रूम, डायनिग रूम, स्टडी रूम तथा बाथ रूम इत्यादि से इस घर की लम्बाई-चौडाई का मुकाबला कर रहा था।

उसने पूछ लिया, "माता जी।" वह भगवन्ती को सम्बोधन कर रहा था, "यह मकान अपना है क्या ?"

"नही बेटा !" यह भाडे पर ले रखा है। नीचे की मजिल पर मालिक मकान रहता है और ऊपर के इन छोटे-छोटे कमरो का हम ढाई सौ रुपया महीना भाडा देते है। मकान के टैक्स इस किराए के अतिरिक्त है।"

"हमारी कोठी मे तो चार बाथ रूम है और प्रत्येक इस घर के ड्राइग रूम से बडा है।"

"बेटा, यह सब कुछ भाग्य से प्राप्त होता है। इसके लिए परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।"

"हा। वह तो है ही, परन्तु पिता जी ने पजाब से आकर परिश्रम बहुत किया है। इससे वह रुग्ण भी रहने लगे है।"

भगवन्ती ने चिन्ता व्यक्त करतेहुए पूछ लिया, "क्या कष्टहै उनको ?"

"डायबेटीज तो है ही, अब हृदय रोग के विषय मे भी डाक्टर के कहने पर पिछले सप्ताह ई० सी० जी० करवाई थी और डाक्टर का कहना है कि दिल कुछ बढ रहा प्रतीत होता है।"

भगवन्ती ने परेशानी का प्रदर्शन करते हुए कहा, "मैं समझती हू कि उनको किसी विदेश मे जाकर चिकित्सा करवानी चाहिए।"

"इस विषय मे भी डाक्टर की सम्मति ली जा रही है।" शिव ने कहा।

भोजन आरम्भ हो गया था। शिव कुमार बहुत सकोच से खाना खा रहा था। सबसे खुलकर खाने वाला मिस्टर सिंह था। उसने एक प्लेट चावल समाप्त कर भठूरे लेने आरम्भ कर दिए थे।

अन्य सब धीरे-धीरे खाना ले रहे थे। शिव को हसी सूझी। उसने मिस्टर सिह की ओर देखकर कह दिया, "कई दिन के भूखे प्रतीत होते हैं, भाई साहब ?"

उत्तर सिह ने दिया, "नही जी। एक देहात का रहने वाला होने से आप शहरियो से अधिक खाता हू।"

हुआ भी यही। जब तक शिव इत्यादि ने प्लेट मे रखे थोडे-से चावल और एक भठूरा खाकर खाना समाप्त किया था, सिह दो प्लेट चावल और

चार भठ्रे खाकर अब मिठाई पर हाथ साफ कर रहा था।

जब सबने भोजन करना समाप्त कर दिया तो उसने भी अपना हाथ पीछे कर लिया। शिव ने व्यगात्मक भाव मे कह दिया, "आप खाते जाइए। हम प्रतीक्षा कर सकते है।"

"जी बस। आप सबके बराबर मैने अकेले ने खाया है।"

सब उठकर हाथ धोने लगे तो भगवन्ती ने सुहागवन्ती से पूछ लिया, "काफी लेगे अथवा फल ?"

उत्तर शिव ने दिया, "पहले काफी और पीछे फल।"

सिह ने कह दिया, "जब तक काफी तैयार होती है, फल लिए जा सकते हे और यह भी कायदा है कि ठण्डी ड्रिक पहले ली जाती है और गर्म पीछे।"

इस पर सब चुप कर गए। जब ड्राइग रूम मे सब आ बैठे तो फलो की प्लेटे बीच की टेबल पर ला रखी गई और भगवन्ती फल छील-छील कर सबके सामने रखने लगी। सिद्धेश्वरी काफी तैयार करने रसोई घर मे गई हुई थी।

फल लेते हुए सुहागवन्ती ने पूछा, "अब हम सबकी इच्छा है कि आप बेटी सहित एक दिन फरीदाबाद आए।"

"मै आपको टेलीफोन पर आने के विषय मे बताऊगी।"

"कब तक ?"

"अब सिद्धेश्वरी से सम्मति करनी होगी। जब वह कोई निर्णयात्मक बात बताएगी तब ही तो टेलीफोन कर सकूगी।"

"इस मे बहुत सोच-विचार की बात नही। जिस प्रकार भी लडकी रहना चाहेगी, रह सकेगी। इसकी पढाई मे भी किसी प्रकार की बाधा नही होगी।"

इस पर शिवकुमार ने कह दिया, "कदाचित् अब नौकरी करने की आवश्यकता नही रहेगी।"

"ठीक है।" भगवन्ती ने कह दिया, "यह बात पति-पत्नी ही परस्पर विचार कर सकते है। इसमे हम बडो को कुछ कहना-सुनना नही चाहिए।"

इसके उपरान्त बहुत कम बात हुई। काफी पी गई और सुहागवन्ती

तथा शिवकुमार ने विदा ली।

जब सिद्धेश्वरी मा-पुत्र को नीचे जा उनको गाड़ी मे विदा कर ऊपर आई तो वह खिलखिलाकर हस पडी।

"सिद्धेश्वरी जी, किसलिए हसी है ?" मिस्टर सिंह ने प्रश्न कर दिया।

"इसलिए कि मा-पुत्र ने एक बार भी यह नही पूछा कि आप कौन है ? हमसे क्या सम्बन्ध है ? उन्होने आपकी गाडी नीचे खडी देखी होगी, परन्तु गाडी वाले के विषय मे जानने की उनकी रुचि नही हुई।"

"इसकी क्या आवश्यकता थी ? मुख्य दर्शनीय तो आप थी।"

"मेरे भी तो उन्होने दर्शन नही किए। मुझसे न तो मा-पुत्र ने कुछ पूछा और न ही मुझे इनको बताने मे कुछ रुचि थी।"

अब सिह भी उठ खडा हुआ और हाथ जोडकर बोला, "मै किसी दिन मिलकर अपने विषय मे जानने आऊगा।"

इतना कह उसने हाथ जोड नमस्ते कही और सीढियो की ओर चल पडा। सिद्धेश्वरी उसे भी छोडने नीचे आई। सिह ने कुछ बात नही की। केवल गाडी चलने के समय सिद्धेश्वरी ने नमस्ते करते हुए पूछा, "अब कब दर्शन होगे ?"

"मै शीघ्र ही मिलूगा और यदि माताजी की मुझसे मिलने की इच्छा हो तो मेरा यह कार्ड है। इस पर टेलीफोन नम्बर और मकान का पता छपा है।"

इतना कह उसने अपनी जेब मे से कार्ड निकाल दे दिया।

९

सिद्धेश्वरी ऊपर आई तो भगवन्ती उसे समीप बैठा पूछने लगी, "क्या समझी हो सिद्धेश्वरी ?"

"बूआ ! इन दोनो विवाह के प्रत्याशियो मे चयन करना तो कुछ अधिक कठिनाई नही है। मेरी कठिनाई यही है कि मै यह निश्चय नही कर

सकी कि विवाह करू भी अथवा न ?"

"देखो बेटी ! मैंने कल तुम्हे बताया था कि अपने-आप को परमात्मा के भरोसे छोडकर अपने शरीर मे रहने वाले आत्मा के हित पर विचार करती रहो।"

"बूआ ! यही तो समझी नही कि परमात्मा को कहा ढूढू ? उसका भरोसा तो तब ही कर सकूगी जब उसका कही पता लगेगा।"

"प्रकृति पर अपने आप को छोड दो।"

"प्रकृति जिसे अग्रेजी मे 'नेचर' कहते है उसे तो पशुपन माना है। बूआ ! कुत्ते-बिल्ली तो 'नेचर' से विवश हो कतूरे-बलूगडे बनाने लग जाते है, परन्तु मै वह नही हू।"

"तो तुम क्या हो ? और जो कुछ भी तुम हो, किस कारण हो ?"

"मुझमे कुते-बिल्ली से कुछ विशेपना है।"

"यही तो पूछ रही हू कि वह विशेपता क्या है और क्यो है ?"

अपनी पुस्तको की परिभाषा मे तो वह इस विषय पर पौन घण्टे का धडाधड व्याख्यान दे सकती थी, परन्तु बूआ को उस भापा मे वह बताना व्यर्थ जान वह सरल भाषा के शब्दो को ढूढने के लिए आखे मूद विचार करने लगी थी।

उसे एक शब्द समझ आ गया। उसने आखे खोल प्रसन्नता से उबलते हुए कहा, "एक वस्तु है मन। इसे अग्रेजी मे 'माइण्ड' कहते है। मुझमे वह कुत्ते-बिल्ली से विशेष है।"

"यह 'माइण्ड' क्या करता है?"

"इसके तीन काम हे। एक तो यह शरीर से बाहर की बातो को अनुभव करता है। दूसरे यह अनुभव की गई घटनाओ का स्मरण रखता है और तीसरा यह उस पर विचार करता है।"

"ये तीनो कार्य करने वाला 'इन्स्ट्रूमैण्ट' मुझमे कुत्ते-बिल्ली से अधिक श्रेष्ठ है।"

'ठीक है। मैं इनको जानती हू। इन तीनो कार्य के करने वाले यन्त्रो को हम तीन नामो से पुकारते है। बाहर से ज्ञान प्राप्त करने वाले यन्त्रो को हम ज्ञानेन्द्रिया कहते है। ये पाच है आख, नाक, कान, रसना और

स्पर्श। ये ज्ञान प्राप्त करने के यन्त्र है। ये तो प्राय निम्न कोटि के जन्तुओ मे मनुष्यो से भी श्रेष्ठ होते है।

"कभी चीले अथवा गिद्ध को बहुत ऊचे आकाश मे उडते हुए भी भूमि पर छोटे से छोटे मास के टुकडे को देख उसकी ओर लपकते देखा है क्या ? हम तो उस मास के टुकडे को दस-बीस गज के अन्तर से भी नही देख सकते और वह एक मील ऊपर उडते हुए भी उसे देख उसे उठाने के लिए नीचे उतर आते है।

"इसी प्रकार कई जानवरो मे सूघने की शक्ति, कइयो मे सुनने की शक्ति, मनुष्य से अधिक तीव्र होती है।

"तो इसमे तो तुममे गिद्ध, चील अथवा कुत्ते-बिल्ली से कुछ भी श्रेष्ठता नही है।

"दूसरी बात है देखे, सुने को स्मरण रखने की बात। इसे स्मरण शक्ति कहते है। और तीसरी बात है विचार करने की। इन दोनो बातो मे तुम पशुओ से श्रेष्ठ हो।

"तो ऐसा करो कि तुम जो कुछ अपने चारो ओर देखती हो, सुनती हो अथवा अनुभव करती हो उसे ठीक-ठीक स्मरण रखो और फिर अपनी तीसरी कला से उस स्मरण रखी बात पर विचार करो।

"इस समय पुरुष-स्त्री सम्बन्धो की बात हो रही है। मै तुमसे यह कहूगी कि तुम अधिक से अधिक पुरुष-स्त्रियो के इस विषय पर व्यवहार को देखो। सबको स्मरण रखो और फिर उनके व्यवहार पर विचार कर उसका विश्लेषण करो।

"उस विश्लेषण मे पहली बात यह है कि स्त्री-पुरुष परस्पर सम्बन्ध क्यो बनाते है ? दूसरी विचारणीय बात यह है कि वह बात तुममे भी है अथवा नही ? तीसरी बात यह है कि उस बात का विरोध करने मे क्या लाभ होगा ? साथ ही कुछ हानि होगी तो क्या ?"

जब भगवन्ती इस प्रकार पुरुष-स्त्री सम्बन्ध का विश्लेषण कर रही थी तो सिद्धेश्वरी अपने ही कालेज की शारदा रानी की बात स्मरण कर रही थी। भगवन्ती अभी कह ही रही थी कि इस इच्छा को रोकने की क्या हानि है, यह विचारणीय है तो शारदा रानी की बात स्मरण कर उसकी

हसी निकल गई ।

भगवन्ती ने उसे हसते देखा तो पूछ लिया, "क्यो ? इसमे हसने की बात क्या है ?"

"बूआ ! मै आपकी बात पर नही हसी । मैं तो कालेज की एक प्राध्यापिका की बात स्मरण कर हस पडी हू । वह कहती थी कि उसने मेहनत की है और उस मेहनत के प्रतिकार मे तीन महीने की सवैतनिक प्रसूति काल की छुट्टी उसकी कमाई का अग है । वह उसे छोडना नही चाहती ।"

"तो उससे पूछना था कि उसने क्या मेहनत की है और क्या उस मेहनत का पूरा मूल्य तीन महीने के वेतन मे चुकता हो जाएगा ?"

"हा । यह मैने नही पूछा । मै तो दूसरी बात करने लगी थी ।"

"क्या बात की थी ?"

"मैने कहा था कि वह तीन की सीमा पार कर 'सोशल क्राइम' (सामाजिक पाप) कर रही है । इस पर उसने कहा था कि हम जैसी लडकिया सरकारी सीमा दो को पूरा न करती हुई भी तो पाप कर रही है और वह हमारे पाप का बदला चुका रही है ।"

"बहुत अच्छी स्त्री है वह जो दूसरे के पापो का बोझा स्वय सहन कर रही है ।"

"पर बूआ, क्या मै और मेरे जैसी अविवाहित लडकिया विवाह न करती हुई पाप कर रही हे ? मै तो यह समझती हू कि शारदा रानी के पाप का बदला हम चुका रही है ।"

"यह तो परमात्मा निश्चय करेगा कि कौन पाप कर रहा है और कौन उस पाप का फल भोग रहा है । मेरे सामने यह प्रश्न नही है । मै तो यह पूछ रही थी कि यह पूछना था कि वह यह परिश्रम करती ही क्यो है जिसके लिए वह तीन मास की सवैनतिक छुट्टी चाहती है । और फिर सरकार उसको इस परिश्रम के लिए इतना कुछ दे ही क्यो ? तीन से कम अधिक की बात तो गिनती-मिनती की हे । यह पीछे विचार कर लेगे ।"

बूआ के इस सीधे प्रश्न पर कि पुरुष-स्त्री परस्पर सम्बन्ध बनाए ही क्यो, पर वह अपने अन्तरात्मा मे झाकने का यत्न करने लगी थी । इस समय उसकी आयु चौबीस वर्ष की थी । वैसे वह सब प्रकार से स्वस्थ और

थी । इस कारण उसने अपने कहने का अभिप्राय बता दिया । उसने कहा "मै उस साथी का नाम-धाम जानने मे रुचि नही रखती । इस पर भी मेरी रुचि इस बात मे तो है कि जिस हलवाई की दुकान पर से मिठाई चख आई हो, वहा की मिठाई स्वादिष्ट और स्वास्थ्यप्रद थी अथवा विकार उत्पन्न करने वाली थी ? यदि वह स्वास्थ्यप्रद थी तो फिर भिन्न-भिन्न हलवाइयो की दुकान पर अपने स्वास्थ्य की बाजी लगाने मे कुछ प्रयोजन नही ।"

"बूआ ! इस बात को समझती हू और ऐसा अनुभव पुन प्राप्त करने से बचना चाहती हू ।"

"अर्थात वह अनुकूल अनुभव नही हुआ ?"

इस पर सिद्धेश्वरी पुन विचारनिमग्न हो गई । बूआ उसके उत्तर की प्रतीक्षा करती हुई उसका मुख देखती रही । सिद्धेश्वरी के मन मे आया कि आज बूआ को अपने मन की सब बात बताकर सदा के लिए इस विषय पर उसके हस्तक्षेप से बच जाए तो ठीक है । अत वह बोली, "मै उस महापुरुष से अपने 'डाक्टरेट' के विषय पर बात कर रही थी । हम दोनो एक सोफा पर बैठे हुए थे । एकाएक उसने एक विचित्र ढग से मेरी ओर देखा । मै नही जानती कि क्या हुआ, मै उससे लिपट गई ।

"दस मिनट के उपरान्त उसने मुझे कहा, 'अनुसन्धान के विषय पर बात फिर करेगे । अब तुम जाओ । मेरी पत्नी आने वाली है और वह हमे अकेले बैठे देख रुष्ट भी हो सकती है ।'

"मै वहा से चली आई और पुन वैसा अवसर प्राप्त नही हुआ । न ही इसे प्राप्त करने का मैंने यत्न किया है । यत्न तो तब भी नही किया था । वह अनायास ही हुआ था ।"

"क्यो ? इसमे क्या कारण था ? क्या उसमे रस नही आया था अथवा वह अस्वास्थ्यप्रद था ?"

"रस की बात अब स्मरण हो नही रही । वह अवस्था एक प्रकार के उन्माद की थी और उन्माद की अवस्था मे की अथवा कही गई बाते स्मरण नही रहती । हा, वह कार्य अस्वास्थ्यप्रद तो अनुभव हुआ था ।

"मैं उसके लिए तैयार नही थी । सन्तान निरोध के विषय मे कुछ साव-

धानी प्रयोग करनी चाहिए, वह उस समय प्रयोग करने का अवसर ही नही था।

"परिणाम यह हुआ कि उस घटना के उपरान्त बीस दिन तक मैं चिता मे ग्रस्त रही और किसी कारण से मेरा 'पीरियड' लम्बा हो गया। तीन दिन ऊपर चढ गए थे। उन दिनो तो मैं घोर चिन्ता और पश्चात्ताप की अवस्था मे रही थी।"

"और अब पश्चात्ताप नही है?"

"अब मन मे सावधान रहने के लिए सकल्प बनाए हुए हू। मैं सन्तान निरोध सम्बन्धी उपकरण सदा अपने पास तैयार रखती हू।"

भगवन्ती को सिद्धेश्वरी की बात सुन कपकपी हो उठी। सिद्धेश्वरी ने भी यह देखा तो पूछ लिया, "बूआ! तुम इसे पाप समझती हो न?"

"हा, परन्तु अपराध नही।"

"क्या मतलब?"

"अपराध देश और काल के कानून से वर्जित कार्य के करने को कहते है। जो कुछ तुम दोनो ने किया, यह कानून से दण्डनीय नही है। तुम दोनो सज्ञान थे और स्वेच्छा से इस कार्य मे रत हुए थे। परन्तु यह पाप तो है। पाप शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को हानि पहुचाने वाले कार्य को कहते है। इसका किसी दूसरे से सम्बन्ध नही। यह मनुष्य स्वय करता है और करने से अपने को ही हानि पहुचाता है।"

"परन्तु बूआ! इससे मुझे क्या हानि हुई है, यह मैं जान नही सकी। मेरे विचार मे उस चिन्ता के अतिरिक्त, जो भूल के कारण अनुभव हुई थी, अन्य कोई हानि नही हुई।"

"हानि तो हुई है, परन्तु केवल एक बार ही इस कार्य मे लीन होने से वह इतनी कम थी कि तुम जैसी निर्बुद्धि लडकी अनुभव नही कर सकी। यदि इस कार्य को बार-बार दोहराया गया तो वैसी ही हानि होने वाली है जैसी कि बार-बार दूषित मिठाई खाने से शरीर को होती है।

"यह कार्य मिठाई खाने से अधिक व्यापक हानि पहुचाने वाला है, मिठाई से तो केवल शरीर और उसमे भी पाचन क्रिया पर प्रभाव होता है, परन्तु यह कार्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा पर भी प्रभाव डालता है।

"परमात्मा ने मनुष्य को एक अत्यावश्यक सामर्थ्य प्रदान की है और उस सामर्थ्य को प्रयोग करने की बुद्धि अर्थात् इस कार्य के लिए देश, काल और ढग के चयन करने की भी प्रतिभा मनुष्य को दी है। तुमने इन सबका प्रयोग नही किया। यह अपने साथ पाप किया है।"

"परन्तु बूआ! मेरी शिक्षा और वर्तमान युग की वैज्ञानिक उन्नति मुझे यह बताती है कि न तो मैने अपनी सामर्थ्य का अपव्यय किया है और न ही मेरी जीवन के अन्य कार्य करने की सामर्थ्य मे किसी प्रकार का ह्रास हुआ है।"

"तुम्हे अनुभव नही हुआ। कारण यह कि तुम्हारी शिक्षा मिथ्या दिशा मे हुई है और वर्तमान विज्ञान एक बलवन्त, परन्तु अधे बैल की भाति है जो यह नही जानता कि यह सीग मारकर किसका पेट फाड रहा है।"

"बूआ! बस यही मुझमे और तुममे विचार भेद है। मै अपनी शिक्षा को मिथ्या नही मानती और न ही विज्ञान को एक अधे बैल की तुलना देती हू।"

"अच्छा, छोडो इन बातो को। इन्हे मै तुमको समझा नही सकी। परन्तु एक बात तो तुम जैसी पशु वृत्ति वाली भी समझ सकी होगी कि तुम्हारी आय मे जीवन निर्वाह सुलभ नही है। अधिक से अधिक हजार-बारह सौ वेतन पा जाने पर भी तुम वह सुख-सुविधा प्राप्त नही कर सकोगी जो अनायास तुम्हारा पति तुम्हे प्राप्त करा सकेगा।

"तुम भाग्यवान हो कि सिह को मिस खोसला पसन्द नही आई और वह जिस पद पर है अथवा जो सुख-सुविधा अपनी पत्नी को पहुचा सकता है, वह तुम अपनी 'डाक्टरेट' की उपाधि पर भी कभी भी प्राप्त नही कर सकोगी।

"यद्यपि मै शिवकुमार को सिह की तुलना मे उपमा नही दे सकती; इस पर भी यदि तुम्हे फरीदाबाद जाना रुचिकर हो तो तुम्हारी डाक्टरेट की उपाधि से अधिक सुख-सुविधा तो वहा भी प्राप्त हो सकती है। यह अब तुम विचार कर लो।

"साथ ही यह भी सोच लो कि कब तक तुम अपनी बूढी बूआ को

अपनी रोटिया सेकने पर लगाए रखना चाहती हो ?"

इतना कहते-कहते भगवन्ती उठ खडी हुई और बोली, "ठीक अथवा गलत, मैने तुम्हे पढा-लिखाकर कुछ तो अर्जन करने के योग्य बना दिया है। अपना भला-बुरा तुम विचार कर लो। मै तुम्हे इस विषय मे अब कुछ नही कहूगी।"

सिद्धेश्वरी बातो के इस घुमाव पर चकित बूआ का मुख देखती रह गई। इससे पहले इस ढग पर बात कभी नही हुई थी। एक बात तो वह पहले भी समझ रही थी कि घर पर नौकर रखना चाहिए। घर के चौका-बासन के काम से लेकर धोबी और पाचक के काम तक सब बूआ ही करती थी। यह ठीक था कि वह बूआ का घर के काम मे हाथ बटाती थी, परन्तु यह न तो कुछ अधिक था और ज्यो-ज्यो उसका पढाई का काम बढता जाता था, उसका बूआ के काम मे सहयोग कम होता जाता था। बूआ के इस कथन ने कि कब तक अपनी वृद्ध बूआ को अपनी रोटिया सेकने के लिए लगाए रखना चाहती है, उसे अत्यन्त कटु सत्य अनुभव हुआ।

परन्तु उन दिनो मे नौकर का अभिप्राय यह था कि लगभग सौ डेढ सौ रुपया महीना का व्यय। वह भी यदि वह चोर न हुआ तो। अर्थात् जो एक सौ रुपया महीना वह बचा सकती थी, वह समाप्त और कदाचित कुछ अपनी आवश्यकताओ को कम करने की भी आवश्यकता पडेगी।

बूआ के इस किंचित मात्र सकेत से कि वह बूढी हो रही है और अब अधिक सेवा दे नही सकेगी, सिद्धेश्वरी को एक नये विचार क्षेत्र मे पहुचा दिया था। इस समय उसे एक अन्य बात स्मरण आ गई। मालिक मकान कई महीने से सकेत कर रहा था कि मकान का भाडा बहुत कम है। उनको स्वय ही आस-पास के मकानो के भाडे देखकर बढा देना चाहिए।

बूआ तो अपने कमरे मे आराम करने चली गई और सिद्धेश्वरी वहा ही विचारमग्न बैठी रह गई।

१०

सिद्धेश्वरी किकर्त्तव्यविमूढ की भाति अपने पढाई और डाक्टरेट की तैयारी मे लीन हो गई। वह अनुसन्धान बोर्ड की ओर से किसी प्रकार के निर्णय की प्रतीक्षा मे थी। जहा तक विवाह का सम्बन्ध था, वह अनिश्चित मन थी।

सिह और शिवकुमार के घर पर आने को कई दिन व्यतीत हो चुके थे और जिस बात की वह प्रतीक्षा मे थी, वह हो नही रही थी। उसके अनुसन्धान के विषय को स्वीकार किए जाने की सूचना नही आ रही थी।

पुन शुक्रवार आ गया था और फिर 'स्टाफ रूम' मे उसका साक्षात्कार मिस सुधा खोसला से हो गया। सिद्धेश्वरी अपने पढाई के काम को समाप्त कर 'स्टाफ रूम' मे आई तो आज फिर मिस खोसला को अकेली वहा बैठे कोई पुस्तक पढते देख समीप आ बैठी। बैठते ही उसने कहा, "कहा रही हो सुधा इतने दिन ?"

"वाह ! गायब स्वय रही हो और पूछती मुझसे हो।"

"मैं तो अपने विषय के अध्ययन मे पुस्तकालय चली जाया करती हू। आज भी वहा जाने का विचार है। कुछ काल यहा विश्राम कर वहा जाऊगी।"

"हा, मिस्टर सिह का क्या हुआ ?"

"मैने तो उनके साथ बातचीत करने के लिए पिता जी को कह दिया है। वह कल भी उनसे मिलने उनके निवास स्थान पर गए थे।"

"ओह ! तो काम बन रहा प्रतीत होता है ?"

"अभी कह नही सकती। पर तुमने भी तो उसके विज्ञापन पर एक पत्र लिखा था।"

"वह एक दिन घर पर आया था और बूआ से बातचीत कर गया है। यह पिछले रविवार की बात है। उसके उपरान्त तो उसकी ओर से कोई सूचना नही आई।"

"एक दिन वह हमारे घर पर भी आया था और पिता जी से डेढ घटा बातचीत करता रहा था। तदनन्तर पिता जी उससे मिलने तीन-

चार बार जा चुके है।

"वह अति सभ्य स्वभाव रखता है। यहा दिल्ली मे अपनी ही कोठी में रहता है और कोठी का आकार-प्रकार देखने से तो वह अति धनवान प्रतीत होता है। पिता जी ने अपने एक मित्र को पटना मे भी लिखा है कि वह उसके विषय मे अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर लिखे। पिता जी अपने मित्र से उत्तर की प्रतीक्षा मे है।"

"कुछ लेन-देन की बात भी हुई है ?"

"उसने तो कुछ नही मागा। पिता जी ने स्वय इस दिशा मे कई सकेत किए है। उन सकेतो से उसको विदित हो जाना चाहिए कि पिता जी बहुत कुछ दहेज मे देने का विचार रखते है।"

सुधा की बात बन्द हो गई। कारण यह कि उसी समय मिसेज सेठी वहा आ गई। मिसेज सेठी ने बैठते ही कहा, "सिद्धेश्वरी, चतुर्वेदी जी बनारस से लौट आए है। नरेन्द्र के पिता जी ने उनसे बात की है और वह कहते है कि उन्होने अपनी सम्मति लिखकर बोर्ड के पास भेज दी है। अब उनसे मिलने मे कोई लाभ नही होगा। हा, यदि तुम किसी नये विषय पर अनुसन्धान करना चाहती हो तो वह एक-दो विषयो पर सुझाव दे सकते है।"

"मैं बोर्ड के निर्णय की प्रतीक्षा मे हू।"

"चतुर्वेदी ने बताया था कि बोर्ड का निर्णय हो चुका है और वह तुम्हे एक-दो दिन मे मिल सकेगा।"

इससे तो सिद्धेश्वरी यह समझी कि इस विषय पर अनुसन्धान की स्वीकृति नही मिलेगी। इस पर वह कुछ चिन्ता अनुभव करने लगी थी। इस पर भी वह मौन रही।

सेठी ने उसे कहा, "अब किधर जा रही हो ?"

"विचार तो था कि पुस्तकालय मे जाऊगी, परन्तु आपके द्वारा लाई गई सूचना से तो पुस्तकालय जाने का विचार ठण्डा पड गया है।"

"तो चलो, घर चले। मै भी तुमसे कुछ बात करना चाहती हू।"

"किस विषय पर ?"

"यह तो वहा चलने पर ही बता सकूगी।"

"कुछ मेरे 'थीसेज़' के विषय मे है ?"

"हा। नारी जाति की एक नित्य की समस्या पर। उसका सम्बन्ध तुम्हारे 'थीसेज' से तो होगा ही।"

"बहन जी ! आज नही। मै आपके घर पर स्वय कभी आऊगी और इस विषय पर खुलकर बात करूगी। नारी जाति की दुर्दशा पर मुझे अति दु ख होता है और इसका मेरे मस्तिष्क पर बहुत बोझा है। परन्तु आज मै अपनी मन स्थिति मे कुछ लम्बी-चौडी बात कर नही सकूगी।"

"अच्छा आना।" इतना कह सेठी चली गई। इस पर सुधा ने कह दिया, "सेठी की बात से तो यह समझ आया है कि तुम्हारे अनुसन्धान का विषय स्वीकार नही हुआ।"

"यह पुरुष वर्ग के पूर्व ग्रहो का ही परिणाम प्रतीत होता है। बोर्ड मे पाचो सदस्य पुरुष ही थे। इनसे किसी अन्य बात की मुझे आशा भी नही करनी चाहिए थी।"

"परन्तु सिद्धेश्वरी ! आखिर इस विषय पर अनुसन्धान की क्या आवश्यकता है ? विषय तो स्पष्ट ही है। तुम यदि 'थीसेज' के रूप मे लिखने के स्थान पुस्तक के रूप मे लिख दो तो क्या हानि है ?"

सिद्धेश्वरी मुस्कराई और बोली, "परन्तु मेरी डाक्टरेट की उपाधि ?"

"ओह। यह तो मै तुम्हारे मनोद्गारो को सुन भूल ही गई थी। हा, डाक्टर की उपाधि के उपरान्त वेतन मे भी तो उन्नति की आशा हो सकती है।"

"आशा ही नही, निश्चय है। कुछ मास आगे-पीछे की बात हो सकती है, परन्तु उन्नति तो विश्वविद्यालय क नियमो मे वर्णित है।"

"परन्तु मुझे तो यह स्पष्ट ही प्रतीत हो रहा है कि इसकी स्वीकृति नही मिलेगी।"

"मुझे ये बूढे बीसियो शताब्दियो पुरानी बातो से प्रभावित विद्वान अनुसन्धान करने पर रोक सकते है, परन्तु ससार की प्रगति को ये रोक नही सकते। विज्ञान नित्य नये-नये आविष्कार कर रहा है। विज्ञान ने सन्तान निरोध के कारगर उपाय विचार किए। गर्भ स्थिति की घटना पर गर्भपात के अति सरल और सुगम उपाय ढूढ लिए गए है। अब यह यत्न

हो रहा है कि गर्भपात कराया जाए तो 'फोयटस' बिना प्राण विनष्ट किए अथवा विकृत किए निकाला जा सके और फिर उसके पालन के लिए 'इन्क्यूवेटरज' (उष्मायित्र) बनाए जाए। उनमे बच्चे पलकर वैसे ही स्वस्थ निर्माण हो सकेगे जैसे कि मा के पेट मे होते है।

"इससे नारी जाति पर प्रकृति के अन्याय को और कम करने का उपाय किया जा सकेगा।"

"यह कदाचित् हमारे जीवन काल मे नही हो सकेगा।"

"परन्तु हम नारी जाति के उद्धार मे प्रगति मे सहयोग तो दे सकते है।"

खोसला ने कुछ विचारकर कह दिया, "मै समझती हू कि नारी जाति को हीन स्थिति मे रखने मे पुरुष इतना अपराधी नही जितनी की प्रकृति है।"

"और बूआ कहती है कि प्रकृति और परमात्मा एक ही वस्तु के दो नाम है।"

"अर्थात् परमात्मा भी उतना ही अन्याय करता है जितना कि प्रकृति करती है ?"

सिद्धेश्वरी खोसला की इस युक्ति पर मुस्करायी और उठ खडी हुई। उसने उठते हुए कहा, "मुझे अब इस प्रकार की युक्तियो मे रुचि नही रही।"

खोसला ने समझा कि उसके परमात्मा को अन्याय कर्त्ता कहने की बात सिद्धेश्वरी को रुचिकर नही लगी। अत वह भी उठती हुई पूछने लगी, "किस बात मे रुचि नही रही ?"

"आत्मा-परमात्मा की बातो मे। इसके न्यायकारी और सर्वज्ञ होने के विषय मे। मुझे समझ आ रहा है कि यह जगत् अन्याय और अत्याचार से भर रहा है। मै तो कभी यह विचार करने लगती हू कि प्रकृति की इस उच्छृखलता से अधिक से अधिक नष्ट-भ्रष्ट कर ही यहा से विदा लेने मे कल्याण है।"

खोसला इन मनोद्गारो को समझी नही। वह सिद्धेश्वरी का टुकर-टुकर मुख देखती हुई खडी रह गई। सिद्धेश्वरी ने बात बदलने के लिए

पूछ लिया, "किधर जा रही हो ?"

'जा तो घर ही रही हू । कहो तो तुम्हारे घर भी चल सकती हू ?"

"तो चलो । कालेज के बाहर से स्कूटर पकड लेगे ।"

दोनो सखिया कालेज के फाटक की ओर चल पडी ।

स्कूटर सनातन धर्म मन्दिर से सिद्धेश्वरी के मकान की ओर घूमा तो सिद्धेश्वरी ने अपने घर के नीचे क्रीम रग की मोटरगाडी खडी देखी। परन्तु उसी समय गाडी चल पडी और उससे दूसरी ओर जिधर से वे आ रही थी। जब तक इनका स्कूटर मकान के नीचे पहुचा तो मोटरगाडी एक फर्लांग से अधिक दूर जा चुकी थी।

सुधा ने गाडी नही देखी। कदाचित् वह गाडी को पहचानती भी नही थी। सिद्धेश्वरी तो समझ गई थी कि मिस्टर सिंह बूआ से मिलने आया है और उससे विवाह के विषय मे किसी प्रकार की चर्चा कर गया होगा।

उसने स्कूटर वाले को भाडा दिया और सुधा को लेकर मकान की ऊपर की मन्जिल पर जा पहुची। वह समझ रही थी कि बूआ आज फिर विवाह की चर्चा करेगी। वह मन मे विचार कर रही थी कि कदाचित् सिंह उसकी स्वीकृति मागने आया होगा और बूआ ने उसे यह कह टाल दिया होगा कि सिद्धेश्वरी ने अभी कुछ बताया नही ।

वह विचार कर रही थी कि स्वीकृति दे अथवा न। वह तो इन्कार करने की बात विचार कर रही थी, परन्तु पिछले रविवार के दिन बूआ का कथन कि वह कितनी देर तक बूआ से घर का काम करवाती रहेगी, उसके मस्तिष्क मे खटक रहा था।

दोनो सहेलिया ऊपर पहुची तो भगवन्ती गम्भीर विचार मे निमग्न बैठी थी। वह सुधा को भी सिद्धेश्वरी के साथ आया देख प्रसन्नता प्रकट कर बोली, "ओ सुधा बेटी। अब के तो बहुत दिन के उपरान्त आई हो। क्या तुम भी किसी विषय पर अनुसन्धान करने लगी हो ?"

"हा, बूआ जी। मैं भी खोज-कार्य करने लगी हूं।"

"किस विषय की खोज कर रही हो ?"

"बूआ। गृहस्थ-जीवन के साथी की खोज कर रही हू।"

"तो कोई मिला है उस जीवन का चालक ?"

"अभी तो खोज हो रही है।"

"कहो तो मैं तुम्हारी खोज मे सहायक हो सकती हू ?"

"सत्य ! तो बूआ, बताओ ?"

"अपनी मा को मेरे पास भेज देना। मैं एक बहुत अच्छे वर की टोह दे दूगी।"

"अवश्य भेजूंगी।"

इस पर तीनो हसने लगी। सिद्धेश्वरी समझ नही सकी थी कि उसकी बूआ किसके विषय मे कह रही है। सिह के विषय मे अथवा किसी और के विषय मे।

सिद्धेश्वरी ने सुधा को साथ लिया और रसोई घर मे चली गयी। दोनो सहेलिया अपनी रुचि का सामान चाय के साथ लेने के लिए बनाने लगी।

स्टोव पर पानी रखते हुए सुधा ने पूछ लिया, "किस लड़के के विषय मे बूआ सकेत कर रही है ?"

"मैं नही जानती। आजकल बूआ के पास बहुत प्रत्याशियो के माता-पिता आया करते है।"

"तो तुम्हारे लिए निर्वाचन हो चुका है ?"

"मैने विवाह न करने का अपना निश्चय बूआ को बता रखा है। इस कारण मुझसे निराश हो अब तुम्हारी ओर ध्यान चला गया प्रतीत होता है।"

"मै अब शीघ्र ही जीवन मे स्थिर हो जाना चाहती हू। बडे भाई का विवाह होने वाला है। उसकी बहू घर मे आई तो भगवान जाने वह किस प्रकार की होगी।"

"पर मै पूछती हू कि तुम्हारे भाई अपने ससुराल मे जाकर रहने का प्रबन्ध क्यो नही कर लेते ? लडकी को ही अपने बाप का घर क्यो छोड़ना चाहिए ?

"इससे तो यूरोपियन प्रथा अधिक अच्छी है। न लडका लडकी के माता-पिता के घर जाए और न लडकी लड़के के माता-पिता के घर।

दोनो अपना पृथक घर बना लेते है।

"हा। इसमे तो तथ्य है ही। और फिर लड़के अथवा लडकी के माता-पिता अपने पुत्र-पतोहू के पास जाकर रहना चाहे तो उनके नवीन घर मे रह सकते है।"

इस पर सुधा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और यदि लडकी और लडके, दोनो के माता-पिता नव दम्पति के घर मे जाकर रहने लगे तो?"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए बोली, "तब बूढे-बूढे परस्पर लड पडेगे और पुत्र, वधु उनको लडता देख रस लिया करेगे।"

इस पर सुधा भी हँसने लगी।

चाय इत्यादि तैयार कर दोनो ट्रे मे सामान लिए बाहर ड्राइग रूम मे आई तो भगवन्ती वहा नही थी। सिद्धेश्वरी बूआ को चाय के लिए बुलाने उसके सोने के कमरे मे गई तो बूआ को पलग पर लेटे देख पूछने लगी, 'बूआ! आज इस समय लेट रही हो। स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"कुछ दुर्बलता अनुभव हो रही है। ऐसा अनुभव हुआ है कि बहुत थक गई हू।"

"बूआ! आओ, चाय पी लो। तबीयत ठीक हो जाएगी।"

भगवन्ती उठी और बाहर ड्राइग रूम मे आ गई। बूआ को चाय सुधा ने बना दी। भगवन्ती ने पी तो उसको अपनी तबीयत ठीक होती प्रतीत होने लगी।

सिद्धेश्वरी समझी कि उसकी बूआ चाय पीने से चुस्त हो रही है। इस कारण उसने समझा कि कदाचित् बूआ ने भोजन नही किया। उसने पूछ लिया, "बूआ, भोजन किया था अथवा नही?"

'किया है। परन्तु आज तो खाया-पिया ऐसे समाप्त हो रहा है मानो कि अग्नि मे सब कुछ स्वाहा हो गया है।"

"बूआ, आओ। पिक्चर देखने को जाने का विचार हो रहा है। तुम भी चलो, दिल बहल जाएगा।"

"नही बेटी। पिक्चर देखने को मेरी तबीयत नही करती। तुम जाओ। सुधा भी साथ जाएगी?"

"हा, बूआ।"

"ठीक है। किस सिनेमा हाउस मे जाना चाहती हो ?"

"विवेक मे ही जाएगी।"

भगवन्ती चुप रही। सुधा और सिद्धेश्वरी ने चाय ली और दोनों पिक्चर देखने के लिए घर से चल दी।

साय सवा छ बजे वे आई और पाच-दस मिनट बातचीत कर दोनो सुधा के घर को चल पडी। बूआ रात का खाना बनाने के लिए रसोई घर मे थी। सिद्धेश्वरी ने रसोई घर के द्वार पर खडी हो कह दिया, "बूआ, मैं सुधा के घर जा रही हू। एक घण्टे मे लौट आऊगी।"

रात के खाने के समय सिद्धेश्वरी इस बात की प्रतीक्षा मे थी कि भगवन्ती सिंह के विषय मे बात करेगी। परन्तु बूआ ने उसकी बात नही कही। भोजन समाप्त हो गया और आज सिद्धेश्वरी का चित्त पढाई करने मे नही लगा। इस कारण वह अपने कमरे मे जाते ही सो गई।

भगवन्ती अपने कमरे मे कुछ देर तक भगवद्गीता पढती रही। तदनन्तर वह भी बिजली का स्विच बन्द कर सो गयी।

दूसरा परिच्छेद

१

मार्च मास समाप्त हो चुका था। कालेजो मे परीक्षाए आरम्भ हो गई थी। परीक्षा का एक केन्द्र सिद्धेश्वरी इत्यादि के कालेज हाल मे भी था। सिद्धेश्वरी निरीक्षक के रूप मे कहा कार्य कर रही थी। इससे उसे नित्य नौ बजे से बारह बजे तक परीक्षा भवन मे कार्य करना होता था। तदनन्तर वह कालेज मे काम देखने चली जाती थी।

तब तक उसके अनुसन्धान विषय की अस्वीकृति का पत्र अनुसन्धान बोर्ड से आ चुका था। अस्वीकृति पत्र मे लिखा था—"बोर्ड की सम्मति मे कुमारी सिद्धेश्वरी को किसी अन्य विषय पर कार्य करने मे अपना समय लगाना चाहिए। उसका निर्वाचित विषय इतना इतिहास का नही जितना कि चिकित्सा और शरीर क्रिया विज्ञान का है।"

बोर्ड की युक्ति सिद्धेश्वरी का समाधान नही कर सकी। इस पर भी वह विचार कर रही थी कि कोई नया विषय अपने अनुसन्धान के लिए विचार करे अथवा डाक्टरेट करने के विचार को ही छोड दे। उसे सुधा की एक बात समझ आ रही थी कि वह अपने विषय पर एक पुस्तक लिख दे और उसे प्रकाशित करवाने का यत्न करे। इसमे एक आकर्षण यह था कि उसने अस्वीकृत विषय पर बहुत अध्ययन किया है और उसका लाभ उठाया जा सकता है। साथ ही वह समझती थी कि यदि पुस्तक प्रकाशित हो गई और विश्वविद्यालयो मे पहुच गई तो अनुसन्धान बोर्ड के मुख पर एक चपत के तुल्य हो जाएगा।

इस पर भी वह अभी निश्चय नही कर सकी थी। उसके चित्त मे

पढाई के काम पर उत्साह कम होता जा रहा था।

ऐप्रिल की पन्द्रह तारीख थी। परीक्षा का कार्य समाप्त कर सिद्धेश्वरी अपने कालेज के 'स्टाफ रूम' मे आई। वहा सुधा खडी थी और छ-सात अध्यापिकाए उसे घेरे हुए खडी थी।

सिद्धेश्वरी भी उनमे आ पूछने लगी, "क्या बात है कि आपको बैठने का भी अवकाश नही ?"

सुधा प्रफुल्ल-मुख मौन खडी थी। मिसेज सेठी ने कहा, "लो अब सिद्धेश्वरी भी आ गई है। सिद्धेश्वरी, तुम बताओ कि तुम कब ससुराल का मार्ग पकडने वाली हो ?"

"बहन जी, अभी तो ससुराल का ही पता नही। वहा जाने की इच्छा भी नही हो रही। अत मार्ग कैसे बताऊ ?"

"तो जल्दी करो। निश्चय कर लो। खोसला तो चल पडी है।"

सिद्धेश्वरी को उस हर्षोल्लास का कारण समझ आ गया। उसने खोसला के गले मे बाह डाल उसका कान अपने मुख के पास कर पूछ लिया, "कहा ?"

मिस खोसला ने उत्तर नही दिया। सिद्धेश्वरी परीक्षा मे निरीक्षक का कार्य करते हुए साढे तीन घण्टे खडी रह कर आई थी, अत. वह कुछ थक गई अनुभव कर रही थी। वह स्वय एक कुर्सी पर बैठ सुधा को भी बैठने का निमन्त्रण देती हुई अन्य खडी प्राध्यापिकाओ से बोली, "बैठिए बहन जी, तनिक बैठकर बात समझाइए। क्या हुआ है ?"

उत्तर सुधा ने एक कुर्सी पर बैठते हुए दिया, "आज साय हमारे घर मेरे ससुराल वाले सगाई का शगुन लेने आ रहे है। मैंने अपने से अधिक हेल-मेल रखने वाली बहनो को इस अवसर पर आमन्त्रित किया है।

"ये सब इस समाचार को प्रसन्नता का विषय समझ मेरे साथ चुटकिया ले रही है।"

"हा, विषय तो चुटकी लेने का ही है। अच्छा, यह बताओ कि मुझे भी निमन्त्रण है अथवा नही ?"

"इसीलिए तो यहा खडी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी। देखो सिद्धेवरी, तुम ठीक तीन बजे आ जाना। मैं तुमसे इस विषय पर बहुत बाते

करना चाहती हू। वे लोग तो पाच बजे आएगे।"

"ठीक है। मै आऊगी।"

इस समय अन्य अध्यापिकाए भी सगाई की रस्म पर उपस्थित होने का वचन दे एक-एक कर चल दी। जब सुधा और सिद्धेश्वरी अकेली रह गईं तो सुधा ने ही कहा, "घर कब चल रही हो ?"

"बस, पाच मिनट मे। कार्यालय मे अपनी हाजरी लगवा लू और चल पडेगे।"

सुधा ने सिद्धेश्वरी के साथ ही उठते हुए कहा, "मै तुम्हारी बूआ का धन्यवाद करना चाहती हू और उसे आमन्त्रित करने जा रही हू।'

"तो यह महाशय बूआ के बताए हुए है ?"

"फरीदाबाद के किसी फैक्ट्री के मालिक के लडके है।"

"उनसे मिली हो ?"

"हा। पिछले पन्द्रह दिन मे चार-पाच बार वह आ चुके है और मैं फरीदाबाद मे जाकर अपने रहने की सुख-सुविधा के विषय मे भी देख आई हू।"

"ओह ! और वहा कब तक जाने वाली हो?"

"सब कुछ ज्योतिषी से बातचीत कर निश्चय हो चुका है। आज पन्द्रह तारीख को शगुन है। बीस को बरात आएगी और उसी रात मेरी विदाई होगी। इक्कीस को प्रात काल हम 'हनीमून' के लिए चल देगे।"

"कहा ?"

"यह गुप्त है। इस पर भी सब प्रबन्ध हो चुका है। हवाई जहाज की सीट और वहा होटल के कमरे की बुकिग हो चुकी है।"

सिद्धेश्वरी सब समझ गई। उसे समझ आया कि मिस्टर शिवकुमार ही सुधा का पति बनने वाला है। उसने अपने सन्देह की पुष्टि के लिए पूछ लिया, "तो हमारे जीजाजी का नाम शिवकुमार जी है ?"

"हा। तो तुम उन्हे जानती हो ?"

"मैने उनके दर्शन किए है।"

"बहुत मजेदार व्यक्ति है। सदा हसते और हसाते रहते है।"

इस प्रशसा को सुन सिद्धेश्वरी के सिर मे चक्कर आ गया। वह आखे

मूँद अपने मस्तिष्क को ठण्डा कर कालेज के कार्यालय को चल पड़ी।

घर को जाते हुए सिद्धेश्वरी गम्भीर विचार मे निमग्न थी। सुधा प्रसन्न थी और फरीदाबाद वालो की बात बता रही थी। वह कह रही थी, "मेरे श्वसुर मधुमेह रोग के रोगी है। वे दिन मे तीन बार 'इन्स्यूलीन' के इजेक्शन लेते है। इस पर भी सदा प्रसन्न वदन रहते है और निर्णयात्मक बुद्धि रखते है।

"आपकी बूआ ने मेरी माता जी को इनका पता बताया था और फिर मेरी सास को टेलीफोन पर हमारे घर का पता बता दिया। इस प्रकार परिचय के उपरान्त एक दिन मेरी सास आई। उनसे बातचीत हुई और वह अपनी मोटरगाडी मे मुझे फरीदाबाद ले गईं।

"वहा मेरे श्वसुर, सास, मेरी ननदे और घरवाले सब उपस्थित थे। चाय हुई और वही चाय पर बैठे-बैठे मेरे श्वसुर ने कह दिया कि यदि मेरे पिता मान जाए तो विवाह ऐप्रिल मास मे हो सकता है।

इस पर उनका पुत्र बोला, "पापा। हमने तो निश्चय कर लिया है।"

"हमसे क्या मतलब ?" मेरी सास ने पूछ लिया।

"मैने और सुधा जी ने।" तुम्हारे जीजा जी का कहना था।

"ओह। कब और कैसे ?" श्वसुर जी ने पूछा।

"पापा। अभी-अभी दो टूक बात हो गई है।"

"पर तुमने हमारे सामने तो एक शब्द भी इसे नही कहा और न ही इसने तुमसे बात की प्रतीत हुई है। यह बैठी भी निमल और राज के बीच मे है और तुम उनके इस ओर बैठे हो।"

इस पर वह हसते हुए बोले, "पापा, दिल ने दिल से बात की है। आप इनसे पूछ लीजिए कि हमने विचार कर निश्चय कर लिया है अथवा नही ?"

"क्यो सुधा रानी। शिव ठीक कह रहा है ?" मेरी सास ने पूछा।

"मै लज्जा के मारे कुछ कह नही सकी। इस पर मेरी ननद ने मेरे गले मे बाह डाल मुझे समीप खीचकर मेरा मुख चूम लिया। इस पर सबने तालिया बजा हमारे कहे जाने वाले दिलो के निर्णय का स्वागत कर दिया।

"तदनन्तर मेरे श्वसुर ने उसी समय यह सब कार्यक्रम बना कह दिया, 'मैं कल पण्डित राधेश्याम से शिव का पत्रा दिखा दिन, मुहूर्त इत्यादि का निश्चय कर दूगा।' "

सिद्धेश्वरी अपनी सखी की बाते सुन तो रही थी, परन्तु उनको समझ नही रही थी। वह सुधा के विषय मे विचार कर रही थी कि क्या सत्य ही वह उसको पीछे छोड आगे निकल गई है अथवा क्या वह जीवन सघर्ष मे पिछड रही है। इसी मानसिक उधेड-बुन मे वह सुधा की बातो को सुनती हुई भी समझ नही रही थी। जब सुधा ने सिद्धेश्वरी से प्रश्न पूछा, "मै बूआजी को निमन्त्रण दे सीधी घर जा रही हू और तुम भी मेरे साथ ही चलोगी न ?"

सिद्धेश्वरी तो अपने ही विचारो मे निमग्न थी। उसने समझा ही नही कि उसकी सखी उससे कुछ पूछ रही है। इससे वह मौन हो उसके साथ-साथ चल रही थी। दोनो कालेज के बाहर आ गई थी और वहा दो-तीन स्कूटर खडे थे। एक मे सवार होने से पूर्व सुधा ने सिद्धेश्वरी को बाह से पकड खडा कर पूछ लिया, 'तो ठीक है न ? चलोगी न ?"

बाह पकड बात पूछे जाने से सिद्धेश्वरी को चेतना हुई। वह पूछने लगी, "क्या कहा है ?"

सुधा हस पडी। उसने पूछा, "तो तुमने मेरी बात सुनी नही ?"

"मैं किसी अन्य विषय पर विचार कर रही थी। तुम्हारी सब बात कानो मे मक्खी की भिनभिनाहट से कुछ अधिक समझ नही आई।"

"किस अन्य विषय पर विचार कर रही थी ? 'इमैन्सीपेशन आफ वुमैन' (नारी उद्धार) पर ?"

"नही। नारी के जन्मजात बन्धन पर।"

"जो जन्मजात है, वह मृत्यु पर ही छूटेगा। उसके लिए चिन्ता की क्या आवश्यकता है ? छोडो, इस जन्म-जात वाली बातो मे व्यर्थ की चिन्ता को। मैं यह कह रही हू कि मै तुम्हारी बुआ को आज का निमन्त्रण देने जा रही हू और तुम मेरे साथ ही घर चलोगी।"

"मैं वहा क्या करूगी ?

"कालेज की अन्य प्राध्यापिकाये भी तो आ रही है। वे तो ठीक समय

पर आएगी, परन्तु तुम और मै कुछ भविष्य के विषय मे विचार करेंगी।"

"अब क्या विचार करोगी ? बलि का बकरा देवता के सामने बधा खडा है। बस अब तो खट से तलवार गिरेगी और बलि का सिर देवता के चरणो मे होगा।"

दोनो स्कूटर पर सवार हुई तो ये बाते बन्द हो गई। वे इस विषय पर वार्तालाप स्कूटर ड्राइवर के सामने करना नही चाहती थी। स्कूटर के गर्र-गर्र के शोर मे धीरे-धीरे बात हो नही हो सकती थी।

जब स्कूटर सिद्धेश्वरी देवी के मकान के बाहर खडा हुआ तो उन्होने देखा कि वहा क्रीम रग की शिवर्लें कार खडी थी। स्कूटर का भाडा सुधा देने लगी तो सिद्धेश्वरी मन मे विचार करने लगी थी कि मिस्टर सिंह अभी तक दिल्ली मे ही है और बूआ से मिलता रहता है। परन्तु बूआ ने उससे इसके विषय मे कभी कुछ क्यो नही कहा ?

एक दिन पहले भी वह घर पर आई थी तो यही गाड़ी मकान के नीचे खडी थी, परन्तु उसके द्वार तक पहुचने से पूर्व चल दी थी। आज तो यह खडी है। अर्थात् सिंह अभी ऊपर है।

सुधा ने भाडा दिया और कहा, "आओ सखी। यहा से अपने घर तक पैदल ही चलेगे।"

सुधा ने अपने मन की बात कह दी, "जानती हो कि यह किसकी गाडी है ?"

"नही। किसकी है ?"

"मिस्टर के० के० सिंह की।"

"ओह ! तो यह अभी तक तुम्हारे पीछे पडे है ?"

"मै नही जानती कि वह महाशय यहा किस कारण आए है ? मै तो इसको मन से निकाल चुकी हूं।"

"पर तुम इसकी गाडी तो पहचानती हो ?"

"इससे क्या होता है ?" दोनो सीढियां चढ रही थी। मिस्टर सिंह सीढ़ियो के ऊपर खडा इनको आते देख रहा था। उसने जब सुधा को भी साथ आते देखा तो खिलखिलाकर हस पडा।

सिद्धेश्वरी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "आप किस लिए हसे हैं ?

क्या कुछ चोरी करते हुए पकडे गए है ?"

इस पर तो सिह और भी जोर से हसा। इस समय तीनो बैठक घर मे भगवन्ती के सामने जा खडे हुए थे। लडकिया बैठी तो बात सिह ने ही की। उसने कहा, "माता जी, अब तो देवी जी आ ही गई है। मै इनसे ही कह रहा हू।"

"सिद्धेश्वरी देवी! हमारा पार्लियामैण्ट का सत्र समाप्त हो गया है और मैं आगामी तीन मास का कार्यक्रम बना रहा हू। मै माताजी से इसी विषय मे बात करने आया था। इनका कहना है कि मैं आपसे स्वय ही बात कर लू।"

"आपके कार्यक्रम मे मै क्या और क्यो हू ?"

"यही तो निश्चय करने के लिए माताजी ने आपकी ओर सकेत किया है।"

"पर मुझे तो इस समय एक क्षण का भी अवकाश नही। सुधा बहन जी की आज सगाई है और मै अभी इनके साथ इनके घर पर जा रही हू।"

"वहा तो मैं भी जा रहा हू। परन्तु अभी तो ढाई बजे है। इनके यहा सगाई की रस्म पाच बजे है। यदि आप मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें तो हम दोनो सुधा जी तथा इनके माता-पिता को बधाई देने पौने पाच बजे इनके घर पहुच जाएगे।"

"और आपका निमन्त्रण किस उपलक्ष मे है ?"

"अभी तो हम एक कान्फ्रेस मे जा रहे है। मै आपको उसी मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर रहा हू।"

"किस विषय पर यह कान्फ्रेस हो रही है ?"

"नारी उद्धार पर।"

"और कौन-कौन इसमे भाग ले रहे है ?"

"वैसे तो सब इस दिशा मे कार्य करने वाले है। विश्वविद्यालय के एक-आध प्राध्यापक भी आ रहे है।"

"परन्तु आप तो अपना तीन मास का कार्यक्रम बना रहे हैं न ?"

"उस विषय पर इस कान्फ्रेस के उपरान्त निश्चय करूगा। इस

निश्चय करने मे कान्फ्रेस का भारी योगदान होने वाला है।"

"परन्तु मै तो सुधा जी के साथ ही यहा से जाने का विचार रखती हू।"

"भला इस समय आप वहा जाकर क्या करेगी ? इनको अपनी सास, श्वसुर के तथा ननद, ननदोइयो के सामने उपस्थित होने के लिए तैयारी करनी होगी। इनकी माताजी को इन्हे बहुत सी बाते समझानी होगी और फिर इनके भाई-बहन भी है। वे सब सुधा जी को अनेकानेक बाते पूछने और कहने वाले होगे।

"देखिए, देवी जी। इस समय तो आपका इनके साथ जाना और इनके सब सम्बन्धियो और इनके बीच जा खडा होना सर्वथा भद्दा प्रतीत होगा और इस कान्फ्रेस मे बहुत उपकारी कार्य होने की सम्भावना है।"

नारी सुधार के विचार पर सिद्धेश्वरी अपने मन को सिह के साथ जाने के लिए तैयार करने लगी थी। मन मे इस योजना को ठीक समझ उसने बूआ से पूछ लिया, "बूआ, तुम क्या कहती हो ?"

"मिस्टर सिह ठीक कह रहे है कि इस समय सुधा को स्वतन्त्रता से विचरने दो। रही बात इस कान्फ्रेस मे जाने और सिह के तीन मास के कार्यक्रम मे सम्मति देने की। भला इसमे मै एक अनपढ स्त्री क्या सम्मति दे सकती हू ?"

सिद्धेश्वरी ने एक क्षण के लिए विचार किया और चलने के लिए तैयार हो गई।

२

सिद्धेश्वरी ने कालेज के कपडे बदले और सिह के साथ मोटर मे चल दी। जब वह चली गई तो सुधा ने भगवन्ती से कहा, "बूआ, तुम हमे आशीर्वाद देने तो आ रही हो न ?"

"हा। मुझे शिव की मा यहा से अपनी गाडी मे साथ ले जाने वाली है।"

"तब तो ठीक है। पर बूआ, ये लोग आपके किस प्रकार परिचित है?"

"तुम्हारे ससुराल वाले न ?"

"हा। उन्ही की तो बात हो रही है।"

"मै जब देश-विभाजन के समय पजाव से भागी थी तो जम्मू जा पहुची थी। वहा से भागी तो पठानकोट चली गई। वहा से रेलगाडी मे सवार हो दिल्ली चली आई थी। तीन दिन तक रेल के प्लेटफार्म पर पडी रही थी। उन दिनो, शिव के पिता को मुझ पर दया आ गई और मुझे गोल मार्केट के समीप एक सरकारी क्वार्टर मे ले जाकर ठहरा दिया था।

"तब से यह परिवार मेरा परिचित है। शिव उस समय छ वर्ष का था। बीच मे कई कारणो से मेरा इनसे सम्पर्क नही रहा था। ये उत्त-रोत्तर धनवान होते गए और मै अपनी पूर्ण शक्ति लडकी की पढाई मे व्यय करती रही। दोनो के मार्ग भिन्न-भिन्न हो गए। वे लखपति बनने के मार्ग पर चल पडे और मैं कहे जाने वाले सरस्वती मन्दिर की ओर।

"पिछले फरवरी मास मे एक दिन पटेल नगर मार्ग पर शिवजी की मा मिल गई। सुख समाचार पूछते हुए शिव के विषय मे बात होने लगी। शिव की मा ने बताया कि लडका अब कारोबार मे पिता का हाथ बटाने लगा है। मैने उसके विवाह की बात पूछी तो वह बोली कि कई लडकिया दिखाई है। उसे कोई पसन्द नही आ रही। मैने सिद्धेश्वरी की बात कही तो वह इसे देखने आई थी। पीछे पता चला कि न तो सिद्धेश्वरी को शिव पसन्द आया और न ही शिव को सिद्धेश्वरी। इस पर मैने तुम्हारा नाम उपस्थित कर दिया। तुम्हारे माताजी और शिव के माताजी मे मैने भेट करवा दी और उसका आज शुभ परिणाम निकलने वाला है। मुझे उससे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"और बूआ। मिस्टर सिंह को सिद्धेश्वरी पसन्द है ?"

"लक्षणो से तो यही प्रतीत होता है। परन्तु किसी के मन की बात तो कह नही सकती।"

"पिताजी ने पटना मे अपने एक मित्र को मिस्टर सिह के विषय मे जानकारी प्राप्त करने के लिए लिखा था। वह मित्र राज्य सचिवालय मे सहायक सचिव है। उनका उत्तर आया था, परन्तु उस पत्र के आने से पूर्व

फरीदाबाद वालो से सब बात पक्की हो चुकी थी। इस कारण उस मित्र ने क्या लिखा है, पिताजी ने बताया नही।"

"तुम्हारी माताजी से पता करने के लिए कहूगी।"

"बूआ, कहो तो वह पत्र ही तुमको दिलवा दू ?"

"यह तो बहुत ही ठीक रहेगा।"

"सिद्धेश्वरी की रुचि इस विषय मे वैसी ही है जैसी पहले थी।"

"वह तो नारी उद्धार के यान पर सवार आकाश मे विचरती प्रतीत होती है। देखा है न, कान्फ्रेस का विषय सुन वह तुमको भी छोड चल दी है।"

"बूआ, तैयार हो जाओ। हम चलेगे।"

"और वे फरीदाबाद वाले ?"

"उनको टेलीफोन कर दो कि तुम वहा पहले ही पहुच गई हो।"

भगवन्ती उठी। वस्त्र बदले और ऊपर के कमरो को बन्द कर वह मकान के नीचे की मन्जिल पर आ मालिक मकान के टेलीफोन से फरीदाबाद टेलीफोन करने लगी। शिवकुमार की माताजी को सूचित कर कि वह खोसला के घर जा पहुची है। वह उनको वहा ही मिलेगी। भगवन्ती सुधा के साथ उसके पिता के मकान पर जा पहुची।

दोनो ओर के सम्बन्धियो और मेहमानो के लिए चाय-पानी का प्रबन्ध था और मकान के बाहर एक बडा-सा शामियाना लगा पाच सौ अभ्यागतो के खाने-पीने का प्रबन्ध किया हुआ था। भगवन्ती को यह समझ आया कि शिवकुमार के माता-पिता ने सिद्धेश्वरी का सम्बन्ध पसन्द नही किया तो ठीक ही किया है। सगाई की बात तो दूर रही, वह तो विवाह पर भी इतना कुछ करने का विचार नही रखती थी।

भगवन्ती सुधा की मा सरस्वती से मिली तो उसने उसे बहुत आदर-सत्कार के साथ घर की बैठक मे बिठाया और लडकी के विवाह-सम्बन्ध उस स्थान पर हो जाने पर धन्यवाद करने लगी।

पीने को कोका कोला दिया गया। जब भगवन्ती 'ड्रिक' लेने लगी तो सरस्वती लडकी को लेकर पृथक कमरे मे चली गई।

सुधा ने मा से कहा, "मा। पिताजी से कहकर पटना से मिस्टर सिंह

के विषय मे आया पत्र बूआ भगवन्ती को दिखा दो।"

"क्यो ? क्या बात है ?"

"पता चला है कि वह सिद्धेश्वरी के लिए यत्न कर रहा है।"

"तो ठीक ही है। उस पत्र को दिखाने से क्या लाभ होगा। जो होता है, होने दो। भविष्य मे कौनसा कार्य फलदायक होगा और कौनसा नही होगा, कैसे कहा जा सकता है ?"

"परन्तु उस पत्र मे जो कुछ लिखा है, उसे बता देना हमारा धर्म है। और विवाह होना न होना उनके भाग्य की बात है।"

"उस पत्र मे तो मिस्टर सिह की कुछ-कुछ निन्दा ही की है। इस पर भी तुम्हारे पिता कहते थे कि पत्र के लिखने वाला कम्युनिस्ट है और उनकी एक जमीदार के लडके के लिए जो मानसिक स्थिति हो सकती है, उससे कुछ कम ही उसमे है।"

"मा। इस विषय मे हमे वह पत्र बूआ भगवन्ती को बिना किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी के दिखा देना चाहिए। शेष भाग्य के अधीन छोड देना चाहिए।"

"तुम्हारे पिताजी से कहूगी।"

पाच बजे फरीदाबाद वाली पार्टी दस मोटरगाडियो मे आए और लगभग दो सौ के ऊपर लडकी वालो के सम्बन्धी और मित्र एकत्रित थे। वर पक्ष के लोग आए तो उन्हे बिठाया गया और सगाई की रस्म पूरी की गई। इसके अनन्तर खाना-पीना होने लगा।

वर पक्ष की स्त्रिया घर के भीतर आ लडकी का शगुन कर गई। भगवन्ती इतना बडा समारोह और लेन-देन होता देख रही थी। वह विचार कर रही थी कि जब सगाई पर इतना कुछ है तो विवाह पर क्या होगा ? इस विषय मे विचार करते-करते उसका मस्तिष्क चकरा रहा था। इस सबमे वह सिद्धेश्वरी और सिह को भूल ही गई थी। एकाएक उसे स्मरण आया कि सिह कह गया था कि वह पौने पाच बजे पहुच जाएगा। वह क्यो नही आया ? यह विचारकर उसे चिन्ता लगने लगी थी। वह घर के भीतर से निकलकर बाहर शामियाने मे आई जहा खाना-पीना हो रहा था और सिह तथा सिद्धेश्वरी को देखने लगी।

शामियाना मकान के सामने पार्क मे लगा था। पार्क के बाहर मोटर-गाडिया खडी थी। उनमे क्रीम रग की गाडी देख उसके चित्त को शान्ति हुई। इस पर भी वह चिन्ता कर रही थी कि सिद्धेश्वरी सुधा को मिलने भीतर क्यो नही आई ?

वह शामियाने मे गई तो मिस्टर सिंह और सिद्धेश्वरी को एक कोने मे खडे हाथो मे प्लेट पकडे खाते देख सन्तोष अनुभव करती हुई भीतर लौट गई।

भगवन्ती को सिद्धेश्वरी का सुधा को बधाई देने के लिए आने से पूर्व दावत करने लग जाना कुछ अटपटा लगा। इस पर भी वह मौन रही।

इस समय सुधा का पिता राम नाथ खोसला वहा आया जहा स्त्रिया सुधा को घेरे बैठी थी। भगवन्ती भी वहा बैठी थी। उसने भगवन्ती को सम्बोधन कर कहा, "बहन जी। आप तनिक बाहर आइए। आपसे कोई मिलना चाहता है।"

भगवन्ती उठकर रामनाथ के साथ दूसरे कमरे मे चली गई। वहा सरस्वती, सुधा की मा वहा खडी थी। भगवन्ती को सरस्वती के सामने खडा कर रामनाथ ने कहा, "सुधा की मा ने कहा है कि पटना से सिंह के विषय मे आया पत्र आपको सुना दू। इसने तो पत्र ही आपको देने के लिए कहा है। परन्तु उसमे कुछ अपने अफसरो के विषय मे भी लिखा है, इस कारण वह पत्र मैं आपको नही देना चाहता। उसमे से सिंह से सम्बन्धित अ्रश मै पढकर आपको सुना देता हू। वह मित्र लिखते है

"आपने मिस्टर कमलेश कुमार सिंह के विषय मे पूछा है। मैं इसके पिता से भली भाति परिचित था। वह एक महा दुराचारी और दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसकी जमीदारी सरकार द्वारा अधिकार मे ली जाने पर पता चला कि जमीदारी भारी कर्ज मे थी। लगभग चालीस-पचास लाख रुपया जमीदार ने लोगो का देना था। सरकार को ज़मीदारी लेने पर बहुत रुपया व्यय करना पडा था।

"इस पर भी यह सरकार के ज़मीदारी लेने के विरुद्ध हाई कोर्ट मे दावा करने वालो मे सम्मिलित था। हाई कोर्ट ने उनका दावा स्वीकार किया तो ससद ने सविधान मे सशोधन कर दिया और ज़मीदारी जब्त हो

गई। इस पर भी ज़मीदारी पर दस-पन्द्रह वर्ष से ऋण एकत्रित हो रहा था।

"मिस्टर के० के० सिह भी पिता से कम बेईमान और जालसाज़ नही है। इस वर्ष भी उसने चुनाव जीतने के लिए पाच लाख रुपया व्यय किया है। इसके निर्वाचन क्षेत्र मे कोई ही परिवार बचा होगा जिसको कुछ न कुछ भेट न दी गई हो। यह भी सुनने मे आया है कि चुनाव जीतने के लिए पटना, लखनऊ, और कानपुर से बिना लाइसेंस के वेश्याए आई थी और सिंह के लिए वोट प्राप्त करने का यत्न करती रही हैं।

"यह भी सुनने मे आ रहा है कि इसका दिवाला पिटने वाला है।

"इस पर भी मैं इस व्यक्ति से परिचित हू। यह बहुत मीठा बोलता है। सूरत-शक्ल मे भी देखने मे कोई देवता प्रतीत होता है। यह अपने क्षेत्र मे इतना बदनाम हो चुका है कि यहा कोई भी भले घर की लडकी उससे विवाह करना पसन्द नही करेगी।"

"बहन जी।" रामनाथ ने कहा, "ये सब बातें होते हुए भी इनका अर्थ यह नही हो सकता जो इस मित्र ने लिखा है।"

"क्या अर्थ हो सकता है इस भले व्यक्ति का ?"

"मै जानता हू कि यह कम्युनिस्टो का सहयात्री है और इसके पत्र मे सब कुछ सत्य होते हुए भी इसका रग वह न हो जो उसने दिया है। यह सिह दुराचारी और दुष्ट नही भी हो सकता।"

रामनाथ ने पत्र लपेटकर जेब मे रख लिया और कहा, "परन्तु मेरा सुधा का विवाह इसके साथ न करने मे इस पत्र को श्रेय नही है। कारण यह कि यह तो यहा पहुचा ही सुधा के विवाह का निश्चय हो जाने के उपरान्त था। यदि यह फरीदाबाद वाला वर न मिलता तो मै इस पत्र पर कितना विश्वास करता अथवा कितना न करता, कह नही सकता। कदाचित् इसकी अवहेलना करता।"

रामनाथ ने कहा, "मैं तो यह पत्र आपको सुनाता भी नही, परन्तु सरस्वती ने कहा कि सिद्धेश्वरी भी अपनी लडकी है। इस कारण उसे अन्धेरे मे कूदने से पहले सचेत कर देना चाहिए।"

इतना कह रामनाथ कमरे से निकल गया। भगवन्ती गम्भीर विचार

मे निमग्न भी चुपचाप पुन सुधा से छुट्टी लेने के लिए उसी कमरे मे चली गई जहा सब स्त्रिया उसे घेरे बैठी थी। सुधा को ससुराल की स्त्रिया चली गई थी। उसके कालेज की प्राध्यापिकाए वहा आ गई थी। उनमे सिद्धेश्वरी भी थी। हसी मजाक हो रहा था। भगवन्ती का वहा चित्त नही लगा। वह बाहर शामियाने मे आ गई। वह भी एक प्याला चाय लेने का विचार कर रही थी।

मिस्टर सिह ने भगवन्ती को देखा तो आगे आ पूछने लगा, "मै आपके लिए खाने के लिए कुछ ले आऊ ?"

"हा। एक प्याला चाय की इच्छा हो रही है।"

सिह गया और एक प्लेट पर कुछ पकौडे और दो टुकडे मिठाई तथा सैण्डविचिस ले आया।

भगवन्ती ने कहा, "इतना कुछ तो नही चाहिए।"

"आप जितना लेना चाहे, ले लीजिए। शेष छोड दीजिएगा।"

एक कोने मे कुछ कुर्सिया रखी थी। भगवन्ती एक पर जा बैठी और पकौडे खाने लगी। सिह चाय लेने के लिए चला गया।

सिह दो प्याले काफी ले आया। तब तक भगवन्ती ने खाना समाप्त कर प्लेट कुर्सी के नीचे रख दी थी और वह काफी का प्याला ले पीने लगी।

सिह ने काफी पीते हुए कहा, "सिद्धेश्वरीजी ने आज मेरा व्याख्यान सुना है और मैं समझता हू कि उस व्याख्यान के पुरस्कार स्वरूप वह मेरे घर की शोभा बनना मान गई है।"

इस समाचार से भगवन्ती विस्मय मे सिह का मुख देखने लगी। सिह ने कहा, "उसने मेरे प्रस्ताव को इस शर्त पर स्वीकार कर लिया है कि यदि आप स्वीकार करेगी तो वह विवाह इसी मास मे करने के लिए राजी हो जाएगी।"

"परन्तु।" भगवन्ती ने एक चुस्की काफी पीते हुए कहा, "व्याख्यानो का प्रभाव प्राय अस्थायी होता है। यह देख लो।"

"और स्थायी प्रभाव किस बात का होता है ?"

"बुद्धि परिवर्तन का। मनुष्य की आत्मा जब भी बुद्धि की प्रेरणा

पा कार्य करती है तो वह कार्य कल्याण करने वाला होता है ।"

"और माता जी । क्या आपसमझती है कि व्याख्यान बुद्धि को सन्मार्ग नही दिखाता ?"

"यह बुद्धि पर प्रभाव डाल सकता है, परन्तु यह शरीर की कामनाओ को उभार कर बुद्धि की हूक को उसमे डुबा भी सकता है। व्याख्यान तो साधन ही होता है । यह कामनाओ को प्रेरणा भी तो दे सकता है ।"

"परन्तु मैने ऐसा नही किया । मेरा पूर्ण वक्तव्य बुद्धि को प्रेरणा देने वाला सर्वथा तर्कसगत था ।"

"तब तो ठीक है । मै समझती हू कि विवाह के विषय मे मैने उसे पूर्ण स्वतन्त्रता दे रखी है ।"

"इस पर भी वह आपसे सम्मति करने की बात कह रही थी ।"

भगवन्ती विचार कर रही थी कि क्या यहा भी पटना वाला पत्र देर से आया है ?

३

सिद्धेश्वरी और भगवन्ती इकट्ठी ही घर लौटी। वे साउथ पटेल नगर से पैदल ही घर लौटी । मार्ग मे तो बात नही हुई, परन्तु घर पहुच कर भगवन्ती ने पूछा, "वह कान्फ्रेस कैसी रही जहा सिह तुम्हे ले गया था ?"

सिद्धेश्वरी हस पडी । हसते हुए बोली, "बूआ, वह कान्फ्रेस तो केवल दो व्यक्तियो मे ही थी । एक थे मिस्टर सिह और दूसरी ओर थी आपकी बेटी सिद्धेश्वरी देवी । वहा कोई तीसरा सुनने वाला भी नही था ।"

इतना कहती-कहती सिद्धेश्वरी फिर हस पडी । भगवन्ती ने कहा, "महा धूर्त है वह । उसने कुछ ऐसा प्रकट किया था कि उसमे बहुत से लोग भाग लेने वाले है । उसने तो कहा था कि इसमे कई विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका भी आने वाली हैं ।"

"बूआ, उसने यह नही कहा था कि बहुत-सी प्राध्यापिकाए आने वाली है। उसका कहना था कि कम से कम एक विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका भी आने वाली है। वह मै ही थी। साथ ही उसने, मुझे स्मरण है, यह नही बताया था कि कान्फ्रेंस मे कितने व्यक्ति आमन्त्रित हैं।

"कान्फ्रेंस के आरम्भ होने से पूर्व उसने यह सब बात समझा दी थी। उसने यह कहा था कि वह एक कुशल पार्लियामैण्टेरियन है और उसका प्रत्येक शब्द अर्थयुक्त और अनेकार्थ वाचक होता है। यह उसका स्वभाव है। इस पर भी पिछले दस वर्ष के ससद की सदस्यता-काल मे उसके कथन मे अस्पष्टता का लाच्छन तो कभी लगा है, परन्तु अन्यथा होने की बात कभी किसी ने नही कही।

"बूआ, उसने अपना एक व्याख्यान जो उसने पटना मे एक स्त्रियो की समाज मे देना है, सुना दिया। वह लिखा रखा था। उसके सुनाने के उपरान्त हमने उस पर विचार किया। दर्जनो सशय मैने किए और मै समझती हू कि मिस्टर सिंह ने उन सबका समाधान बहुत ही कुशलता से किया है।"

"तो तुम उससे विवाह के लिए वचन दे आई हो ?"

"यह किसने बताया है आपको ?"

"विवाह के उम्मीदवार ने स्वय बताया है।"

"मैं समझती हू कि उन्होने ठीक ही बताया है। आज खुलकर उनसे बातचीत हुई है और मै समझती हू कि हमारी जीवन मीमासा लगभग एक समान है। अत मै इस परिणाम पर पहुची हू कि हमारा जीवन सुखी रहेगा।"

"देखो सिद्धेश्वरी, मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि तुमने विवाह कर लेने का निश्चय किया है। तुम्हारा वह वृतान्त जब तुम कामाभिभूत हो आत्मसमर्पण कर बैठी थी सुन मुझे तुमसे भारी निराशा हुई थी, परन्तु बुद्धि से पराभूत होना कामनाओ से पराभूत होने से बहुत श्रेष्ठ है।

"इस दिशा मे तो मै प्रसन्न हू कि तुमने विवाह करने का निश्चय कर

लिया है, परन्तु अभी-अभी सुधा के पिता ने अपने एक पटना के मित्र का पत्र सुनाया है। उसमे मिस्टर सिह और उसके परिवार के विषय मे बहुत कुछ लिखा है। जो इसके लिए किसी प्रकार भी शोभनीय नही है।"

"वह पत्र मुझे दिखा दीजिए। मै उस पर उससे समाधान मागूगी।"

"वह पत्र तो उन्होने दिया नही। कह रहे थे कि उसमे कुछ उनके सरकारी अफसरो की भी बाते है। इस कारण वह पत्र दिया नही जा सकता। इस पर भी एक बात रामनाथ जी ने बताई है कि पत्र लिखने वाला कम्युनिस्टो का सहयात्री है। इस कारण उसकी सब बात को ब्रह्म वाक्य समझा तथा सत्य स्वीकार नही किया जा सकता।"

"बूआ, क्या लिखा है उस पत्र मे ?"

"एक तो यह कि यह दिवालिया है। इसकी आय से अधिक इसका व्यय है।"

"दूसरा, यह स्वय दुराचारी है। इसने अपने चुनाव मे सहायक के रूप मे पटना, लखनऊ और कानपुर से बहुत-सी बिना लायसैंस वेश्याए बुलाई थी।

"तीसरा, इसने निर्वाचनो मे बेहद रुपये, शराब और स्त्रियो का प्रयोग किया है।

"चौथा, कोई ही परिवार ऐसा होगा जिसको इसकी रिश्वत मे कुछ न कुछ भेट न पहुची हो।

"पाचवा, इसकी जमीदारी पर लाखो रुपए ऋण था जब यह सरकार ने अपने अधिकार मे ली थी।"

"बूआ, इसमे कोई भी ऐसा अपराध नही जिसे मै विवाह मे बाधा समझू। इस पर भी मै उनसे इन सबका समाधान सुनना चाहूगी।"

"और यदि समाधान सन्तोषजनक न हुए तो क्या करोगी ?"

"जो मेरी बुद्धि उस समय कहेगी, वही करूगी। बूआ, मै अपने को एक बुद्धिशील प्राणी मानती हू।"

"ठीक है। मै तुम्हारे निर्णय पर फूल चढाऊगी।"

"बूआ, बहुत-बहुत धन्यवाद है।"

अगले ही दिन सिह से सिद्धेश्वरी की बातचीत हो गई। सिह ने

पटना से आए पत्र की बात सुनी और कह दिया, "देवी, कुत्ते भौकते रहते है और कारवा चले जाते है।

"परन्तु मै एक बात तुम्हे कल भी बता चुका हू। वह यह कि मै व्यवहार मे भला अथवा बुरा उसको मानता हूं जिसका परिणाम शुभ अथवा अशुभ होने वाला हो। साथ ही मै युद्ध मे 'टिट फार टैट' के सिद्धान्त को मानता हू। शान्तमय व्यवहार और वार्तालाप मे मै सत्य और न्याय को उन्ही अर्थो मे समझता हू जिन अर्थो मे सब लोग समझते है। परन्तु युद्ध की स्थिति मे सत्य और न्याय वह है जिसमे विजय होनी हो और निर्वाचनो को मै किसी युद्ध से कम नही मानता।

"युद्धो मे राज्य पलट जाते है। इसी प्रकार निर्वाचनो मे भी राजे अर्थात् सत्ताधारी दल निस्तेज हो जाते है। इनमे युद्ध नीति चलती है।

"देवी जी, तनिक विचार करेगी तो आप समझ जाएगी कि मेरा क्या अभिप्राय है। यदि युद्ध मे एक सेना के पास तो अणु बम्ब हो और दूसरे के पास पचास वर्ष पुरानी बन्दूके हो तो सत्य और न्याय अणु बम्ब वालो के पक्ष मे हो जाएगा।

"वास्तव मे यह होता नही। सत्य और न्याय विजय-पराजय से पृथक बात है। अत यह आवश्यक है कि मिथ्यावादी और अन्यायी के हाथ मे अणु बम्ब न हो। अन्यथा सत्यवादियो के हाथ मे विपक्षियो से भी अधिक अणु बम्ब हो।

"भला यह बताओ कि प्रधानमन्त्री तो लाखो रुपयो की हवाई जहाजो की यात्रा के रूप मे सरकारी सहायता प्राप्त करे और मेरे जैसा निर्दलीय प्रत्याशी यदि दस-बीस रुपए किसी से लेकर व्यय करे तो वह अनुचित कैसे हो गया ?

"इसी प्रकार यदि सरकार मत प्राप्त करने के लिए सरकारी ठेके, परमिट, लायसैस और नौकरिया दे सकती है तो दस-बीस पेशेवर स्त्रियो ने यदि मेरे लिए मतदाताओ को प्रेरणा दे दी तो वह पाप कैसे हो गया ?

"रही बात यह कि मैने व्यय का हिसाब झूठा दिया है। भला प्रधान मन्त्री जिसका लाखो रुपए तो हवाई जहाज़ के भाडे के हो जाते है, वह उसको दर्ज नही करती तो मै जो किसी दल से भी सम्बन्ध नही रखता

वह कहा से वह सब कुछ लाए ? और यदि यह सब व्यय न करू तो घटिया शस्त्रास्त्र रहने वाले सिपाही की भाति हार जाऊगा। यह तो साधन न होने से सत्य की पराजय हो जाएगी।"

सिद्धेश्वरी इस कथन मे छिद्र नही निकाल सकी और मिस्टर सिह का मुख देखती रह गई। सिह ने ही बात आगे चलाई। उसने कहा, "देखिए, देवी जी, मैं यह मानता हू कि प्रत्येक व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त करनी है। और उसके लिए यम नियमो का पालन करना अत्यावश्यक है। परन्तु मै यह भी जानता हू कि धर्म युद्ध मे सब साधन प्रयोग करने की क्षमता रखना भी एक महान धर्म है।

"मै यह मानने के लिए तैयार नही कि क्योकि कुछ कारणो से कोई शासन पा गया है, इस कारण वह धर्म-कर्म का ठेकेदार हो गया है।"

"परन्तु यह कौन निर्णय करेगा कि अमुक काम धर्म है और अमुक अधर्म ?"

"यह निर्णय करने के लिए न्यायपालिका है, परन्तु न्यायपालिका अपने को शासको द्वारा बनाए नियमोपनियमो मे बधा हुआ पाती है और विपक्षी दलो की याचिका पर निर्णय देते हुए यह भी नही कह सकती कि वह इन नियमोपनियमो को बदलने की सम्मति देते है। सर्वोच्च न्यायालय केवल विधि-विधान के पालन के लिए ही नियुक्त नही किया गया, वरच विधि-विधान को सविधान के अनुकूल होने के विषय मे भी सम्मति देने के लिए नियुक्त है। केवल इतना ही नही, वरच वे सविधान मे भी अयुक्ति-सगत न्याय विपरीत बातो को बदलने का सुझाव दे सकता है। ऐसा वह करती नही। यदि करती है तो सरकार मानती नही।

"वर्तमान न्यायपालिका यह नही कर सकती, परन्तु मै तो यह कहता हू कि जो कुछ राम के लिए न्याय है, वह शाम के लिए भी है।"

सिद्धेश्वरी ने आश्वस्त होने के लिए पूछ लिया, "भला यह बताइए कि पति-पत्नी मे झगड़े पर भी आप उचित-अनुचित मे सीमोल्लघन कर जाएगे।"

"इसकी आवश्यकता नही पडेगी। कारण यह कि पत्नी किसी देश की शासिका नही है। उसके पास सेना, पुलिस और अरबो रुपए व्यय करने के

लिए नही है।

"और यदि आपके पास अटूट धन है और आप उसका प्रयोग कर अपने निर्धन पति को पराजित करने का काम करेगी तो पति को भी अधिकार होगा कि वह भी जो हो सके, करे।

"वैसे तो मै इसकी आवश्यकता नही समझता। इस पर भी यदि मेरी पत्नी अपने को मेरे बराबर अनुभव करना चाहती है तो मै अपनी आधी सम्पत्ति उसके नाम विवाह से पूर्व कर सकता हू।"

इस बात ने सिद्धेश्वरी का मुख बन्द कर दिया। उसके मुख से केवल इतना निकला, "धन्यवाद है।"

बात समाप्त हो गई। जब सिद्धेश्वरी ने पूर्ण वार्तालाप अपनी बूआ को सुनाया तो वह आश्वस्त मन से पूछने लगी, "तो फिर क्या निश्चय किया है?"

"बूआ, जुलाई की पन्द्रह तारीख तक कालेज मे छुट्टिया है। मैने यह कहा है कि वह ऐप्रिल मास मे आपसे बात कर सगाई कर ले। मई की पन्द्रह तारीख को विवाह हो जाए और उसी दिन हम कही दो मास के प्रवास के लिए चल देगे।"

"अच्छी बात है। उसे कहना कि मुझसे बातचीत कर ले। एक बात उसे बतानी आवश्यक है कि सिद्धेश्वरी की विधवा बूआ के पास लडकी के विवाह पर व्यय करने के लिए कुछ नही है। केवल लडकी ही है और वह तो स्वत उसे प्राप्त हो रही है।"

"हा, बूआ। यह बात कर लेना। मैंने कालेज मे नौकरी की बात कर ली है। इसमे उसे आपत्ति नही है।"

इसके आगे बात पन्द्रह दिन तक नही हो सकी। मिस्टर सिंह बम्बई चला गया था। वह तीन मई को वापस दिल्ली आया था। उसी सायकाल वह भगवन्ती से मिलने आया। सिद्धेश्वरी घर पर नही थी। वह सुधा से मिलने गई हुई थी। वह अपने 'हनीमून' से लौट आई थी और मा से मिलने आई हुई थी।

सिह ने भगवन्ती के मकान के बाहर लगी घण्टी बजाई तो भगवन्ती ने द्वार खोल देखा और सिह को आदर से भीतर बुला बिठाया और जल-

पान पूछने लगी।

"सिद्धेश्वरी कहा है ?" सिंह ने पूछा।

"उसकी सहेली ऊटी से कल लौटी थी और आज दिल्ली अपनी मा से मिलने आई है। सिद्धेश्वरी उससे मिलने गई है।"

"तो वह लौट आई है ?"

"हा।"

"अच्छा, माता जी। मै एक तो यह लिफाफा सिद्धेश्वरी जी के लिए लाया हू और दूसरे आपसे भावी कार्यक्रम निश्चय करने आया हू।"

"परन्तु वह तो सिद्धेश्वरी ही करेगी।"

"उसने अपने मन की बात बता दी है। वह चाहती है कि सगाई की रस्म तो अभी हो जाए और विवाह पन्द्रह मई को हो। विवाह के उपरान्त वह मेरे साथ किसी शान्त और एकान्त स्थान पर दो मास के लिए रहने जाएगी।

"आपका सम्बन्ध है केवल प्रथम दो बातो से। यदि आप स्वीकार करे तो कल मै शगुन लेने की रस्म कर दू और फिर मई की पन्द्रह तारीख को विवाह की घोषणा कर दू। मेरे मित्र इत्यादि बरात मे सम्मिलित होगे।"

"परन्तु बेटा। एक बात विचार कर लेने की है। वह यह कि मेरे पास तो कुछ लेने-देने को है नही। व्यय करने के लिए भी बहुत कम है। बेटी के पास कुछ बैंक मे है। वह कितना है, मै जानती नही और न ही मै उसे उसमे से इस मेले-तमाशे पर व्यय करने के लिए कहूगा।"

"यह तो मैं यहा आने के पहले दिन ही समझ गया था और इसीलिए मैंने सिद्धेश्वरी जी को सुधा पर उपमा दी है। खैर, छोडिए इस बात को। यह विवाह होगा। आपको कुछ भी व्यय करना नही पडेगा।"

"इसक लिए ही यह कह रही हू कि कार्यक्रम सिद्धेश्वरी निश्चय करेगी।"

"मै समझता हू कि उससे इसी प्रकार निश्चय हुआ है।"

"कब मिले थे तुम उससे ?"

"अट्ठारह ऐप्रिल को। जाने के समय मै उससे मिल नही सका। हा,

मैंने वहा से एक पत्र मे यह कार्यक्रम लिखा था। उस पत्र का उत्तर उसने नही भेजा। इसका अर्थ मैं यह समझा हू कि उसने यह कार्यक्रम स्वीकार कर लिया है।"

"मेरे साथ उसकी बात हुई है। उसने तुम्हारे पत्र की बात तो बताई नही। हा, वह मेरी बात इस प्रकार मान गई है कि जिस दिन तुम कहोगे, मै तुम्हारी कोठी पर शगुन लेकर आऊगी। हम चार व्यक्ति एक टैक्सी मे आएगे और शगुन देकर उसी टैक्सी मे लौट आएगे। समय तुमने निश्चय करना है।

"विवाह चौदह अथवा पन्द्रह मई को इस मकान पर होगा। मैंने मालिक मकान से नीचे का आगन माग लिया है। उसमे वेदी होगी। तुम अपने चार-पाच सम्बन्धियो के साथ एक मोटरगाडी मे आओगे। निश्चित दिन सात बजे सायकाल आइएगा। नौ बजे तक विवाह सस्कार समाप्त हो जाएगा। उसी समय मकान की इसी बैठक मे पन्द्रह व्यक्तियो के लिए भोजन की व्यवस्था होगी। दस बजे तक भोजन समाप्त होगा और उसके तुरन्त उपरान्त सिद्धेश्वरी की विदाई होगी। आपके मित्र एक गाडी मे लौटेगे और आप और सिद्धेश्वरी दूसरी गाडी मे लौटेगे।

"मेरा विचार है कि आप रात के ग्यारह बजे से पूर्व घर पहुच जाएगे। मेरी और से यह लडकी को अन्तिम भेट होगी। इतनी रस्म पर जो कुछ व्यय होगा, वह मेरी अपनी अर्जित की हुई आय मे से है। इतना कुछ लडकी के विवाह के अवसर पर व्यय करने के लिए मैने अपने स्कूल चलाने के दिनो की आय मे से बचाकर रखा है।"

"माताजी। यदि इतने कुछ मे आपका पुत्र कुछ अपने पास से व्यय करना चाहे तो आप मना नही कर सकेगी?"

भगवन्ती इस कथन का अभिप्राय समझती थी। इस विषय मे सिद्धेश्वरी ने भी पहले सकेत कियाथा। उसने कहा था, "बूआ, कदाचित अपने मित्रों और सम्बन्धियो की खातिरदारी पर वह अपने पास से व्यय करेंगे।"

"बेटा।" बूआ का एक टूक कथन था, "यह उसे करना ही चाहिए। वह ख्याति मान व्यक्ति है और अपनी ख्याति बनाए रखने मे उसकी रुचि

होनी ही चाहिए। उसके लिए वह जो कुछ भी व्यय करे, उसका अधिकार है। परन्तु वह सब कुछ उसे यहा इस मकान पर नही करना चाहिए।

"मैने तो यह कहा है कि जो कुछ मै नही हू, वह मै दूसरे के मन पर अकित करना नही चाहती और न ही मै यह विख्यात करना चाहती हू कि मिस्टर सिह ने अपनी सास वालो के घर का खर्चा दिया है।"

इस भावना का उत्तर सिद्धेश्वरी नही दे सकी थी और भगवन्ती इस विचार पर दृढ थी कि वह एक निर्धन स्त्री है और उसे अपनी निर्धनता के प्रकट होने मे लज्जा नही लग रही।

अब सिह को इस बात की ओर सकेत करते हुए उसने कहा, "देखो बेटा, अभी तुम पुत्र समान ही हो और विवाह उपरान्त तुम्हे दोहरी भूमिका निभानी होगी। तुम पुत्र के साथ दामाद भी होगे।

"इसपर भी एक बात तुमको समझ लेनी होगी कि मा के नाते मेरे घर मे मेरी आज्ञा चलेगी और सास के नाते मै तुम्हारे घर के कामो मे हस्तक्षेप नही करूगी।"

जिस बात पर कमलेश कुमार सिह आरम्भ से ही मुग्ध था, वह बूआ, भतीजी के सक्षिप्त, सुस्पष्ट और सार्थक कथनो पर ही था। वह समझता था कि ये दोनो के सरल और सत्य हृदय के सूचक ही होते है।

प्रथम पत्र ही जो उसे सिद्धेश्वरी का प्राप्त हुआ था, वह इतना सक्षिप्त और स्पष्ट था कि वह उसे पढते ही समझ गया था कि उसे विवाह योग्य उपयुक्त लडकी का पता चल गया है। अब उस लडकी को पत्नी बनाने का श्रेय प्राप्त करना चाहिए।

इसके उपरान्त वह ज्यो-ज्यो इन बूआ-भतीजी से अधिक और अधिक सम्पर्क मे आता गया, वह समझता गया कि उसे इन बुद्धिशील प्राणियो से सम्बन्ध बना सुख मिलेगा।

आज भी वह समझ गया था कि बूआ ने जो कुछ कहा है, वह उसकी चिरकाल से विचारित बात है। जब बूआ ने कहा कि इस घर मे उसकी आज्ञा ही चलेगी; क्योकि वह यहा मा है तो उसने पूछ लिया, "परन्तु मा जी, कितना कुछ अपने गाढे पसीने की कमाई मे से बचाकर इस काम के लिए रखा हुआ है?"

भगवन्ती हस पडी। हसते हुए बोली, "देखो, बेटा। पुत्र को मा का परदा उघाडना शोभा नही देता। जितना कुछ मा उचित समझे उतना ही प्रकट करने दो। और फिर, अन्त समय मे तो तुम्हारे बेटे-बेटिया ही मेरे शरीर को स्नान कराते समय सब कुछ देख लेगे। तब तक के लिए इस पर परदा पडा रहने दो।"

इस पर सिह चुप कर गया। उसने विदा मागते हुए कहा, "तब ठीक है। मै समझता हू कि मुझे आपकी इच्छा पूर्ण करनी चाहिए। इस पर भी मै चाहूगा कि सिद्धेश्वरी देवी जी से मिल लेता जिससे यदि कल सगाई की रस्म होनी है तो मैं अपनी कोठी मे आपके स्वागत का प्रबन्ध कर सकता।"

"ऐसा करो। तुम सुधा के घर चले जाओ। वह वहा पर होगी।"

"तो आप भी चलिए। आपके सामने ही सब कुछ निश्चय हो जाएगा।"

४

हुआ वही जो भगवन्ती ने बहुत पहले से निश्चय कर रखा था। अगले दिन ठीक पाच बजे सायकाल भगवन्ती, मिस्टर वीरेन्द्र सेठी, उसकी पत्नी सुमन सेठी और सिद्धेश्वरी एक थाल मे फल, मिठाई और एक कटोरी मे केसर, चावल तिलक के लिए लेकर कमलेश कुमार सिह की कोठी डिप्लोमैटिक इन्कलेव पर पहुच गए।

कोठी पर सिह के बीस-पच्चीस मित्र एकत्रित थे। तिलक की रस्म पूर्ण हुई तो भगवन्ती ने मिठाई, सात फल और एक सौ एक रुपया सिह को दिए और हाथ जोड नमस्ते कही। सिह ने बूआ के चरण स्पर्श किए तो उसने पीठ पर हाथ फेर प्यार तथा आशीर्वाद दे दिया।

पूर्ण रीति-रिवाज मे सात-आठ मिनट से अधिक नही लगे। तदनन्तर लडकी पक्ष के लोग वीरेन्द्र सेठी की मोटरगाडी मे ही लौटने के लिए निकले तो सिह उनको मोटर तक छोडने आया। उसने इनको गाडी मे बिठाते

हुए कहा, "माता जी। मै कल प्रात काल सात बजे आऊगा और शेष कार्य-क्रम के विषय मे आपकी स्वीकृति लेकर उसे चालना दूगा।"

कमलेश कुमार सिह एक बात समझ गया कि भगवन्ती और सिद्धेश्वरी अपने मकान पर उसे एक पैसा भी खर्च करने नही देगी। अत. उसने उनके घर होने वाले रीति-रिवाज मे बिना मीन-मेख निकाले स्वीकार कर लिया।

परिणाम यह हुआ कि चौदह मई को सिद्धेश्वरी की चार-पाच प्राध्यापिकाओ, मिस्टर सेठी, मिसेज सेठी, उनके बच्चो तथा मिस्टर सिह की माता, बहन, बहनोई और बहन की लडकी के सामने विवाह हुआ। बीस व्यक्तियो के लिए मकान के प्रागण मे बढिया स्वादिष्ट और सुपचन योग्य भोजन हो गया।

तदनन्तर सिह के सम्बन्धी तो सेठी की गाडी मे और सिह, सिद्धेश्वरी तथा उसकी मा सिह की गाडी मे लौट गए।

सबको विदा कर भगवन्ती ने सबको ले-देकर अपने खर्चे की गिनती कर डाली। यह नौ सौ पचहत्तर रुपये साठ पैसे हुए थे। उसके अपने बचा कर रखे रुपये मे से अभी चौबीस रुपये चालीस पैसे शेप थे।

यह पूर्ण योजना वीरेन्द्र सेठी की सम्मत्ति से ही सम्पन्न हुई थी। एक दिन सुमन सेठी ने सिद्धेश्वरी को कालेज के स्टाफ रूम मे अपने घर आने का निमन्त्रण दिया था। उस दिन सिद्धेश्वरी का मन अति दु खी था। उसी समय उसे पता चला था कि बोर्ड ने उसके अनुसन्धान के विषय को अस्वीकार कर दिया है। अत वह जहा अपने कई मास के प्रयास और चिन्तन के व्यर्थ जाने पर दु.खी थी वहा वह पुरुष वर्ग का नारी जाति पर यह एक अत्याचार भी मानती थी। वह समझ रही थी कि बलि के बकरे की भाति वह ले जाई जा रही है और उसके मुख पर कसकर रस्सी भी बाधी जा रही है जिससे वह चीख-पुकार भी न कर सके। इन विचारो से वह सेठी के घर जा नही सकी। इस पर भी जब एक दिन वह वहा गई थी तो उसे वहा का वातावरण अति सुखद और स्नेहपूर्ण लगा था। कुछ दिन मे जब वह स्वस्थ चित्त हुई तो कालेज से ही सुमन बहन के साथ उसके यहा चल पडी।

"इस पर उन्होने कहा, 'सेठी बहन, उससे कह देना कि मनुष्य जीवन बहुत छोटा-सा काल है। इस काल को मैं 'जम्पिग बोर्ड' (छलाग लगाने का तख्ता) समझता हू। आप जानती है न, तालाबो के किनारो पर एक ऊचे स्थान पर एक लचकने वाला तख्ता लगा रहता है। उसपर से तालाब मे डुबकी लगाने वाले तालाब मे छलाग लगाते है।

"'बस यही कुछ मै मानव जीवन को समझता हू। इस पर खडा जीवात्मा ससार सागर मे छलाग लगाता है। तैराक तो छलाग लगा सागर को पार कर उस सुख-धाम मे पहुच जाते हे जहा इमे पहुचना होता है और जो अनाडी होते है वह सागर मे डूबकर मगरमच्छो के पेट मे जा घोर यन्त्रणा का भोग करते है।

"'अत इस छोकरी से कह दो कि किसी शुभ कर्मफल से वह इस बोर्ड पर आ खडी हुई है और सागर मे तैरना न जानती हुई छलाग लगा रही है।

"'सेठी बहन, उसे कह देना कि किसी कुशल तैराक से तैरना सीखकर ही उसे छलाग लगानी चाहिए। अन्यथा मृत्यु का ग्रास बन भयकर परि-णामो का भोग करेगी।' "

"बहन जी।" सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया, "क्या ससार सागर मे छलाग लगाना आवश्यक भी है? यही तो मेरे अनुसन्धान पत्र का विषय था।"

"उससे तो अब रुक नही सकती। तुम इस छलाग लगाने वाले बोर्ड पर अपने कर्मफल से आकर खडी हो गई हो। तुम पीछे लौटकर जा नही सकती। वहा पहुचकर पीछे घूमी तो चक्कर खाकर सागर मे ही पहुचोगी। अब तो आगे बढने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नही।"

"मै ऐसा विचार नही करती। प्रकृति ने मुझे धकेलकर इस तख्ते पर ला खडा किया है। मैं प्रकृति का विरोध कर वापस आने का यत्न कर रही हू। आज का विज्ञान और तकनीकी ज्ञान मेरी सहायता कर रहे है।"

"बस यहा ही तुम भूल कर रही हो। विज्ञान और तकनीकी ज्ञान प्रकृति की अवहेलता करने मे तो सहायता कर सकती है, परन्तु यह उसका विरोध करने मे तुम्हारी सहायता नही करेगा। यह कर सकती भी

नही।

"भला प्रकृति का ज्ञान प्रकृति का ही विरोध कैसे करेगा? विज्ञान हमे प्रकृति के कार्य के ढग बताता है। तकनीकी ज्ञान उन उपायो के हानि पहुचाने से रोकने के लिए प्रयोग हो सकता है। साथ ही विज्ञान हमे यह बता देता है कि यदि हमने प्रकृति के किसी नियम का विरोध किया तो कितना दण्ड भोगना पडेगा।

"देखो, मैं तुम्हे एक उदाहरण देती हू। रसोई घर मे एक गैस का चूल्हा जल रहा है। विज्ञान ने हमे बताया है कि गैस जलने से ७०० से ८०० सैण्टीग्रेड की ऊष्मा उत्पन्न होती है। विज्ञान ने यह भी बताया है कि मानव शरीर इतनी ऊष्मा सहन नही कर सकता। यदि इस जलती गैस मे अगुली रखेगे तो वह जल जाएगी और पीडा होगी। तुम गैस की अवहेलना कर सकती हो, परन्तु तब तो खाना पक नही सकेगा। अत तुम विज्ञान के ज्ञान से अपने कुकिग पैन को लकडी का हैण्डल लगवा लेती हो और उसमे साग-भाजी पकाती हो। पैन को तुम लकडी की दस्ती से पकडती हो। यह भी विज्ञान से सहायता लेना ही है। विज्ञान ने बताया है कि लकड़ी गरम नही होती।

"इसी प्रकार मनुष्य का यौन-सम्बन्धी व्यवहार है।"

सिद्धेश्वरी ने बात टोककर कह दिया, "यह अग्नि का उदाहरण यौन सम्बन्ध मे नही चलता।"

"वाह, चलता क्यो नही? देखो, मनुष्य मे कई प्रकार की अग्निया जल रही है। इनमे पाचन शक्ति एक है, रक्त सचालन की शक्ति दूसरी है। विचार करने की शक्ति तीसरी है, कर्मेन्द्रियो से कार्य करने की शक्ति चौथी है। ज्ञानेन्द्रियो की शक्ति पाचवी है। इसी प्रकार यौन क्रिया की शक्ति है। ये सब अग्निया है। यदि इनको बुझाने का यत्न करोगी तो गैस का चूल्हा बुझा देने की भाति खाना ही नही बनेगा। अर्थात् जीवन ही समाप्त हो जाएगा।

"ये अग्निया जल रही है। इनका प्रयोग शरीर मे होगा ही। चाहिए यह कि तुम अपने 'कुकिग पैन' (पकाने की पतीली) को लकडी का हैण्डल लगवा लो जिससे तुम्हारे हाथ भी न जले और पकवान भी तैयार हो

जाए।"

"यही तो करने की बात कह रही हू।" सिद्धेश्वरी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "मै निरोध इत्यादि उपाय प्रयोग करने से यही तो करना चाहती हू। ये लकडी का हैण्डल ही तो है।"

सेठी हस पडी। हसते हुए बोली, "यह काम चलाने वाला हैण्डल है या 'बरनर' के मुख पर ढकना रखकर उसके कार्य को ही रोकने का उपाय है। यह तो प्रकृति का विरोध है। यह उसी की अवहेलना नही, वरच विरोध है।

"अवहेलना मे प्रकृति को अपना कार्य करने देने का विधान है और यह देखने की योजना है कि चूल्हे पर पकवान भी बने, परन्तु न तो पकवान जले और न ही हाथ को आच आए।

"प्रकृति का विरोध बिना इस अनियमित कार्य के लिए दण्ड पाए सम्भव नही। विज्ञान यह नही कहता कि प्रकृति को कार्य करने से रोक दिया जाए। यह सम्भव भी नही। जहा विरोध किया जाता है, प्रकृति उसका दण्ड देती है। विज्ञान ने प्रकृति के कार्य के तौर-तरीको को समझ उसके प्रभाव से बचने के उपाय बताए है।

"हम चाद पर जाना चाहते है। पृथ्वी अपने आकर्षण से हमे अपने साथ जकडे हुए है। हम पृथ्वी के आकर्षण को कार्य करने से मना नही कर सके और न ही भू-आकर्षण को नि शेष कर सके हे। हमने अपने मे वह शक्ति उत्पन्न की है कि हम प्रकृति के भू-ग्राकर्षण से बच जाते है। यह कुकिग पैन को लकडी की दस्ती लगाने के समान ही है।"

सिद्धेश्वरी यह तो समझ गई थी कि मिसेज सेठी युक्ति करने मे अति कुशल है। वह मन मे यह समझ रही थी कि वह स्वय भी तो वही करने की योजना रखती है जो सुमन बहन बता रही है। वह ग्रपने उपायो को प्रकृति की अवहेलना ही समझ सकती थी। सुमन ने उनको विरोध सिद्ध कर दिया है। अवश्य इसने शब्दो का हेर-फेर कर बात को दूसरे ढग पर उपस्थित किया है।

अत. उसने पुन अपनी बात को समझाने के लिए कहा, "सुमन बहन, आप बात वही कह रही है जो मैं कई बार अपनी बात को सिद्ध करने के

लिए कहती हू। आपने केवल शब्द बदल दिए हैं।

"प्रकृति ने मनुष्य मे वासनाए उत्पन्न की है। उनके वश मे रहकर हम सन्तान निर्माण करने लगते है। मैं इस कार्य का विरोध करने के लिए नही कहती। मै तो यह कह रही हू कि प्रकृति ने यह प्रबन्ध किया है कि सन्तान होने पर स्त्री के गर्भ मे पले। दस चन्द्र मास तक स्त्री उसका बोझा वहन करे और फिर वह सन्तान पेट से बाहर आते समय अत्यन्त वेदना उत्पन्न करे। यह सब प्रकृति का स्त्री जाति पर अन्याय है। पुरुष जाति इस सब कष्टो से मुक्त रखी गई है। मै तो इस अन्याय का विरोध कर रही हू। मेरा झगडा प्रकृति के विधि-विधान से है। किसी पुरुष से नही।"

"यही श्री चतुर्वेदी की सम्मति से बोर्ड ने आपको लिखकर भेजा है कि यह विषय 'फिजिऑलौजी' (शरीर क्रिया विज्ञान) का है। यह इतिहास तथा मनोविज्ञान का नही। इस कारण तुम इस विषय पर अनुसन्धान करने के लिए उचित शिक्षा नही रखती।

"चतुर्वेदी जी ने मेरे द्वारा तुम्हे यह सन्देश दिया है कि वर्तमान युग के शरीर क्रिया विज्ञान के ज्ञाता इस विषय पर मिथ्या दिशा मे कार्य कर रहे है। उनका कार्य स्त्री जाति मे प्रकृति की अवहेलना करने की क्षमता उत्पन्न करना नही, वरच वे प्रकृति का विरोध करने पर बल दे रहे है। परिणामस्वरूप वह स्त्री जाति को प्रकृति के बन्धनो से मुक्त नही कर रहे, वरच स्त्री जाति को प्रकृति के विरोध मे खडा कर उसे दण्ड का भागी बना रहे है।

"सन्तान निरोध, गर्भपात, विवाहित जीवन का नि शेष, सम यौन सम्बन्ध (होमो सैक्सऑलोजी) इत्यादि सब कार्य प्रकृति के विधि-विधान का विरोध है और प्रकृति इनका दण्ड सामान्य रूप मे मानव समाज को और विशेष रूप मे स्त्री जाति को भोगना पड रहा है।

"इन सब और इसी प्रकार के अन्य उपायो का चलन स्त्री जाति के उद्धार के लिए नही किया जा रहा। इसमे विकृत राजनीति और मिथ्या समाजवाद कारण है। यह पुरुष जाति की स्त्री जाति पर एक प्रकार की तानाशाही है जो पिछले तीन सौ वर्ष से यूरोपीय पुरुष मीमासको और मूर्ख राजनीतिज्ञो ने चला रखी है।"

सिद्धेश्वरी भौचक्की हो मुख देखती रह गई थी।

५

दोनो सन्तरे इत्यादि का जूस पी शान्त चित्त हो गम्भीर भाव मे एक-दूसरे का मुख देख रही थी। सिद्धेश्वरी का अभी समाधान नही हुआ था। इस पर भी वह निरुत्तर हो गई थी और विचार कर रही थी कि सुमन ने कौन-सी शाब्दिक कलाबाजी लगाई है कि उसे कोई उत्तर ही नही सूझ रहा। सुमन अपने विषय का निरूपण कर सन्तुष्ट भाव मे सिद्धेश्वरी के मुख पर अपने कथन की प्रतिक्रिया देखने का यत्न कर रही थी।

एकाएक सिद्धेश्वरी को समझ आया कि सुमन ने उसके मन मे पुरुषो के प्रति विरोध की भावना का लाभ उठाया है और दोष पुरुषो पर देकर उनका मुख बन्द कर दिया है। इस विचार से उसने पुरुषो का पक्ष ले बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "परन्तु, बहनजी। इसमे पुरुषो की तानाशाही कहा से आ गई और फिर आपने बेचारे मीमासको को व्यर्थ मे रगड डाला है।"

"तो तुम नही समझी। सत्य बात यह है कि पुरुष राजनीतिज्ञो और समाजवादियो ने तुम जैसी सरल चित्त नारियो को वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ रखने के लिए यह वाक् जाल फैला रखा है कि विज्ञान ने प्रकृति का विरोध करने की क्षमता प्राप्त कर ली है। वास्तविक बात यह नही है। प्रकृति का विरोध सम्भव नही। यदि यह किया जाएगा तो प्रकृति दण्ड देगी।

"वास्तविक समस्या यह है कि पुरुष और स्त्री की शारीरिक बनावट मे अन्तर है। इस अन्तर के कारण स्त्री को जीवन मे पुरुष से अधिक कष्ट सहन करना पडता है। इस कष्ट का निवारण करना लक्ष्य है। यह समस्या आज ही विद्वानो के सम्मुख नही आई, वरन्‌ आदि युग से इस पर विद्वान विचार विमर्श कर रहे है।

"सब युगो मे इस कष्ट को निवारण करने के उपाय दो दिशाओ मे

विचार किए जाते रहे है। एक तो यह कि स्त्री को गर्भावस्था मे और प्रसव के समय कम से कम कष्ट हो। इसके लिए करने योग्य उपचार और औषधियो का आविष्कार और परीक्षण किए जाते रहे है। इसमे एक सीमा तक ही सफलता मिली है। दूसरे ढग के वही उपाय रहे हैं जो आजकल के समाजवादी और राजनीतिज्ञ घोषित कर रहे है। इनमे भी एक सीमा तक ही सफलता मिली है।

"परन्तु, सिद्धेश्वरी, जो कुछ भी सफलता प्रथा के ढग के उपायो से प्राप्त हुई है वह तो स्त्री के कष्ट को कम करने मे है और जो सफलता दूसरे ढग के उपायो से प्राप्त हुई है उससे प्रकृति के विरोध के कारण दण्ड तो स्त्री वर्ग को ही हुआ और हो रहा है और लाभ पुरुष वर्ग को उसकी राजनीति मे अथवा उसके सामाजिक उत्तरदायित्व से मुक्त होने मे प्राप्त हो रहा है।"

"बस यही बात समझ मे नही आ रही।" सिद्धेश्वरी ने कह दिया। वह समझी थी कि उसने सुमन की युक्ति मे सबसे दुर्बल स्थान पकड लिया है।

सुमन इस बात को अभी तक छू नही रही थी। वह राजनीति और समाजवाद पर विवाद मे पडना नही चाहती थी। परन्तु सिद्धेश्वरी के प्रश्न से इस विषय पर बात करने पर वह विवश हो कहने लगी, "तो सुनो। वर्तमान युग मे स्त्रियो से पुरुषो का सब कार्य लिया जा रहा है। भला क्यो? प्रकृति ने तो इसे पुरुष समान बनाया नही। इसका कार्य पुरुष से भिन्न है। इस पर भी पुरुष ने स्त्रियो को उसके स्वाभाविक काम से हटाकर मशीनें और हल चलाने पर लगा दिया है।

"पर बहन जी। यह तो मानव जीवन स्तर को ऊचा करने के लिए है।"

"और जीवन स्तर ऊचा हुआ है क्या? क्या अब ससार मे स्त्री-लोलुप पुरुष कम हो गए है? अथवा क्या झूठ, ठगी, चोरी इत्यादि दुर्गुण पहले से कम हो गए है?"

"क्या मनुष्य की कामनाए पहले से कम हो गयी है अथवा क्या मानवो को अपनी-अपनी स्थिति से पहले से अधिक सन्तोष हो रहा है?"

सिद्धेश्वरी ने बात बीच मे ही टोक कर कहा, "वर्तमान युग मे कामनाओ की पूर्ति पहले से अधिक हो रही है।"

"इस होने पर भी अपूर्त्त-पूर्त्त कामनाओ पर असन्तोष अधिक हो रहा है।"

"यह उन्नति का लक्षण ही है। वस्तु की माग अधिक हुई है तो उसका प्रदाय भी बढा है।"

"मै माग और प्रदाय की बात नही कर रही, वरच प्राप्ति और तृप्ति की बात कर रही हू। प्राप्त सुख-साधन बढे है, परन्तु उन सबसे चित्त की अतृप्ति तो पहले से अधिक ही हुई है।"

"देखो सिद्धेश्वरी। बात यह है कि राजनीतिक महत्वाकाक्षाए पुरुषो मे बढ गयी है और उनकी पूर्ति के लिए राज्यो को परस्पर लडने-झगडने के लिए युद्ध सामग्री अधिक चाहिए। उसके निर्माण के लिए अधिक धन और श्रम चाहिए। दूसरो से झगडा करने के लिए अपने देश मे शाति चाहिए। यह सब कुछ अकेले पुरुष नही कर सकते। अत स्त्रियो से उनका स्वाभाविक कार्य छुडाकर उनको युद्ध सामग्री निर्माण के लिए लगा दिया है। जो कार्य स्त्रिया नही कर सकती अथवा जो काम पुरुष स्त्रियो के हाथ मे देना नही चाहते, वही कार्य वास्तव मे करने के लिए है और अपने कार्य स्त्री वर्ग के हाथ मे दे रहे है। इसके लिए अर्थात् स्त्रियो से उनका स्वाभाविक कार्य छुडाने के लिए यह अस्वाभाविक नारेबाजी कर रहे है।

"चीन मे स्त्रियाँ खेतो, कारखानो, दुकानो और सडको पर काम करती है और पुरुष हाथ मे बन्दूक लिए आस-पास के देशो पर आक्रमण करते-फिरते है। यही अमेरिका इत्यादि देशो मे हो रहा है।

"यह है आजकल के काल की विडम्बना।"

"तो बहन जी। क्या किया जाए ?"

"कल एक चीनी मैगजीन मे फैक्टरियो, खेतो इत्यादि पर स्त्रियो को काम करते दिखाया गया है। उन्हे कपडे भी पुरुषो के से ही पहनाए गए है जिससे पुरुषो का ध्यान वासना की ओर न जाए, परन्तु स्त्रियो के ध्यान को ठीक दिशा मे रखने के लिए तो कुछ भी उपाय नही है। ठीक दिशा से मेरा अभिप्राय उनके स्वाभाविक काम की ओर था।

"दूसरी ओर रूस, कोरिया, तिब्बत, इण्डोचायना इत्यादि देशो मे पुरुषो के हाथो मे बन्दूके दे-देकर लडने के लिए भेजा जा रहा है। स्त्रियो को बच्चे पैदा करने के अयोग्य बनाया जा रहा है। इसलिए कि उनको देश मे धनोपार्जन मे लगाकर दूसरे देशो पर अपना आधिपत्य का विस्तार कर रहे है।"

सिद्धेश्वरी तो इस वस्तुस्थिति को सुन भ्रमित हो रही अनुभव कर रही थी। उसने बात पुन अपने अनुसन्धान के विषय पर घुमाने के लिए पूछ लिया, "तो चतुर्वेदी जी ने मेरे अनुसन्धान के लिए किसी अन्य विषय का सुझाव दिया है?"

"हा।"

"क्या?"

"परन्तु इस विषय मे खोज करने के लिए तुममे अभी योग्यता नही समझते। इस पर भी वह कहते थे कि एक स्त्री जिसके चार-पाँच प्रसव हो चुके हो और उन प्रसवो मे वह स्वय बुद्धियुक्त व्यवहार रख अनुभव प्राप्त कर चुकी हो तो उसे अन्य वैसे ही अनुभवो वाली स्त्रियो मे घूम-घूमकर यह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि किस प्रकार प्रकृति का विरोध अथवा उसका मार्ग अवरुद्ध किए बिना स्त्री वर्ग सुखपूर्वक रह सकता है। अपने इस अनुसन्धान के उपरान्त वह लेख लिखे तो वह अपने वर्ग का भारी कल्याण कर सकती है।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए कहने लगी, "बहन जी, मैं समझी हू कि यह अनुसन्धान कार्य उन्होने आपके लिए उपस्थित किया है।"

"परन्तु मै तो एक-दूसरे कार्य पर अनुसन्धान कर रही हू।"

"किस कार्य पर?"

"वर्तमान युग के विद्यार्थी वर्ग मे विद्रोह की भावना का स्रोत मा के उच्छृखल व्यवहार मे है। मै इसमे अनेकानेक शिशुओ के मनोभावो, उनकी माताओ के व्यवहार इत्यादि पर 'फैक्ट्स एण्ड फिगर्स' (वस्तु-स्थिति और आकड़े) एकत्रित कर रही हू।"

"कब तक इस विषय मे लिखना आरम्भ करेगी?"

"नोट्स (टिप्पणिया) तो अभी भी लिख रही हू, परन्तु एक नियमा-

नुकूल लेख के रूप मे देने की न तो अभी तैयारी पूर्ण है और न ही उन आकडो पर अभी मनन पूर्ण हो सका है।"

"परन्तु चतुर्वेदी जी ने मुझे विषय तो अति कठिन बताया है।"

"यह तो उन्होने आपकी रुचि देख ही बताया है, अन्यथा वह कह रहे थे कि मै तुम जैसी उग्र विचार की लडकी को अपने साथ ही कार्य पर ले लू और हम दोनो इकट्ठा ही लेख लिख डाले।'

सिद्धेश्वरी ने कहा, "मै इस सब बात पर विचार कर आपसे पुन मिलूगी।"

"तनिक और ठहरो। बच्चे आने ही वाले होगे। तब चाय लेकर जाना।"

"परन्तु सुमन बहन। आपने जो विषय मेरे लिए बताया है उसमे तो कठिनाई है बच्चे उत्पन्न करने की। उसी से मै बचना चाहती हू।"

"अर्थात् तुम बिना अध्ययन किए 'थीसेज़' लिखना चाहती थी और वह भी मिथ्या दिशा मे ?"

"देखो सिद्धेश्वरी। तुम मनोविज्ञान का विषय पढी हो और उस विषय के ज्ञान को ही तुम्हे विस्तार देना चाहिए। इससे मै तो सम्मति दूगी कि तुम मेरे साथ मिलकर काम करो।"

"परन्तु उसके लिए भी आप कहेगी कि बच्चे पैदा करो।"

"तो इनसे तुम्हे चिढ क्यो है ?"

'इस विषय पर अब विचार करूगी। जिन कारणो से पहले चिढ थी, वे तो सदिग्ध हो गए है। अब यह चिढ किस कारण से है, विचारणीय है।

"ठीक है। विचार कर लो '' ।"

बात समाप्त नही हुई थी कि नरेन्द्र, गजेन्द्र भागते हुए भीतर आ गए। वे तो मा को गले मिलने के लिए लपके थे, परन्तु वहा सिद्धेश्वरी को बैठे देख रुक गए और परेशानी मे मा का मुख देखने लगे।

सुमन उन्हे देख हस पडी। उसने दोनो बाहे फैलाकर कहा, "आओ न। रुक किसलिए गए हो ?"

मा और बेटे गले मिले। मा ने दोनो बच्चो की पीठ पर हाथ फेर प्यार से कहा, "जाओ। वस्त्र बदलकर आओ। रुचि भी आ जाए तो चाय

पीएगे।"

"आपका छोटा बच्चा कितनी वयस का हो गया है ?" सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया।

"तुम्हे कितने वर्ष का प्रतीत होता है ?"

"चार वर्ष का।"

"नही। अभी सवा तीन वर्ष का है।"

"मै अब एक अन्य के लिए यत्न कर रही हू।"

"ओह। कितने चाहती हो ?"

"तीन लडके और दो लडकिया।"

"लडकिया कम क्यो ?"

"जो काम मेरी कल्पना मे लडको को करना है, वह अधिक जान-जोखम का है। उसमे जान जाने का भय है। इसलिए मेरी योजना मे लडके अधिक उत्पन्न करने चाहिए और लडकिया कम।"

"परन्तु क्या यह आपके बस मे है ?"

"इसमे भी ज्ञान और अनुभव से उन्नति अभी एक सीमा तक ही की गई है। अभी और आगे अनुसन्धान की आवश्यकता है।"

"तो आप इसके लिए औषधियो इत्यादि का प्रयोग करती है ?"

"नही। मै तो खान-पान और व्यवहार मे परीक्षण कर और करा रही हू। यह एक अति कठिन विषय है। कारण यह है कि इसमे पदार्थ जिसपर परीक्षण किए जा रहे है, कोई निर्जीव वस्तु नही है। ये चेतन है। वे इच्छा और सुख-दु ख से प्रेरित हो कार्यो मे प्रवृत्त होते है। ये एक वैज्ञानिक के हाथ मे 'टैस्ट ट्यूब' मे रखे किसी कैमिकल की भाति प्रयोग नही हो सकते। इसी कारण कठिनाई है। परन्तु मै इसमे लगी हू। उनको प्रेरणा से अपने सुख और दु खो की अवहेलना कर एक प्रकार के व्यवहार के लिए कहती हू। तदनन्तर उनकी अन्तरग बातो को जानने का यत्न करती हू और फिर अपनी डायरी पर लिख रही हू।

"अभी तक मैने साठ के लगभग दम्पतियो से सम्पर्क स्थापित कर उनके अनुभवो, उनके व्यवहार और परिणामो पर अपनी डायरी लिख रही हू। यदि साधन उपलब्ध होते रहे तो मरने से पूर्व कुछ इस विषय मे

उपकारी पुस्तक लिख सकूगी।"

"परन्तु इस पर 'डाक्टरेट' तो नही मिलेगी। मिलेगी भी तो मरने के उपरान्त ही सम्भव हो सकेगी।"

सुमन सेठी हस पडी। हसते हुए बोली, "मुझे विश्वविद्यालय से 'डाक्टरेट' की अभिलाषा नही। इसके लिए मै यत्न भी नही कर रही। मेरा अन्वेषण कार्य लोक-कल्याण के लिए है।"

इस समय सुमन की लडकी रुचि आ गयी और दोनो बडी आयु की स्त्रियो का वार्तालाप बन्द हो गया।

६

वास्तव मे डेढ घण्टे का यह मिसेज सेठी से वार्तालाप सिद्धेश्वरी के मन मे क्राति उत्पन्न करने वाला सिद्ध हुआ। वह इस वार्तालाप के कई दिन उपरान्त तक यह विचार करती रही कि वह 'डाक्टरेट' किसलिए कर रही है? मन ने उत्तर दिया कि मान-प्रतिष्ठा और आय के विचार से। इस पर प्रश्न उपस्थित हुआ कि मान-प्रतिष्ठा और आय तो किसी धनी-मानी और कार्य-कुशल व्यक्ति से विवाह से भी प्राप्त हो सकती है। इस समय उसका ध्यान मिस्टर सिंह की ओर चला गया था।

फिर वह यह भी विचार करने लगी थी कि धन-सम्पदा, मान-प्रतिष्ठा ओर पदवी से सुख प्राप्त होता है क्या? वह अपने ही कालेज की प्रधाना-चार्या की बात स्मरण करती थी तो उसे उक्त प्रश्न का उत्तर यह समझ आया था कि वह डाक्टर होते हुए भी कालेज मे सर्वोच्च पद प्राप्त होने पर भी, और वेतन भी पर्याप्त प्राप्त करते हुए सुखी नही है। वह कालेज मे भी एक-दूसरे मे झगडे, ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न करने मे लगी रहती है। उसे सदा भय लगा रहता है कि 'स्टाफ' तथा छात्राओ मे उसके विरुद्ध किसी प्रकार का षड्यन्त्र न होने लगे।

उसे समाचार-पत्रो से पढने पर यह समझ आ रहा था कि भारत जैसे विशाल और समृद्ध देश का राज्य करते हुए भी काग्रेस और नेहरू परिवार

सन्तुष्ट और प्रसन्न नही थे। जवाहर लाल नेहरू और अब उनकी लडकी श्रीमती इन्दिरा गाधी काग्रेस और देश मे 'इन्ट्रीग' (कुचक्र) चलाते रहे हैं।

अतः धन, पद, मान और प्रतिष्ठा से सुख मिलेगा ही, सदिग्ध प्रतीत होने लगा था। इस पर उसने एक दिन अपनी बूआ से मिसेज सेठी से वार्तालाप का सक्षिप्त विवरण बताया। यह मिसेज़ सेठी से उक्त वार्तालाप के एक सप्ताह उपरान्त की बात थी। उस दिन सिद्धेश्वरी सुमन के घर जा रही थी। कालेज से छुट्टी थी। वह मध्याह्न के समय घर से जाने लगी तो बूआ ने पूछ लिया, "किधर जा रही हो?"

इस पर सिद्धेश्वरी ने सुमन का नाम और पता बताकर कहा, "मै उससे अपने नये अनुसधान के विषय पर विचार करने जा रही हू। इसके साथ ही लडकी ने बूआ को पहले दो बार भेट का वृत्तान्त बताया। इस पर भगवन्ती को समझ आया कि वह भी इससे मिले। कदाचित् वह ही लडकी को सन्मार्ग दिखा सके। इससे पूर्व भगवन्ती और सिद्धेश्वरी मे विवाह के विषय पर मतभेद हो चुका था।

अगले ही दिन भगवन्ती ने सुमन सेठी से सम्पर्क बनाया और उसकी बाते सुनी तो वह अति प्रभावित हुई। सुमन के पति वीरेन्द्र से भी भेट हुई और फिर तीनो मे खुलकर बातचीत हुई।

जब सिद्धेश्वरी सुधा की सगाई के दिन सिंह से विवाह का निश्चय कर आयी और भगवन्ती को पता चला तब तक वीरेन्द्र और सुमन का भगवन्ती से मेल-जोल पर्याप्त बढ चुका था। तदनन्तर जब विवाह की बात निश्चय हो गयी तो भगवन्ती ने वीरेन्द्र से कार्य मे सहायता माग ली।

सिद्धेश्वरी के विवाह का पूर्ण प्रबन्ध वीरेन्द्र ने ही किया था। यद्यपि कार्य भगवन्ती की इच्छानुसार अति सरल और सक्षिप्त हुआ था। इस पर भी प्रबन्ध सब वीरेन्द्र और सुमन ने ही किया था।

खर्चा एक-एक पैसे का भगवन्ती ने किया था और प्रबन्ध दरी, मेज, कुर्सी तक का सब वीरेन्द्र ने किया था।

विवाह के अगले दिन दस बजे दिन के हवाई जहाज से कमलेश कुमार सिंह अपनी नव विवाहिता को लेकर स्विट्जरलैड के लिए जाने वाला था

और साढे आठ बजे ही वीरेन्द्र और सुमन अपनी मोटर गाडी मे भगवन्ती को हवाई पत्तन पर ले चलने के लिए उसके घर पर आ गए। भगवन्ती अपने कमरो को बन्द कर मालिक मकान के 'स्टडी रूम' मे टैक्सी के लिए टेलीफोन करने आयी हुई थी। उसने कमरे से वीरेन्द्र को आते देखा तो वह टेलीफोन छोड कमरे से निकल आयी।

वीरेन्द्र ने कहा, "बहन जी। हम आपको हवाई पत्तन पर ले चलने के लिए आए है।"

"मै विवेक सिनेमा के बाहर से टेलीफोन द्वारा टैक्सी मगवा रही थी। परन्तु मै तो सिद्धेश्वरी की कोठी तक ही जाने का विचार रखती थी।"

"उससे थोडा ही आगे तो पत्तन है और अब आप हमारी गाडी मे ही चलेगी।"

भगवन्ती तो जाने के लिए तैयार ही थी। इस कारण वह सुमन के साथ गाडी की पीछे की सीट पर बैठ गयी। वीरेन्द्र की लडकी रुचि भी आयी थी। वह अपने पिता के पास आगे बैठ गयी। वीरेन्द्र गाडी चला रहा था।

सुमन ने गाडी मे बैठते ही पूछा, "माता जी, अब आपने अपने विषय मे क्या विचार किया है?"

भगवन्ती ने अपने विषय मे अपनी विचारित योजना बता दी। उसने कहा, "मै एक नर्सरी स्कूल गोल मार्केट के पास चलाती रही हू। उसमे मुझे पर्याप्त सफलता मिली थी। वही काम पुन चलाने का विचार कर रही हू। सिद्धेश्वरी का कहना है कि मै उसके विदेश से लौटने की प्रतीक्षा करू। वह मेरे खाने-पहनने का प्रबन्ध कर गयी है। मैं दो मास तक तो उसके लौटने की प्रतीक्षा करूगी।"

परन्तु आप यह झझट का काम क्यो करेगी? साथ ही अब तो नर्सरी स्कूल खोलने मे बहुत बडी पूजी की आवश्यकता होगी।" सुमन ने भगवन्ती को मना करने के लिए कह दिया।

"परन्तु बेटी। इस शरीर को चलाने के लिए कुछ तो करना ही होगा।"

"वह करने का प्रबन्ध नरेन्द्र के पिता ने विचार किया है। किसी दिन

आपको अवकाश हो तो आप हमारे घर पर आ जाइए तो हम आपके सामने एक योजना रखेगे। आप उस पर भी विचार कर लीजिएगा।"

"ठीक है। मै, जिस दिन आप कहे, आ जाऊगी।"

"मेरा विजार है।" वीरेन्द्र दोनो के बीच हो रही बात सुन रहा था। वह बोला, "मिस्टर सिंह एक नेक विचारो का व्यक्ति प्रतीत हुआ है। इस पर भी मेरा आग्रह है कि आपको दामाद और लडकी की योजनाओ मे सम्मिलित होने के स्थान अपने लडके और पतोहू की योजना मे सहयोग देना चाहिए। अपनी हिन्दुस्तानी समाज मे यही उचित व्यवहार है।"

भगवन्ती समझ रही थी। उसने कहा, "मैने लडकी की योजना अभी सुनी नही। इस पर भी मेरा मन तो अपना स्कूल चलाने को अधिक ठीक समझता है। अब वीरेन्द्र जी की बात भी विचारणीय हो जाएगी।"

सुमन ने बात बदल दी, "मिस्टर सिंह मुझे एक विचारशील और श्रेष्ठ विचारो का व्यक्ति प्रतीत हुआ है।"

"पर वह।" वीरेन्द्र ने पुन बातो मे हस्तक्षेप करते हुए कहा, "वह घोर दक्षिण पथी है और यह स्वाभाविक भी है। एक जमीदार का लडका होने से, एक विशेष प्रकार के वातावरण मे पला होने से उसका पूजीवादी होना ही उसके विचारो मे कारण है।"

"पर मैं कुछ और समझी हू।" भगवन्ती ने कह दिया, "वह पूजी को अपने पास निर्माण कर उसकी रक्षा मे चिन्ता करना उसका एक ज़मीदार के घर पैदा होने के कारण इतना नही जितना कि उसके अध्ययन, मनन और चिन्तन का परिणाम है।

"मेरा उससे इस विषय पर वार्त्तालाप हुआ है। मै समझती हू कि उसका ईमानदारी से यह विचार है कि समाजवाद से मानव जाति का कल्याण नही होगा।

"वह यह ठीक ही समझा है कि मानव कल्याण मनुष्य को स्वतन्त्रता से विचारने की स्वीकृति देने मे है। वह एक दिन कह रहा था कि यदि वह भूमण्डल का शासक बन जाए तो मूर्ख राजनीतिज्ञो द्वारा देश देश मे बनाई सीमाए वह एकदम विलीन कर दे। न सीमाए रहे और न पासपोर्ट तथा विसा की असुविधा रहे। 'ला एण्ड आर्डर' (शान्ति व्यवस्था) भूमण्डल

के यू० एन० ओ० का विषय हो जाए और उसके पास एक प्रबल पुलिस रहे। वह पुलिस ही हो। सेना न हो।

"देशो मे शासक शान्ति, व्यवस्था मे हस्तक्षेप न करें। वे अपने-अपने देशवासियो की सामाजिक, नैतिक, सास्कृतिक उन्नति मे यत्नशील हो। शिक्षा, धर्म, सस्कृति और आचार-विचार के नियन्त्रण देश के शासक करे। शान्ति व्यवस्था भूमण्डल की साझी हो।"

वीरेन्द्र हस पडा और पूछने लगा, "ऐसा कभी हो सका है ?"

"वीरेन्द्र बेटा। क्या कभी पहले भी मानव चाद पर गया था ? यह भी भला कोई युक्ति है कि पहले जो नही हो सका, अब भी नही हो सकता। साथ ही वह कहता था कि यह सब कुछ पहले रहा है। देशो की सीमाओ पर कभी भी चौकिया नही बनी थी।

"इनका उल्लेख यूनान और ईरान के युद्धो के समय ही सबसे पहले पढने को मिलता है। भारत मे तो मुसलमानो के आक्रमण के उपरान्त ही सीमा पर सेना तैनात करने की आवश्यकता पडी थी।

"अब एक विचार से इस स्वतन्त्रता का श्रीगणेश तो इगलैण्ड और फ्रास मे हो चुका है। परन्तु इसमे आगे प्रगति नही हो सकी। इसमे कारण यह है कि मनुष्य ने बीसवी शताब्दी मे मानवता के स्थान पशुपन मे ही प्रगति की है।"

वीरेन्द्र समझ गया कि यह दसवी श्रेणी तक पढी स्त्री बहुत विस्तृत ज्ञान रखती है। वह समझ रहा था कि इसी स्त्री ने अपने ज्ञान पर मनन भी किया है। उपयुक्त युक्ति केवल ज्ञान, अभिप्राय यह कि अध्ययन अथवा श्रवण से निर्माण नही होती। युक्ति करने से पूर्व उपलब्ध सूचना पर मनन की आवश्यकता होती है।

ये मिस्टर सिह के मकान पर पहुच गए थे। सिह हवाई पत्तन पर जाने के लिए तैयार हो प्रात. का अल्पाहार ले रहा था। वह भगवन्ती इत्यादि को आया देख उनको भी अल्पाहार के लिए कहने लगा।

"हम घर से खा-पीकर चले है।" सुमन ने कह दिया, "मै तो सिद्धे-श्वरी से विवाह सम्पन्न का समाचार सुनने आई हू।"

सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "वह तो मैं अभी एक शब्द मे ही बता सकती

हूं। तब तो आपको हमे यहा से ही विदा करने मे सुविधा प्राप्त होगी।"

उत्तर वीरेन्द्र ने दिया, "परन्तु आपको विदेश के लिए विदा करने तो हमे हवाई पत्तन पर जाना चाहिए था। सुमन ने तो इस कोठी पर आने का प्रयोजन बताया है। उसका अभिप्राय है कि वह अल्पाहार लेने यहा नही आई।"

इस पर सिह मुस्कराया। वह समझ गया था कि भगवन्ती के ये परिचित सुधा के पिता इत्यादि से भिन्न और श्रेष्ठ योग्यता के लोग है। अब सुमन ने कहा, "सबके सामने ही बताओगी अथवा अपने सोने के कमरे मे चलकर?"

"परन्तु बहन जी। क्या मेरी भाषा इतनी समृद्ध नही कि मैं अपने मन के भाव ठीक और सभ्य भाषा मे प्रकट न कर सकू? मै समझती हू कि आपको पृथक मे ले जाने की आवश्यकता नही है। मेरा अनुभव सर्वत्र विलक्षण और अत्यन्त सुखद रहा है।"

"अर्थात् तुम प्रसन्न और सन्तुष्ट हो?"

"सन्तोष की बात तो अभी नही बता सकती। इसका ठीक-ठीक अनुभव और अनुमान कुछ समयोपरान्त ही बताया जा सकेगा। अभी तो इसे 'स्पलैडिड' का नाम ही दिया जा सकता है।"

भगवन्ती मुस्करा रही थी। इस समय सिह के माता, बहन और बहनोई भी वहा आ गए और वे वीरेन्द्र इत्यादि को नमस्ते कर अल्पाहार के लिए बैठ गए।

अब औपचारिक विषयो पर वार्त्तालाप होने लगा।

७

वीरेन्द्र समझता था कि स्वराज्य काल मे सामान्य रूप मे भारत और विशेष रूप मे दिल्ली मे अवस्था सर्वथा बदल गई है और दिन-प्रतिदिन बदल रही है।

लोग जो कुछ सन् १९४७ मे चाहते थे, उनके अब सन् १९६७ मे

चाहने से सर्वथा भिन्न था। अत अब भगवन्तो का अपने ज्ञान और साधनो से स्कूल चला सकना अति कठिन है। साथ ही वह समझ रहा था कि यह प्रौढावस्था की स्त्री अपने जीवन के एक अति विशिष्ट उत्तरदायित्व को पूर्ण कर पुन जीवन को अ-आ से आरम्भ करने मे लग जाए तो यह समाज पर एक घोर लाच्छन होगा।

वह जानता था कि दिल्ली के वायुमण्डल मे समाजवाद गूज रहा था, परन्तु उस समाजवाद का विचित्र रूप था। प्रत्येक व्यक्ति न्यून से न्यून काल मे अधिक से अधिक सुख-सुविधा बटोरना चाहता था। इस सघर्ष मे दुर्बल और किसी कारण से पिछड गये व्यक्ति धकेलकर दीवार के साथ किए जा रहे थे।

वह समाजवाद के इस रूप से सर्वथा असन्तुष्ट समाज उद्धार के विषय मे विचार कर रहा था। इस विषय पर उसने अपने मित्र वर्ग से और अपनी पत्नी सुमन से बहुत विचार किया था।

उसकी समाज कल्याण की कल्पना सरकार और नवीन समाज-शास्त्रियो की कल्पना से सर्वथा विपरीत बिन्दू से आरम्भ होती थी। वह पिछडे हुए अथवा अल्प शिक्षा वाले प्राणियो के कल्याण से पहले पढे-लिखे और वृद्धावस्था के अनुभवी घटको से आरम्भ करना चाहता था। उसका विचार था कि विद्यार्थियो के कल्याण से पहले अध्यापको के कल्याण की चिन्ता करनी अधिक उपयुक्त होगा।

वह जब शिक्षाविदो से मिलता था तो पूछा करता था कि आप शिक्षकों को क्या सिखाते हैं? उसका शिक्षाविदो से सदा मतभेद रहता था। शिक्षाविद कहते थे कि वह शिक्षको को वह ही सिखाते है जो वह विद्या-र्थियो को शिक्षा देने मे आवश्यक समझते है। वह मन ही मन उनके विचारो की अशुद्धता पर हसा करता था।

वीरेन्द्र का कहना था कि सबसे पहले तो शिक्षको के मन पर यह अकित करना चाहिए कि वह शिक्षक बने ही क्यो? उनमे क्या विशेषता है कि वह शिक्षक पद के लिए तैयार किए जाए?

उसका विचार था कि यह कोई कारण नही कि क्योकि अमुक छात्र एम० ए० मे स्थान नही पा सके; इस कारण ट्रेनिग कालेज मे भरती हो

जाए। होना यह चाहिए कि जब कोई ट्रेनिग कालेज मे भरती नही हो सके तो वह एम० ए० की परीक्षा मे भरती हो सके।

जाति के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क और सब प्रकार से स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति ही स्कूलो तथा कालेजो के ट्रेनिग विद्यालयो मे भरती किए जाए। कोई व्यक्ति कालेज मे प्राध्यापक न बन सके जब तक वह दस वर्ष तक स्कूल मे शिक्षाकार्य न कर चुका हो।

साप को सिर से पकडने के समान वह शिक्षा रूपी साप को अध्यापको के सुधार से आरम्भ करना चाहता था।

इसी प्रकार वह बच्चो के पालन-पोषण से पहले प्रौढावस्था और वृद्धावस्था के व्यक्तियो की देखभाल समाज के कल्याण के लिए आवश्यक मानता था।

मन की इसी विचारित बात से प्रेरित होकर ही वह भगवन्ती के विषय मे विचार करने के लिए विवश हुआ था।

सिद्धेश्वरी के विवाह से पूर्व ही वह इस विषय पर विचार करने लगा था कि सिद्धेश्वरी की बूआ भतीजी के विवाह के उपरान्त अकेली क्या काम करेगी ?

उसने अपनी पत्नी सुमन से पूछा था, "सिद्धेश्वरी की बूआ अब कितने वर्ष की प्रतीत होती है ?"

"मैं समझती हू," सुमन का उत्तर था, "कि वह इस समय अवश्य सैतालीस-अढतालीस वर्ष की होगी। शरीर से तो वह और भी बडी आयु की प्रतीत होती है।"

"और मै समझता हू कि मन के विकास के विचार से तो वह और भी अधिक बडी आयु की स्त्री प्रतीत होती है।"

"मन का विकास तो वर्षो के पैमाने से नापा नही जा सकता। भगवन्ती ने जीवन सघर्ष मे अकेले ही अति कठिन भाग लिया है। इस कारण उसका जीवन सम्बन्धी अनुभव अपनी आयु की स्त्रियो से अधिक होना स्वाभाविक ही है।

"मैं यही कह रहा हू कि सिद्धेश्वरी के विवाह के उपरान्त समाज को उसके अनुभवो से लाभ उठाने का अवसर मिलना चाहिए।"

"मै उसकी बूआ से इस विषय पर बातचीत करूगी।" उस बातचीत के परिणाम मे ही वीरेन्द्र भगवन्ती के विषय मे बहुत कुछ जानकर उस पर मनन करने लगा था। इस मनन का ही परिणाम था कि उसने भगवन्ती को यह सकेत दिया था कि उसकी भी उसके विषय मे एक योजना है और भगवन्ती को उस पर भी विचार करना चाहिए।

सिद्धेश्वरी के विवाह के एक सप्ताह उपरान्त सुमन और वीरेन्द्र एक दिन भगवन्ती से मिलने आये। वीरेन्द्र ने ही औपचारिक वार्तालाप के उपरान्त बात की। उसने कहा, "बहन जी, आप आजकल दिन भर क्या करती रहती है ?"

"खाना-पीना, सोना और किंचित मात्र भगवत् भजन। अभी तो यही करती हू। हा, कभी-कभी विचार किया करती हू कि अभी यह शरीर छूटता प्रतीत नही होता। जब तक इससे छुटकारा नही मिलता तब तक इसको चालू रखने का भी कुछ उपाय करना चाहिए। इस दिशा मे विचार कुछ भी दूर तक नही जा सका। मै एक दिन पटेल नगर मे लाहौर मौण्टिसेरी स्कूल को देखने गयी थी। उनका प्रबन्ध और साज़ो-सामान देख वैसा स्कूल चला सकना अपनी सामर्थ्य के बाहर समझ किसी परिणाम पर नही पहुची।"

"मै समझता हू कि आपके लिए एक स्कूल खोलने के आयोजन के स्थान आपका एक परिवार निर्माण कर दिया जाए तो अधिक ठीक होगा।"

भगवन्ती की बरबस हसी निकल गई। उसने हसते हुए कहा, "परिवार तो बिना ईश्वर की कृपा के निर्माण नही होता। इसके लिए एक समय था। जब मैं पति विहीन हुई तो मेरी गोद मे एक वर्ष का बच्चा था। ईश्वरेच्छा से पिता के छ. मास उपरान्त ही लडका भी मुझे छोड गया। मैं समझी कि ईश्वर की मुझे परिवार वाली बनाने की योजना नही है। इस कारण भैया तथा भाभी के कहने पर भी मैने विवाह नही किया। मैने परिवार की पुरखा बनने के स्थान एक अध्यापिका बनने की योजना बना ली। मै स्कूल मे भरती हो पाच वर्ष मे दसवी की परीक्षा पास कर घर पर ही बच्चो को पढाने का कार्य करने लगी।

"परमात्मा को यह भी स्वीकार नही था। देश विभाजन हुआ तो

भाई और उसके परिवार के सब प्राणी मार डाले गये। मै सिद्धेश्वरी को ले भागी और घोर यन्त्रणा के उपरान्त दिल्ली पहुची।

"एक सज्जन ने मुझे सुझाव दिया कि मैं नयी दिल्ली मे किसी ऐसे सरकारी क्वार्टर मे चली जाऊ वहा से कोई मुसलमान रहने वाला पाकिस्तान चला गया है। उसी व्यक्ति की सहायता से मुझे गोल मार्केट के पास क्वार्टर मिल गया।

"तीन महीने मे ही मैंने वहा एक मकान भाडे का लेकर पुन स्कूल चलाया। सियालकोट से यहा अधिक सफलता मिली और मैं सिद्धेश्वरी को शिक्षा-दीक्षा से विभूषित कर एक कालेज मे प्राध्यापिका बना सकी।

"मैं अब पुन शिक्षा-कार्य मे पडना चाहती हू, परन्तु ऐसा अनुभव करती हू कि पिछले पाच-छ वर्ष मे मै बहुत पिछड गई हू।"

"मुझे भी इन स्कूलो का एक अनुभव है। मै समझता हू कि नर्सरी स्कूल भी एक परिवार का विस्तृत स्वरूप ही होने चाहिए। इसी कारण मैंने यह कहा कि आपका एक परिवार निर्माण करने की आवश्यकता है। मैं उसका वातावरण स्कूल का बनाने के स्थान परिवार का बनाना चाहती हू। परिवार की एक विशेषता यह है कि यह एक छोटी-सी 'काम्पैक्ट' (सहत) इकाई निर्माण की जाए। यही अन्तर है परिवार और नर्सरी स्कूल मे।"

भगवन्ती ने अब मुस्कराते हुए कहा, "मै यह समझी थी कि सियालकोट वाले भैया सिद्धेश्वरी के पिता की भाति आप भी मुझे नवीन विवाह कर परिवार निर्माण की सम्मति दे रहे है।"

इस पर तो सुमन और वीरेन्द्र भी हस पडे। वीरेन्द्र ने कहा, "वैसे तो आज भारत यूरोप की नक्ल उतारने मे बहुत भाग-दौड कर रहा है और वहा पचास और कभी साठ-साठ वर्ष की स्त्रिया भी विवाह करती देखी जाती है। परन्तु मै वैसी कोई बात आपको करने के लिए नही कह सकता। मै जानता हू कि यहा आपके मन मे अभी यूरोप के चलन की गन्ध भी नही है।

"बहन जी, मेरा कहना है कि आपकी देख-रेख मे एक छोटा-सा परिवार रख दिया जाए और आपको उस परिवार को उन्नति के मार्ग पर चलाने के लिए कहा जाए।"

"यही तो समस्या है। वह परिवार जिसमे बच्चे मुझे अपना बडा समझने हो, कहा से लाऊ। शरीर से जन्म देने का अवसर तो अब नही आ सकता।"

"हा। यह तो है, परन्तु बहन जी। मानसिक परिवार तो निर्माण हो सकता है। आप इस विषय की स्वीकृति दे तो शेष आयोजन मै करूगा।"

"यदि कुछ ऐसा हो सके तो मै उसमे अपना कर्तव्य पालन का भर-सक यत्न करूगी।"

"अभी उसमे तीन बच्चे तो भरती हो सकते है। मेरी योजना मे पाच से अधिक होने नही चाहिए। दो और ढूढने है। वह मै ढूढ रहा हू।

"कुछ भी हो, कार्य तीन से आरम्भ किया जा सकता है।"

"परन्तु वीरेन्द्र जी, इन तीन से एक पाच फुट तीन इच लम्बे-चौडे प्राणी का पालन हो सकेगा क्या ?"

"देखिये बहन जी।" अब सुमन ने बातो का सूत्र अपने हाथ मे लेते हुए कहा, "परिवार मे तो पालन-पोषण का प्रबन्ध सबके लिए ही करना होता है। परिवार के पुरुखा का और परिवार के घटको का भी। इस विषय पर एक परिवार का बोर्ड बनाने का विचार है। वह सब कुछ करेगा।"

"बोर्ड ? क्या परिवार का बोर्ड परिवार से पृथक होगा ?"

"नही। परिवार के घटको का अपना ही होगा, परन्तु जो घट अल्पायु होगे और अभी प्रबन्ध करने की योग्यता नही रखते होगे, उनके बडो को बुला लिया जाया करेगा।"

"मै समझती हूं कि यह काम चल नही सकेगा।"

"मै समझता हू।" वीरेन्द्र ने कहा, "यह नर्सरी स्कूल से अधिक सुग-मता से चलेगा।"

"तो भाई साहब, करिए प्रबन्ध। और मेरे लिए क्या करणीय है ? इसका भी पता लगना चाहिए।"

"आप यहा इस फ्लैट का भाडा क्या देती है ?"

"दो सौ पचास रुपया।"

"और कोई नौकर इत्यादि भी है ?"

"नही।"

"तो एक काम तो आप आज ही कर दीजिए कि मालिक मकान को नोटिस दे दीजिए कि आप मकान पहली तारीख को खाली कर देगी।"

"और यह सामान ?"

"पहली तारीख को अभी सात दिन से ऊपर है। तब तक मै आपके लिए कोई कम भाडे का मकान ढूढ सकूगा।"

भगवन्ती पटेल नगर मे तो इसे सम्भव नही समझती थी। इस पर भी वह मौन रही।

एक बात वह समझ रही थी कि चार-पाच बच्चो का स्कूल चलाना सुगम होगा। परन्तु छोटे से स्कूल से निर्वाह की बात विचारणीय थी। वह देखना चाहती थी कि यह व्यापारी व्यक्ति क्या करना चाहता है और क्या कर सकेगा ?

इतना तो वह समझ रही थी कि इतने महगे मकान मे रहना न सम्भव है और न ही उचित। परन्तु कहा जाकर रहे और वहा जाकर किस काम को करे, वह कल्पना नही कर पा रही थी।

वीरेन्द्र ने उठते हुए कहा, "अच्छी बात है। कल किसी समय सुमन आपसे मिलकर कार्य की भूमिका और व्याख्या आपसे वर्णन करेगी। मेरी सम्मति है कि आपको इसकी बात मान जानी चाहिए।"

इतना कह वह और सुमन, भगवन्ती और सिद्धेश्वरी के पूर्ण फ्लैट को देखने लगे। एक छोटा-सा बैठक घर, दो सोने के कमरे, रसोई और गुसलखाना तथा एक छोटा-सा गोदाम था।

उन्होने मकान मे रखा सामान भी देखा और फिर भगवन्ती को नमस्ते कह चल दिए। सुमन ने यह कहा था, "मै यत्न करूगी कि कल मध्याह्न के समय आऊ। भोजन के समय से पहले ही आऊगी और आप और मै भोजन इकट्ठे अपने घर मे करेगे।"

भगवन्ती भावी जीवन की कल्पना मे निमग्न थी। इस कारण वह इस अपने घर का अर्थ नही समझ सकी।

८

जनेवा मे एक स्वास्थ्यप्रद स्थान के एक होटल मे पहुचने के कई दिन उपरान्त की बात है। तब तक सिद्धेश्वरी अपने इस नये जीवन मे अभ्यस्त हो चुकी थी। यह वैसा सिद्ध नही हुआ था जैसा कि वह विवाह से पूर्व कल्पना किया करती थी।

तब उसका विचार था कि पति-पत्नियो की खुशामद उनसे यौन सयोग के हेतु करते है और वे चाहते है कि पत्नी उनकी इस दिशा मे कामनाओ की पूर्ति नित्य किया करे। यदि पत्नी इसमे अपनी असमर्थता अथवा अरुचि प्रकट करे तो पति-पत्नी मे द्वेष का बीजारोपण हो जाता है।

विवाह से पूर्व तो वह आशा करती थी कि उसका पति यदि दिन मे एक से अधिक बार रति क्रिया के लिए आग्रह नही करेगा तो भी वह उससे नित्य एक बार के लिए आशा तो करेगा ही। वह जानती थी कि वह तीन वर्ष का विवाहित जीवन व्यतीत कर चुका है। इससे वह उससे वैसी आशा नही करती थी जैसी उसकी सहेली सुधा ने अपने पति के व्यवहार के विषय मे बताया था। सुधा की 'हनीमून' के दिनो की कथा सुनी तो सिद्धेश्वरी को विवाहित जीवन, पति से एक सघर्ष का जीवन समझ आया था। वह कल्पना कर रही थी कि प्राय सप्ताह मे छ दिन उसका पति से तकरार हुआ करेगा और दोनो को अपने पृथक-पृथक सोने के कमरे नियत करने होंगे।

परन्तु हुआ इससे भिन्न। पहली रात तो किसी प्रकार के इन्कार के लिए उसने न तो विचार किया था और न ही वह पति से किसी प्रकार की रियायत की आशा करती थी। वह चुपचाप पति की इच्छाओ की पूर्ति के लिए मन को तैयार कर ही पति की कोठी मे पहुची थी।

परिवार के सब लोग रात के साढे दस बजे कोठी पर पहुचे थे। कमलेश कुमार सिंह की माता विन्ध्येश्वरी देवी ने पुत्र और पुत्रवधू को सीधे उनके शयनागार मे पहुचाकर पूछा, "इस समय दूध पीयोगे अथवा कुछ अन्य पेय ?"

सिद्धेश्वरी पेय का अर्थ समझी थी किसी प्रकार की मद्य। वह अपनी सास का टुकर-टुकर मुख देखती रह गयी। उत्तर पुत्र ने ही दिया। उसने कहा, "माता जी, पेट भर खाकर आये है। अत दूध पीने की इच्छा नही हो रही। क्यो देवी जी, क्या विचार है ?"

सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "मैं तो कुछ ठण्डा पीना चाहती हू। बाहर तो गर्मी भी पर्याप्त है।"

कमरा तो वातानुकूलित था। बाहर से भीतर की ऊष्मा मे पर्याप्त अन्तर था। इस पर भी मई के मध्य की दिल्ली की गर्मी को सहन करते हुए वे आये थे। सिद्धेश्वरी के लिए तो वातानुकूलित कमरे मे सोने का अवसर पहला ही था। वह वहा पर्याप्त सुख अनुभव कर रही थी। इस पर भी दिन भर की भाग-दौड और रीति-रिवाज मे से गुजरने का प्रयास भारी मानसिक बोझा था। इस पर भी उसने दबी जबान से पति की ओर देख कह दिया, "परन्तु मै किसी मादक वस्तु को पसन्द नही करूगी।"

मिस्टर सिंह यह सुन हस पडा, परन्तु विन्ध्येश्वरी तो कमरे से जा चुकी थी और सिद्धेश्वरी को पता नही चला कि उसकी सास ने उसकी बात सुनी है अथवा नही। पति के हसने से वह आश्वस्त नही हुई। उसने प्रश्न भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा। सिंह ने केवल इतना कहा, "देखे, माता जी देवी के विषय मे क्या विचार बना चुकी है।"

सिद्धेश्वरी ने अभी भी दबी आवाज मे ही कहा, "वह मेरे विषय मे क्या जानती होगी। आज ही तो पहली बार इनके दर्शन हुए है।"

"परन्तु यह मादक द्रव्य की बात आपके मस्तिष्क मे कैसे आ गयी ?"

"सुधा को तो आप जानते ही है। उसने मुझे अपनी सुहाग रात का स्पष्ट चित्र सुनाया है।"

सिंह के कमरे मे दो पलग लगे थे। दोनो पुष्पादि मालाओ से अलकृत थे। वैसे भी कमरे मे भीनी-भीनी सुगन्धि भर रही थी। सिह ने सिद्धेश्वरी को एक पलग पर बैठा स्वय समीप एक गद्देदार स्टूल पर बैठ पूछ लिया, "तो सुधा के मूर्ख पति ने पत्नी से पहली मुलाकात पर भी मद्य का प्रयोग किया था ?"

"मुझे माता जी के प्रश्न पूछने पर कि दूध लेगे अथवा कुछ अन्य, भय

लग गया था। आज तो आपसे प्रथम मुलाकात हो रही है। मैं तो जीवन मे कभी भी इस विषाक्त पेय लेने की कल्पना नही कर सकती।"

"नही देवी जी। माता जी का ऐसा आशय नही था। हमारे घर मे मद्य का सेवन नही होता। मै तो इसे पीना मास खाने से भी अधिक पापमय समझता हू।"

"पिता जी को इतना परहेज नही था। इस पर भी मैने अपने जीवन मे उनको कभी भी नशे मे नही देखा। मद्य की गध का ज्ञान तो मुझे ससद सदस्य होने के उपरान्त एक मन्त्री महोदय के भोज पर ही हुआ था।

"वैसे तो मै पहले भी जानता था कि 'थोथा चना बाजे घना' वाली कहावत काग्रेस मे भी सिद्ध ही है। ये लोग जितना ज़ोर-ज़ोर से मद्य निषेध की डुग्गी पीटते है उतनी ही अधिक इनके यहा पी जाती होगी। यही मुझे उस मन्त्री महोदय के घर दिखायी दिया। रात के भोजन से पूर्व 'सौफ्ट ड्रिक' आयी तो मुझे कुछ सन्देह हो गया और मैने कहे जाने वाले फलो के रस को सूघकर देखा तो मन्त्री महोदय हस पडे और बोले, 'इसमे इतनी कम है और बीच मे सुगन्धित मिले होने से 'स्कॉच' की गन्ध भी कम हो गयी है।'

"मैने वह गिलास मेज पर रख अपने समीप बैठी एक स्त्री से बाते करनी आरम्भ कर दी। भोजन के उपरान्त तो एक-एक दो-दो पैग तेज़ शराब के भी लिए गए।"

"इस भोज के उपरान्त तो मेरा मद्य से आमना-सामना तो अनेको बार हुआ है। परन्तु मैंने इसे कभी चखा तक नही। इस गन्ध से तो मुझे घृणा है।"

इस समय सिह की माता जी दो गिलासो मे ताजे फलो का रस जिसमे वर्फ के टुकडे ठण्डा करने के लिए पडे थे, ले आयी। माता जी को स्वय आते देख सिंह लपककर उठा और बोला, "राम कहा गया है जो आपको बार-बार आना पड रहा है?"

विन्ध्येश्वरी मुस्करायी और बोली, "बेटा, बहू की पहली ही इच्छा की पूर्ति मैं स्वय अपने हाथ से करना चाहती थी। राम तो आ रहा था। मैंने उसे मना कर दिया है।"

सिद्धेश्वरी अपने सास के मनोद्गार सुन उठी और गिलास पकडने से पूर्व सास के चरण स्पर्श करने के लिए झुक गयी। विन्ध्येश्वरी ने ट्रे पुत्र के हाथ मे पकडा बहू को उठा छाती से लगा पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए बोली, "बेटी, सदा सौभाग्यवती रहो। देखो, यदि इसने कभी कुछ अनुचित करने को कहा तो मुझे बताना। मै इसके कान मरोड इसे सन्मार्ग दिखा दूगी।"

इतना कह विन्ध्येश्वरी बाहर निकल गयी और जाते हुए कमरे का द्वार बन्द कर गयी।

विन्ध्येश्वरी ने फलो के जूस का गिलास पति के हाथ से पकडते हुए कहा, "आप क्या अनुचित करने वाले है, जो माता जी को मुझे सचेत करना पडा है?"

सिह ने पुन स्टूल पर बैठते हुए कहा, "कदाचित् माता जी ने आपकी मद्य की बात सुन ली है और उनको सन्देह हो गया है और तुम जानती हो कि मैं मद्य का सेवन करने लगा हू। मैं कल माता जी का भ्रम निवारण कर दूगा।"

सिद्धेश्वरी ने कहा, "क्या यह ठीक नही होगा कि द्वार को भीतर से चिटकनी चढा दें?"

"अभी इतनी जल्दी क्या पडी है?"

"तो सोयेंगे नही?" सिद्धेश्वरी ने अपनी मनोकामना को छुपाते हुए कहा।

"हा। यदि नीद आ गयी है तो सोना चाहिए। इसको तो समाप्त कर ले।" उसने जूस की ओर देखते हुए कहा।

दोनो जूस पीने लगे। सिह ने उसे पहले समाप्त किया। वह उठा और गिलास को साइड टेबल पर रख और द्वार की भीतर से चिटकनी चढा कपडे बदलने 'बाथ रूम' मे चला गया। सिद्धेश्वरी आने वाले मिलन के विषय मे चिन्तन करती हुई धीरे-धीरे जूस पी रही थी। उसने अभी जूस समाप्त नही किया था कि सिह रात पहनने योग्य वस्त्र पहन 'बाथ रूम' से निकल बोला, "आपके लिए पहनने योग्य वस्त्र 'बाथ रूम' मे रखे है।"

इससे सचेत हो सिद्धेश्वरी उठी और 'बाथ रूम' मे चली गयी। उसके बाहर आने तक सिह पलग पर लेट गया था। सिद्धेश्वरी आयी तो अपने पलग पर लेट गयी। वह आशा कर रही थी कि उसका पति खिसक कर उसके पलग पर चला आयेगा। पलग साथ-साथ सटे हुए थे। सिह ने कहा, "अच्छा। आपके लिए रात-भर की गहरी नीद की इच्छा करते हुए सुबह तक के लिए नमस्ते।"

उसने पलग पर रखी मोटी चादर ओढ ली। वातानुकूलित कमरा सीमा से कुछ अधिक ठण्डा हो रहा था।

सिद्धेश्वरी कुछ देर तक तो पति के आने की प्रतीक्षा करती रही, परन्तु पन्द्रह-बीस मिनट व्यतीत होने पर भी जब वह नही आया और उसकी आखे नीद से मुदती दिखायी दी तो वह स्वय खिसककर पलग पर चली गयी। इसके जाने पर सिह ने आखे खोल पूछ लिया, "तो नीद नही आयी?"

"वह तो एक 'मैटाफर' (रूपक) ही था।"

"ओह! मै समझा था कि सत्य ही विवाह के प्रबन्ध मे थक गयी है। इस कारण मुझे आप पर दया आ रही थी।"

"और अपने पर नही?"

"मै तो आज अति प्रसन्न और सन्तुष्ट अनुभव कर रहा हू।" समीप खिसककर आती हुई पत्नी को सिह ने अपने अग-सग लगाते हुए कहा, "जिस दिन आपका पत्र पढा था तबसे ही मैं आपको पा जाने की उत्कण्ठा लिए हुए आपके पीछे भाग रहा था। आज आपको इस अवस्था मे देख अपने को कृत्य-कृत्य मान अपने भाग्य पर सन्तोष अनुभव कर रहा हू।"

"आप विचित्र व्यक्ति है।"

"इसमे वैचित्र्य क्या है? अब तुम मेरे साथ पलग पर लेटी हो। जीवन भर के लिए हमारे इकट्ठे रहने का आश्वासन है। मुझे आपकी श्रेष्ठ और ठीक बुद्धि का विश्वास है। इस कारण हडबडी किस बात की थी?"

"मै आपसे अभी कई बाते पूछने वाली थी।"

"यही तो कह रहा हू कि इन सब बातो के लिए जीवन भर पडा है।

जब आपने नीद की बात कही तो अन्य सब बाते मैने स्थगित कर दी थी। और यदि नीद नही आयी तो बाते भी कर सकते है।"

सिद्धेश्वरी पति की बाहो मे जकडी हुई सुख तो अनुभव कर रही थी। वह बातो के विषय मे विचार नही कर रही थी। वह अपने इस अनुभव को प्रोफेसर साहब से हडबडी मे समागम के अनुभव मे अन्तर पर चिन्तन कर रही थी। उसे वह अनुभव वर्तमान से न केवल विलक्षण, वरच बहुत ही निकृष्ट भी समझ आया था।

सिद्धेश्वरी ने आखे मूद अपना सिर पति की छाती पर रखा था। पति ने पत्नी को मौन देख पूछ लिया, "तो पूछिये। क्या जानना चाहती है आप?"

"यदि मै।" आखिर कुछ कहने के लिए वह बोली, "सन्तान उत्पन्न करने से इन्कार कर दू तो आप कैसा अनुभव करेगे?"

सिह ने कसकर उससे आलिंगन करते हुए कहा, "मुझे उसकी चिन्ता नही। सन्तान पैदा करने का मैंने किसी को वचन नही दिया हुआ। मुझे तो पत्नी की अभिलाषा थी। एक पढी-लिखी, बुद्धिशील, सुन्दर, स्वस्थ, सबल पत्नी की। वह मिल गयी है। अब उसकी सहचारिता जीवन के प्रत्येक क्षण मे पाने का आश्वासन पा अति प्रसन्न हू।

"यह सन्तान का कार्यक्रम मैने प्रकृति पर छोड रखा है। इसके लिए मुझसे अधिक उसको चिन्ता होनी चाहिए।"

"तो प्रकृति भी चिन्ता करती है?"

"प्रकृति का नियम है। उस नियम के अनुसार कार्य करना उसका कर्तव्य है। भला मैं इसमे चिन्ता क्यो करू?"

"परन्तु।" सिद्धेश्वरी के प्रिय विषय पर वार्तालाप आरम्भ हो गया था और उसने अपनी चिर विचारित धारणा उपस्थित कर दी। उसने कहा, "सन्तान को पेट मे रखने, इसके पालन-पोषण का मुख्य भार तो स्त्री को वहन करना पडता है। इसी कारण मैं चिन्तित हूं।"

"तो चिन्ता करो। मैने मना नही किया। उस चिन्ता के निवारण करने मे यदि मुझे कुछ करना हो तो बता देना। मैं यथासम्भव पालन करने का यत्न करूगा।"

"तो आप मुझे इस विषय मे स्वतन्त्रता दे रहे हैं ?"

"यह तो एक सामान्य-सी बात है। इससे भी कुछ और कठिन काम करने को कहो तो उसको पूरा करने के लिए भी भरसक यत्न करने का वचन देता हू।"

वर्तमान स्थिति मे पडी हुई वह मन मे तो पति से दूर हट जाने के लिए छटपटाती अनुभव करती थी, परन्तु शरीर की कामनाए उसे पति के साथ अधिक और अधिक सट जाने की प्रेरणा दे रही थी। उसने अपने अधर पति के अधरो के सामने किए तो पति ने इस निमन्त्रण को अस्वीकार नही किया।

६

अगले दिन से जीवन भाग-दौड़ का आरम्भ हुआ। उन्होने दस बजे हवाई जहाज पकडना था।

रात दोनो बहुत देर से सोए थे। इस कारण सिंह की माताजी ने उन्हे साढे सात बजे तक बन्द कमरे मे देख द्वार खटखटा दिया। सिंह ने उठ द्वार खोल माताजी को बाहर खडे देखा तो पूछ लिया, 'क्या बात है, माताजी ?"

"बेटा। विदेश जाना है न ? अभी तुम स्नान इत्यादि से भी निवृत्त नही हुए। मैंने पूजा का आयोजन किया हुआ है। पंडितजी सब सामान तैयार किए बैठे है।"

सिंह ने सिद्धेश्वरी को हिलाकर जगाया और कहा, "उठो, माताजी बुला रही है।"

सिद्धेश्वरी ने तो द्वार का खटखटाना भी नही सुना था। वह हड-बडी मे उठी और पूछने लगी, "क्या बात है ?"

"पंडितजी पूजा करने आए है और वहा हमारी प्रतीक्षा हो रही है। साथ ही हवाई पत्तन पर 'रिपोर्टिंग टाइम' साढे नौ बजे है।"

इस सचेतक से भाग-दौड आरम्भ हुई और यह भाग-दौड जनेवा मे

जाकर समाप्त हुई। जनेवा की झील के पूर्वी किनारे पर 'ववे डसे बर्गयी' के क्षेत्र मे एक स्विस राज्य-प्रबन्ध के होटल मे ठहरे हुए कमलेश कुमार सिंह और सिद्धेश्वरी को ठहरे हुए एक सप्ताह के लगभग हो चुका था। अभी तक ये दोनो प्रात का अल्पाहार ले होटल से निकल जाते थे और दर्शनीय स्थानो को दिन भर देखते हुए रात के भोजन के उपरान्त थके हुए गहरी नीद सो जाते थे।

आज सिंह ने कही घूमने के लिए जाने से छुट्टी की तो सिद्धेश्वरी को प्रसन्नता अनुभव हुई।

दोनो प्रात का अल्पाहार ले अपने कमरे मे आए तो पति ने कहा, "देवीजी, आज यदि होटल की 'बालकॉनी' मे बैठ झील का दृश्य देखे तो कैसा रहे ?"

"बहुत खूब। मै तो स्वय ही कहने वाली थी कि एक-दो दिन आराम से बैठना भी चाहिए।"

"मै तो इस बात की आवश्यकता दो दिन से अनुभव कर रहा हू, परन्तु श्रीमतीजी की इच्छा न जानते हुए मैं मौन था।"

"तब तो ठीक है। आज आपकी सगत का रस स्वादन कर सकूगी।"

दोनो अपने बैंड रूम के बाहर 'सिटिग रूम' मे एक सोफा पर बैठते हुए एक-दूसरे का मुख देख हस पडे।

"आप किसलिए हसे है ?" सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया।

"देवीजी के इस कहने पर कि मेरी सगत का रस-स्वादन कर सकेगी, मै समझता हू कि हमारे विवाह को आज ग्यारह दिन हो चुके है। अब तक तो श्रीमतीजी को पति के रस का भरपूर ज्ञान हो चुका होगा।"

इस पर सिद्धेश्वरी ने कहा, "मैं कुछ ऐसा अनुभव करने लगी हू कि आपकी भरपूर सगत तो जीवन के अन्त तक भी नही हो सकेगी। हा, नित्य से विलक्षण आज आपकी सगत अधिक आत्मीयता की प्राप्त होगी।"

"आत्मीयता तो पहले दिन से ही थी। मैं तो उस दिन से ही आपमे आत्मीयता अनुभव कर रहा हू जिस दिन आपको कालेज के बाहर आते हुए देखा था, परन्तु शिष्टाचार के नाते उस आत्मीयता का सकेत

मात्र भी नही दे सकता था ।

"परन्तु विवाह वाली रात से तो आपसे आत्मीयता प्रकट करने मे मैने मितव्ययिता नही दिखाई ।"

"नही जी । मेरा इस विषय मे किसी प्रकार से भी आपके विरुद्ध आरोप नही । मै कई दिन से आपसे खुलकर बाते करने की इच्छा कर रही थी । परन्तु एकान्त नही पा रही थी । रात को जब थकावट से चूर हो अपने कमरे मे आते थे तो तब कुछ दूसरा काम करने के लिए शेष होता और उसकी समाप्ति से पूर्व ही हम सो जाते थे । प्रात उठते ही कही जाने का कार्यक्रम होता था और अल्पाहार लेते ही भागना होता था ।"

"हा । एक बात देवीजी ने विवाह के तुरन्त उपरान्त रात सोने से पहले की थी । मै समझता हू कि उसका समाधान तो हो गया था ।"

"समाधान तो नही हुआ था । हा, अपनी विवशता का ज्ञान हो गया है ।"

"तो और समाधान क्या होता है ? देवीजी को मैने यह आश्वासन दिया था कि मै देवीजी पर बलात्कार नही करूगा । मै समझता हू कि मैने अपना वचन पालन किया है ।"

"तो आपका विचार यह है कि मै आप पर बलात्कार करती रही हू ?"

"राम-राम ! यह क्या कह रही है देवी जी ? मैने ऐसा कभी कहा है अथवा इसका कभी सकेत किया है ? साथ ही आप ऐसा कर भी सकती है क्या ? इतनी सामर्थ्य आपमे है क्या ?"

"परन्तु हमारा समागम तो नित्य होता रहा है ।"

"परन्तु इसमे हमारा, मेरा अभिप्राय है कि हम दोनो का दोष नही है । मैने तो पहले ही दिन बताया था कि मैने इस विषय मे चिन्ता करने के लिए प्रकृति को छूट दे रखी है ।"

"परन्तु मै इस विषय मे अब प्रकृति का विरोध करना चाहती हू ।"

"मैं आपके इस सकल्प का आदर करता हू । मैने तब भी कहा था और अब भी कहता हू कि यदि आप इस दिशा मे कुछ करेगी तो मै आपके प्रयास के विरोध की बात तो दूर रही, वरच सहयोग ही दूगा ।"

"मै इसी विषय पर बात करना चाहती हू ।"

"क्या कहना चाहती है ?"

"मै कोई ऐसी योजना विचार करना चाहती हू कि हम इस कार्य से बच सके । इससे हम प्रकृति का विरोध करना चाहते है ।"

"मै देवी जी की इस इच्छा को सराहनीय मानता हू । मै अपने भीतर बैठे 'डैविल' की तो गरदन मरोड सकता हू, परन्तु मै आपकी इस दिशा मे क्या और किस प्रकार सहायता दे सकता हू ?"

"मैं चाहती हू कि रात को सोने का प्रबन्ध पृथक्-पृथक् कमरो मे हो सके। यह कैसा रहेगा ?"

"प्रवास मे यह सम्भव नही। यह मै दूसरे कमरे का भाडा बचाने के लिए नही कह रहा। मेरा अभिप्राय है कि ऐसा करने से घोर 'स्कैण्डल' का प्रसार होगा ।

"यह ऐसे हो सकता है कि हम अब किसी नवीन होटल मे शिफ्ट कर ले और वहा पति-पत्नी के रूप मे नाम दर्ज कराने के स्थान दो मित्र साथ-साथ भ्रमण कर रहे प्रकट करे और पृथक्-पृथक् कमरे ले लें ।"

"यह तो और भी बदनामी का कारण होगा। होटल वाले और अन्य लोग जो हमारे सम्पर्क मे आएंगे वह यह समझेगे कि मैं इतना पशु हू कि एक सहयात्री को, जो वैसे मित्र है, मैं रात उसकी इच्छा के बिना बलात्कार करता रहता हू। आप मेरे साथ-साथ यात्रा करते हुए भी मेरा विश्वास नही करती और रात को मुझसे पृथक् सोने मे ही अपना कल्याण मानती है।"

सिद्धेश्वरी ने निराशा अनुभव करते हुए कहा, "तो आप कोई उपाय बताए ?"

"मै तो इसका एक ही उपाय समझता हू। वह यह कि 'नेचर' को स्वच्छन्द व्यवहार करने की स्वीकृति दे दे। समय पाकर 'नेचर' ही इस कार्य को बन्द करने को कहेगा। हम 'नेचर' के काम मे सहायता कर सकते है। अपने भीतर बैठी प्रकृति की इस प्रवृत्ति के सम्मुख कुछ इससे अधिक नही तो इतना ही आकर्षक कार्य उपस्थित करते रहे।

"यहा भ्रमण मे मैने नित्य नये दृश्य देखने के लिए जाना और उनको

देखते-देखते थक जाना, एक आकर्षण उत्पन्न किया है। परन्तु मै देखता हू कि यह पर्याप्त सिद्ध नही हुआ।

"मेरी माताजी ने भी एक उपाय बताया था। परन्तु यह तब था जब मेरी पहली पत्नी रामेश्वरी जी का देहान्त हुआ था। जब उसका सब क्रिया-कर्म हो चुका तो माताजी ने मुझे अपने पास बैठाकर कहा था कि मै नवीन विवाह कर लू, परन्तु उस भली स्त्री की स्मृति के रहते किसी नवीन पत्नी को लाने का विचार मन मे जम नही रहा था। इस कारण मैंने माताजी को बताया था कि जब तक रामेश्वरी से कोई श्रेष्ठ लड़की मिल नही जाती तब तक विवाह हो नही सकेगा।

"माता जी ने मेरे मन के भावो का आदर करते हुए कहा था कि तब एक बात करो। नित्य प्रात काल और रात के समय अपने को ईश्वरार्पण करने के लिए उसका पूजन किया करू।

"इससे पूर्व मै परमात्मा को मानता नही था। मैंने माताजी से अपने अविश्वास की बात कही तो वह बोली, 'बहुत विचित्र हो। तुम जैसा पढा-लिखा और बाते करने मे योग्य इस छोटी-सी बात को समझ नही सका।'

"मैंने पूछा, 'तो माताजी। परमात्मा कोई छोटी-सी बात है ? भला इसकी सीमाए कहा तक है ?'

"माताजी ने हसते हुए कहा, यह असीम है। क्योंकि यह आइडिया (विचार) है। विचार सदा असीम होता है। देखो, तुम हो अथवा नही ?"

"मै तो हू।"

"किसके बनाए हुए हो ?"

"अपने माता-पिता के।"

"और वे किसके बनाए है ?"

"वे भी अपने माता-पिता के।"

"और उनके माता-पिता किसके बनाए हुए थे ?"

"यह तो अनन्त काल से ऐसा ही चला आ रहा है।"

"अनन्त काल से कैसे हो सकता है। यह पृथिवी जिस पर हम टिके हैं, बनी थी। वैज्ञानिक इसकी आयु के विषय मे अनुसन्धान कर रहे है

और वे कुछ अरब वर्ष तक इसका अनुमान लगा रहे है। जब पृथिवी बनी थी तो इसके बनने की तिथि है और इस पर उपस्थित सब जीव-जन्तुओ की सृष्टि के बनने की भी तिथि है। तब इसे किसने बनाया था। यदि कोई बनाने वाला नही होता तो यह बनती ही कैसे और फिर क्या इस सृष्टि का बनना निष्प्रयोजन है ?"

"मै तो माताजी की युक्ति सुन निरुत्तर हो माताजी का मुख देखता रह गया। मुझे जब टुकर-टुकर उनके मुख की ओर देखते हुए बैठे देखा तो वह बोली, "बुद्धि तो यही कहती है कि न तो यह बिना बनाने वाले का है और न ही यह निष्प्रयोजन है। अर्थात् बुद्धि कहती है कि परमात्मा है।

"उसके पूजन की बात से मेरा मतलब है उसके विषय मे चिन्तन किया करे। उसने यह क्यो और कैसे निर्माण की है ? यह एक ऐसा मोह लेने वाला विषय है कि इस पर चिन्तन करते हुए तुम इस ससार को भूल जाओगे और फिर इसके बनानेवाले मे इतने लीन हो जाओगे कि इस यौवन काल मे भी ससार से अलिप्त रह सकोगे।'

"देवी जी। यह भी एक उपाय है, परन्तु ।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। वह समझी थी कि उसके पति ने आज ऐसी अयुक्तिसगत और अस्वाभाविक बात कर दी है जिस पर दिल खोलकर हसी उडायी जा सकती है। मिस्टर सिह कहता-कहता रुक गया और मुस्कराते हुए पत्नी का मुख देखने लगा। सिद्धेश्वरी ने जी भरकर हसकर कहा, "और मुझे देखते ही आपका भगवान हवा हो गया ?"

"मै समझता हू कि नही। केवल उसकी पूजा का ढग बदल गया है। जिस दिन मैने आपको पहली बार देखा था उसी दिन मै समझ गया था कि परमात्मा की एक उत्कृष्ट विभूति मेरे सामने खडी है। उस दिन से ही मैंने आपका पूजन, अभिप्राय यह कि चिन्तन आरम्भ कर दिया था। तबसे ही मेरे चिन्तन का विषय यह हो गया है कि मैंने आपको सब प्रकार से प्रसन्न करना है। यही मै तबसे कर रहा हू।

"एक दिन, यह विवाह के निश्चय होने से पहले की बात है। आपकी बूआ ने बताया, 'बेटा। मैं यह समझी हू कि बिटिया के मन मे तुम अपने प्रति मोह उत्पन्न नही कर सके।'

"मैने कहा था, 'पर माता जी । उसने तो मेरे मन मे एक प्रबल सम्मोहन उत्पन्न कर दिया है। जब तक यह सम्मोहन बना है, मैं किसी अन्य वस्तु अथवा कार्य मे चित्त लगा नही सकूगा।'

'तो जीवन कैसे चलेगा ?' उनका प्रश्न था।

"अभी तक तो भगवान के मोह मे फसा हुआ जीवन चलता रहा है। अब भगवान् की इस उत्कृष्ट विभूति मे माहित-मन से भी जीवन कार्य चल सकेगा। तब मै अपने जीवन का प्रत्येक क्षण उसी के अर्पण करता रहता था। इसी को ईश्वर प्रणिधान मानता हू। अब परमात्मा की विभूति आपकी लडकी मे चित्त का प्रणिधान कर जीवन कार्य चल सकेगा।

"मैं समझता हू कि आपसे सम्पर्क बनने के उपरान्त मैने अपना जीवन-कार्य कुछ अधिक कुशलता से ही निभाया हे । आपके बूआ जी तो मेरे कथन का विश्वास न कर गम्भीर हो मेरा मुख देखते रह गए, परन्तु मैं आश्वस्त था।

"और देवी जी। मै तो जीवन का प्रत्येक क्षण आपके अर्पण किए हुए हुए हू। मै समझता कि आपसे समागम भी तो आपको प्रसन्न करने के अन्तर्गत ही है। जिस समय आप चाहेगी कि यह नही होना चाहिए उसी दिन आप अपने भक्त को भीगी-बिल्ली की भाति अपने चरणो मे बैठे देखेगी।"

"मैं तो यह समझी हू कि आप मेरी खुशामद कर रहे है। न मै परमात्मा हू और न परमात्मा की उत्कृष्ट विभूति। मुझे तो परमात्मा भी कही दिखाई नही देता।"

"यह आप जाने की आपको क्या दिखाई देता है। मै तो अपने ही मन की बात बता रहा हू। आप आज्ञा करिये कि आपका स्पर्श भी नही करना तो निस्सन्देह आप मुझे अपने अनन्य भक्त की तरह आज्ञाकारी पाएगी।"

"परन्तु मै तो स्वय विवश हो जाती हू।"

"अर्थात् आपमे उपस्थित परमात्मा अभी आपको इस कर्म से मना नही कर रहा ?"

"तो मै परमात्मा नही हू ?"

"मैंने यह नही कहा कि आप परमात्मा है। मेरा तो यह कहना है

कि आपमे परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट विभूति विद्यमान है । वह आपको प्रेरणा देती है और आप उस प्रेरणा से मुझे आज्ञा देती है। मै एक भक्त की भाति आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करता हू।"

"बहुत विचित्र है ? भला, परमात्मा की विभूति मुझमे बैठी मुझसे यह क्यो कराती है ?"

"अवश्य उसका कोई प्रयोजन होगा। यह तो आप ही उससे पूछकर जान सकती है।

"देखिए देवी जी। आप यह जो कुछ कह रही है, आप अपने मे उपस्थित परमात्मा से कहिए कि वह आपसे यह काम न लेकर कोई और काम ले।"

"और वह मेरी बात मान जाएगे ?"

"हा। यदि परमात्मा मे विश्वास करेगी और अपना निवेदन सत्य हृदय से करेगी तो वह अवश्य मान जाएगे। वह आपके सम्मुख कोई ऐसा अन्य काम लाकर रख देगे कि आपका ध्यान इस ओर से हटकर उस नये काम की ओर लग जाएगा।"

"परन्तु मै तो अपना अनुसन्धान का कार्य करना चाहती हू।"

"यह भी उनसे ही निवेदन करेंगी तो वह इस पर भी अपना निर्णय दे देगे।"

"यह सब नानसैंस (निपट मूर्खता) है। न परमात्मा है और न इसकी कोई विभूति मुझमे है। यह मुझमे प्रकृति कार्य कर रही है। मै इसी का विरोध करना चाहती हू। आपने तो इस प्रकृति का नाम परमात्मा रख दिया है और मुझे अपने को इसके अर्पण करने को कह दिया है। मै इस अर्पण-वर्पण का विरोध करती हू।"

सिह अभी भी मुस्करा रहा था। जब सिद्धेश्वरी कह चुकी तो उसने कहा, "देवी जी। मै यही कह रहा हू। अपने कहे अनुसार आपको करने के लिए विवश तो नही कर रहा। मैने कभी भी विवश नही किया। यदि कभी किया है तो स्मरण करा दीजिए।

'"देखिए। मेरी सम्मति है कि हम बाहर 'बालकॉनी' मे चले जाए और वहा बैठ झील पर चलते 'स्टीमर' और सडक पर आते-जाते लोगो

को देखे। मै समझता हू कि इस विषय को उसी पर छोड दे जिसने इसका निर्माण किया है।

"हमे अपनी ओर से इस प्रज्जवलित अग्नि मे घी नही डालना चाहिए। इस विषय पर वार्त्तालाप करने से इस पर चिन्तन होने लगता है और चिन्तन करने से इसमे आसक्ति उत्पन्न होने लगती है। आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। बस हम विवश हो जाते है।"

सिद्धेश्वरी भी कुछ ऐसा अनुभव कर रही थी। अत वह उठी और कमरे से निकल कमरे के बाहर बनी 'बालकॉनी' मे जा बैठे।

बैरा वहा आया और पूछने लगा, "कोई 'ड्रिक' लेगे ?"

"हा। काफी लेगे।" सिह ने कह दिया।

एक घण्टा तक वे 'बालकॉनी' मे बैठे रहे। जब बैठे-बैठे ऊब गए तो कमरे मे चले आए और दोनो एक ही पलग पर सो गए। मध्याह्नोत्तर वह जागे तो विस्मय मे एक-दूसरे का मुख देखने लगे। जिसके विषय मे वे न करने का विचार कर रहे थे, वह हो चुका था। एकाएक सिह हसा तो सिद्धेश्वरी भी हस पडी और दोनो उठे और वस्त्र बदल होटल के 'रिसेप्शन रूम' मे मध्याह्नोत्तर की चाय लेने चल पडे। आज उन्होने 'लच' नही लिया था।

१०

इस वार्त्तालाप को हुए एक मास से अधिक हो चुका था। वे स्विट्जरलैड से फ्रास, पैरिस, लन्दन, न्यूयॉर्क, नियाग्रा जल प्रपात इत्यादि अनेकानेक स्थानो को देखते हुए जापान की राजधानी टोकियो पहुच गए थे।

आज दिन भर घूमते हुए और कुछ वस्तुए खरीदते हुए होटल मे लौटे तो सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया, "मै समझती हूं कि हमारा भ्रमण आवश्यकता से अधिक लम्बा हो रहा है।"

"सत्य। मै तो यहा से हाग-काग और फिर ताइवान जाने का विचार

थी। चित्त कुछ स्थिर होने पर उसने पूछा, "वापस जाने का क्या हुआ है ?"

"मै टिकट होटल के कार्यालय मे दे आया हू। वहा से हवाई कम्पनी से बातचीत हो रही है और अभी टेलीफोन से समाचार आएगा।"

उनके बाते करते-करते ही टेलीफोन की घण्टी खडकी और होटल के कायोलय से सूचना आई कि अगले दिन ग्यारह बजे के 'प्लेन' से दो सीट मिल सकती है। यदि आप कहे तो मै टिकट भेजकर अभी बुकिग करवा सकता हू।"

"हा। करवा दीजिए।"

"और शेष रुपये का चैक किसी भी 'इण्डियन बैक' का मिल सकता है।"

"उचित प्रबन्ध कर दीजिए।"

"कल दिन के ग्यारह बजे यहा से दिल्ली के लिए चल देगे। कल ही सायकाल दिल्ली पहुच जाएगे।"

"धन्यवाद है।"

"मै यह अनुभव कर रही हू कि जैसे मै नीचे ही नीचे धसती चली जा रही हू।"

"यह अनुभव मिथ्या है न ?"

"है तो मिथ्या है। परन्तु ऐसा अनुभव हो रहा है।"

"देखो देवी जी। यह जो कुछ हो रहा है, परमात्मा की इच्छानुसार ही हो रहा है।"

"कुछ भी हो, किसी की भी इच्छा से हो रहा हो। मै यह नही चाहती।"

"मैं आपके लिए अभी कुछ दिल को ताकत देने वाली पेय मगवा देता हू।"

मिस्टर सिंह ने 'काल बेल' का बटन दबाया। कुछ देर मे बैरा आया और सिह ने फलो का रस थोडे 'शैम्पेन' के साथ मगवा लिया।

इस रस के पीने से सिद्धेश्वरी की तबीयत सुधरने लगी। रात वह आराम से सोई। प्रात पुन· थोडी-सी मचली होने लगी तो मिस्टर सिंह

ने पुन वैसा ही फलो का रस मगा लिया। इससे पुन तबीयत ठहर गई।

उसी दिन होटल से साढे नौ बजे चलकर ये लोग टोकियो के हवाई पत्तन पर सवा दस बजे पहुचे। वहा से 'क्लीयरैंस' ले वे ठीक जापान की घडी के अनुसार ग्यारह बजे चलकर सायकाल दिल्ली के समयानुसार आठ बजे पालम के हवाई पत्तन पर पहुच गए।

टोकियो से चलने के पूर्व मिस्टर सिह ने दिल्ली मा को केबल ग्राम कर दिया था कि वह दिल्ली पहुच रहा है। अत विन्ध्येश्वरी देवी हवाई पत्तन पर पहुची हुई थी। उसने बहू को देखते ही कहा, "ईश्वर का धन्यवाद है कि तुमको घर आने की सुमति मिली है।"

यद्यपि मार्ग मे वह ठीक रही थी, परन्तु उसने खाने-पीने को कुछ विशेष नही लिया था। इससे वह दुर्बल प्रतीत हो रही थी।

अपनी सास की बात सुन सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "तो आपको यह ठीक प्रतीत हुआ है ?"

"हा। तुम बहुत थक गई प्रतीत होती हो।"

हवाई पत्तन से चलते समय विन्ध्येश्वरी सिद्धेश्वरी को अपनी बाह का आश्रय दे मोटरगाडी तक ले गई। अपनी गाडी ड्राइवर लेकर आया था।

घर पहुचकर विन्ध्येश्वरी ने सिद्धेश्वरी को बिस्तर मे लिटाते हुए पूछ लिया, "रजस्वला कब हुई थी ?"

सिद्धेश्वरी विचार करने लगी। स्मरण कर उसने बताया, "विवाह से दस-बारह दिन पूर्व हुई थी।"

"और तुम्हे यहा से गये एक महीना और बीस दिन हो चुके है। देखो बहू, मेरा अनुमान ठीक है कि तुम मा बनने के मार्ग पर चल पडी हो।"

सिद्धेश्वरी सास का मुख देखती रह गई।

"मुख क्या देख रही हो ? प्रसन्न होना चाहिए कि भगवान ने शीघ्र ही बात सुन ली है।"

"किसकी बात सुन ली है ?"

"मेरी। मै अपना सन्तान सूत्र लम्बा होने की अभिलाषा कर रही थी।"

"क्या लाभ होगा इससे ?"

"यह तुम अभी नही समझ सकोगी। इसके समझने के लिए अभी बीस तीस वर्ष लगेगे।"

सिद्धेश्वरी की हसी निकल गई। दुर्बलता मे ठीक प्रकार से हस नही सकी।

सिह स्वय भगवन्ती को अपने पहुचने की सूचना देने उसके मकान पर जा पहुचा। अपने मकान पर वह नही थी। मालिक मकान से पूछने पर पता चला कि लडकी के विवाह के आठ-दस दिन उपरान्त ही उसने मकान बदल लिया है। वह राजेन्द्र नगर ३/२१ मे मिस्टर वीरेन्द्र सेठी के मकान मे रहती है। यद्यपि उसने अभी अपने कमरे छोडे नही। वह कहती है कि लडकी के आने पर वह छोड देगी।

मिस्टर सिह ने राजेन्द्र नगर मे मिस्टर सेठी के मकान का मार्ग पकडा। वहा 'काल बैल' का बटन दबाने पर उनका नौकर आया तो सिह ने माता भगवन्ती के विषय मे पूछ लिया। नौकर ने नाम पूछा और उन्हे ड्राइग रूम मे बैठा स्वय खाना खाने के कमरे मे सूचना देने चला गया। पूर्ण परिवार खाना खा रहा था। मिस्टर सिह का नाम सुन सब खाना छोड बाहर चले आए। सिह ने सिद्धेश्वरी की बूआ के चरण स्पर्श किए तो उसने उसकी पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए कहा, "तो तुम लोग लौट आए हो ?"

"हा, मा जी। सिद्धेश्वरी जी की कल टोकियो मे तबीयत कुछ बिगडी तो हम अपना शेष 'टूर' रद्द कर भारत का रास्ता पकड हम ठीक आठ बजे यहा पहुच गए थे। वह कोठी पर है और आराम कर रही है। मेरी माता जी का कहना है कि उसके कुछ दिन चढ गए है।"

"तो यह बात है। अब तबीयत कैसी है ?"

"मार्ग मे तो उलटी नही हुई। मगर उसने खाया-पीया भी कुछ नही। केवल फलो का रस 'सिप' करती रही। अब माता जी उसके भोजन की व्यवस्था कर रही है। मै तो आपके चरण स्पर्श करने चला आया था। पटेलनगर वाले मकान पर गया था। वहा से यहा का पता जान मैं आ पहुचा हू।"

अब वीरेन्द्र ने कहा, "हम भोजन कर रहे थे। आइए, आप भी कुछ ले लीजिए और फिर हम उससे मिलने चलेगे।"

"आपके यहा टेलीफोन तो है। मै अपनी कोठी पर टेलीफोन करता हू और यदि वह सो नही गई तो आपको वहा ले चलूगा। उसके सोये होने पर मैं आपको कल प्रातः काल आने के लिए कहूगा।"

वीरेन्द्र सिह को अपने 'स्टडी रूम' मे ले गया और वहा से सिंह ने अपनी कोठी से सम्पर्क बनाया तो उसकी मा ने टेलीफोन उठाया और वहा की सूचना दे दी। उसने बताया, "सिद्धेश्वरी कुछ खाकर सो गई है। इस समय वह, जहा तक मै समझी हू, गहरी नीद सो रही है। बहन जी को कह दे कि इस समय मिलने के लिए आने के स्थान यदि कल सुबह आए तो अधिक ठीक होगा।'

सिह ने वहा ही भोजन किया और अपने भ्रमण का वृत्तान्त सुना दिया।

"कितना रुपया व्यय कर आए है ?" वीरेन्द्र ने पूछ लिया।

"हवाई जहाज का भाडा तो पच्चीस हजार से कुछ ऊपर लगा है। शेष इससे कुछ अधिक ही दूसरे व्यय और कुछ 'शॉपिग' मे लग गया है।"

"क्या कुछ खरीद लाए हो ?"

"कुछ विशेष नही। कुछ वस्त्रादिक है। एक 'टेप रिकार्डर' है और कुछ 'टेप' है। वस्तुओ के दाम से अधिक 'इम्पोर्ट टैक्स' देना पडा है।"

वीरेन्द्र मुस्कराया और बोला, "यह सब आप लोगो की करनी का परिणाम है।"

"मै तो सरकार की इस नीति का सदा विरोध करता रहा हू, परन्तु मेरी आवाज़ तो आरण्य रोदन के तुल्य रही है। इस पर भी बहुत रुचिकर झडपे वित्त मत्री से हुई है जो ससद के इतिहास मे सदा स्मरण रखी जाएगी।

"एक बार वित्त मन्त्री ने कहा, 'मैं समझता हूं कि मिस्टर सिह को तो विपक्षी दलो के बैंचो की शोभा बनना चाहिए।'

"मेरा मुह तोड उत्तर था, 'गधो को पीटने के लिए मूर्खो की मण्डली मे सम्मिलित हो जाऊ ?' पूर्ण सदन खिलखिलाकर हस पड़ा था।

"उसी दिन मैने अपने व्याख्यान मे कहा था, 'नैतिक अपराधो को मिटाने के लिए कानून प्रभावहीन होते है। ये तो अपराधियो को समाज से पृथक करने का ही परिणाम उत्पन्न करते है और आर्थिक दृष्टि से यह उपाय सर्वथा प्रभावहीन और चोर के स्थान किसी निर्दोष को दण्ड देने की योजना है।

"परन्तु पण्डित जवाहरलाल जी ने एक नारा लगाया था और उस नारे के मादक प्रभाव मे बडे-बडे पढे-लिखे, मूर्खो की भाति व्यवहार करने लगे है।

"मेरा प्रधान मन्त्री से इस विषय पर वार्त्तालाप हुआ है। निर्वाचनो के उपरान्त ही एक दिन उन्होने बुलाया और कहने लगी, 'मैं आपको किसी प्रकार की रिश्वत नही दे रही। मै जानती हू कि आप उससे ऊपर है। इस पर भी आपकी योग्यता और आपकी वाक् शक्ति का उपयोग सरकार उठाना चाहती है।'

"मेरा उत्तर था, 'आपको मैने कभी भी ऐसा करने से मना नही किया।'

'परन्तु इसके लिए आपको काग्रेस दल मे सम्मिलित होना पडेगा। मैने आपका पिछले पाच वर्ष का 'रिकार्ड' निकलवाया है। आपने उस काल मे एक सौ तीन बार व्याख्यान किया है। उनमे जहा तक पता चला है आपने सत्तर बार सरकार के पक्ष का समर्थन किया है। ऐसी स्थिति मे आपकी बुद्धि तो वही है जो सरकारी पक्ष की है। इससे ही उत्साहित हो मै आपको अपने दल मे आने का निमन्त्रण देती हू। इससे देश का कल्याण होगा।'

'मेरा कहना था, 'मै किसी दल मे सम्मिलित होना नही चाहता। मै इसे पिजडे मे बन्द हो जाना समझता हू। यह मै कभी भी स्वीकार नही करूगा। यदि आपको विश्वास है कि मै अधिक विषयो पर सरकार का समर्थन करता हू तो मुझे ऐसा ही रहने दीजिए। आपको लाभ ही है।"

'परन्तु आप काग्रेस के सदस्य बन जाइए। हमारे दल मे तो विपक्षी दलो से अधिक स्वतन्त्रता है। सरकार की टीका-टिप्पणी तो आप दल मे सम्मिलित होने पर भी कर सकते है। केवल मतदान आपको दल के

आदेशानुसार करना होगा। और यह आप देख चुके है कि विरोधी पक्ष मे एक मत न्यूनाधिक का कुछ भी अर्थ नही।'

"यह मेरी आत्मा पर प्रभाव डालता है। मेरी एक आवाज का प्रभाव क्या होता है, यह देखना मेरा काम नही। यह तो देशवासियो के विचार का विषय है। मेरा कर्त्तव्य तो यह देखना है कि मेरा कोई भी कार्य, मेरे मुख से कोई भी निकला शब्द, सत्य, न्याय, ज्ञान और बुद्धि की कसौटी पर ठीक उतरता है अथवा नही। फल ईश्वर के अधीन है।"

'परन्तु जनता तो हमारी नीतियो और काम से सन्तुष्ट प्रतीत होती है। वैसे हम प्रगति भी कर रहे है।'

"तब ठीक है। आप करते जाइए। मेरे जैसे मूर्ख की आवाज आपके साथ है अथवा आपके विपक्षी के साथ, क्या अर्थ रखता है ?

"वस्तु स्थिति यह है कि प्रधान मन्त्री देख रही है कि उनके नारो की मादकता कम हो रही है और वह उसे और तेज करने के लिए साधन बटोरना चाहती है।"

"परन्तु सिह !" वीरेन्द्र ने कह दिया, "मेरे मित्रो का कहना है कि प्रधान मन्त्री अति भयानक जीव है। वह ऐसी खिचडी पका रही है जिससे पूर्ण जाति को मूर्छना मे ग्रस्त किया जा सकेगा।

"यह नशीली वस्तु कार्ल मार्क्स ने तैयार की है। इसको लैनिन ने शुद्ध और तीव्र किया है और इसका प्रयोग निर्दयता से स्टालिन ने किया है।"

"देखिए वीरेन्द्र जी ! मै जिस कार्य पर नियुक्त हू, उसको ईमानदारी से निभा रहा हू। इसमे मेरी आय का एक बहुत बडा भाग व्यय हो रहा है। इस कार्य का क्या प्रभाव होता है, इसकी मैं चिन्ता नही कर रहा। मै भगवान् कृष्ण के आदेश को शिरोधार्य कर अपना जीवन चलाता हू। उन्होने कहा है —

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङगोऽस्त्वकर्मणि ॥

"कर्म करने का मेरा अधिकार है। फल की इच्छा मुझे नही करनी चाहिये। वह परमात्मा का कर्त्तव्य है।

"जो जैसा करता है। वैसा ही फल उसको मिलता है।"

११

'सिद्धेश्वरी अपनी कोठी के ड्राइंग रूम मे सोफा पर बैठे-बैठे विचार कर रही थी कि यह क्या हो गया है। उसे अपने मन के वह सब उद्‌गार स्मरण आ रहे थे जो वह कालेज मे अपनी सहयोगी प्राध्यापिकाओ के सम्मुख प्रकट किया करती थी और जिनको वह अपनी छात्राओ के सम्मुख कई प्रकार से प्रकट किया करती थी। वह विचार करती थी कि उन मनोद्‌गारो का क्या हुआ है? उसने जीवन मे व्यवहार उन मनोद्‌गारो के सर्वथा विपरीत किया है।

उसकी मा और मिस्टर तथा मिसेज सेठी उससे मिलने आये थे। वे एक घटा भर उसके पास बैठ उसका सुख-समाचार जान और उससे हसी-मजाक कर वापस जा चुके थे। सिह उनको अपनी पत्नी के पास बैठा स्वय वहा से टल गया था। वह चाहता था कि उसकी पत्नी अपने भ्रमण का वृत्तान्त स्वेच्छा से और निस्सकोच भाव से अपनी बूआ को बता सके।

एक घण्टे के उपरान्त वह उनके पास आया और पूछने लगा, "आप 'ब्रेक फास्ट' तक ठहरेगे तो ठीक, नही तो काफी आ सकती है।"

वीरेन्द्र ने कह दिया, "कुछ नही। अब हम जा रहे है। हमे बहुत प्रसन्नता है कि सिद्धेश्वरी जी ठीक मार्ग पर चल पडी है। परमात्मा इन को साहस और सामर्थ्य दे कि यह इस मार्ग पर भी उसी वेग से चल सकें जिस प्रकार वह अपना विद्यार्थी जीवन चलाती रही है।"

भगवन्ती ने सिद्धेश्वरी से विदा होने से पूर्व बता दिया, "वीरेन्द्र जी ने मुझे अपने क्वार्टर मे एक कमरा दे दिया है और मुझे अपने बच्चो की गवर्नेस बना दिया, वह कह रहे है। बच्चे मुझे दादी कहकर पुकारते है और मै विचार करती हू कि इन दोनो पदो के योग्य मै हू भी अथवा नही। अभी तक मैं यह निर्णय नही कर सकी कि मैं वहा हरामखोरी कर रही हू अथवा कोई उपकारी कार्य कर रही हू। इस पर भी मैं आजकल वहा हू।

"पहले मकान मे कुछ तुम्हारी वस्तुए, पुस्तके और विद्यार्थी जीवन मे प्राप्त पुरस्कार इत्यादि रखे है। तुम उनको ले आओ तो मै शेष सामान बेचकर वह मकान खाली कर देना चाहती हू।"

सिद्धेश्वरी ने गम्भीर विचार मे मग्न हो कहा, "बूआ। मकान खाली कर ही देना चाहिये। परन्तु यह गवर्नेस का पद तुम भाई के घर मे पसन्द करोगी अथवा अपनी लडकी के घर मे, विचारणीय है। आखिर यहा भी तो नयी सृष्टि निर्माण होने लगी है।"

भगवन्ती ने मुस्कराकर कह दिया, "ठीक है। यह भी विचारणीय हो गया है।"

एक दिन सिद्धेश्वरी एक टैम्पो गाडी लेकर गयी और अपनी बूआ के घर से अपना सामान उठवा लायी। सिह ने एक कबाडिये को बुलाकर घर का शेष सामान बेच डाला और मकान खाली करवा दिया।

अब जीवन सामान्य रूप मे चलने लगा। टोकियो के उपरान्त सिद्धेश्वरी को 'मार्निग सिकनेस' का पुन प्रकोप नही हुआ और उसे हवाई जहाज से उतरने के उपरान्त 'शैम्पेन' युक्त फलो का रस पीने की आवश्यकता नही पडी।

सिद्धेश्वरी ने कालेज का काम छोड दिया। उसे अपनी वर्तमान अवस्था मे कालेज मे जाने पर लज्जा लगने लगी थी।

कमलेश कुमार सिह प्रात चार बजे से रात के दस बजे तक अपने कार्य मे व्यस्त रहता था। आजकल उसकी माता जी भी दिल्ली मे ही रह गई थी। वह भी प्रात चार बजे से पूर्व ही बिस्तर छोड अपने नित्य कर्म मे लग जाती थी।

पाच बजे तो मा-पुत्र दोनो स्नानादि से निवृत्त हो पूजा गृह मे चले जाते थे। वहा एक घण्टा पूजा-पाठ मे और फिर विन्ध्येश्वरी तो वहा ही गीता का स्वाध्याय करती थी। सिह अपने 'स्टडी रूम' मे आ अपने ससदीय कार्य को देखने लगते थे। 'स्टडी रूम' मे आने से पूर्व वह एक प्याला काफी लिया करता था। ससदीय कार्य को वह नौ बजे तक समाप्त कर खाना खाने के कमरे मे आ जाता था। वहाँ उसकी माता, सिद्धेश्वरी और यदि कोई सम्बन्धी अथवा मित्र, अतिथि रूप मे ठहरा हो तो वह भी वहा

पहले ही उपस्थित होते थे। प्रात का अल्पाहार साढे नौ अथवा पौने दस बजे तक समाप्त होता तो सिह अपने क्षेत्र से कोई मिलने वाला अथवा किसी काम के लिए कोई आया होता तो उससे मिलता।

ग्यारह बजे वह चल रहे ससद सत्र के दिनो मे ससद भवन मे जा पहुचता था और ससद मे अवकाश के दिनो मे वह ससद के पुस्तकालय मे चला जाया करता था। वहा मध्याह्न के भोजन के समय तक बैठता। एक बजे मध्याह्न के वह घर आता और भोजन कर आराम करता। एक घण्टा विश्राम के उपरान्त वह सरकारी तथा असरकारी लोगो से भेट करने चल पडता। मध्याह्नोत्तर की चाय वह घर से बाहर ही लेता था। इसके उपरान्त किसी पार्क मे एक घण्टा भर भ्रमण कर वह घर लौट आता।

इसके अनन्तर वह तानपुरा ले सगीत का अभ्यास किया करता था। यह रात के भोजन के समय तक चलता था। रात का भोजन करते हुए वह रेडियो अथवा टेलीविजन पर समाचार इत्यादि सुना करता था। रात के दस बजे सो जाता था।

हनीमून भ्रमण से लौटने के उपरान्त कुछ दिन तक तो पत्नी पति का साथ नही दे सकी, परन्तु कुछ ही दिनो मे वह पति के सोकर उठने के समय प्रात काल उठने लगी। पहले कुछ दिन तो वह पति के साथ पूजा मे नही गई। उसका विचार था कि उसकी सास अथवा पति उसे वहा चलने का निमन्त्रण देगे। उन्होने ऐसा नही किया।

इतना अवश्य होता था कि स्नानादि के उपरान्त पति पत्नी को यह कहा करता था कि मै अब पूजा गृह मे जा रहा हू। पत्नी प्रतीक्षा करती कि वह कहेगा, "देवी। तुम भी चलो।" परन्तु जब कई दिन तक पति ने यह नही कहा तो उसके मन मे उत्सुकता उत्पन्न हुई कि वह देखे कि मा-पुत्र दोनो किस प्रकार पूजा करते है ?

उसने सुन रखा था कि बिहार प्रान्त मे तान्त्रिको का बहुत प्रचार है। इससे उसके मन मे सन्देह होने लगा था कि कही उसका पति और सास भी तान्त्रिक मत के मानने वाले न हो। इससे उसके मन की उत्सुकता और भी तीव्र हो गई और वह एक दिन वस्त्र पहन तैयार हो अपनी एक पुस्तक निकाल पढने लगी थी कि सिंह ने कहा, "देवी जी। अब मै एक

घण्टे के लिए पूजा गृह मे जा रहा हू ।"

"किसकी पूजा करते है आप ?" सिद्धेश्वरी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया ।

"चलकर स्वय क्यो नही देखती ?"

"आपने कभी आमन्त्रित ही नही किया ।"

"कहा के लिए आमन्त्रित करता ? विवाह के समय दिए निमन्त्रण के अतिरिक्त मेरे जीवन मे कौनसा स्थान शेष है जहा के लिए आपको निमन्त्रण नही है? आपको कभी किसी ने मना किया है वहा चलने के लिए ?"

"मुझे भय था कि कही आप तान्त्रिक न हो और आपके पूजा-कार्य गुप्त न हो ।"

"तो आप तान्त्रिक विद्या के विषय मे कुछ नही जानती । यद्यपि मैं तान्त्रिक नही हू, इस पर भी मैने इस विद्या का भली भाति अध्ययन किया है और मै विश्वास दिलाता हू कि हमारे घर मे तान्त्रिक सिद्धान्तो का अभ्यास नही किया जाता ।"

"तो मै चलू ?"

"हा । यदि इच्छा हो तो चलकर देखिए और फिर यदि कुछ रुचिकर हो तो नित्य चला करिएगा ।"

सिद्धेश्वरी उठ चलने को तैयार हो गई । चलते हुए सिह ने कहा, "मैं एक महीने से इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था ।"

सिद्धेश्वरी ने मुस्कराते हुए अपने पति की ओर देखा । सिह समझा था कि एक विजय तो उसे प्रकृति के खुलकर स्वच्छन्द रूप से कार्य करने के कारण प्राप्त हुई थी । सन्तान से घृणा करने वाली स्त्री स्वेच्छा से गर्भ धारण कर गर्भ की यत्न से पालना कर रही थी ।

वह समझता था कि अन्तरात्मा की प्रेरणा से वह दूसरी विजय प्राप्त करने वाला है । इस नास्तिक युवती के मन मे इस क्षेत्र मे भी जानने की उत्सुकता उत्पन्न हो गई है । वह जानता था कि अनुसन्धान मे प्रेरणा दो शब्दो को होती है । 'क्या' और 'क्यो' ? जब दो-दो प्रश्नसूचक शब्द मन मे बार-बार उठते है तो मनुष्य खोज मे चल पडता है । वह इन दो प्रश्नो का उत्तर पाने के लिए व्याकुल हो उठता है तो आत्मा अपने अनन्त पथ

पर चल पडता है। इस पथ का अन्त मोक्ष प्राप्ति पर ही होता है।

वह चित्त मे प्रसन्न था कि उसकी बुद्धिशील पत्नी 'क्या' और 'क्यो' ? का अर्थ जानने चल पडी है। साथ ही वह जानता था कि उसकी पत्नी जैसी ईमानदार, अनुशीलन करने वाली युवती इस मार्ग का अन्तिम छोर पा जाएगी।

आज वह पूजा गृह मे अपनी पत्नी के साथ आया तो विन्ध्येश्वरी ने उसे देखा और मुस्कराकर बोली, "एक महीने की देर कर दी है।"

सिद्धेश्वरी ने अपने सतर्क स्वभाव से उत्तर दिया, "तो गाडी छूट गई है क्या ?"

"नही। यहा तो गाडी प्रति क्षण जाती रहती है। एक निरन्तर चलने वाली गाडी अनन्त कालसे चल रही है औरअनन्त काल तक चलती रहेगी। इससे कोई भी यात्री गाडी छूट गया नही कहा जा सकता। इस पर भी तुम्हारे विचारसे हीकह रहीथी किजीवन का एक भागपीछे रह गई हो।"

"इधर बैठो।" विन्ध्येश्वरी ने उसे अपने पास रखे आसन पर बैठने के लिए कहा। कमलेश सामने के आसन पर बैठ गया। बीच मे एक हाथी-दात की चौकी रखी थी और उस पर रग-बिरग के फूल सजाए हुए थे।

सिंह बैठा तो विन्ध्येश्वरी अपनी मधुर आवाज मे स्तोत्र पढने लगी।

उसका स्तोत्र पढना धीरे-धीरे स्वर सहित और बहुत ही मीठी ध्वनि मे होने लगा।

सिद्धेश्वरी समझ नही रही थी कि पढे जाने अर्थात् गाये जाने का क्या अर्थ है ? इस पर भी वह वाणी की मधुरता, स्वर और स्पष्ट उच्चारण मे रस लेती अनुभव करती थी।

स्तोत्र पाठ आरम्भ हुआ था .—

गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजानन ।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिप ॥
प्रात स्मरामि भवभीतिहर सुरेश
गड्गाधर वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाड्गशूलवरदाभयहस्तमीश
ससाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

इस प्रकार दस मिनट तक यह स्तोत्र चलते रहे। तदनन्तर वेद मन्त्रो का पाठ होने लगा। मन्त्र पाठ का स्वर भिन्न था। इससे सिद्धेश्वरी को समझ आया कि यह भिन्न पाठ है। इस पर भी यह रस विहीन नही था। विन्ध्येश्वरी गा रही थी —

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रन्तन्न आसुव॥
यो भूत च भव्य च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम॥

इसके उपरान्त हिन्दी मे पद गान होने लगे —

निस्वार्थ सेवी हो सदा मन मलिन होता स्वार्थ से।
जब तक रहेगा मन मलिन नही भेट परमार्थ से॥
जो शुद्ध मन नर होय है वह ईश दर्शन पाये है।
मन के मलिन नही स्वप्न मे भी ईश सम्मुख जाये है॥

जैसे बहुत ही कोमल ध्वनि से पूजा आरम्भ हुई थी वैसी ही ध्वनि मे यह विलीन हो गई। बीच मे ध्वनि उच्च हो गई थी और पुत्र भी मा के स्वर मे स्वर मिलाने लगा था।

अन्त मे लगभग पन्द्रह मिनट तक मा-पुत्र मौन आखे मूदे बैठे रहे। इस प्रकार एक घण्टे के उपरान्त पहले मा उठी। तदनन्तर पुत्र और बहू भी उठ पडी। पुत्र पूजा गृह से निकला तो सिद्धेश्वरी भी बाहर आ गई। विन्ध्येश्वरी भीतर ही रह गई।

पूजा गृह के बाहर आ सिद्धेश्वरी पति का मुख देखने लगी। पति ने पूछ लिया, "काफी पीयोगी अथवा कुछ और ?"

"कुछ ठण्डा पीने को चित्त करता है।"

"तो आ जाओ।" वह उसे अपने 'स्टडी रूम' मे ले गया। वहा एक मेज लगी थी। उस पर कागज, कलम रखी थी। उसके साथ एक पुस्तक रखी थी। मेज के समीप रखी एक कुर्सी पर सिह बैठ गया और समीप रखी कुर्सी पर सिद्धेश्वरी को बैठने को कह मेज पर रखी घण्टी बजाने लगा।

राम घण्टी की आवाज सुनकर आया तो उसने कहा, "मेरे लिए काफी और देवी जी के लिए ताज़ा फलो का रस ले आओ।"

राम गया तो सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "वैसा जूस नही होना चाहिए जैसा कि टोकियो मे पीया था।"

मिस्टर सिंह हस पडा। हसते हुए बोला, "वह तो औषधि थी। अब तो आप बीमार नही। अनावश्यक औषधि नही दी जाती।"

"हा। मै भी यही कह रही हू कि मैं वैसी बीमार नही हू।"

हसते हुए सिंह ने सामने रखी पुस्तक खोल दी और उसको पढने लगा।

"यह कौनसी पुस्तक है ?"

सिंह ने पुस्तक उसके सामने कर दी और कहा, "देखिए, आप यह भाषा पढ तो सकती है।"

पुस्तक छान्दोग्य उपनिषद् थी। जो पृष्ठ खुला था उस पर लिखा था —

वागेवर्क् प्राण सामोमित्येतदक्षरमुद्गीथ। तद्वा एतन्मिथुन यद्वाक्च प्राणश्चर्क् च साम च ॥

सिद्धेश्वरी देवनागरी लिपि तो जानती थी। इस कारण उसने श्रुति पढ दी। परन्तु वह इसका अर्थ नही समझ सकी। पढकर वह पति का मुख देखने लगी। सिंह उसके मुख देखने का अर्थ समझ पूछने लगा, "अर्थ नही समझा न ?"

"मैं सस्कृत भाषा नही पढी।"

"परन्तु यह तो हिन्दी है। पदच्छेद कर दे तो यह सरल भाषा बन जाती है। यह देखिए। इस मन्त्र मे लिखा है —

वाक् एव ऋक् प्राण साम ओ३म् इति एतत् अक्षरम् उद्गीथ। तद् वा एतत् मिथुन यत वाक् च प्राण. च ऋक् च साम च।

सिंह मन्त्र को पढ बोलता गया और कलम ले सामने रखे कागज पर लिखता गया।

लिखकर उसने कागज खिसकाकर सिद्धेश्वरी के सामने कर बोला, "अब पढिए।"

सिद्धेश्वरी ने पद पढे और बोली, "हा। कुछ तो समझ आने लगा है।"

"बात बहुत ही सरल है। लिखा है कि वाणी ही ऋक् है। प्राण साम ओ३म् है। इस अक्षर को उद्गीथ कहते है अथवा वह मिथुन किया हुआ जब बोला जाता है, साम रूप से प्राण हो वह ऋक् हो जाता है।"

"यह तो मै पदो को पढकर ही समझ गई थी। परन्तु इसमे कुछ शब्द है जिनके अर्थ नही समझी। ऋक् से क्या अभिप्राय है? साम किसको कहते है? उद्गीथ से क्या मतलब है? ओ३म् अक्षर के विषय मे लिखा है। क्या लिखा है?"

सिह ने मुस्कराते हुए कहा, "ये परिभाषिक अर्थात् टैक्नीकल शब्द है। इनके अर्थ वैसे तो किसी भी अच्छे शब्द कोश मे लिखे है,परन्तु भावार्थ तो चिन्तन से स्पष्ट होता है।

"देखिए, मैं बताता हू। ओ३म् शब्द तीन अक्षरो का मिलकर बना है। आ, उ और म् का। मिलने को मिथुन कहते है। इन तीनो अक्षरो को मिलाकर साम अर्थात् एक समान स्वर मे उद्गीथ अर्थात् ऊचे स्वर से गान किया जाता है तो यह ऋक् अर्थात् सत्य ज्ञान को प्रकट करता है।

"उपनिषद के इस अध्याय मे ओ३म् शब्द की महिमा लिखी है। तीनो अक्षरो को मिलाकर जब इस ऊचे स्वर से गान किया जाता है तो उससे सत्य ज्ञान का हृदय मे प्रकाश होता है।"

"भला एक शब्द के जानने से ज्ञान कैसे हो सकता है?"

"ज्ञान तो स्वाध्याय से होता है। परन्तु स्वाध्याय का भी तो भावार्थ प्रकट होना चाहिए। यह चिन्तन से होता है। चिन्तन बुद्धि करती है और बुद्धि को निर्मल करने ने लिए इस पर पडी धूरि झाडने की आवश्यकता होती है। जैसे धूरि धूसरित चादर को फटकार कर झाड देने से धूरि झड जाती है, वही बात बुद्धि पर पडी धूरि की है। ऊचे स्वर से ओ३म् के बार-बार उच्चारण से बुद्धि की धूरि झडती है। जब बुद्धि निर्मल होती है तो फिर यह चिन्तन करने के योग्य हो जाती है। तब पढ़े लिखे का भावार्थ स्पष्ट होने लगता है।

"इसी कारण कहा हे कि ऊचे स्वर से ओ३म् शब्द का गान करने से बुद्धि निर्मल होती है और इस उच्चारण से सत्य ज्ञान का निरूपण होता है।"

इस समय राम एक ट्रे मे काफी का एक प्याला और एक गिलास मे फलो का जूस लिए हुए आ गया।

सिह ने जूस सिद्धेश्वरी के सामने रखकर कहा, ' पीजिए।"

वह स्वय काफी की चुस्की लगाकर कहने लगा, "एक विद्वान् ऋषि ने कहा है। इसके सत्य-झूठ होने की बात तो परीक्षण करने से ही पता चल सकती है।

"देखिए। इसमे लिखा है कि वाणी ही ज्ञान है। अर्थात् इस द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है। पुस्तको मे लेख तो वाणी के ही सकेत मात्र है। ज्ञान का मूल वाक् अर्थात् वाणी ही है। परन्तु वाणी बोली हुई तब तक अर्थ युक्त नही होती जब तक इस पर चिन्तन न किया जाए। इससे एक-एक वाक्य पर विचार करने से ही इसके विचार स्पष्ट होने लगते है।

"इसी कारण यह लिखा है कि मनुष्य को मूल ज्ञान परमात्मा ने वाणी द्वारा ही दिया था। इस कारण ईश्वरीय ज्ञान को वाक् कहा जाता है। वाक् ही वेद है। यह ही ऋक् अर्थात् ज्ञान है।

"बहुत अद्भुत है। यद्यपि इस सब कहे पर विश्वास नही होता; इस पर भी इसमे छिद्र नही निकल सकता।"

"यदि बुद्धि से इसमे दोष नही निकलता तो अविश्वास किस बात पर है?"

"यही कि ऋक् वेद है। वेद ज्ञान है। यह वाक अर्थात् वाणी है। यह परमात्मा की दी हुई है। ये सबके सब वाक्य प्रमाण रहित है।"

सिह ने मुस्कराते हुए कहा, "हाथ कगन को आरसी क्या ? करके देखो। देखो सिद्धेश्वरी, ओ३म् शब्द का उच्चारण करो। ऐसे।" उसने तीन अक्षरो का मिथुन कर ऊचे स्वर से ओ३म् का उच्चारण कर दिया।

"इसे तुम नित्य आधा घण्टा अथवा बीस मिनट तक किया करो। और फिर हम दो-तीन महीने के उपरान्त इस विषय पर वार्तालाप करेगे।"

"तो यह बात है?"

"हा। हलुवे का स्वाद उसके खाने मे है, न कि सामने रख उस पर 'थीसेज' लिखने मे।

दोनो हस पडे।

तीसरा परिच्छेद

१

सुधा जो अब सुधा गुप्ता के नाम से जानी जाती थी, कालेज मे अपनी सखियो से मिलने आया करती थी। सिद्धेश्वरी विवाह के उपरान्त कालेज नही गई।

बीस नवम्बर को कालेज का 'स्पोर्ट्स डे' था। खेल-कूद मे भाग लेने वाली लडकिया खेलो की प्रतियोगिता मे भाग लेने वाली थी और साय-काल उन्हे मुख्य कार्यकारी पार्षद के हाथो पारितोषिक वितरण होने वाला था। प्रधानाचार्या जी की ओर से विद्यार्थियो के अभिभावक तथा कालेज से सम्बन्धित अन्य प्रतिष्ठित लोग आमन्त्रित थे।

दोनो नव विवाहित प्राध्यापिकाओ को भी निमन्त्रण था। सिद्धेश्वरी तथा उसके पति श्री के० के० सिह को भी निमन्त्रण भेजा गया था।

आमन्त्रितो की सूची बनाते समय मिसेज सेठी ने प्रधानाचार्या को कहा था, "सिद्धेश्वरी को निमन्त्रण भेजना व्यर्थ है।"

"किसलिए ?"

"वह नही आएगी।"

"यही तो पूछ रही हू कि किसलिए ?"

सेठी ने मुस्कराते हुए कहा, "उसे लज्जा लगती है। इस समय वह छटे मास मे जा रही है।"

"परन्तु मैंने उसे इडिया गेट के पास भ्रमण करते तो देखा है।"

"वह अकेली थी अथवा उसका पति साथ था ?"

"वह पति के साथ टहल रही थी।"

"तो आपसे वह मिली थी ?"

"नही। उसने मुझे देखा नही। मै भी अपने साहब के साथ थी। मैंने समझा कि उसे एकान्त मे मिलना चाहिए और हमारे कालेज का 'स्पोर्ट्स डे' आने वाला था। इस कारण मैंने उससे मिलने का यत्न नही किया।"

"वह यहा नही आएगी ?"

"इस पर भी निमन्त्रण तो भेजना ही चाहिए।"

निमन्त्रण गया, परन्तु सिद्धेश्वरी और मिस्टर सिह नही आए। सुधा गुप्ता और उसका पति शिवकुमार फरीदाबाद से आए थे।

सुधा तो विवाह के उपरान्त पहले भी दो-तीन बार आ चुकी थी। इस कारण उसके आने पर बहुत सी लडकिया और प्राध्यापिकाए उसको घेरकर खडी हो गई। शिवकुमार को तो प्रधानाचार्या ने प्रतिष्ठित जनो मे बैठा दिया और सुधा अपनी सहेलियो से घिरी पृथक खडी रही।

सुधा जानती थी कि सिद्धेश्वरी की बूआ मिसेज सेठी के घर रहती है। इस कारण उसने सेठी से पूछ लिया, "आपने सिद्धेश्वरी और उसके घर वाले को निमन्त्रण नही भेजा ?"

सेठी ने बताया, "भेजा था। परन्तु वह नही आ रही। वह लज्जा अनुभव करती है। मै कल उससे मिलने गई थी। मैंने उसे आज के निमन्त्रण का स्मरण कराया तो वह बोली, 'मै नही आ रही।'

"मैंने पूछा, 'क्यो ? क्या मिस्टर सिह मना करते है ?'

'नही। मैंने उनको वहा जाने से मना कर दिया है।'

"किसलिए ?"

'मुझे वहा जाते और सब प्राध्यापिकाओ मे अपनी अवस्था का प्रदर्शन करते लज्जा लगती है।'

"इसमे लज्जा की क्या बात है ?" मैंने उससे कहा था, "देखो सिद्धेश्वरी। यह सब स्त्रियो के साथ होता है। शारदा बहन तो प्रसूति गृह मे जाने से पाच-छ दिन पूर्व तक कालेज मे आती रही है।

"मैंने उसे अपनी बात भी बताई थी। मैं अब चौथे मास मे जा रही हू। मैंने उससे यह भी कहा था कि मै प्रसव के एक मास पूर्व तक कालेज जाने का विचार रखती हू।

"इस पर वह बोली, 'आप तो उस पक्ष मे थी जो गृहस्थ जीवन को पुण्यभूमि मानती थी और है। मैं आपके विपरीत पक्ष मे थी और इसको नारी जाति की दुर्दशा तथा घोर पराजय मानती थी। अब मैं अपनी पराजय का दिग्दर्शन करने नही आ सकती।'

"हा, यह तो बात है।" सुधा ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे उस पर दया आती है।"

"और सुधा। तुम्हारी मटकी अभी रिक्त क्यो है?"

"भाग्य की बात प्रतीत होती है। बहन जी, हम यत्न तो बहुत करते है, परन्तु यहा कुछ टिकता ही नही।"

"ट्राई-ट्राई-ट्राई अगेन।"

सुधा हस पडी। इस समय तक सुधा और सेठी दोनो अकेली रह गई थी। सुधा ने कहा, "हम फरीदाबाद लौटने से पूर्व सिद्धेश्वरी को मिलने के लिए उसकी कोठी पर जाने का विचार रखते है।"

"तुम्हारे पति भी?"

"हा। मैंने अपने वहा आने की सूचना टेलीफोन से उसको दे रखी है। रात का खाना भी हम वहा ही लेगे।"

"तो तुम्हारे पति मिस्टर सिह से परिचित है?"

"परिचय तो है, परन्तु पहले परस्पर बातचीत कभी नही हुई। एक बार मै पहले भी उसकी कोठी पर पति सहित गई थी। उस दिन मिस्टर सिह घर पर नही थे। वह अपने क्षेत्र का दौरा करने गए हुए थे। वह वर्ष मे दो बार अपने क्षेत्र का दौरा किया करते है। आज तो मिस्टर सिह घर पर है।

"जब मै घर से चलने लगी थी तो सिद्धेश्वरी का टेलीफोनआया था। उसने अपनी बूआ, मुझे और अपने बच्चो को भोजन पर आमन्त्रित किया है।"

"परन्तु मैने तो आज प्रात काल टेलीफोन किया था।"

"मैं समझती हू कि इसी कारण उसने हम सबको बुला लिया है। वह इस प्रकार तुम्हारे व्यग्यो से बचने का उपाय कर रही है।"

सुधा गम्भीर हो बोली, "हा। उसकी बूआ के सामने हम उसकी हसी

नही उडा सकते ।"

"क्यो ? क्या इससे वह नाराज़ होती है ?"

"नही। बूआ कभी नाराज नही होती, परन्तु वह बात को ऐसा घुमाव दे देती है कि हसी की बात एक गम्भीर विचार का विषय बन जाता है। मै बूआ का बहुत आदर करती हू और उनके सामने कभी किसी भी प्रकार की उच्छृ खलता की बात नही कर सकती।"

दोनो कुर्सियो पर बैठने के लिए चल पडी थी। सेठी ने कहा, "नरेन्द्र के पिता अपनी मोटरगाडी लेकर ठीक आठ बजे यहा आएगे। तब तक तो यह समारोह चलेगा ही। तब मै उनके साथ चल दूगी।"

"हम भी आपके साथ ही चलेंगे। वैसे हमारे पास अपनी गाडी है।"

पारितोषिक वितरण का कार्य-क्रम तो सामान्य ही था। वही प्रिंसीपल का प्रारम्भिक भाषण। तदनन्तर कालेज की 'स्पोर्ट्स क्लब' के सैक्रेटरी द्वारा क्लब की रिपोर्ट। पारितोषिक वितरण से पूर्व वितरक का भाषण और तदनन्तर उस द्वारा पारितोषिक वितरण।

दो घण्टे का कार्य-क्रम था। यह साढे पाच बजे आरम्भ होकर साढे सात बजे समाप्त हो गया। तदनन्तर जलपान का प्रबन्ध था।

वीरेन्द्र सेठी ठीक आठ बजे अपनी मोटर गाडी मे पूर्ण परिवार से लदा-फदा वहा पहुचा तो सेठी चलने को तैयार खडी थी। सुधा ने उसे जाते देखा तो अपने पति के कान मे कुछ कह वह भी चलने के लिए तैयार हो गयी।

सुधा और शिवकुमार भी सेठी परिवार के साथ जाने को तैयार हो गए। जब वे कालेज के बाहर मोटरो के पास आए तो सुधा और शिव भगवन्ती को नमस्ते कहने सेठी की गाडी के पास चले गए।

"बूआ जी, नमस्ते।" सुधा ने आगे बढ हाथ जोड कह दिया।

"ओह, सुधा, शिव भी आया है ?"

"हा, बूआ जी।" शिव ने आगे बढ हाथ जोड नमस्ते कह दी।

सुधा ने बताया, "हम भी सिद्धेश्वरी से मिलने जा रहे है।"

"बहुत खूब। परन्तु सिद्धेश्वरी को क्या हो गया है ? कुछ समझ नही आती। वह इस प्रकार लज्जा और सकोच अनुभव करने लगी है कि जैसे

वह आज से पचास वर्ष पूर्व काल मे रह रही है।

"मेरा भी जब विवाह हुआ था तो मै इतनी लज्जा अनुभव नही किया करती थी जितनी कि यह कर रही है।"

सुधा हस पडी और बोली, "बच्चा होने के उपरान्त यह सब ठीक हो जाएगा।"

सब अपनी अपनी गाडी मे बैठ 'डिप्लोमैटिक इनक्लेव' की ओर चल पडे।

मिस्टर सिह को ज्ञात था कि आज सिद्धेश्वरी की सहेली सुधा अपने पति के साथ रात के खाने पर आने वाली है। इस कारण वह साढे सात बजे ही घर पर आ गया था। ससद के निर्दलीय सदस्यो की अशोक होटल मे एक मीटिग और चाय पार्टी थी। सिह उसमे सबसे प्रमुख भाग ले रहा था। वह निर्दलीयो को भी किसी कायदे-कानून मे लाना चाहता था।

इसके लिए उसकी योजना यह थी कि निर्दलीय सदस्यो का समाघोप निर्माण किया जाए। वह चाहता था कि सब निर्दलीय सदस्य भी अपने सम्मुख किसी देशापकारी उद्देश्य को अपने सम्मुख रक्खे। उसने सुझाव दिया था कि हम यह घोषणा करे कि राजनीति मे दलो का निर्माण देश की प्रगति मे बाधक है। दलो के बन जाने से दल के सब सदस्यो को अपनी अधिकाश अभिलाषाओ को दल के बहुमत के सम्मुख नत मस्तक करना पडता है। यह सदस्यो के स्वतन्त्र रूप से कार्य अपनी बुद्धि के प्रयोग मे बाधक है।

चुनाव के पहले और चुनाव के पीछे ससद मे सदस्य सब प्रकार से अपने-अपने विचार और योग्यता से कार्य करेगे। इससे ससद का कार्य उत्तरोत्तर श्रेष्ठ और श्रेष्ठतर होता जाएगा और निर्वाचनो मे भी श्रेष्ठ और श्रेष्ठतर सदस्य निर्वाचित होकर आएगे।

सिह एक वैचारिक क्रान्ति लाने का यत्न कर रहा था। यद्यपि व्यक्तियो का स्वार्थ और महत्वाकाक्षाए इसमे बाधक हो रही थी, परन्तु जब सिह ने दलबन्दी के अवगुणो का वर्णन किया तो उसमे कोई दोष नही निकाल सका।

एक सदस्य ने सुझाव दिया, "हमे बार बार मिलकर अपने पक्ष को

प्रबल करना चाहिए।"

सिंह का उत्तर था, "मैं इस सुझाव का समर्थन करता हू, परन्तु हमे एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमे मुख्य-मुख्य विषयो पर अपने मतदान की सफाई सार्वजनिक रूप मे देनी चाहिए। हम निर्दलीयो का यह समाघोष होना चाहिए कि राजनीति मे दलबन्दी दासता का चिह्न है। इसका ग्राधार यह है कि ससद सदस्य अधिकाश विषयो पर देश हित मे स्वय विचार नही कर सकते। इस कारण उनके मत को दिशा देने के लिए दल होने चाहिए।

"यदि इस बात को सत्य मान लिया जाए तो यह स्वीकार करना पडेगा कि दलो ने अपने प्रत्याशी नामाकित करते समय उन लोगो का नाम उपस्थित किया है जो स्वतन्त्र विचार करने की सामर्थ्य नही रखते।

"यही वर्तमान प्रजातन्त्र मे दोष है। दल के दस-बीस व्यक्ति दल पर शासन करते है और दल के सत्ताधीश हो जाने पर देश पर शासन करते है। कभी-कभी तो एक ही व्यक्ति देश के भाग्य का विधाता हो जाता है।"

निर्दलीयो की यह सभा और समारोह देश के समाचार पत्रो मे अति चर्चित रहा। सिंह वहा से घर लौटा तो सिद्धेश्वरी ड्राइग रूम मे बैठी थी। सिंह ने आते ही पूछा, "तो आपकी सहेली और उनका घरवाला आया है?"

"नही, अभी नही।" साथ ही सिद्धेश्वरी ने बताया, "मैने मिसेज तथा मिस्टर सेठी को परिवार सहित भी आज रात के खाने पर आमन्त्रित कर लिया है।"

"ओह! तब तो मज़ा किरकिरा हो जाएगा।"

"क्या मजा लेने वाले थे आप?"

"दोनो सखियो मे होने वाली नोक-झोक अब नही हो सकेगी।"

"इसी कारण तो मैंने सुमन बहन जी के परिवार को बुला लिया है। मैं सुधा से नोक-झोक करना नही चाहती।

"ग्राज प्रात जब उसका टेलीफोन आया था तो मैने पूछा था कि अभी निर्माण कार्य आरम्भ हुआ है अथवा नही?

"उसने बताया था, 'नही, अभी नही।'

"इसी कारण मैने बूआ इत्यादि को बुला लिया है जिससे कि वह मेरी हसी मजाक न उडा सके।"

"पर हसी-मजाक का विषय तो वह है। छ महीने विवाह को होने जा रहे है और अभी तक वह बजर भूमि की भाति बीज स्वीकार नही कर सकी।"

"और क्या जाने वहा बीज ही न हो। उस अवस्था मे भूमि क्या करेगी ?"

"मैं समझता हू कि सुधा को स्मरण करा देना चाहिए कि दुनिया उसकी ओर उत्सुकता से देख रही है।"

"बात यह है कि मै सन्तानवती होना एक लज्जा की बात माना करती थी और मै अपने विचार प्रकट करने मे सकोच नही किया करती थी। अब मै स्वय ही इस दशा मे चल पडी हू। इस कारण मैं अधिक हसी की पात्रा हो गई अनुभव करती हू।"

"तो यह बात है। मेरा अभिप्राय है कि तुम अभी भी अपनी उस समय की धारणाओ को ठीक मानती हो। यही कारण है कि तुम अपनी वर्तमान अवस्था की सफाई नही दे सकती।"

"मैं अपने मन मे अपनी अवस्था से अपना मान-मर्दन समझती हू। मैं समझती हू कि 'नेचर' ने मुझे चारो खाने चित्त कर दिया है। मैं उससे सर्वथा पराजित हो चुकी अनुभव करती हू।"

"देखो देवी। यह हीन भावना तुम मे, तुम्हारी मिथ्या शिक्षा ने उत्पन्न की है। वास्तव मे तुमने प्रकृति पर विजय प्राप्त की है।"

"यह कैसे ? मै समझती थी कि मै वासना से पराभूत नही हो सकता और मै देख चुकी हू कि आपके सामने मै वासना से सर्वथा पराजित हो गई थी और इस पराजय का मुझे दण्ड मिला है।"

"वह तो तुमने अपने को प्रकृति के अनुकूल करने का यत्न किया था। तुम्हारी विजय तो उसके उपरान्त आरम्भ होती है। देखो, मै समझाता हू। तुमने अपने पूर्ण गर्भ काल से केवल एक बार ही खाया-पीया निकाला है। वह भी उस समय जब तुम्हे ज्ञान नही था कि तुम जीवन के नए दौर

मे चल पडी हो। तदोपरान्त तुम्हारा खाना-पीना स्वाभाविक रूप मे चलता रहा है। यह इस बात का सूचक है कि तुमने प्रकृति को इस बात का अवसर नही दिया कि तुम्हे वह दण्डित करे। मै इसे विजय मानता हू।

"अब तुम सामान्य जीवन चला रही हो। घूमती-फिरती भी हो, पढती-लिखती भी रहती हो। घर पर ग्राने वालो से स्वाभाविक रूप और सामर्थ्य से बातचीत भी करती हो।

"साथ ही इस काल मे प्राय स्त्रिया पीली पड जाती है। तुम तो गुलाब के फूल की भाति प्रफुल्लित और सुन्दर लगती हो।

"इससे भी अधिक पिछले पाच महीने तुमने सयम से व्यतीत किए है। मै समझता हू कि इसका परिणाम यह होने वाला है कि तुम्हारा प्रसव कष्ट रहित होगा। बताओ, यह प्रकृति पर विजय है अथवा नही ?"

सिद्धेश्वरी देख रही थी कि यह सब ठीक है, परन्तु यह प्रकृति पर विजय है अथवा यह प्रकृति की उस पर विजय है। इस कारण उसने कहा, "मैं इसको इस प्रकार समझती हू कि मैने अपनी दुर्बलता को समझ अपने को प्रकृति के बहाव मे डाल दिया है और क्योकि मै बहाव का विरोध नही कर रही, इस कारण मुझे कष्ट नही हो रहा।"

"यह तो है। परन्तु इसमे लज्जा की बात कहा से ग्रा गई ? प्रकृति का विरोध तो विज्ञान के धुरन्धर विद्वान भी नही कर सकते।

"मनुष्य जैसा कि यह बना है, प्रकृति का विरोध नही कर सकता। यह प्रकृति की गतिविधियो को जानकर उससे झगडा किए बिना बच सकता है। यही तुमने किया है। यही सब बुद्धिमान लोग कर रहे है।

"इस कारण मै तो समझता हू कि तुम बहुत बहादुर स्त्री हो और जिस मार्ग पर तुम चली हो, वह मानयुक्त मार्ग ही है।"

सिद्धेश्वरी अभी पूर्ण रूप से समझी नही थी कि सुधा इत्यादि ग्रा गई थी। सुधा और शिव कुमार पहले पहुचे थे। सिद्धेश्वरी और सिह उनका कोठी के बरामदे मे स्वागत ही कर रहे थे कि वीरेन्द्र तथा भगवन्ती इत्यादि आ गई।

सामान्य अभिवादन के उपरान्त सिह सबको भीतर ले गया और

सबको ड्राइग रूम मे बैठा ही रहा था कि विन्ध्येश्वरी वहा आ गई। सिद्धेश्वरी ने अपनी सास का सबसे परिचय कराया।

२

शिव कुमार, वीरेन्द्र सेठी और मिस्टर सिह पृथक एक सोफा पर बैठ गए और स्त्रिया सिद्धेश्वरी को घेरकर बैठ गई। सिद्धेश्वरी ने बूआ से पूछा, "बूआ, कैसी हो ?"

"सब प्रकार से सुखी हू।"

"और बच्चे।"

"आजकल पाच का कोटा पूरा हो गया है। एक लडकी उनमे गाजियाबाद से आ गई है। वहा किसी कारखानेदार की लडकी है। उसके पिता ने दूसरा विवाह किया है और उसकी देख-रेख मेरे सुपुर्द कर दी है। एक कोई प्रोफेसर चतुर्वेदी है। उनकी पोती है। इस प्रकार अब मेरे पास पाच बच्चे है। दो लडके और तीन लडकिया।"

सुधा ने पूछ लिया, "बूआ, तुम उन बच्चो को पढाती हो ?"

"नही। वे सब पढने तो अपने-अपने स्कूल मे जाते है। मै उनके माता की स्थानापन्न कार्य करती हू। तीन बच्चे तो सुमन बेटी के है। वह अपने पढने-लिखने के काम मे व्यस्त रहती है और उसके माता का स्थान मै लेती हू।

"बच्चो को ठीक समय पर सुलाना, ठीक समय पर जगाना, उनको स्नानादि से निवृत्त होने उनको पूजन-भजन मे लगाना; तदनन्तर उन्हे अपने-अपने पढाई के काम मे लगा देना।

"समय पर भोजन करा बच्चो को उनके स्कूल छोडने जाना मेरा काम है। मध्याह्न के समय मैं रिक्त होती हू और उस समय मै अपना स्वाध्याय करती हू। तीसरे प्रहर पुन बच्चो को लेने जाना होता है। कभी किसी बच्चो को जल्दी छुट्टी हो जाती है तो वह मुझे अपने स्कूल से टेलीफोन कर देता है तो मै घर की मोटरगाडी लेकर उसे लेने चली जाती

हू। बच्चे जब घर पर होते है तो उनके खेल-कूद, भ्रमण और फिर कभी 'पिक्चर' देखने ले जाना भी मेरा काम है। रात को पढाई कर भोजन होता है और मै उनको समय पर सुला देती हू।"

वीरेन्द्र जी ने ऊपर की मन्जिल खाली करवा हमे रहने को दे दी है। वहा मै उन पाच अपने बच्चो के साथ रहती हू।"

"और बूआ। स्कूल मे फीस क्या लेती हो?" सुधा का प्रश्न था।

"वह स्कूल तो है नही। उनके तीन स्कूल है। वीरेन्द्र जी के लडके मौण्टिसेरी स्कूल मे पढते है। लडकी रुचि सालवान स्कूल मे पढती है और चतुर्वेदी जी की पोती शक्ति नगर मे एक पब्लिक स्कूल मे पढती है। मै तो एक घर बनाकर रह रही हू। घर का खर्चा एक कमेटी करती है। मकान के भाडे के अतिरिक्त हम सबके वस्त्र एव भोजन का व्यय पाच सौ रुपये महीना पड जाता है। यदि भाडा भी सम्मिलित कर लू तो यह एक सहस्र के लगभग हो जाएगा। यह रुपया कौन देता है और कितना-कितना देता है, मुझे ज्ञात नही।"

"यह तो घाटे का व्यापार प्रतीत होता है।"

"लाभ-हानि की बात तो तब हो जब कोई दुकान की जा रही हो। वीरेन्द्र जी कहते है कि यह भगवन्ती जी का परिवार है।"

मिस्टर सिंह की मा ने कह दिया, "बहन जी। आपको इस कार्य मे कष्ट तो बहुत होता होगा। मैने तो एक ही बच्चे कमलेश की परवरिश की है और यह बचपन मे बहुत ही शरारती होता था। मैं तो इससे ऊब गयी थी।"

"ऊबने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता। पाच की सख्या कुछ अधिक नही है। वह गाजियाबाद वाली लडकी राधा तो बहुत ही हिलमिल गई है।"

"कितनी बडी है वह?" विन्ध्येश्वरी ने पूछा।

"अभी छ: वर्ष की है। बच्चो मे सबसे बडी लडकी चतुर्वेदी जी की है। वह सातवी श्रेणी मे पढती है। उसका स्वभाव भी दूसरो से विलक्षण है और उसके पब्लिक स्कूल के साथी कुछ ठीक प्रतीत नही हुए। इस पर भी वह अद्भुत ग्रहणशील मन रखती है। मैं उसे अपने मार्ग पर ला

रही हू ।"

पुरुषो मे दूसरी बात हो रही थी। शिवकुमार ने मिस्टर सिह को एक बार ही पहले देखा था। वह तब था जब वह सिद्धेश्वरी से विवाह के प्रत्याशी के रूप मे आया था। उस दिन के पश्चात् उसने मिस्टर सिह को आज ही देखा था। शिव ने वीरेन्द्र और कमलेश कुमार के बीच मे बैठते हुए कहा, "मै तो कुछ और ही समझा था।"

सिह ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "क्या समझा था ?"

"मै आपको सिद्धेश्वरी जी का मालिक मकान समझा था और यह समझा था कि एक सर्वथा बुद्ध व्यक्ति को देवी जी की बूआ ने बुलाकर बैठा रखा है और भोजन का सब मजा किरकिरा कर दिया है।"

सिह हस पडा और पूछने लगा, "तो यह कारण था कि आप तथा आपकी माता जी ने उस समय पूछा भी नही कि मैं कौन हू ?"

"माता जी की बात तो मै जानता नही। अपने मन की बात ही कह रहा हू। मुझे ज्ञात था कि उस मकान का मालिक केन्द्रीय सचिवालय मे एक क्लर्क है। मै आपको वही समझा था।"

"और मैं समझता हू कि मुझे ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि आप इतने सरल चित्त युवक है। यदि आप कुछ अधिक चतुर होते तो कदाचित मेरी पत्नी के आप पति होते और मुझे सुधा जी के पिताजी की मिन्नत-समाजत करनी पडती। उस समय उनका प्रस्ताव भी मेरे सम्मुख था।"

"परन्तु मुझे पता चला है कि सुधा जी के पिता ने आपको 'रिजैक्ट' कर दिया था।"

"हा। इसीलिए कहता हू कि मुझे उनकी मिन्नत-समाजत करनी पडती। वह मेरा निर्वाचन नम्बर दो था।"

"और मेरा वह निर्वाचन नम्बर 'वन' था।"

"तब तो आपको भी अपनी सरलता का धन्यवाद करना चाहिए। कही आपकी बुद्धि अधिक तीव्र होती तो सब कुछ उलट-पुलट हो जाता।"

सेठी दोनो की नोक-झोक को सुन रस ले रहा था। एकाएक शिव ने बात बदल दी। उसने कहा, "आपकी ससद ने हम कारखानेदारो का नाक

मे दम कर रखा है।"

"क्या कष्ट हो रहा है आपको ?"

"महीनेमे प्राय पच्चीस काम करने के दिन होते हे और फैक्टरियो के तीस इन्स्पेक्टर है। सबके काम भिन्न-भिन्न होते है। प्रत्येक महीने मे एक बार 'इन्स्पैक्शन' और किसी-किसी दिन तो दो-दो और तीन-तीन आ धमकते है। प्रत्येक की खातिरदारी करनी पडती है।"

"और इस खातिरदारी मे कितना कुछ व्यय करना पडता है ?"

"प्रत्येक को काफी, मिठाई, केक, पेस्टरी तो खिलाने-पिलाने ही पडते है। साथ ही एक सौ रुपये का नोट सदा उनके आने के कष्ट का प्रतिकार होता है। यदि कभी कोई दोप पकडा गया तो उस दोप के छोटे बडा होने के अनुसार भेंट-पूजा पृथक होती है।

"और यह सब कुछ लिखत-पढत के बिना होता है। परिणामस्वरूप हमे भी लिखत-पढत के बिना धन कही से बटोरना पडता है। अन्यथा तीन-चार हजार रुपया महीना तो मालिक अपनी 'पाकेट' से दे नही सकता।"

"मै समझता हू कि इसमे दोप आप लोगो का है।"

"किनका ?"

"उन सबका जिनके पास कुछ रुपया और बुद्धि है।"

इस पर वीरेन्द्र ने कह दिया, "कमलेश जी। आप गधो के सिर पर सीग की आशा कर रहे है।"

मिस्टर सिंह ने हसते हुए कहा, "देखिए शिव जी। आपका 'चैम्बर' है। आप यह जानते है कि सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था अपने हाथ मे ले रखी है। इस कारण यह आपका कर्त्तव्य नही कि आप अधिक और अधिक सख्या मे ससद मे पहुचे और सरकार को सन्मार्ग दिखाने का यत्न करे।"

"हम कारखाना चलाए अथवा राजनीति मे भाग-दौड करे ?"

"आप कितने भाई है ?"

"मेरा एक छोटा भाई है"

"क्या आयु है ?"

"इस समय इक्कीस वर्ष का है।"

"तो आप कारखाना चलाइए और उसे राजनीति मे भाग लेने के लिए छोड दीजिए।"

"कोई भी दल उसे अपना टिकट नही देगा।"

"क्यो ? उसमे क्या खराबी है ?"

"सबसे बडी खराबी यही है कि वह एक कारखानेदार का पुत्र है।"

"तो यह बदनामी क्यो है !"

"कारखानेदारो के विरुद्ध मिथ्या आरोप लगाए जाते हैं।"

"यह मै जानता हू, परन्तु इन मिथ्या आरोपो का प्रतिकार है। बताइए, फरीदाबाद मे कितने कारखाने है ?"

"दो सौ के लगभग है।"

"आप अपनी सफाई मे कोई समाचार-पत्र निकालते है ?"

"तो क्या पहले देश मे समाचार-पत्र कम है ?"

"आप उनमे से ही किसी को खरीद सकते है। दो सौ कारखानेदारो को दस-बीस लाख रुपया वर्ष मे इस काम के लिए निकालना सहज ही है। आप कह रहे है कि आप वर्ष मे लगभग छत्तीस हजार रुपया इस्पैक्टरो की भेट चढाते हे। इससे आधा भी वर्ष मे अपने विषय मे सत्य प्रचार करने मे व्यय करे और फिर सब मिलकर करे तो एक बार तो आप हरियाणा राज्य का मुख मोड सकते है।

"देखिए, मै बताता हू कि आपके विषय मे ससद मे क्या विख्यात है ? भारत के कारखानेदार चोरो और ठगो का एक मजमा है। सब स्वार्थी और एक-दूसरे की चुगली करने वाले है।"

शिव कुमार स्वय अपने साथियो के इस स्वभाव को जानता था। वह इसका कोई उत्तर नही दे सका।

सिह ने कह दिया, "मै आपको बताता हू। मैं जमीदार का बेटा हू जिसकी जमीदारी सरकार ने ले ली है और जो कुछ उसका प्रतिकार मिलने वाला था, वह मिला नही।

"परन्तु मेरे पिता जी इस बात की आशका सन् १९३६ से ही करने लगे थे। वह कहा करते थे कि जब देश का राजा अथवा नेता जनता को

प्रसन्न रखना अपना प्रथम कर्तव्य मान ले उस दिन देश पर मुसीबत की घटाए मण्डराने लगती है।

"पिता जी ने इसका प्रबन्ध तबसे ही आरम्भ कर लिया था। उन्होने इसका प्रबन्ध किया और उसका परिणाम यह है कि मै अपना पूर्ण जीवन राजनीति मे लगाने के लिए समर्थ हू। वह बिना अपने लोगो के अथवा सरकार के पास बेचने के।

"आज भी मैं एक मीटिंग मे से आ रहा हू और मैने वहा लोगो को यह कहा है कि देश को नेताओ के हाथ मे दे दो। जो दलो और जनता की मिन्नत-समाजत कर ससद मे आते है, वे नेता नही, दास होते है। या तो किसी दल के अथवा अनपढ जडवत् प्रजा के। उनसे देश की जटिल समस्याओ के सुझाव की आशा करनी बबूल से आम की आशा करनी है।"

"तो आप उच्छृखल व्यक्तियो को ससद सदस्य बना देखना चाहते है?"

"उच्छृखल नही स्वतन्त्र, परन्तु योग्य व्यक्तियो को। प्रत्याशी अपने-अपने गुणो के आधार पर मैदान मे आये। बिना सरकारी अथवा किसी राजनीतिक दल के आश्रय के।"

"तो आप राजनीतिक दल भी नही चाहते?"

"मै राजनीतिक दलो को 'बैन' कर देना चाहता हू। भारत मे तो इन दलो ने ऐसी धाधली मचायी है कि प्रजातन्त्र से ही कानो पर हाथ रखना पड रहा है। मै तो देख रहा हू कि सामान्य रूप मे सब दल सिद्धान्त से समान मान्यता रखते हैं। इनकी आवश्यकता ही नही।"

"परन्तु स्वतन्त्र दल और जनसघ तो दक्षिण पथी है।"

"इन दलो ने वाम और दक्षिण पथी भी मनमाने ढग पर बना रखे है। आदि सृष्टि से दल तो रहे है, परन्तु इनके अर्थ यह नही जो ये प्रकट कर रहे है। ये दक्षिण और वाम अर्थव्यवस्था मे मानते है। निर्धन वाम पथी है और धनी दक्षिण पथी। यह तो वाम और दक्षिण की मिथ्या कल्पना है।

"दक्षिण पथ का दूसरा नाम दैवी सम्पदा कहा है और वाम पथ का

आसुरी सम्पदा। ये दक्षिण और वाम की कल्पना तो धनी और निर्धन की सीमाओ को काटती हुई जाती है।

"देखिए शिव जी। मेरी कल्पना है कि राजनीतिक दल 'बैन' कर दिए जाए। ससद के लिए प्रत्याशी अपने-अपने गुणो के आश्रय मैदान मे आए और गुणो की परीक्षा दैवी और आसुरी विचार से की जाए।"

"दादा। इससे तो धनियो की बन आएगी।"

"नही। गुणवानो की। धन मनुष्य के अनेक गुणो मे एक है। धन के साथ जब तक अन्य गुण नही होते तब तक धन भी हीन ही रह जाता है।

"धनाभाव एक सीमा तक तो सरकार पूरा कर सकती है। सब प्रत्याशियो के लिए रेल, तार, डाक, हवाई जहाज की एक सीमा तक सुविधाए सरकार नि.शुल्क दे सकती है।"

"तब भी धन बहुत बडी शक्ति है।"

"ईश्वर की आप पर कृपा है। आप आगामी निर्वाचनो मे खडे हो सकते है।"

"पर कौन दल मुझे अपना टिकट देगा ?"

"मेरी भाति निर्दलीय निर्वाचन लडिए।"

"तो आप काग्रेस मे नही है ?"

सिह हस पडा।

इस समय राम ने सूचना दी कि खाने का समय हो गया है।

३

वीरेन्द्र सेठी जब भी सिह से मिलता था, कुछ न कुछ नई बात सीख कर जाता था। उस दिन उसकी कोठी पर भोज के समय सिह ने एक नया विचार उपस्थित किया था। उसने कहा था कि राजनीतिक दल 'बैन' कर देने चाहिए। यह विचार उसके मन लगा था।

खाना खाते समय सेठी ने इसी विचार को आगे चला दिया। उसने पूछ लिया, "कमलेश जी। यदि राजनीतिक दल नही रहेगे तो देश की

राजनीति एक धारा मे न बहकर अनेको छोटी-छोटी नालियो मे विखण्डित नही हो जाएगी ?"

"देखिए सेठी जी । अब तो भारत मे धाराए अनेक है । देश मे दो दर्जन के लगभग धाराए है । दूसरे देशो मे भी दो-तीन धाराए तो रहती है । इन धाराओ के किनारे दल के सिद्धान्त और नीतिया बनाती है । परन्तु मै कहता हू कि दलो मे नेता अपनी नेतागीरी के लिए लडते हुए नीति की धाराओ के किनारे बनाते है । ये किनारे इतनी देश की रक्षा के लिए नही होते जितने कि नेता की नेतागीरी की रक्षा के लिए । जब भी दल का कोई सदस्य किनारे के इधर-उधर करने लगता तो नेता को अपनी नेतागीरी के जाने का भय लग जाता है और वह उस सदस्य को दल का बागी करार दे दल से बाहर निकालने का यत्न करता है ।

'आजकल काग्रेस मे नेतागीरी के लिए बहुत ही तीव्र सघर्ष चल रहा है और यह शीघ्र ही ज्वालामुखी की भाति फटने वाला है ।

"ऐसा न्यूनाधिक सब दलो मे हो रहा है । मै दल के नेताओ को ऊचा करने के लिए स्टूल मात्र मानता हू ।'

"इसके विपरीत मेरी योजना यह है कि प्रत्याशियो को अपने-अपने गुणो के आश्रय यत्न करने दो । जब अधिक गुणवान लोग ससद मे आए तब वे अपने-अपने दल बनाये । वे भी अर्थव्यवस्था अथवा किसी अन्य व्यवस्था के आधार पर नही, वरच दैवी और आसुरी सम्पदा के आधार पर ।"

यह विचार वीरेन्द्र कमलेश कुमार से लेकर आया था और वह इसी पर विचार कर रहा था । उसे गम्भीर विचारोपरान्त यह समझ आया था कि वर्तमान युग की बहुत-सी राजनीतिक समस्याओ का सुझाव इस एक योजना मे है ।

गुणवानो को ससद सदस्य बनना चाहिए और धन रखना एक गुण है ।

वीरेन्द्र जी के घर पर होने वाली साहित्यिको की गोष्ठी मे भी उसने इस प्रश्न को विचार करने के लिए उपस्थित कर दिया ।

इस गोष्ठी मे डा० निरजन चतुर्वेदी अध्यक्ष हुआ करता था । डाक्टर

वीरेन्द्र के विवाह के सपय से इसके सम्पर्क मे आया था। वह सुमन के पिता का मित्र था और जब सुमन कैम्प कालेज मे बी० ए० कर चुकी तो चतुर्वेदी का परिचय वीरेन्द्र से हो गया। उन दिनो वीरेन्द्र उन्नति कर रहा था। वह पजाब विश्वविद्यालय का स्नातक था और दिल्ली मे आकर वह अजमल खा रोड पर एक छोटी-सी दुकान लेकर बिसाती का व्यवसाय करने लगा था।

एक दिन चतुर्वेदी अपने लिए मोजे खरीदने इसकी दुकान पर पहुचा तो वीरेन्द्र के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुआ। इस पर एक घटना हो गई। चतुर्वेदी ने मोजे लिए और वही पहन लिए। वहा से वह एक सभा मे चला गया। वहा से वह लौटा तो उसने कहा, "श्रीमान! यह मोजे तो छोटे थे और मै समझता हू कि फट गए है।"

"नही जी। ये फट नही सकते। नाईलॉन के मोजे फटते नही।"

चतुर्वेदी वही दुकान पर रखी कुर्सी पर बैठ गया और जूता उतार मोजे उतार दिखाने लगा।

एडी पर से वह उधड गया था। वीरेन्द्र ने दूसरा मोजा भी उतरवा लिया और नये कुछ ऊचे नम्बर के निकाल पहना दिए।

"अब उनका क्या करेगे ?"

"उसे मरम्मत करवाकर स्वय पहन लूगा।"

"यह बिक नही सकेगे क्या ?"

"अपनी दुकान पर पहनी हुई वस्तु पुन बेची नही जाती।"

"तो इसका दाम ?" चतुर्वेदी ने नये मोजो की ओर सकेत कर पूछ लिया।

"कुछ नही। आपको पुन यहा आने का कष्ट हुआ, इसके लिए क्षमा चाहता हू।"

डाक्टर उस समय तो चला गया, परन्तु विचार करता रहा कि यदि ठीक कहता है कि वह मोजे बेचे नही जायेगे तो साढे चार रुपये की चपत इसे लगी है।

वह एक दिन पुन वीरेन्द्र की दुकान पर पहुचा। उसे समझ आया कि दुकान पहले से उन्नत हो चुकी है। कुछ महीने उपरान्त वह फिर किसी

काम से वहा गया तो और भी सुधार मिला। इस बार उसने पूछा, "दुकान खूब चलती प्रतीत होती है ?"

"यह सब आप लोगो की कृपा है। मै तो सदा सेवा-भाव से कार्य करता रहता हू ।"

"कितनी पूजी पर दुकान निकाली थी ?"

"पाच सहस्र पगडी पर दुकान ली थी। लगभग इतना ही रुपया इसमे लगाया था। मेरा यही प्रयत्न रहता है कि ग्राहक को प्रसन्न रखू। बस इसी का यह परिणाम है कि पाच वर्ष मे मै उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा हू ।"

"विवाह हो गया है ?"

"जी, अभी नही ।"

"करने की इच्छा नही क्या ?"

"इच्छा तो है, परन्तु अभी भाग्य मे यह बदा प्रतीत नही होता ।"

इसके कुछ दिन उपरान्त सुमन को वीरेन्द्र दिखाया गया और विवाह हो गया। तबसे डाक्टर और वीरेन्द्र मे सम्बन्ध घने हो गए। विवाह के दो वर्ष उपरान्त सुमन के आग्रह पर साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन हुआ और वह पहले डाक्टर चतुर्वेदी के घर पर और पीछे सुमन सेठी के घर पर होने लगी। तब तक सुमन एम० ए० पास कर चुकी थी। इस समय वह लडकियो के कालेज मे प्राध्यापक नियुक्त हो गई और गोष्ठियो मे उपस्थिति और उत्साह बढ गया।

सुमन सस्कृत मे शास्त्री और अग्रेजी भाषा के साहित्य मे एम० ए० थी। इस कारण उसकी बुद्धि एक ही साहित्य पढे हुओ से सदा विलक्षण रहती थी।

गोष्ठिया प्राय महीने के प्रथम मगलवार को सायकाल हुआ करती थी। उस दिन वीरेन्द्र की दुकान बन्द होती थी और वह प्राय गोष्ठी मे उपस्थित होता था।

यह नवम्बर मास का प्रथम सप्ताह था। लोक सभा मे कम्युनिस्ट बढ-चढ कर सरकार के कामो पर आक्षेप कर रहे थे और ये आक्षेप वीरेन्द्र के घर पर होने वाली गोष्ठियो मे चर्चा का विषय बना हुआ था। इस

दिन वीरेन्द्र ने भारत की राजनीति मे दल बन्दियो पर चर्चा आरम्भ कर दी। उसने कहा, "लोक सभा के एक निर्दलीय सदस्य ने अपने निर्दलीय होने की महिमा गान करते हुए कहा है कि लोकतन्त्रीय राजनीति मे राजनीतिक दल विद्वान व्यक्तियो के ऊपर आने मे बाधक होते है।"

चतुर्वेदी का प्रश्न था, "क्या युक्ति दी है उसने अपने कथन मे ?"

"वह कहता है कि दल राजनीति मे धाराओ के किनारे बनाते है। मजबूत दल के किनारे भी मजबूत होते है। धारा किनारो से बाहर नही बह सकती। इस प्रकार दल सदस्यो के स्वतन्त्र विचार पर बाधक हो जाते है।

"उसने यह भी कहा है कि दलो का टिकट देते समय सदस्य की योग्यता का इतना ध्यान नही रखा जाता जितना कि उसका अनपढ जनता को अपने पीछे लगा लेने की योग्यता ही उसको टिकट मिलने मे मुख्य कारण होती है।

"सदस्य भी दल से बाधे गए किनारो के भीतर रह कर अपने विचार जनता के सम्मुख और लोक सभा मे सदन मे प्रस्तुत कर सकता है।

"इन सब बातो का परिणाम यह होता है कि देश के विषयो को समझने और समझाने की ओर इतना ध्यान नही दिया जाता जितना कि दल की नीति और विचार उपस्थित कर उसकी उपयोगिता प्रकट करने मे। सदस्य की व्यक्तिगत प्रतिभा, योग्यता और सूझ-बूझ से न तो देश को लाभ होता है और न ही सरकार को।"

चतुर्वेदी ने कह दिया, "इससे तो लोक सभा भानुमति का पिटारा हो जाएगी। यह चिडियाघर हो जाएगा जिसमे भाति-भाति के पक्षी अपनी बोलिया बोलेगे।"

अब वीरेन्द्र ने अपने विचार बताने आरम्भ किए। उसने कहा, "यह उपमा उपयुक्त नही। कारण यह कि चिडियाघर मे भिन्न-भिन्न जाति के पक्षी जमा होते है। लोक सभा मे केवल मनुष्य जाति के लोग ही इकट्ठे होते है। साथ ही लोक सभा की एक भाषा है जिसमे प्राय सदस्य बात करते है। जो कोई किसी दूसरी भाषा मे बात करते भी है तो उसका अनुवाद सदस्यो को मिल जाता है। चिडियाघर मे ऐसी कोई बात नही होती।

"दलो को राजनीति मे 'बैन' कर देने से राजनीति एक ही धारा मे बहने लगेगी। जल जब एक धारा मे बहेगा तो देश का कल्याण होगा। दलो ने राजनीति मे मजहब निर्माण कर दिए है और वे अपने-अपने सदस्यो को स्वतन्त्र विचार करने की स्वीकृति नही देते।

"डाक्टर साहब। एक बात और है। जब कोई प्रत्याशी निर्वाचनो मे जनता के सम्पर्क मे आता है वह अपनी व्यक्तिगत योग्यता का प्रदर्शन नही कर सकता। वह दल की ही सामूहिक विचार विधा को बता सकता है। अत जनता किसी प्रत्याशी के गुण-अवगुणो का विचार न कर दल के सिद्धान्तो और नीतियो पर ही विचार करती है। प्रत्याशी की अपनी योग्यता, ज्ञान, प्रतिभा और सूझ-बूझ गौण हो जाती है और दल की नीतिया मुख्य हो जाती है। दल अपनी सफलता के लिए अपनी नीतियो को जनता के अनुकूल बनाने मे लगा रहता है।

"परिणामस्वरूप दल एतदर्थ देश की राजनीति जनता की मति के पीछे भाग खडी होती है। जनता की मति उस दल के अनुकूल हो जाती है जिसके पास प्रचार के साधन अधिक हो। स्वाभाविक रूप में यह सरकार होगी।"

"इस पर भी सरकारे टूटती है और विपक्षियो को सरकारे बनाने का अवसर मिलता रहता है।"

वीरेन्द्र ने इस विषय पर विचार किया था। उसने अपना विचारित मत बता दिया, "यह सब होना है जब विपक्षी दल उस मूर्खतापूर्ण नीति को जो सरकार चला रही होती है, अधिक कुशलता से चलाने की योग्यता प्रकट करता है।

"भारत इसका एक ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित कर रहा है। सरकार ने और उससे पूर्व काग्रेस ने समाजवाद का एक समाघोष चलाया है। सरकारी साधनो से यह समाघोष जनता के मस्तिष्क मे दृढता से बैठ गया है। देश के प्रायः सब दल समाजवादी हो गए हैं और सब एक दूसरे से इस विषय मे प्रतिस्पर्धा करने लगे है कि उनके कहे ढग से समाजवाद अधिक सुगमता और सफलता से लाया जा सकेगा। समाजवाद का विरोध जनसघ से लेकर नक्सलवादियो तक सब कोई नही कर सकता। सब इसके

लाने मे अपने उपाय को श्रेष्ठ बताने मे लगे है।

"सब दल अपनी सफलता के लिए कम से कम विरोध वाला मार्ग स्वीकार करते हुए सरकार का ही समर्थन करने लगते है।

"यही बात शिक्षा की है। सरकार और काग्रेस ने शिक्षा का उद्देश्य यह बनाया है कि जिससे छात्र समाजवादी समाज मे फिट बैठ सके।

"सब दल इस उद्देश्य पर विचार करने के स्थान यह अधिक सुगम समझते है कि वह शिक्षा को समाजवादी छात्र बनाने के अधिक कारगर उपाय जनता के सामने रखे।

'इस प्रकार दलो के कारण जाति के विचार प्रवहण अबाध न होकर सीमित हो जाते है। यह मानव कल्याण मे बाधक बन जाते है।

"विचारक व्यक्तिगत रूप मे जाति के लक्ष्यो मे नए उद्देश्य और नए क्षितिज उपस्थित करते है, परन्तु दल अपने अस्तित्व को स्थिर रखने के लिए सब काय-कायकर उस व्यक्ति का विरोध करने लगते है। इस कारण मुझे उस निर्दलीय ससद सदस्य की बात मे तथ्य प्रतीत होता है।"

विषय पर एक घण्टा भर तक विचार-विनिमय होता रहा और निश्चय हुआ कि उस ससद सदस्य को गोष्ठी मे आमन्त्रित किया जाए और उसे अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा जाए।

अगले मास कमलेश कुमार को इस गोष्ठी मे आमन्त्रित किया गया और उसने अपने विचार गोष्ठी मे उपस्थित किए तो विचार खर्चे पर घूम गया। निर्धन प्रत्याशी दल के आश्रय सफल होने मे सुविधा रखते है? यह मुख्य आपत्ति थी।

कमलेश सिह का कहना था, "हा। इस आर्थिक सुविधा के लिए प्रत्याशी को दल के समाघोषो और नीतियो की दासता करनी पडती है। यह तो प्रत्याशियो की वेश्या वृत्ति हो जाएगी।"

"तो लाखो मतदाताओ वाले निर्वाचन क्षेत्र मे निर्वाचन कैसे लडा जाएगा?"

"सब प्रत्याशियो को सरकारी सेवाये नि शुल्क मिल जाये तो इस दिशा मे प्रत्याशियो को समान रूप मे सहायता मिल जाएगी।" परन्तु प्रजातन्त्रवाद जैसा यूरोप से भारत मे आयात किया गया था उसके प्रवहन

मे सिंह के विचार स्वीकार नही किए जा सके ।

४

सिद्धेश्वरी के घर सुधा इत्यादि के रात के खाने के अवसर पर सुधा और सिद्धेश्वरी मे भी नोक-झोक हुई थी । सुधा का सिद्धेश्वरी के घर आने का परम उद्देश्य तो यही था । वह तो सिद्धेश्वरी के पद चिह्नो पर चल पडी थी और सिद्धेश्वरी अपने पथ से च्युत हो नारियो के परम्परागत मार्ग पर चलने लगी थी ।

जब सिह और वीरेन्द्र मे राजनीति पर बात हो रही थी तो सुधा और सिद्धेश्वरी नारी जीवन मीमासा पर वार्तालाप कर रही थी । बात सुधा ने ही आरम्भ की थी ।

"कब तक मा बनने वाली हो ?" सुधा का प्रश्न था ।

"मेरी गणना से तो फरवरी का अन्तिम सप्ताह आएगा ।"

"अर्थात् विवाह के उपरान्त प्रथम मिलन मे ही झपट ली गई थी ।"

"कहा नही जा सकता कि यह प्रथम मिलन मे हुआ था अथवा उसके उपरान्त किसी मिलन मे । इतना तो निश्चय ही है कि उन्ही दिनो मे यह बीजारोपण हुआ है । मै विवाह के पहले रजस्वला हुई थी और पीछे नही हुई ।"

"सखी । तुमने वह कहावत सिद्ध कर दी है कि 'थोथा चना बाजे घना ।' जितना हल्ला तुम विवाह के पूर्व सन्तान धारण करने के विरोध मे करा करती थी उतनी ही जल्दी तुम इस कार्य मे लग गई थी ।"

"परन्तु तुम्हारे साथ क्या हुआ ? तुम तो बच्चो के दर्शन के लिए व्याकुल प्रतीत होती थी ।"

"मेरे साहब की यह इच्छा थी कि अभी सन्तान नही चाहिए । पहले दिन वह निरोध और अमेरिकन पिल्स लेकर ही सोने के कमरे मे आए थे और उन्होने मुझे तो गोली खिला दी तथा स्वय निरोध का प्रयोग करने लगे थे ।

थी ?'

"इसी कारण तो तुम्हारे जीजाजी निरोध का प्रयोग करते है ।'

"देखो सुधा । उन्होने बलि नही मागी । मैं तो स्वय देवता के सम्मुख मूण्ड कटवाने के लिए जा पहुची थी । इससे उनको किस मुख से कहती कि वह सावधानी से रहे । यह तो मुझे करना चाहिए था ।

"मुझे कोई दिन ऐसा स्मरण नही जब उन्होने बलि मागी हो । यह तो मै स्वत बलि का बकरा बनने के लिए उनके सम्मुख जा बलि बनी थी । जबसे यह निश्चय हुआ है कि सन्तान बन रही है, मै जान-बूझकर उनके सामने नही गई और उन्होने कभी झगडा नही किया । इसे पाच मास हो चुके है ।"

"तो इन दिनो उनकी सगत के लिए तुम्हारा चित्त नही करता ?"

"करता तो है, परन्तु यह अब उतनी विवशता अनुभव नही करता जितना कि पहले करता था । तनिक विचार करने पर मान जाता है । कभी रात के समय उनके पास जाती भी हू तो भीतर से मन ही मना करने लगता है और उन्होने कभी मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहन नही दिया ।"

"कुछ भी हो ।" सुधा ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "जो तुम कहा करती थी, वह हम करके दिखा रहे है ।"

"मेरे व्यवहार मे बहन सुमन की एक युक्ति ने विलक्षण प्रेरणा दी है । वह कहती थी कि विज्ञान मे उन्नति प्रकृति का विरोध करने के लिए नही की गई, वरच उसके प्रभाव से बचने के लिए की गई है ।

"बहनजी का कहना था कि निरोध इत्यादि का प्रयोग तो जलते बर्नर के मुख को बन्द करना है । यह प्रकृति का विरोध है । इसका परिणाम वह ही होगा जो बर्नर का मुख बन्द करने से होता है । अर्थात् स्टोव फट जाएगा । तब वह टूक-टूक हो जाएगा ।"

सुधा इसका अभिप्राय समझती थी । उसने अपना एक अनुभव बता दिया । उसने कहा, "तीन महीने की बात है कि एक दिन मै गोलियो का प्रयोग नही कर सकी थी । उस मास रजस्वला होने मे देर हो गई । मैंने तुम्हारे जीजा से कहा तो उन्होने मुझे रम पिला दी । रजस्वला तो हो गई,

परन्तु 'पीरियड' दो सप्ताह तक जारी रहा। मैं दुर्बल हो गई थी।"

"कदाचित् सुमन बहन का यही अभिप्राय था।"

इससे उसके शरीर मे कपकपी हो गई और यह कपकपी सिद्धेश्वरी ने भी देखी थी। उसने कह दिया, "सुधा बहन। अब इसे बन्द कर दो। सयम से रहना सीखो।"

"मै तो उक्त घटना के उपरान्त बहुत ही बचकर रहती हू, परन्तु उनको मना नही कर सकती। वह बहुत ही मजेदार व्यक्ति है। ऐसी बाते करते है कि बरबस मै उनके वश मे चली जाती हू।"

"मेरी सास मुझे बता रही थी कि भगवद् गीता मे लिखा है कि वर्तमान युग के वैज्ञानिक अपने ज्ञान के बल पर मनुष्यो के सम्मुख बहुत प्रलोभन उपस्थित करते रहते है और कहते रहते है कि जन्म से पहले कुछ नही था और मरने के उपरान्त कुछ नही रहेगा। अत इस छोटे से जीवन मे अधिक से अधिक जीवन का रस ले ले।

"ऐसे लोग स्वय नरक मे जाते है और दूसरो को भी अपने साथ घसीट कर नरक को ले जाते है।"

सुधा को यह सब अप्रिय लग रहा था। उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "तुम क्या समझती हो कि लडका होगा अथवा लडकी ?"

"मैं कैसे बता सकती हू। मुझे बन रहा जीव तो दिखाई देता नही। हा, मेरी सास ने एक ज्योतिषी को मेरा हाथ दिखाया था। मेरी जन्म-पत्री तो है नही। इस कारण हाथ के छापे से ज्योतिषी ने कहा है कि यदि मै हत्यारे का कार्य नही करूगी तो मेरे पाच बच्चे होगे। जिनमे से तीन लडके और दो लडकिया होगी। यह लडका होगा। ऐसा उसका कहना है।"

"तब तो बहुत बडी दावत होगी।"

"मेरी सास तो कहती है कि तेरह दिन तक घर मे दीपावली करेगी।" उन दिनो नित्य एक सौ ब्राह्मण भोजन करते रहेगे और तेरहवे दिन एक सहस्र का 'ग्रैण्ड रिसैप्शन' करेगी।"

"तब तो हमारा नम्बर आ ही जाएगा।"

"मै समझती हू कि तुम पति-पत्नी तो प्रथम सौ मे ही होगे।"

उस दिन यह लम्बा वार्त्तालाप दोनो सखिया धीरे-धीरे मेज़ के एक

कोने पर बैठी कानाफूसी मे कर रही थी।

भोजन समाप्त हुआ तो सब विदा हो गए। सुधा और शिव सबसे पहले गए।

रात को सोने के कमरे मे सिह ने पूछ लिया, "सखी से बहुत मीठी-मीठी बाते हो रही थी ?"

"जी।"

'क्या कह रही थी ?"

"मुझसे मेरे आपके साथ सम्बन्धो के विषय मे पूछ रही थी और अपने पति से सम्बन्धो के विषय मे अन्तर बता रही थी।"

"और दोनो मे आकाश-पाताल का अन्तर है न ?"

सिद्धेश्वरी विस्मय मे पति का मुख देखती रह गई। इस पर सिंह ने कह दिया, "इसमे विस्मय की क्या बात है ? उसका मुख मलिन हो रहा था और उसके समीप ही तुम्हारा मुख चाद की भाति सौम्य, उज्जवल और मनोहर प्रतीत हो रहा था।"

"तो आप हमारे मुखो को देख रहे थे ?"

"जब दोनो मुख बहुत ही समीप-समीप हो फुसफुसाहट मे बाते करने लगे तो एक ही नजर मे दोनो दिखाई देने लगे थे और फिर उनमे तुलना स्वयमेव हो रही थी।"

"मुझे भी ऐसा ही प्रतीत हुआ है। उसने इसका कारण भी बताया है। वह एक गर्भपात कर चुकी प्रतीत होती है।"

"तो तुमने उसे मना नही किया ?"

"स्पष्ट शब्दो मे मना नही किया, परन्तु गर्भकाल मे आपके व्यवहार की प्रशसा अवश्य की है।"

"परन्तु मैं समझता हू कि इस प्रकार वर्णन से वह कुछ नही समझी होगी।"

"मेरा विचार है कि वह समझ तो गई है, परन्तु वह अपने पति के 'हिप्नोटिज्म' (सम्मोहन) मे फसी हुई उसकी अगुलियो पर नाच रही है।"

"परिणाम भयकर होगा। कारण यह कि उसका पति कुछ अधिक

समझदार व्यक्ति नही । वैसे तो तुम मेरे सम्मोहन मे ग्रसित प्रतीत होती हो, परन्तु मैने अपने को घोर तपस्या से ऐसा सयम कर रखा है कि मैं अपने प्रत्येक व्यवहार मे तुम्हारे कल्याण का चिन्तन करता रहता हू ।"

"तो गर्भ के लक्षण प्रकट होने से पूर्व भी आप मेरे कल्याण की बात विचार करते थे ?"

"तो क्या इसमे देवी को सन्देह है ?"

"मै विस्मय करती हू कि प्रत्येक बार जब मैं आपकी सगत के लिए आती थी तो आप मेरी तृप्ति करते थे । क्या वह सदा मेरे कल्याण के लिए ही होती थी ?"

"निस्सन्देह । उस समय तुम्हारी प्रकृति पति की कामना की पुकार करती थी । मै उस पुकार को सुन उसका प्रतिकार ही देता था । उस समय प्रकृति को स्वच्छन्द विचरने की स्वीकृति देना ही मैं तुम्हारे कल्याण की बात समझता था ।"

सिद्धेश्वरी विस्मय मे मुह देखती रह गई । सिंह ने कहना जारी रखा, "उस समय के व्यवहार का परिणाम ही है कि तुम इस समय भी अतृप्त नही हो और इस अवसर पर सयम उसी तृप्ति का परिणाम है ।"

सिंह पत्नी को छाती से लगा उसके मुख को थपथपा रहा था । एकाएक सिद्धेश्वरी धीरे-धीरे अपने को पति की बाहो से निकाल अपने पलग पर सोने के लिए जाते हुए कहने लगी, "अब सो जाना चाहिए । अन्यथा प्रात चार बजे तक नीद पूरी नही कर सकूगी ।"

सिंह हस पडा और मुख मोड सो गया ।

५

उसी रात फरीदाबाद जाते हुए मार्ग मे ही सुधा अपने पति से पूछने लगी, "सिद्धेश्वरी कैसी दिखाई दी है ?"

शिवकुमार स्वय गाडी चला रहा था और गाडी मे दोनो अकेले थे । शिवकुमार को पत्नी के प्रश्न पर विस्मय हुआ । उसने पत्नी का मुख देखते

हुए पूछ लिया, "किसलिए पूछ रही हो ?"

"मुझे वह विवाह से पूर्व आज अधिक स्वस्थ और सुन्दर प्रतीत हुई है।"

"हा। स्वस्थ तो है, परन्तु सुन्दर नही कह सकता। सुन्दर तो तुम उससे अधिक पहले भी थी और अब भी हो।"

"आप तो मेरी झूठी प्रशसा कर रहे हे। मैं तो अपने मे बहुत अन्तर अनुभव करती हू।"

"क्या अनुभव करती हो ?"

"कह नही सकती। इस पर भी भोजन के उपरान्त मै बाथरूम मे गई थी और वहा अपना मुख दर्पण मे देख वहा किसी वस्तु का अभाव देख रही थी।"

"बात यह है कि तुम्हे भोजन के साथ ह्विस्की और सोडा का अभ्यास हो गया है। यह वहा मिली नही और तुम्हारे मुख पर स्वाभाविक चुस्ती नही है। कुछ रग भी फीका हो रहा है इस कारण कुछ अन्तर प्रतीत हुआ होगा।"

"हो सकता है। तब तो वह चुस्ती और रग स्वाभाविक नही कहे जा सकते। स्वाभाविक तो उसको कहते है जो बिना किसी बाहरी साधन के विद्यमान हो। शराब से प्राप्त चुस्ती और मुख का रग तो अस्वाभाविक ही कहा जा सकता है।"

"जिस बात को पीने अथवा करने का स्वभाव हो जाए और उसे न किया जाए तो अस्वाभाविक स्थिति ही कही जाएगी।"

"इस बीसवी सदी मे हमने मानव स्वभाव को ही बदल डाला है। हमारा खान-पान, रहन-सहन, बातचीत का ढग ही बदल गया है।"

"हा, यह तो है। उस दिन मेरी छोटी बहन प्रभा आई थी और पूछने लगी, "दीदी। तुम्हारे सोने के कमरे मे दोनो पलग साथ-साथ किसलिए लगे रहते है ?"

"मैंने बात टालने के लिए कह दिया, 'यह फैशन है।'

"परन्तु फैशन भी तो किसी प्रयोजन से होता है।'

"हा।" मैंने बात बदलने के लिए कह दिया, "यह तुम्हे तुम्हारे विवाह

के उपरान्त पता चलेगा ।"

"न जाने कब होगा ?" प्रभा ने माथे पर त्यौरी चढाकर कहा, "वह दहेज मे बीस हजार मागते है और पिताजी कह रहे थे कि इतने का प्रबन्ध तो दो-तीन वर्ष के उपरान्त ही हो सकेगा। वैसे मा कह रही थी कि भूषण-वस्त्र तो सब तैयार है। नकदी का ही अभाव है। पिताजी अपने 'प्रोविडैण्ट फण्ड' से तुम्हारे विवाह पर कुछ ऋण ले चुके है और वह ऋण अभी उतारा नही जा सका।'

"परन्तु तुम्हारे पिता ने वह सब उधार क्यो लिया ? हमने तो कहा था कि विवाह पर इतना कुछ व्यय करने की आवश्यकता नही। तुम्हारी सहेली सिद्धेश्वरी के विवाह पर तो तुम्हे भी निमन्त्रण नही था। सिंह ने तो विवाह के उपलक्ष मे 'रिसैप्शन' भी नही दिया।"

"सिद्धेश्वरी ने कहा है कि तब की कसर उसके पति लडका होने पर निकाल देगे।"

"पर यदि लडकी हो गई तो ?"

"कहती थी कि उसकी सास ने एक ज्योतिषी से पूछा है। उसने बताया है कि लडका होगा।"

शिवकुमार खिल-खिलाकर हस पडा और बोला, "ज्योतिषी पेट मे जाकर पता कर आया है न ?"

सुधा भी हस पडी।

शिव ने कहा, "तुम अपनी बहन का कल्याण कर दो।"

"क्या कर दू ?'

"पिताजी को अपने पास से बीस हजार ऋण दे दो। तुम्हारे पास इतना कुछ बैक मे होना चाहिए।"

"बीस से कुछ कम है।"

"तो कमी को मैं तुम्हे कुछ अग्रिम देकर पूरी कर सकता हू।"

"परन्तु मुझसे पिताजी ऋण लेगे नही।"

"तो तुम बहन को 'गिफ्ट' कर दो।"

"परन्तु आपके पिताजी को पता चला तो नाराज़ भी हो सकते है।"

"पता क्यो चलेगा ?"

"आप ही तो सब बाते उनको बताते रहते है।"

"यह नही बताऊगा। और यदि मुझे यह विदित होता कि प्रभा विवाह के लिए व्याकुल हो रही है तो मै उसका उसी दिन कल्याण कर देता।"

"कैसे कल्याण कर देते ?"

"जैसे तुम्हारा विवाह से पूर्व ही कर दिया था।"

"बहुत बुरे आदमी है आप। वह तो आपकी बहन लगती हे।"

"बहन तुम्हारी है। मेरी तो साली है।"

सुधा चुप कर गई।

वह विचार करने लगी थी कि उसके पति और सिद्धेश्वरी के पति मे कितना अन्तर है। जो कुछ सिद्धेश्वरी ने उसे विवाह की रात की बात बताई थी, यदि वह सत्य है तो उसकी सुहागरात से सर्वथा विलक्षण थी।

वह मौन हो गई और फरीदाबाद पहुचने तक बातो मे अरुचि अनुभव करती रही। उसका मार्ग मे बात आरम्भ करने का उद्देश्य यह था कि वह अपने जीवन को अब स्वाभाविक बनाने का कार्यक्रम बनाना चाहती थी, परन्तु बाते ऐसी दिशा मे चल पडी थी कि उसके ससुराल के वातावरण मे भी उच्छृखल लगने लगी। वहा भी उसकी कुमारी ननद थी। उससे भी वह कभी इस प्रकार की बाते नही कर सकती थी जैसी कि शिवकुमार ने उसकी बहन के विषय मे कही थी।

घर पहुचकर उसके पति ने सोडा और ह्विस्की अलमारी से निकाल सामने रख दी और कहा, "इसे ले लो। सब गम गलत हो जाएगा।"

"मुझे गम नही है।"

"तुम चुप जो कर गई हो। मै समझता हू कि प्रभा के विषय मे मेरे मुख से कुछ निकल गया है और तुमको दुख अनुभव हुआ है।"

"छोडिए इस बात को। मै यह विचार कर रही हू कि अब मद्य का सेवन बन्द कर दू।"

"और जीवन को शोक सभा बना लू ?"

"शोक सभा कैसे ?"

"तब हमारा समागम कम होने लगेगा।"

"यही तो चाहती हू ।"

"अर्थात तुम्हारे जीते जी रडवो का सा जीवन व्यतीत करने लगू ।"

"सिद्धेश्वरी कहती थी कि जिस दिन से उसे पता चला है कि वह गर्भ धारण कर चुकी है, वह अपने पति से पृथक रहती है और मैं समझी हू कि इसी कारण उसके मुख पर चमक और ओज दिखाई देता है ।"

"मुझे वह जीवन पसन्द नही है ।"

"तो ।" सुधा कहने वाली थी कि वह एक अन्य विवाह कर सकता है, परन्तु इस समय किसी ने शयनागार का द्वार खटखटाया। शिव ने आवाज दी, "कौन ?"

बाहर से उसकी बहन राज की आवाज आई, "भैया, जल्दी आओ । पिताजी सख्त बीमार है ।"

शिवकुमार लपक कर उठा और द्वार खोल बाहर चला गया । सुधा भी पति के पीछे-पीछे चली गई ।

लक्ष्मीचन्द को हृदय स्थल मे पीडा हो रही थी और वह अचेतनता अनुभव कर रहा था । शिवकुमार की मा वहा स्थानीय डाक्टर को टेली-फोन कर रही थी । शिवकुमार अपने पिता के शयनागार मे चला गया । सुधा अपनी सास के पास खडी हो उसकी डाक्टर से बातचीत सुनने लगी ।

सुहागवन्ती बता रही थी, "भोजनोपरान्त वह सब प्रकार से ठीक थे। आज नित्य से वे अधिक प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे । एकाएक वह कहने लगे कि उनकी छाती मे पीडा हो रही है । वह पीडा उत्तरोत्तर बढ रही है और अब तो वह कुछ अचेत प्रतीत होने लगे है ।"

इस पर डाक्टर ने कुछ कहा। वह सुन सुहागवन्ती ने कह दिया, "डाक्टर साहब । जल्दी करिए । मुझे तो ऐसा अनुभव हो रहा है कि कही आपका आना देर से ही न हो जाए ।"

इतना कह उसने चोगा टेलीफोन पर रख दिया और पति के शयना-गार की ओर भागी । सुधा उसके पीछे-पीछे थी ।

लक्ष्मीचन्द अर्धचेतना की अवस्था मे लेटा हुआ था और सास लेने मे कठिनाई अनुभव कर रहा था ।

शिव और उसका छोटा भाई मोहन पिताजी के पलग के पास खडे थे ।

परन्तु नही जानते थे कि क्या करे ?

शिव की बहन निर्मला का विवाह हो चुका था। वह पिताजी की अवस्था बिगड रही देख सोने के कमरे से बाहर चली गई। वह अपने ससुराल वालो को टेलीफोन करने गई थी। उसकी ससुराल दिल्ली मे थी।

शिवकुमार के आने के उपरान्त उसके पिता ने दो बार कुछ कहने का यत्न किया था। परन्तु सास फूलने के कारण वह कुछ कह नही सका। साथ ही वह अचेत हो रहा था।

डाक्टर के आने तक लक्ष्मीचन्द सर्वथा अचेत हो चुका था। अब तो उसका सास भी कम हो रहा था। डाक्टर ने अवस्था बिगडती देखी तो अपने बक्से मे से सिरैंज निकालकर इन्जैक्शन की तैयारी करने लगा।

सुहागवन्ती ने डाक्टर का ध्यान अपने पति की ओर आकर्षित करते हुए कहा, "डाक्टर। देखिए, क्या हो रहा है ?"

डाक्टर ने उत्तर नही दिया। उसने इजैक्शन लगा दिया और उसकी प्रतिक्रिया देखने लगा। इस समय कोठी के बाहर हस्पताल से ऑक्सीजन का सिलिडर लेकर गाडी आ गई।

अविलम्ब ऑक्सीजन लगा दी गई। डाक्टर इतना कुछ कर अपना बैग बन्द कर कमरे से बाहर निकल गया। शिवकुमार उसके साथ था। डाक्टर ने कमरे से निकलने हुए कह दिया, "लालाजी का स्वर्गवास हो चुका है।"

"तो ऑक्सीजन किसलिए लगाई है ?"

"मैने समझा कि यह भी कर दिया जाए। वास्तव मे आपका समाचार देर से आया था। मैं तो टेलीफोन आने के दस मिनट मे ही यहा पहुच गया था और उस समय नक काम तमाम हो चुका था। जब इन्जैक्शन का भी कुछ प्रभाव नही हुआ तो स्थिति स्पष्ट थी। ऑक्सीजन तो जब आई है तो मैंने प्रयोग करनी भी उचित ही समझी है।"

डाक्टर कोठी के बाहर निकल गया। शिवकुमार उसके साथ-साथ था। डाक्टर अपनी मोटरगाडी मे सवार होते हुए बोला, "मै अपना बिल पीछे भेज दूगा।"

शिवकुमार को यह कुछ अनुचित प्रतीत हुआ। इस पर भी वह चुप

रहा। जब वह कमरे मे पहुचा तो परिवार के सब लोग और नौकर-नौक-रानिया सब कमरे मे लक्ष्मीचन्द के पलग के चारो ओर खडे थे। शिव-कुमार की माता जी की आखे आसुओ से भर रही थी। सुधा अब तक अपनी सास के पास खडी थी। निर्मला अभी भी टेलीफोन पर बाते कर रही थी।

सुहागवन्ती ने सुधा को कहा, "निर्मला को यहा बुला लाओ।"

सुधा अपने श्वसुर के कार्यालय मे चली गई। निर्मला टेलीफोन पर बताती-बताती सुधा को देख चुप कर गई। कुछ क्षण तक ठहर उसने कहा, "माताजी। भाभी बुलाने आई है और मैं जा रही हू।"

इतना कह उसने टेलीफोन बन्द कर दिया।

"कौन था ?" सुधा ने पूछ लिया।

"माताजी को मैने टेलीफोन किया था कि उनमे से किसी को तुरन्त आ जाना चाहिए।"

"पिताजी का देहान्त हो गया है।"

"मुझे विदित है। वह मूर्ख डाक्टर तो मृत शव को इन्जैक्शन लगा रहा था।"

सुधा ननद का मुख देखती रह गई। दोनो कमरे से निकली तो निर्मला ने कार्यालय का द्वार बन्द कर बाहर से चिटकनी लगा दी और वह भागी हुई अपने कमरे मे गई और वहा से एक ताला ला कार्यालय को लगा दिया।

"यह क्या है ?" सुधा निर्मला को अपने कमरे की ओर लम्बे-लम्बे पग उठा जाते देख वहा ही खडी हो गई थी। जब निर्मला ताला लगा रही थी तब वह पूछने लगी थी।

"कुछ नही।" निर्मला ने भूमि की ओर देखते हुए कहा, "नौकरो के भय से यह ठीक प्रतीत हुआ है।"

दोनो वहा आ गई जहा शव पडा था। शिवकुमार ने अपनी पत्नी और बहन को आते देखा तो बताने लगा, "डाक्टर कह गया है कि पिताजी का स्वर्गवास हो गया है।"

निर्मला और सुधा को यह बताने की आवश्यकता नही थी। दोनो

पहले ही जानती थी। इस समय सुहागवन्ती ने कह दिया, "शिव, अलमारी से चादर निकाल पिताजी पर डाल दो।"

"और उनको भूमि पर न लिटा दू ?"

"क्या आवश्यकता है ? उनके लिए भूमि और पलग मे अब अन्तर नही रहा।"

शिव ने अलमारी से चादर निकाल शव पर डाल दी और सब लोग कमरे से बाहर ड्राइग रूम मे चले आए। जब सब वहा पहुचे तो सुधा ने देखा कि निर्मला वहा नही है। इस पर उसे सन्देह हो गया कि वह कही अन्यत्र ताला लगाने न रह गई हो। इससे वह खडी-खडी ही वापस पिताजी के शयनागार को चल पडी। निर्मला उधर से ही आती दिखाई दी थी। उसने देखा कि उसकी ननद चाबी अपने ब्लाउज के नीचे अपनी अण्टी मे छुपा रही है।

स्वाभाविक रूप मे सुधा की दृष्टि पिताजी के शयनागार की ओर गई। उसको भी ताला लगा हुआ था। एक बात उसे और समझ मे आई कि यह ताला भी वैसा ही था जैसा कि कार्यालय को लगाया गया था।

निर्मला ने अपनी भाभी की ओर ध्यान नही दिया। वह अपने कमरे मे चली गई। सुधा वहा बरामदे मे ही खडी रह गई। वह देखना चाहती थी कि वह अब और क्या करना चाहती है।

निर्मला अपने कमरे से निकली तो उसके हाथ मे वैसा ही एक ताला और था। सुधा चुपचाप खडी देखती रही कि यह लडकी क्या कर रही है। वह उससे आयु और शिक्षा मे कम थी, परन्तु जिस सतर्कता और दृढ सकल्प से वह सब कुछ कर रही थी, वह एक परिपक्व मस्तिष्क की ही बात प्रतीत होती थी।

निर्मला सास-श्वसुर के कमरे के साथ गोदाम को चली गई। उसका द्वार बन्द कर वहा यह तीसरा ताला लगा आई। सुधा बरामदे मे ही खडी यह देख रही थी।

अब निर्मला ड्राइग रूम की ओर चली तो सुधा ने पूछ लिया, "और कही ताला नही लगाना ?"

निर्मला ने सुधा के मुख पर देखा और मुस्कराते हुए कह दिया, "शेष

सस्कार के उपरान्त होगा ।"

दोनो ड्राइग रूम मे जा पहुची । सुहागवन्ती चुपचाप आसू बहा रही थी और अपने आचल से गालो से आसू पोछ रही थी । शिवकुमार और उसका भाई मोहन माताजी के आस-पास बैठे थे । निर्मला की छोटी बहन राज भी रो रही थी ।

सुधा और निर्मला वहा माताजी के पावो मे भूमि पर बैठ गई । कितनी ही देर तक सब चुपचाप बैठे रहे ।

एकाएक शिव उठा और माताजी से कहने लगा, "मैं अपने ससुराल मे टेलीफोन कर रहा हू । और भी जिस जिसको कहो, सूचना दे दू ।"

"अब रात के समय टेलीफोन करने से लाभ क्या होगा ? व्यर्थ मे सबको कष्ट दोगे ।"

"सुधा के पिताजी को तो बता ही देना चाहिए ।" इतना कह वह ड्राइग रूम के बाहर गया तो सुधा उठकर उसके पीछे चली गई । निर्मला वहा ही बैठी रही ।

चार-पाच मिनट के उपरान्त सुधा आई और निर्मला को सम्बोधन कर बोली, "निर्मला बहन । आपके भाई साहब बुला रहे है ।"

"उनसे कह दो कि टेलीफोन सुबह होगा ।"

"वह कुछ और कह रहे है ।"

"उसके लिए यह समय ठीक नही ।"

सुधा चुपचाप बाहर चली गई । शिव पत्नी की प्रतीक्षा अपने शयनागार मे कर रहा था । सुधा ने वहा पहुच कहा, "वह नही आ रही । कहती है कि इस समय बात ठीक नही ।"

शिव ने पत्नी के आने से पहले मन मे एक योजना बना ली थी । उसने पत्नी को कहा, "तुम माताजी के पास जाकर बैठो । मैं इसका प्रबन्ध करता हू ।"

सुधा ड्राइग रूम मे लौट गई । वहा पहुची तो निर्मला ने पूछा, "भैया नही आए ?"

"वह कुछ सम्बन्धियो और मित्रो को टेलीफोन करना चाहते है । इस कारण वह टेलीफोन एक्सचेज पर गए है ।"

"और अपना टेलीफोन ?" सुहागवन्ती ने पूछा ।

उत्तर निर्मला ने दिया, "वह बिगड रहा है ।"

सुहागवन्ती का इससे समाधान हो गया । इसके उपरान्त सुहागवन्ती उठी और बच्चो से बोली, "तुम सब लोग अब आराम करो । जो होना था वह हो गया । प्रात काल उठकर यहा ही आ जाना । शोक प्रकट करने वाले आने लगेगे । हमको यहा उपस्थित होना चाहिए ।"

सब बच्चे उठकर अपने अपने कमरे मे चले गए । नौकर भी चले गए। इस समय निर्मला ने मा से कह दिया, "माताजी । आप कहा सोएगी ?"

"मै तो यहा ही रहूगी । सुधा, तुम शव वाले कमरे को बन्द कर दो जिससे कोई कुत्ता-बिल्ली वहा न चला जाए ।"

"वह निर्मला बहन ने लगा दिया है ।"

"तब ठीक है । यहा ही थोडा कमर सीधी कर लूगी ।"

निर्मला अपने कमरे मे गई और अपने लिए तथा माताजी के लिए तकिए ले आई । एक सोफे पर माता जी के लिए तकिए रख दिए और दूसरे पर अपने लिए ।

इस पर सुधा अपने सोने के कमरे मे चली गई । वह इस पूर्ण घटना पर विचार कर रही थी और उसे नीद नही आ रही थी ।

६

रात के ढाई बजे शिवकुमार लौटा । सुधा अपने पलग पर गरम चादर ओढे बैठी थी । शिवकुमार ने आते ही पूछा, "तो सोयी नही ?"

"नीद नही आ रही ।"

"थोडा सोडा और··· ··।"

"जी नही । आज इसके लिए भी चित्त नही कर रहा । पीयूंगी तो उलटी हो जाएगी ।"

शिवकुमार ने अपने लिए एक पैग के लगभग गिलास मे डाल ली । साथ थोडा सोडा मिला, एक ही घूट मे निगल गया । गिलास तिपाई पर

रखते हुए बोला, "सब पलट आया हू।"

"क्या पलट आए है?"

"कमरो के ताले बदल आया हू और भीतर से सब हिसाब-किताब की पुस्तके निकाल कारखाने मे पहुचा आया हू। तीन चैक पूर्व तारीखो के लिख आया हू। इस प्रकार सब रुपया निकालने का प्रबन्ध कर आया हू।"

"किसके नाम चैक है?"

"तीनो तुम्हारे नाम है। वह तुम प्रात अपने बैको मे भेज देना। आजकल कारखाने के हिसाब का मै परिचालक हू।"

"परन्तु आपने मुझे बीच मे क्यो घसीट लिया है?"

"तुम मेरी पत्नी जो हो।"

"परन्तु यह बात तो आपके ही विरुद्ध जाएगी।"

"परन्तु अन्य किसी पर विश्वास भी तो नही है।"

सुधा विचार कर रही थी कि उस पर ही विश्वास क्यो है? एक ही माता-पिता की सन्तान तो परस्पर अविश्वास कर ताले लगा रहे है और दूसरे की सन्तान पर विश्वास कर रहे है। उसे निर्मला पर भी विस्मय हुआ। वह अपनी सास के कहने पर अपने भाई से लड रही है।

"क्या यौन सम्बन्ध जन्म-जात सम्बन्धो से भी अधिक विश्वास योग्य है?"

जब मद्य की गर्मी शरीर मे चढी तो शिवकुमार ने पत्नी से पूछ लिया, "माता जी कहा है?"

"ड्राइग रूम मे सो रही है। निर्मला बहन भी वहा ही है।"

"और तुम यहा किसलिए आई हो?"

"मै आपकी चिन्ता कर रही थी।"

"ओह! पर मै तो स्वस्थ चित्त हू। पिताजी के इसी प्रकार के अन्त की मै आशा कर रहा था। परन्तु यह आज ही होना है, नही समझ रहा था।"

दो घण्टा भर विश्राम कर पाच बजे के लगभग शिव और सुधा ड्राइग रूम मे जा पहुचे। निर्मला सो रही थी, परन्तु सुहागवन्ती सोफे पर बैठी

थी। वह पशमीने की चादर ओढे हुए थी।

शिव को आया देख माता ने पूछा, "कुछ नीद आई है ?"

"नीद तो नही आई। हा, अब चित्त स्थिर है।"

"सीताराम को मैंने काफी बनाने के लिए कह दिया है। सुधा को भी अब यहा ही बुला लो।"

"वह बाथ रूम मे गई है।"

इनको बाते करते सुन निर्मला भी जाग पडी और वह अपने सोने के कमरे वाले बाथरूम मे चली गई। शिवकुमार समझ रहा था कि शीघ्र ही झगडा होने वाला है। निर्मला अपने तालो के स्थान दूसरे ताले लगे देखेगी तो अवश्य झगडा करेगी। परन्तु ऐसा कुछ नही हुआ।

उसे विस्मय हुआ जब निर्मला ने उसे कहा, "दादा। अब पिताजी वाला कमरा खोल देना चाहिए। सम्बन्धी आएगे तो पिताजी के दर्शन करने जाएगे।"

शिव ने समझ लिया कि निर्मला बदले हुए ताले देख आई है। उसने अपने तालो की बात नही कही तो शिव ने भी उसके तालो की बात मा के सामने न करते हुए कहा, "ओह। हा, मा। उसे खोल देना चाहिए। और मैं वहा ही बैठू।"

"हा। मैं रामी को कह देती हू कि बगिया मे से बहुत से फूल उतरवा शव के ऊपर डाल दे। हम सब काफी पीकर वहा ही चलकर बैठेगे।"

"परन्तु शव को भी तो भूमि पर लिटा देना चाहिए।"

"ठीक है। करवा दो।"

शिव और निर्मला दोनो शव वाले कमरे मे चले गए। निर्मला ने मार्ग मे ही कह दिया, "रात मैने यहा दूसरा ताला लगाया था। वह कैसे खुल गया ?"

शिव ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "कौन-सा ताला ? कमरा तो खुला था। मैने ताला लगा दिया था।"

निर्मला चुप रही। इस समय सुधा आ गई। उसने अपने पति से मिलकर पिताजी के शव को पलग पर से उठाकर भूमि पर लिटा दिया।

तदनन्तर उन्होने बाहर बरामदे मे भूमि पर ही बैठने को स्थान बनवा लिया।

लगभग आठ बजे निर्मला का पति, सास-श्वसुर आए। सुधा के माता-पिता भी आ गए। आते ही निर्मला के पति ने निर्मला को पृथक ले जाकर पूछा, "ताले लगा दिए है क्या ?"

"लगाए थे, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि भाई साहब ने उन तालों को खुलवाकर अपने ताले लगवा दिए है।"

"और तुमने मना नही किया ?"

"मुझे तो पता ही नही चला कि यह कब और कैसे किए गया है ?"

"भीतर से हिसाब-किताब की किताबे भी तो लापता की जा सकती है।"

"सब कुछ सम्भव है वास्तव मे मुझे ताले लगाते भाभी ने देख लिया था।"

"मैने रात ही वकील साहब से बातचीत की थी। उनका कहना है कि कचहरी मे सब-जज के द्वारा ही कोई कार्यवाही हो सकती है।

"मैं समझता हू कि वकील अभी कागजात तैयार कर लाएगा और तुम्हे उन पर हस्ताक्षर कर देने चाहिए। तब सरकारी ताले लग सकेगे।"

निर्मला मौन रही।

दस बजे तक वकील आया और निर्मला के हस्ताक्षर करवाकर ले गया। उसे गुडगावा मे जाकर चाराजोई करनी थी। मध्याह्नोत्तर तीन बजे तक लाला लक्ष्मी चन्द का सस्कार हुआ। उसी समय सरकारी 'रिसीवर' कारखाने और सम्पत्ति पर बैठ गया।

सुधा ने पति द्वारा दिए चैक अपने खाते मे जमा करवाने के लिए बैंक मे भेज दिए थे और क्योंकि यह 'लोकल एण्टरी' थी; इस कारण रुपये की अदला-बदली 'रिसीवर' बैठने से पहले ही हो गई थी। बहन-भाई मे इस झगड़े की चर्चा तो नगर भर मे फैल गई और जो सुनता था, वह भाई को जली-कटी सुनाता था। सबका यही विचार था कि भाई-बहन का भाग हजम करना चाहता था। इसी कारण बहन ने सरकारी 'रिसीवर' बैठा दिया है।

कारखाने की वर्कशाप के मिस्त्री ने यह रहस्योद्‌घाटन कर दिया कि लाला जी के देहान्त के एक घण्टे के भीतर ही लडका वर्कशाप के दो मिस्त्री ले जाकर ताले तुडवाता रहा है और हिसाब की किताबे उठवा-उठवाकर कही अज्ञात स्थान पर भेजता रहा है।

प्राय सब सुनने वाले शिवकुमार को एक छटा हुआ चोर मानते थे और निर्मला को पीडित गरीब बहन।

दाह-सस्कार के उपरान्त अभी लोग शोक प्रकट करते हुए विदा ही माग रहे थे कि सरकारी 'रिसीवर' पुलिस लेकर आया और सम्पत्ति पर अधिकार करने लगा था।

यह तो एक सप्ताह उपरान्त पता चला कि शिव पिताजी के खातो का चालक था और उसने पिता की मृत्यु के कुछ दिन ही पूर्व कई लाख रुपये के चैक अपनी पत्नी के नाम काटे थे। बैक से पूछने पर यह पता लगा कि चैको का रुपया तो लाला जी के देहान्त के उपरान्त खाते मे बदला गया है और उसके दो दिन उपरान्त किसी अज्ञात व्यक्ति के नाम बडी-बडी रकमो के चैक सुधा ने काटे है।

रिसीवर ने बैको मे सुधा के हिसाब-किताब पर भी रोक लगवा दी। उस अज्ञात व्यक्ति के विषय मे खोज होने लगी जिसके नाम सुधा ने चैक काटे थे।

रिसीवर बैठने के उपरान्त सुहागवन्ती ने निर्मला को बुलाकर पूछा, "तुमने यह क्या किया है ? मैं तो तुम्हारा भाग तुमको स्वय ही देने वाली थी।"

"मा जी। यह ठीक हो सकता है, परन्तु मेरे श्वसुर को आप पर विश्वास नही था।"

"निर्मला! मै तुमसे पूछ रही हू। तुम्हारे श्वसुर से नही। तुम्हे भी मुझ पर और शिव पर विश्वास नही था क्या ?"

"मा। मैं उनकी सम्मति का विरोध नही कर सकी। मैने जीवन भर वहा रहना है।"

मा चुप कर रही। सिद्धेश्वरी और कमलेश सिंह सस्कार के समय फरीदाबाद आए थे। परन्तु उनके सस्कार के उपरान्त शोक प्रकट कर

जाने तक बहन-भाई मे झगडे की बात प्रकट नही हुई थी। यह समाचार तो सिद्धेश्वरी ने समाचार-पत्रो मे पढा और वह इसे पढ स्तब्ध रह गई।

उसने अपने पति से बताया तो वह हस पडा। सिह ने हसते हुए कहा, "मेरी भी एक बहन है और वह मुझसे बहुत गरीब है। इस पर भी मुझे विश्वास है कि उसके मस्तिष्क मे मेरे तथा अपनी माता जी पर सन्देह नही हुआ कि पिता की सम्पत्ति मे से उसे कुछ नही मिलेगा।"

"तो आपने उसके लिए लिखत-पढत कर रखी है।"

"मैने उसके नाम पूर्ण सम्पत्ति का तीसरा भाग कर रखा है। एक माता जी के नाम है और एक मेरे नाम है। दोनो को अपने-अपने भाग की आय मिलती है। अपनी आय का अधिकाश माता जी किसी ब्राह्मण तथा उनके बच्चो को देती रहती है।

"और देखो देवी जी। मैंने अपने विवाह से पूर्व एक लिफाफा आपकी बूआ जी को भी दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने वह आपको दिया नही।"

सिद्धेश्वरी हस पडी। हसते हुए बोली, "बूआ इतनी असावधान नही। उन्होने वह लिफाफा मुझे उसी दिन दे दिया था। मैंने बिना खोले वह सुमन बहन जी के पास रखा हुआ है।"

"ओह! तो आपने देखा है कि उस लिफाफे मे क्या है?"

"जी। उसमे कुछ 'पोर्ट ट्रस्ट' के हिस्से है। जहा तक अब स्मरण आ रहा है कि दो लाख रुपये से कुछ ऊपर राशि के है।"

"तो उनको अपने नाम 'ट्रान्सफर' करवाने के लिए कुछ लिखा-पढी होनी चाहिए।"

"मेरा विचार था कि विदेश से लौटकर आपसे सम्मति करूगी। परन्तु वहा से लौटने पर इस नये जीव के आने की सूचना मिल गयी और मै वह सब कुछ उसके द्वारा आपके ही पुत्र को वापस करने वाली हू।

"वीरेन्द्र जी से बात हुई है और यही सम्मति हुई थी कि इस नये जीव के नामकरण के उपरान्त वह सम्पत्ति आपकी प्रथम सन्तान के नाम कर दू।"

"तो प्रथम के अतिरिक्त की भी कामना है ?" सिंह ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"वात यह है कि अभी तक तो मेरा अनुभव सन्तानोत्पत्ति के विरोध मे नही हुआ, परन्तु पक्की बात तो प्रसव के उपरान्त ही बताऊगी। कुछ डाक्टरो ने और स्त्री लेखको ने प्रसव काल को एक भारी मुसीबत का काल वर्णन किया है। उनको पढ-पढकर मुझे कपकपी ही लग जाया करती थी। एक दिन टोकियो मे उलटी होते समय कुछ बुरा प्रतीत हुआ था, परन्तु आपने तब फलो का रस पिलाकर चित्त ठीक कर दिया था।

"जबसे दिल्ली लौटी हू, मुझे किसी प्रकार का कष्ट नही हो रहा। यह ठीक है कि पेट के साथ एक बोझा-सा हो रहा है, परन्तु इसका अभ्यास भी तो हो रहा है।"

"माता जी आपके विषय मे निरन्तर ज्योतिषियो और वैद्यो से बात-चीत कर रही है और तुम्हारे भोजन की व्यवस्था वैद्य जी की सम्मति से ही हो रही है।"

"शेष भाग्याधीन है। आखिर बिना गर्भ धारण किए भी तो पुरुष-स्त्री बीमार हो कष्ट भोगते रहते है। यह तो एक स्वाभाविक विकास हो रहा है। सामान्य स्थिति मे इससे कष्ट नही होना चाहिए।"

"वर्तमान काल के वैज्ञानिक एक स्वाभाविक बात को स्वाभाविक ढग से होने देने के स्थान उसके मार्ग मे बाधा ही खडी कर रहे है। यह उनके विज्ञान की असफलता का ज्वलन्त प्रमाण है। वे इस स्वाभाविक प्रक्रिया मे होने वाली अस्वाभाविक घटनाओ को रोकने के स्थान स्वाभाविक को अस्वाभाविक मे बदल रहे है।"

"परन्तु एक बात से तो आप भी इन्कार नही कर सकते" सिद्धेश्वरी ने अपने पूर्व ज्ञान का लाभ उठाने के लिए कह दिया, "कि स्त्री वर्ग के साथ यह प्रकृति का घोर अन्याय है कि उसे दस मास का दण्ड दिया जा रहा है। क्यो नही कोई ऐसा प्रबन्ध कर दिया जैसे मुर्गी से अण्डे का किया है ?"

सिंह हस पडा। हसते हुए बोला, "प्रकृति मेरा अभिप्राय है कि 'नेचर' तो बेचारी बेजान है। वह तो किसी दूसरे के वश मे हो कार्य करती

है। इस कारण मै तो नित्य उससे सम्मति और विचार करता रहता हू जिसके आदेश से प्रकृति ने यह प्रबन्ध किया है। परन्तु देवी जी ! उस प्रकृति के स्वामी ने तो कुछ अन्य ही बात बताई है। वह कहता है कि स्त्री जाति को कुछ कष्ट तो होता है, परन्तु वह कष्ट प्रायः स्त्री जाति की अपनी मूर्खता के कारण होता है।"

"एक तो जब ही यह ज्ञान हो कि वह सतान निर्माण के मार्ग पर चल पडी है उसे इस दिशा मे अधिक प्रयास नही करना चाहिए। दूसरा, उसी प्रकृति के स्वामी ने मुझे कहा है कि स्त्री जाति के कार्य पुरुष जाति से भिन्न प्रकार के है। जबसे स्त्रियो ने पुरुषो के कार्य करने आरम्भ किए है उसे कष्ट होने लगे है।"

"पुरुष शारीरिक कठोर काम करने के लिए बनाया गया है। स्त्रिया कोमल कामो के लिए बनायी गई है। मनुष्य प्रकृति के इस नियम का उल्लघन करता है। इससे भी कष्ट होते है।"

"परन्तु देखिए न। जनसख्या द्रुत गति से बढ रही है और उन सब के पालन-पोषण के लिए कठोर परिश्रम करना पडता है। अकेला पुरुष इतना पैदा नही कर सकता कि परिवार का पेट भर सके।"

'यह मै जानता हू कि एक पुरुप दो-तीन प्राणियो के लिए तो पैदा कर सकता है। साथ ही जब परिवार एक के उपार्जन से अधिक मागे तो वह परिवार मे वृद्धि न करे।"

"तो हममे भी सन्तानोत्पत्ति के उपरान्त इस काम के लिए अरुचि उत्पन्न हो जानी चाहिए।"

"यह तुम स्वय उससे पूछ लेना। मेरे लिए तो इस कार्य के लिए रुचि-अरुचि का प्रश्न ही नही है। मैं तो इस कर्म को निष्काम भाव से करता हू।"

"इसी से कहती हू कि प्रसव के उपरान्त बताऊगी कि अधिक सन्तान के लिए मन करता है अथवा नही।"

"ठीक है। मै विना किसी प्रकार बल इत्यादि का प्रयोग करने के इस कार्य से बचूगा।"

"हमे एक दिन सुधा से मिलने चलना चाहिए।"

"आज चौथा का दिन है। यदि आप चल सके तो मै आपकी गाडी हाकता हुआ स्वय भी चल सकूगा।"

"तो किस समय चलेगे ?"

७

सुधा ने सिद्धेश्वरी से एक नवीन घटना का उल्लेख कर दिया। उसने बताया, "आज मेरे बैंक का हिसाब भी 'फ्रीज' कर दिया गया है।

"यह तो पहले दिन ही होना चाहिए था। यह बताओ कि बहन-भाई के झगडे का घर मे फैसला नही हो सकता क्या ?"

"निर्मला के सास-श्वसुर तो हमे निर्मला के समीप फटकने नही देते।"

"कहे तो निर्मला के घर वाले से मिस्टर सिह मिले ?"

"उनको पहले अपने भाई साहब से बात कर लेनी चाहिए।"

"यह तो होगा ही।"

"तो बहन, यत्न करो। मुझे तो इस सबमे कल्याण दिखाई नही देता।"

"मिस्टर सिह कह रहे थे कि मनुष्य जीवन इतना छोटा है कि उसमे से एक दिन भी यदि खो जाए तो भारी शोक होना चाहिए।"

"कारखाने पर 'रिसीवर' बैठ गया है। वह कारखाने के काम से सर्वथा अनभिज्ञ है और वह दो-तीन महीने मे ही कारखाने का दिवाला निकाल देगा।"

"तब तो शीघ्र ही फैसला कर लेना चाहिए।"

"आप जीजा जी से कहकर यत्न करिए।"

चौथे की रीति-रिवाज के उपरान्त जब निर्मला का पति शान्ति स्वरूप अपनी गाडी मे सवार हो दिल्ली लौटने लगा तो सिह उसके पास जा अपना परिचय दे पूछने लगा, "मै आपसे एक बात पृथक् मे करना चाहता हू।"

मोटर मे शान्ति स्वरूप का पिता बैठा था। पुत्र के स्थान उसने ही

उत्तर दिया, "मुझसे बात करिए। यह लडका तो सर्वथा बुद्ध है। इससे बात करने मे लाभ नही होगा।"

"मै यही पूछना चाहता था।" सिह ने कहा, "कि बहन-भाई के झगडे का घर मे फैसला नही हो सकता क्या ?"

"इस बात से भला शान्ति का क्या सम्बन्ध है ?"

"शान्ति जी बहन निर्मला के घर वाले है और यदि यह चाहे तो बात आज रात मे पहले निश्चय हो सकती है।"

"आप कानून नही जानते। इस कारण आपको इस बात मे हस्तक्षेप नही करना चाहिए।"

"कैसे कहते है कि मै कानून नही जानता ?"

"आप ससद सदस्य है न ? इसी से कहता हू। आपके बनाए कानून अनेको बार सुप्रीम कोर्ट रद्द कर चुका है।"

"परन्तु लाला जी। मै एक कानून जानता हू जो सुप्रीम कोर्ट वाले भी नही जानते। यदि ससद सदस्य वह जानते होते तो उनकी बात सुप्रीम कोर्ट भी कभी रद्द न कर सकता।"

"तो बाबू साहब। पहले ऐसा करो कि अपने ससद सदस्यो को समझाओ, पीछे हम सामान्य मनुष्यो से बात करना।"

"आप सुन तो लीजिए। पीछे इकार करिए अथवा मानिए। इसमे आप स्वतन्त्र होगे।"

"हमने बहुत विचारोपरान्त यह कार्यवाही की है।"

"परन्तु आपने यह सब कुछ किसी उद्देश्य से की है न ? मै तो उस उद्देश्य की पूर्ति की ही बात करना चाहता हू। कचहरी मे तो दस वर्ष लगेगे और घर पर दो घण्टे मे निश्चय हो जाएगी।"

"और घर के अल्पव्यस्क बडे होकर आपत्ति कर देगे तो क्या होगा ?"

"और जो शिव और निर्मला के घर मे बच्चे पैदा होगे, वे आपत्ति करेगे तो क्या होगा ? देखिए, लाला जी। इन भविष्य की बातो से डरकर वर्तमान को खराब करना बुद्धिमत्ता नही। जैसे अब आपको समझाने का यत्न कर रहा हू वैसे ही नये पैदा होने वाले अथवा सज्ञान होने वालो को भी समझाया जा सकेगा।"

"हम समझते है कि एक बात से ही फैसला हो सकता है। कारखाना शान्ति स्वरूप को मिल जाए और नकद तथा अन्य सम्पत्ति दोनो भाई बाट ले।"

"परन्तु यह बात भी तो दोनो पक्ष आमने-सामने बैठ जाए तो हो सकती है।"

"इस समय काम से जा रहे है। शिव इत्यादि को लेकर हमारे घर पर आ जाइए। वहा हम अपने वकील को भी बुला लेगे। तब किसी प्रकार की बातचीत हो सकेगी।"

ससद मे लोक सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो चुकी थी और कमलेश सिह अपने निर्वाचन क्षेत्र के दौरे पर जाने वाला था। इस कारण उसने कहा, "मै कल दिल्ली से बाहर जा रहा हू। इसी कारण कह रहा था कि यदि अभी आ जाए तो बात दो टूक निश्चय हो सकती है।"

"परन्तु बाबू साहब। यह मकद्दमा तो वर्षो तक चलेगा और तब तक आप लौट आएगे। यह आपका दो-टूक निश्चय किसी समय भी हो सकेगा।"

कमलेश निराश वहा से चला आया। शिव कुमार कोठी के भीतर जा रहा था। उसने मिस्टर सिह को शान्ति स्वरूप की मोटर गाडी की ओर से आते देखा तो खडा हो गया। सिह ने शिव से कहा, "अभी तो शान्ति स्वरूप जी के पिता आकाश मे उडते है। हम भूमि पर चलने वालो की बात वह समझ नही सकते। कदाचित् कुछ देर के उपरान्त बात हो सके।"

"मै यह पहले ही जानता था। शान्ति जी के पिता स्वय वकील है और यहा हमे बात-बात के लिए वकील से राय करनी पडती है। सबसे बडी बात यह है कि वह अपने एक मित्र को 'रिसीवर' बनाने मे सफल हो गए है। वह मालामाल हो जाएगा और वह इन लोगो से भी किसी प्रकार का लेन-देन कर सकता है।"

सिद्धेश्वरी भी स्त्रियो मे से उठकर इनके पास आ गई थी और अपने पति के प्रयास का परिणाम सुन रही थी। दोनो ने घर वालो से विदा ली और दिल्ली को चल दिए।

"देवी जी!" सिह ने गाडी चलाते हुए कहा, "यह परिवार

उजडेगा।"

"तो कोई आशा नही ?"

"बाप किसी प्रकार का इच्छा-पत्र लिखकर नही रख गया। साथ ही उसने अपने बच्चो को मानवता का पाठ नही पढाया। कदाचित् वह स्वय भी इस विषय मे कुछ नही जानता था।

"धन अर्जन करना इतना कठिन नही जितना कि धन का उचित ढग से व्यय करना होता है। जिसे व्यय करना नही आता उसका अर्जन किया भी नाली मे बह जाता है। यही यहा हो रहा है।"

कमलेश सिह बजट और ग्रीष्म ऋतु के लोक सभा के उपरान्त अपने नियमित दौरे पर नही जा सका था। वह शिशिर ऋतु के सत्र के उपरान्त अपनी मोटरगाडी साथ ले जा रहा था और अपने मुशी को उसने अपने क्षेत्र मे भेज दिया हुआ था। सिद्धेश्वरी की इच्छा थी कि वह पति के साथ उसके क्षेत्र मे जाए। विवाह के समय सिह ने इस बात की ओर सकेत किया था, परतु सिह की माताजी ने बहू को पति के साथ भेजने से इकार कर दिया। उसने अपने पुत्र को कह दिया था, "सिद्धेश्वरी साथ नही जाएगी। वह यात्रा का कष्ट सहन नही कर सकेगी और मैं यह भय मोल नही लेना चाहती।"

घर मे मा की आज्ञा तो एक तानाशाह की आज्ञा समान चलती थी। वह अपनी आज्ञा मे कारण बता दिया करती थी, परन्तु यदि नही भी बताती तो पुत्र को मा की बात अस्वीकार करने मे कभी भी कल्याण समझ नही आया था।

सिद्धेश्वरी ने जब अपनी सास से अपनी इच्छा व्यक्त की तो उसका सतर्क उत्तर था, "तुम अपनी वर्तमान अवस्था मे इस प्रकार की यात्रा पर नही जा सकती। क्या यह कार्य निर्वाचन क्षेत्र मे दौरा करने से कम महत्त्व का है ? नही बेटी, एक वर्ष के उपरान्त यह बात हो सकेगी।"

सिह भी मा की बात सुन रहा था। उसने कह दिया, "तो माता जी। आप सिद्धेश्वरी के साथ यहा ही रहेगी ?"

"हा। तुम निश्चिन्त होकर अपने काम पर जा सकते हो।"

एक महीने के विस्तृत क्षेत्र के भ्रमण के उपरान्त सिह आया तो

सिद्धेश्वरी को प्रसन्न और स्वस्थ देख प्रसन्नता प्रकट करते हुए बोला, "देवी जी तो विवाह के पहले से भी अधिक स्वस्थ और सुन्दर होती जाती है।"

"हा। मुफ्त की रोटिया तोडते रहने से और हो भी क्या सकता है? माता जी न तो मुझे कुछ काम करने देती है और न ही दो घण्टे से अधिक बैठकर पढने-लिखने देती हे। समय होने पर वह मेरे कमरे मे आ जाती है और काम बन्द करने के लिए कहने लगती है।"

"मैं इससे बहुत प्रसन्न हू।"

"अर्थात् मुझे दासता मे बधता देख आपको प्रसन्नता हो रही है।"

"परन्तु यह दासता है क्या?"

"नही तो और क्या है? समय पर प्रात उठो। स्नानादि के उपरान्त समय पर पूजा-पाठ करो, समय पर स्वाध्याय करो, समय पर भोजन, समय पर सोना और समय पर भ्रमण करना। इसमे से किसी भी कार्यक्रम मे मेरी सम्मति न ली जाती है और न मुझे अपने विचार से व्यवहार करने की स्वीकृति दी जाती है।"

"परन्तु इस नियन्त्रित जीवन से देवी जी का स्वास्थ्य तो सुधरा है।"

"घर के पालतू कुत्ते-बिल्लियो की भाति खाती-पीती हुई मोटी हो रही हू।'

"बच्चा होने के उपरान्त ही इस कार्यक्रम मे ढील की जा सकेगी।"

"बहुत मजेदार मुसीबत है।"

सिंह इस उक्ति पर हस पडा। हसते हुए कहने लगा, "यह पुरस्कार हे उस दैवी कार्य का जो देवी जी कर रही है।"

"दैवी? भला इसमे दैवीपन क्या है?"

"हमारे अपने गाव मे एक सवा सौ वर्ष की वयस के एक वृद्ध रहते है। नाम है पण्डित निरजन मिश्र। मैं जब गाव मे जाता हूं तो उनके चरण स्पर्श करने अवश्य जाया करता हू। वह भी मेरे आने की सूचना पर मेरी प्रतीक्षा करते रहते है। कहा करते है कि मेरे बाबा को गोद मे उठा खिलाते रहे है।

"इस बार मैं गया तो पूछने लगे, 'सुना है कि तुमने विवाह कर

लिया है ?'

"हा, बाबा।"

'बहू को साथ नही लाए ?'

' वह निर्माण कार्य मे लीन माता जी की देख-रेख मे है।"

'तो आते ही उसे काम पर लगा दिया है ?'

"बाबा। यह कार्य उसका अपना निर्वाचित है। मैंने उसे कुछ भी करने को नही कहा।"

'बहुत भले विचार की लडकी प्रतीत होती है। आजकल तो लड़किया कुछ भी मतलब का काम करने मे रुचि नही रखती।'

"हा, बाबा। वह मुझे बहुत प्रिय है और वह मेरा प्रिय कार्य ही कर रही है। इस पर भी यह स्वेच्छा से ही हो रहा है।"

"तो मेरी चर्चा वहा गाव मे है ?"

"हा, देवी। माता जी यहा है। इस कारण लोग कल्पना करने लगे है कि वह गाव से बाहर इतने दिन तक क्यो है ? लोग समझ गए है कि कोई अत्यावश्यक कार्य ही उनको यहा बाधे हुए है। अन्यथा वे गाव के लोगो मे रहना सदा पसन्द करती रही है।"

सिद्धेश्वरी अपने पति और सास की लोकप्रियता के रहस्य पर विचार करती हुई मौन हो गई।

सिह ने बात बदल दी। उसने पूछा, "फरीदाबाद वालो का क्या हुआ है ?"

''कोई नवीन बात पता नही चली। सुधा का टेलीफोन आया था। उसका स्वास्थ्य कुछ ठीक नही रहता। उसके सब-जज गुडगावा के सम्मुख बयान होने वाले है।

"बात यह हुई है कि व्यवसाय मे से पाच-लाख रुपए के कीमत के तीन चैक उसे लक्ष्मीचन्द जी के देहान्त के तीन-चार दिन पूर्व मिले है। वे चैक उसने अपने बैंक मे भेज दिए थे और उसका बैंक खाता 'फ्रीज' होने से एक दिन पूर्व उसने वह सब रुपया नकद वसूल कर लिया था। वह रुपया मिल नही रहा। उसी के विषय मे उससे पूछ-ताछ होने वाली है।

''मै समझती हू कि वह किसी प्रकार का झूठ बोलने वाली है और

उसीके भय से ही वह बीमार हो रही है।"

सिंह मुस्कराता हुआ बोला, "इसी कारण तो हमारे शास्त्र का विधान यह है कि स्त्री को व्यवसायिक झगडो मे नही पडना चाहिए और उसका पति उसको प्रत्येक प्रकार से सन्तुष्ट रखे।"

"यह भी मजेदार मुसीबत है। सब प्रकार की सुख-सुविधा और फिर भी पराधीनता।"

"हा। यदि पति-पत्नी परस्पर एक ही अग के दो भाग होकर रहे तो जिसे देवी जी पराधीनता कहती है, वह स्वाधीनता हो जाएगी।

"देखिए। मै समझाता हू। सिर और हाथ पाव पृथक-पृथक हैं। एक दूसरे का कार्य नही कर सकते। इस पर भी सब एक ही शरीर के अग होने से एक दूसरे की सहायता करते है। स्नान के समय हाथ अपना सिर धोता है। उसे साबुन, तेल लगाता है तो सिर भी कह सकता है कि यह मजेदार मुसीबत है। मजेदार इस कारण कि सेवा हाथ कर रहे है और मुसीबत इस कारण कि सिर हाथो के अधीन है।

"देखिए देवी जी! इस ससार मे परमात्मा ने किसी को स्वतन्त्र नही बनाया। सबको दूसरो की सेवा करनी पडती है। स्वेच्छा से करे अथवा विवश होकर करे।

"इसी कारण भगवान् ने अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता मे कहा है—

सहयज्ञा प्रजा· सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति।"

'क्या अर्थ है इसका ?" सिद्धेश्वरी ने पूछ लिया।

"यही कि परमात्मा ने इस सृष्टि का आधार यज्ञ बनाया है। यज्ञ का अभिप्राय है कि परस्पर सबकी भलाई के विचार से कार्य करना। सब लोगो को इसी विचार से बात करनी चाहिए।

"निस्सन्देह पुरुष का कर्त्तव्य है कि स्त्री वर्ग से ऐसी सेवा ले जिसको कर सकने की क्षमता उसमे है और उस कार्य मे भी उसे अधिक से अधिक सहायता दे।"

८

मिस्टर सिंह अभी बजट सैशन मे लीन था और उसके पास समय नही था कि वह फरीदाबाद वालो के विषय मे विचार भी कर सके।

विन्ध्येश्वरी देवी के दिल्ली मे रहने से वह पत्नी के विषय मे निश्चिन्त था। वह उसके विषय मे भी विचार नही कर रहा था। परन्तु घर मे माता जी के साथ मा-प्रकृति तो निरन्तर कार्य कर रही थी। सिद्धेश्वरी का प्रसव काल समीप आ रहा था।

बीस फरवरी को वह नियम से प्रात उठी थी। स्नानादि से निवृत्त हो अपनी सास के साथ पूजागृह मे बैठी थी कि एकाएक उसे शरीर मे शिथिलता अनुभव हुई। उसने अपने घर वाले के कान मे कहा, "मैं प्रसूति गृह मे जा रही हू।"

माता जी के कान खडे हो गए। वह तुरन्त स्तोत्र पढना छोड उठी और उठ रही पतोहू को आश्रय देने लगी।

सिद्धेश्वरी को इस आश्रय की आवश्यकता नही थी। वह उठ अपने आप उसके लिए निश्चित कमरे मे चली गई। विन्ध्येश्वरी उसके साथ साथ थी।

सिंह उस लेडी डाक्टर को टेलीफोन करने लगा जिससे प्रसव मे सेवा लेने का निश्चय किया हुआ था।

लेडी डाक्टर अपने साथ एक नर्स लेकर दस मिनट मे आ गई, परन्तु उसके आने से पूर्व बच्चे का जन्म हो चुका था।

आते ही डाक्टर अपने काम पर लग गई। बच्चे को धो-पोछकर और प्रसूता को जब पट्टी इत्यादि लगा लिटा दिया गया तो जाने से पूर्व डाक्टर ने प्रसूता से पूछ लिया, "हाऊ डू यू फील नाऊ ?"[१]

"क्वाइट लाइट नाऊ। बट डाक्टर! इसन्ट इट ए डर्टी जॉब ?"[२]

"क्या गन्दापन है इसमे ?"

"यह रक्त, पानी और औल ?"

---

१ "तुम कैसा अनुभव करती हो अब ?"

२ "सर्वथा हलका। परन्तु डाक्टर, यह गन्दा काम नही है क्या ?"

"हा।" डाक्टर ने कहा, "नित्य मल निसारण से अधिक गन्दा नही। शौच के उपरान्त भी मनुष्य हलका अनुभव करता है और प्रसव के उपरान्त भी। पर मै तो कष्ट के विषय मे पूछ रही थी।"

"कष्ट तो कुछ नही हुआ। यदि कुछ थोडा हुआ है तो वह इतना कम था कि मुझे अनुभव नही हुआ।"

"परमात्मा का धन्यवाद करो। वह तुम पर बहुत दयालु प्रतीत होता है।"

डाक्टर बच्चे की दादी को बधाई दे चली गई। सिद्धेश्वरी के लडका हुआ था। इसकी सबसे अधिक प्रसन्नता विन्ध्येश्वरी को थी। वह इस घटना की प्रतीक्षा पिछले बारह वर्ष से कर रही थी। जब सिह का पहला विवाह हुआ था तबसे ही वह घर मे पौत्र आने की लालसा कर रही थी।

इस कारण उसने अपने विचारानुसार तीसरे दिन बच्चे के स्नान इत्यादि के उपरान्त पूर्ण कोठी पर दीपमाला करवा दी। कोठी के द्वार पर शहनाई की चौकी बिठा दी गई और यह सब मगल सूचक कर्म तेरहवें दिन तक चलते रहे।

तेरहवे दिन एक बहुत बडा 'रिसैप्शन' दिया गया जिसमे एक सहस्र से ऊपर तो दिल्ली वाले आमन्त्रित थे और उसके अपने गाव और निर्वाचन क्षेत्र से एक सहस्र के लगभग लोग आमन्त्रित थे।

निर्वाचन क्षेत्र और गाव से सात सौ के लगभग लोग आए। उन सबको आने-जाने का रेल भाडा और दस-दस रुपये भेट स्वरूप दिए गए। सब दिल्ली से बाहर से आने वालो को रात भर रहने के लिए कोठी के लॉन मे शामियाने और टैट लगवाए गए थे। उनके खाने-पीने के लिए पृथक खाने-पीने का प्रबन्ध था।

दिल्ली वालो के लिए तो एक चाय पार्टी का ही प्रबन्ध था। इस उत्सव की गूज लोकसभा मे भी जा पहुची। एक सदस्य ने गृह मन्त्री से पूछ लिया, "क्या सरकार ससद सदस्यो पर व्यर्थ धन व्यय करने पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाने का विचार रखती है?"

गृह मन्त्री का सक्षिप्त उत्तर था, "नही।"

परन्तु स्पीकर ने इस प्रश्न पर पूरक प्रश्न पूछने की स्वीकृति दे दी। उसने पूछ लिया, "क्या गृह मन्त्री महोदय यह जानते है कि एक ससद सदस्य ने अपने घर लडका होने पर कई लाख रुपया खेल-तमाशे मे फूक डाला है ?"

'हा मुझे मालूम है। मै भी उस उत्सव पर आमन्त्रित था।"

"क्या इस प्रकार के व्यर्थ की बातो मे धन व्यय कर बुरा उदाहरण उपस्थित करने से सदस्यो को रोका नही जा सकता ?"

"कोई कानून नही जिससे रोका जा सके।"

"ऐसे सदस्य की आय के स्रोत की जाच होनी चाहिए।"

"सरकार को उसकी आय के स्रोत का ज्ञान है। उसमे गैर कानूनी कुछ नही।"

"क्या यह 'अन-सोशल' कार्य नही ?"

"नही। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय को अपनी इच्छानुसार व्यय करने का अधिकार है।"

इस पर एक मनचले ने स्पीकर से पूछ लिया, "क्या स्पीकर महोदय उस सदस्य से अपनी निजी सफाई देने के लिए कहेगे ?"

इस पर स्पीकर ने कहा, "मै समझता हू कि सदस्य महोदय का यह काम किसी प्रकार भी देश अथवा ससद के कायदे-कानून के अन्तर्गत नही आता। इसके कारण मै उसे पूछ नही सकता।"

सिह इस सब समय चुपचाप बैठा हुआ सुनता रहा और हसता रहा।

स्पीकर के सिह को सफाई देने के लिए कहने से इन्कार करने पर एक अन्य समाजवादी सदस्य ने पूछ लिया, "क्या मै 'ऑनरेबल' सदस्य से यह जान सकता हू कि उसने इस जशन पर कितना रुपया व्यय किया है ?"

"हा। यदि मैम्बर चाहे तो सदन के ज्ञान मे वृद्धि कर सकते है।"

इस पर सिह उटा और बोला, "जब सदन के स्पीकर ऐसा कहते है तो मै यह समझता हू कि वह पूर्ण सदन की इच्छा व्यक्त कर रहे है। मै उनकी ज्ञान वृद्धि मे बाधा बनना नही चाहता।

"मैने पूर्ण उत्सव पर एक लाख रुपये से ऊपर व्यय किया है। इसमे

अस्सी हज़ार रुपया तो मेरे क्षेत्र से बधाई देने आए लोगो को मैंने रेल-भाडा और कुछ भेट स्वरूप दिया है। इसमे से अधिकाश रेल की आय मे वृद्धि हुई है। शेष बीस हजार से ऊपर बिजली, सजावट, गाना-बजाना और खाने-पीने मे व्यय हुआ है।"

"और यह सब कहा से आया है?" एक अन्य प्रश्न था।

"ऑनरेबल गृह मन्त्री जानते है। इतना मै विश्वास दिलाता हू कि इसमे से एक पैसा भी ऑनरेबल मेम्बर की जेब से नही लिया गया।"

इस पर सरकारी बैचो ने तालिया बजा दी और सदन की कार्यवाही आगे चला दी गई।

इस समाचार की पत्र-पत्रिकाओ मे भी चर्चा हुई। मिस्टर सिह से 'लौबी' मे खडे कई सदस्यो ने कहा, "व्यर्थ मे उसने अपने को समाजवादियो और कम्युनिस्टो की दृष्टि मे खडा कर दिया है।"

एक स्वतन्त्र दल के सदस्य ने कहा, "यहा अब सम्पत्ति पर उच्चतम सीमा लगाने का विचार बन जाएगा।"

सिह का उत्तर था, "और यदि भारत की ससद ने यह सीमा स्वीकार की तो इस देश मे रहना पाप हो जाएगा।"

'क्यो?"

व्यक्ति और दल तो अन्याययुक्त व्यवहार कर सकते है। परन्तु जब देश और जाति ही ऐसा अन्याय करने पर उतारू हो जाए तो उस देश मे रहना मै उचित नही मानता।"

"पर कहा जाओगे?"

"जहा धर्म से की गई आय का धर्मयुक्त उपायो से व्यय करने की स्वीकृति होगी।"

"परन्तु धर्मयुक्त आय क्या है?"

"उसका निर्णय परमात्मा ने आदि सृष्टि से कर रखा है। परन्तु ये नास्तिक उस विधि-विधान को मानेगे नही। इस कारण मै कहता हू कि कोई भी पैमाना आय करने का निश्चय कर ले। मै उसे मान लूगा, परन्तु उस पैमाने से जो जितनी आय करे उसमे हस्तक्षेप अन्याय होगा और ऐसा करने वाले देश मे रहना ठीक नही।"

स्वतन्त्र दल का सदस्य स्वयं परमात्मा के अस्तित्व को नही मानता था, परन्तु सिह की दूसरी युक्ति को वह अस्वीकार नही कर सका।

इस पर भी उसको इस युक्ति मे एक दोष प्रतीत हुआ। उसने कह दिया, "यदि संसद वह निश्चय कर दे कि किसी व्यक्ति की आय दो सहस्र रुपये से अधिक न हो तो क्या कहोगे ?"

"आय का सम्बन्ध परिश्रम से है और रुपये तो उस आय की क्रय शक्ति निश्चय करते है। इसका सम्बन्ध भोग पदार्थो के मूल्यो से है। आय की क्रय शक्ति पदार्थो के मूल्यो से न्यूनाधिक की जा सकती है। इस प्रकार क्रय शक्ति को न्यूनाधिक करने से सबके साथ समान व्यवहार होगा और यदि आय की क्रय-शक्ति को कम करने के लिए परिश्रम पर सीमा बाधी गई तो परिश्रम करने मे प्रतिबन्ध होगा और मनुष्य की स्वाभाविक शक्ति पर सीमा बाधना होगा।

"परिश्रम करने की शक्ति किसी सरकार अथवा मनुष्य ने प्रदान नही की। अत वह उस पर सीमा बाधने की क्षमता नही रखता। इससे दो ही परिणाम निकलेंगे। या तो मनुष्य परिश्रम करना छोड देगे अथवा मनुष्यो से परिश्रम करा उसे बिना प्रतिकार के टरकाने का यत्न किया जाएगा। इसी को मैं अन्याय कहता हू।"

बात तो युक्तियुक्त थी। परन्तु प्राय ससद सदस्य इस प्रकार युक्ति करने का अभ्यास नही रखते थे। वह तो प्रत्येक समस्या को समझने के लिए जनता के मनोद्गारो पर प्रभाव देखने के अभ्यस्त हो चुके थे। वह यह देखते थे कि अधिकाश जन निर्धन है और बडी आय वालो की आय को कतरनी से कतर दिया जाए तो वे प्रसन्न होगे और उनका ससद सदस्य बनना सम्भव रह सकेगा।

इस कारण जब सिह ने उक्त युक्ति की तो उसे नीरस पा सदस्य उसे छोड दूसरो से बाते करने मे रुचि लेने लगे।

वैसे तो सिह उस दिन भी प्रश्नकर्त्ता पर व्यग कस कर आया था। उसने उसे कहा था कि उसने अपने घर उत्सव पर व्यय करने के लिए प्रश्नकर्त्ता की जेब से एक पैसा भी नही लिया। इस पर भी वह एक बात कई वर्षो से अनुभव कर रहा था कि जिस पूजी की आय से वह जीवन चला

रहा है वह उसकी अपनी अर्जन की हुई नही। उसके बाप-दादाओ ने किसी प्रकार से अर्जन की है। वह उनके अर्जित धन का उपभोग कर रहा है।

यद्यपि वह इसमे भी युक्ति रखता था। उसकी युक्ति थी कि वह अपने माता-पिता की धार्मिक प्रवृत्ति, न्याय-बुद्धि, विश्लेषणात्मक प्रतिभा और कठोर से कठोर परिश्रम करने की क्षमता उत्तराधिकार मे प्राप्त कर चुका है। क्या यह भी अनाधिकार प्राप्ति है? यदि इन वस्तुओ को वह अपने पूर्वजो से सहज ही प्राप्त कर सका है तो वह उनके धन सम्पद का उत्तराधिकारी क्यो नही हो सकता? जैसे बुद्धि, प्रतिभा और परिश्रम की क्षमता उसके इस जीवन मे फल दे सकती है उसी प्रकार पूर्वजो से प्राप्त धन भी आय दे रहा है। इस पर भी दोनो मे एक अन्तर उसे भी दिखाई देता था। वह यह कि शारीरिक शक्तिया अदृश्य थी और धन प्रत्यक्ष था। मोटी दृष्टि रखने वालो को धन दिखाई देता था और पूर्वजो से उत्तराधिकार मे प्राप्त अन्य गुण दिखाई नही देते थे।

इस कारण वह कोई स्पष्ट दिखाई देने वाला आय का स्रोत निर्माण करने की योजना मन मे विचार करने लगा था। आज की ससद मे झडप के उपरान्त उसकी विचार शक्ति को प्रोत्साहन मिला और वह घर पहुचा तो अपने विचारो मे लीन था।

मा ने देखा तो पूछ लिया, "कमलेश, आज मुख मलिन किस लिए हो रहा है?"

"मलिन? नही मा, मलिन होने मे कारण नही। मै एक उद्देश्य की पूर्त्ति की योजना बनाने मे लीन था।"

"किस उद्देश्य की पूर्त्ति चाहते हो?"

"मा। अभी तक तो मै पूर्वजो की कमाई को धो-धोकर निर्वाह कर रहा था। मै समझता था कि उस कमाई का भोग करते हुए मै लोक सेवा कर पितृ ऋण से मुक्त हो रहा हू, परन्तु इससे मेरे साथी यह समझने लगे है कि मै धनोपार्जन कर ही नही सकता। मै इस लाच्छन को मिथ्या सिद्ध करने का उपाय विचार कर रहा था।"

"तो कोई उपाय सूझा है?"

सिह हस पडा। वह जानता था कि उसकी मा उससे भी अधिक

निश्चयात्मक बुद्धि रखती है। इस कारण ही वह समझता था कि मा ने कुछ विचार बनाया होगा। इस कारण वह मा का मुख देखने लगा।

मा ने कहा, "बिना साधनो के कुछ उपलब्ध नही हो सकता और इस देश मे साधनो पर सरकार ने अधिकार जमा रखा है। तुम सरकारी पक्ष का विरोध करते हुए उन साधनो का उपभोग नही कर सकोगे। तो बताओ, अब धनोपार्जन के लिए पक्ष बदलोगे ?"

"मा। मैं समझता हू कि कुछ साधन मेरे पास है जिन पर सरकार का अधिकार नही। वे है बुद्धि, वाक्-शक्ति, शारीरिक गठन और विश्लेषणात्मक प्रतिभा। इन पर सरकार का अधिकार नही और सरकारी विरोध पर भी उनके बल से ही मैं अभी तक ससद सदस्य बनता रहा हू। मै योजना बना रहा हू कि उन साधनो के बल पर ही धन भी अर्जन कर सकू।"

"है तो ठीक, परन्तु अपने देश की बुद्धिमान सरकार उन साधनो पर भी तो प्रतिबन्ध लगाने जा रही है। साथ वे साधन भी तो एक बहुत बडी सीमा तक पूर्वजो की ही देन तो है।

"उनके प्रयोग से भी तो बात वही हो जाएगी जो पूर्वजो के धन से हो रही है।"

"मै इस बात को स्वीकार करता हू और यह भी मानता हू कि पूर्वजो के इन गुणो का मै उत्तराधिकारी इस कारण हुआ हू कि मैंने अपने पूर्व जन्म अथवा जन्मो मे किसी प्रकार के शुभ कर्म किए है। परन्तु मा, आज भारत मे शासक वर्ग पूर्व जन्म को मानता नही। इस कारण हमारी उक्त युक्तियो को स्वीकार नही करता।

"पूर्व जन्म और तबके कर्म फल अदृश्य होने से इनको दिखाई नही देते। इस कारण वे उसे स्वीकार नही करते। इन बुद्धि के कोल्हुओ मे सिद्ध कर देना चाहता हू कि वे कोल्हू के बैल है। वे तो आखो पर बधी पट्टी के कारण कोल्हू के चारो ओर घूमते हुए समझ रहे है कि वे प्रगति कर रहे है, परन्तु मेरी आखो पर तो पट्टी बधी नही। मै तो आगे चलना चाहता हू।

"मैं इन कोल्हू के बैलो को यही चक्कर काटते हुए छोड आगे चलना

चाहता हू ।"

"परन्तु इसके लिए तो यह ससार छोडना पडेगा । मै समझती हू कि इसका अभी समय नही आया ।"

"मा । ठीक कहती हो । मै अभी ससार छोडने का विचार नही कर रहा । मै ससार को भी इस जीवन के कोल्हू से बहुत बडा मानता हू । इसमे भी प्रगति करने के लिए बहुत लम्बा-चौडा स्थान है। इन मूर्खों को यह बताना चाहता हू कि कोल्हू के बाहर ससार बहुत लम्बा-चौडा है ।

"मा । ये समझते है कि समाजवाद ही विचार की सीमा है और यह तो एक बहुत ही सकुचित शिकजा है। इसमे रहते हुए मेरा तो दम घुट रहा प्रतीत होता है ।"

इस समय सिद्धेश्वरी अपने कमरे से निकल आई और मा-पुत्र मे बात सुनने लगी थी ।

६

सिद्धेश्वरी को सामने बैठते देख सिंह ने पूछ लिया, "देवीजी का स्वास्थ्य कैसा है ?"

"बहुत बढिया है । राकेश अब इक्कीस दिन का हो गया है। मा जी ने कृपा कर उसके लिए एक दाई रख दी है और मैं बेकार हो गई हू ।

"विवाह के दिन से लेकर प्रसव तक तो आपने एक काम पर लगा रखा था । पहले अपनी सेवा-कार्य मे और पीछे इस राकेश के पालन-पोषण मे । अब आजकल इन दोनो कार्य से अवकाश पा गई हू और बेकार बैठी-बैठी ऊब रही हूं ।"

बहू की बात सुन मा-पुत्र दोनो हसने लगे । इस पर भी बात का उत्तर मा ने दिया, "तो क्या अब राकेश के उपरान्त मुकेश निर्माण की योजना बनाने लगी हो ?"

इस पर तो पुन तीनो हसने लगे । परन्तु मा ने तुरन्त ही कहा, "नही बहू । अभी नही । अभी दो-तीन वर्ष तक विश्राम करो । जल्दी-जल्दी

भागती हुई तो मार्ग मे ही दम तोड दोगी ।"

"पर मा जी ।" सिद्धेश्वरी ने भी गम्भीर हो कहा, "मै अभी उस कार्य के विषय मे विचार नही कर रही । मैं तो यह कहने आई हू कि मै जिस कार्य की योग्यता रखती हू उसमे ही क्यो व्यस्त न हो जाऊ ?"

"कुछ पढने-लिखने का काम कहती हो ?"

"हा, माता जी ।"

"पढने के सम्बन्ध मे दो प्रकार के कार्य शास्त्र मे लिखे है । पठन और पाठन । दोनो कार्य ही बहुत शुभ फल देने वाले है । इस पर भी इन दोनो मे मै पठन को उपमा देती हू ।"

"मै भी यही विचार कर रही थी । अब विश्वविद्यालय मे अध्यापक कार्य नही करूगी । पहले भी किए, परन्तु अब शोक लग रहा है ।

"मैने अभी पर्याप्त पठन नही किया था । इस कारण बहुत गलत पठन करने लगी थी । मै समझी हू कि मेरे अपने स्वाध्याय मे भूल थी । इसी कारण विद्यालय मे कुछ गलत अनर्गल बात किया करती थी ।

"इस कारण मै तो अभी पठन कार्य करना चाहती हू ।"

"ठीक है ।" सिह ने कह दिया, "तुम किसी एक विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उस विषय पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना आरम्भ कर दो ।"

"परन्तु एक बात स्मरण रखना ।" विन्ध्येश्वरी ने कह दिया, "अध्ययन कुछ फल नही देता यदि अध्ययन किए पर मनन न किया जाए । ठीक प्रकार और उचित सीमा तक चिन्तन के लिए बुद्धि मे विकास की आवश्यकता है और इसके लिए मै तो पूजा-पाठ, धारणा-ध्यान समाधि ही साधन मानती हू ।

"मै समझती हू कि यह सद्बुद्धि भी जिसका तुम इस समय प्रदर्शन कर रही हो, यह भी पिछले छ मास के किए पूजादि का फल ही है ।"

सिद्धेश्वरी मुस्करा कर चुप कर रही । इस पर विन्ध्येश्वरी ने पूछ लिया, "तो तुम्हे सन्देह है मेरे कथन पर ?"

"नही, मा जी । मै इसलिए नही मुस्कराई । मै तो अपनी मूर्खता पर मुस्कराई थी । मै विवाह से पूर्व समझ रही थी कि प्रसव अति कष्टप्रद

दण्ड है जो प्रकृति ने अन्याय से नारी जाति के गले मे बाध रखा है। मै तो यह समझ रही थी कि गर्भ धारण न करना और धारण हो जाने पर इसको विनष्ट करवा देना ही उचित कर्त्तव्य है जो प्रत्येक नारी को स्वीकार कर लेना चाहिए।

"मै यह भी विचार करती थी कि प्रसव एक अति गन्दा कार्य है। परन्तु अनुभव ने यह बताया है कि मै भूल कर रही थी। इस कारण पुन ऐसी भूल न हो, इसका उपाय करना चाहती हू।"

"मै समझता हू कि तुमको पुस्तके क्रय करने के लिए विशेष 'ग्राण्ट' मिलनी चाहिए और नियमित रूप से तुम्हे सात घण्टे नित्य पढने के लिए अवकाश मिलना चाहिए।" सिह ने सिद्धेश्वरी के विचार सुन प्रसन्न होते हुए कहा।

इस पर मा ने कह दिया, "हा। ढाई-तीन वर्ष तक तुम्हे छुट्टी मिलनी चाहिए। तदनन्तर पुन नारी के काम मे प्रवृत्त हो सकोगी।"

सिह हस पडा और बोला, "मा। इस बात को ईश्वराधीन छोड दो। देवी जी उसे 'नेचर' का नाम देती है। अत 'नेचर' के काम का विरोध न कर उसकी बेहूदगियो से बचने के लिए यत्नशील रहना चाहिए।"

उसी दिन एक घटना और घटी। मध्याह्न के समय जब सिह लोक सभा की सायकालीन बैठक मे गया हुआ था तो एक पुलिस इन्सपैक्टर आया और सिद्धेश्वरी देवी से मिलने की इच्छा करने लगा।

उसे ड्राइग रूम मे बिठाया गया और सिद्धेश्वरी अपनी सास के साथ वहा आई तो पुलिस इन्सपैक्टर ने अपने आने का प्रयोजन वर्णन कर दिया। उसने बताया, "मै फरीदाबाद से आया हू। सेठ लक्ष्मीचन्द के लडको के विषय मे जाच-पडताल करने के लिए लगा हुआ हू। मुझे सूचना मिली है कि सेठ साहब के बडे लडके शिवकुमार की पत्नी सुधा देवी का पत्र-व्यवहार सिद्धेश्वरी देवी से चल रहा है।

"वह कहा है ?" अनायास ही यह प्रश्न सिद्धेश्वरी के मुख से निकल गया।"

"यही तो मै आपसे जानने के लिए आया हू।"

"मेरे पास उसकी कोई सूचना नही है। जबसे मेरा विवाह हुआ है

की हुई थी। केवल तीन कमरे तीन प्राणियो के लिए दे रखे थे।

कारखाना घाटे मे जा रहा था। उसमे से चोरी तो हो ही रही थी। साथ ही 'रिसीवर' और उसके मित्रो के भी हाथ रगे जा रहे थे।

सिह का विचार इनसे मिलने तथा पता करने का हो गया।

एक दिन मध्याह्न के समय वह अपनी मोटर गाडी पर सवार हुआ और फरीदाबाद जा पहुचा।

वह शिवकुमार की कोठी पर पहुचा तो वह निर्जन पडी दिखाई दी। फाटक खुला था और बाजारू कुत्ते तथा गाय कम्पाउण्ड मे घूम रहे थे।

सिह भीतर गया तो कोठी का मुख्य द्वार खुला था। वहा घण्टी का बटन भी लगा था। उसने बटन दबाया तो एक प्रौढावस्था की स्त्री भीतर से निकली।

सिह ने हाथ जोड नमस्ते कही और पूछ लिया, "आप शिवकुमार जी की माता जी है ?"

"हा। आप कौन है और क्या काम है ?"

"मै सुधा बहन जी की सहेली सिद्धेश्वरी देवी का पति हू। मै शिव-कुमार के विषय मे जानने और बताने आया था।"

सुहागवन्ती ने कहा, "तो भीतर आ जाओ, बेटा।"

वह मिस्टर सिह को भीतर मोहन के कमरे मे ले गई। वहा बिठाकर उसने कहा, "अब इस कोठी मे केवल तीन कमरे हमारे रहने के लिए हमे मिले है। ड्राइग रूम हमारे प्रयोग मे नही है। इस कारण लडके के इस कमरे मे ही आपको बिठा सकती हू।"

"मोहन कहा है ?"

"वह यहा एक फैक्टरी मे क्लर्क का काम करने लगा है। तीन सौ रुपया महीना वेतन मिलता है। उससे ही हम चार प्राणी निर्वाह करते है। मोहन के पिता की सम्पत्ति मे से हमे कुछ नही मिल रहा।"

सिह ने बात बदलकर कहा, "कुछ दिन हुए, एक पुलिस इन्सपैक्टर मेरी पत्नी सिद्धेश्वरी देवी से शिवकुमार और सुधा देवी का पता जानने आया था। उसने कहा था कि सुधा जी ने अपनी सखी को एक पत्र पैरिस से लिखा है और वह पुलिस ने मार्ग मे ही पकड लिया है।

"इस कारण पुलिस को सन्देह हुआ है कि कदाचित् सिद्धेश्वरी को सुधा जी का पता ज्ञात हो।

"वह तो सिद्धेश्वरी जी बता नही सकी। उनको स्वय भी पता नही था।

"इससे मैने यह विचार किया था कि यदि आपको पता विदित हो और यदि आप बताए तो मै शिव की किसी प्रकार की सहायता करने का यत्न कर सकता हू।

"मेरे लिए विदेश आना-जाना भी सुगम है।"

"परन्तु बेटा। हम तो इतना भी नही जानते जितना तुम बता रहे हो।

"एक बात कहू?"

"हा, बताइए।"

"यदि कुछ करना ही है तो मोहन की सहायता कर इसे अपने पाव पर खडा करने का यत्न कर दीजिए।"

सिह इस आह्वान पर गम्भीर हो विचार करने लगा। उसे चुप देख सुहागवन्ती ने कह दिया, "हम बहुत कष्ट मे है। तीन सौ रुपये मे तीन-चार प्राणियो का रोटी-पानी तो चल जाता है, परन्तु रोटी-पानी के अतिरिक्त भी हमे बहुत कुछ चाहिए और मुकद्दमे मे तो अभी तक तन्कीह भी नही निकली।

"हम तो निर्मला को सब कुछ जो वह मागे, देने को तैयार है। परन्तु वह कह रही है कि जब तक वह रुपया जो सुधा परिवार का चुरा कर ले गई है, का हिसाब न मिल जाए तब तक कुछ भी लेन-देन की बात व्यर्थ है।

"इस प्रकार मुकद्दमा चल रहा है।"

"तो ऐसा करिए कि उसे कारखाने से बुला लीजिए। मैं उससे बात-चीत कर विचार कर सकता हू कि क्या किया जा सकता है।"

"यहा नही। मैं उसे आपके मकान पर दिल्ली भेज दूंगी।"

"तब तो और भी ठीक है। परन्तु वह कार्यालय से किस समय लौटता है?"

"पाच बजे छुट्टी होती हे और वह साढे पाच बजे तक घर पर आ जाता है।"

"इस समय चार बज रहे है। मै ठीक पौने छ बजे यहा आऊगा और उसे अपने साथ ही मोटर मे दिल्ली ले जाऊगा। साथ ही उसे रात यहा भेजने का प्रबन्ध कर दूगा।"

सुहागवन्ती मुख देखती रह गई। कमलेश कुमार उठा और यह कह कि वह डेढ-पौने दो घण्टे मे लौट आएगा। वह वहा से उठा 'हॉलीडे इन्न' मे चाय लेने तथा समय निकालने चला गया।

१०

मोहनकुमार दिल्ली से रात के दस बजे सिह की गाडी मे ही लौटा। उसकी मा और बहन उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। उसके आते ही मा ने पूछा, "क्या हुआ है ?"

"मिस्टर सिह लोक सभा के सदस्य है। उनको देखने से तो प्राय ससद सदस्यो से अधिक धनवान प्रतीत होते है। उन्होने मुझसे हमारे परिवार का इतिहास पूछा और फिर मुकद्दमे की आज तक की कार्यवाही जानी। तदनन्तर उन्होने यह कहा है कि मै यहा से नौकरी छोडकर उनके पास नित्य पहुच जाया करू। वे मेरे काम-धन्धे का प्रबन्ध करेगे।

"उनका अभिप्राय किसी प्रकार की नौकरी कराना नही, वरच किसी प्रकार का व्यापार कराने का विचार है।"

"और।" मा ने पूछ लिया, "काम चलने तक खाने-पीने का प्रबन्ध कहा से होगा ?"

"मैने उन्हे अपने घर की आर्थिक स्थिति के विषय मे कुछ नही बताया, परन्तु वह सब कुछ जानते प्रतीत होते थे। उन्होने कहा था कि जिस दिन से मै उनके यहा जाना आरम्भ करूगा उसी दिन से मेरे घर का और मेरे निजी व्यय का उत्तरदायित्व उनका हो जाएगा।"

इस कथन का अर्थ समझने के लिए मा पुत्र का मुख देखने लगी। इस

पर राज ने कह दिया, "मा। आखिर किसी पर तो विश्वास करना होगा। मुझे वह एक भला व्यक्ति प्रतीत होता है। सिद्धेश्वरी जी भाभी की सहेली है। यह भाभी ने एक दिन बताया था।"

इस पर मोहन ने एक बात और कह दी, "मा। वह कहते थे कि शराब पीने वालो से अत्यन्त घृणा करते है।"

"मैने बताया था कि मैं नही पीता। इस पर वह कहने लगे, तब तो ठीक है। शराब पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और जिसकी बुद्धि मलिन हुई उसका सर्वनाश निश्चित है।"

सुहागवन्ती ने एक ठण्डी आह भरी और चुपचाप मुख देखती रह गई। बात राज ने ही आगे चलाई। उसने भाई से पूछ लिया, "भैया, क्या विचार है ?"

"मा कहे तो मै कारखाने से पन्द्रह दिन की छुट्टी ले लेता हू और इनके पास चला जाता हू। पन्द्रह दिन मे पता चल जाएगा कि वह कैसे हमारी सहायता करता है।"

इस योजना पर मा ने साहस पकड कहा, "ठीक है। करो।"

अगले दिन आठ बजे के लगभग मोहन कुमार अपने मालिक के पास गया और बोला, "मुझे दिल्ली से एक काम का प्रस्ताव आया है। मैं वहा जा रहा हू। वह नया व्यक्ति है। भैया की जान-पहचान का है। इस कारण कह नही सकता कि वह किस प्रकार काम लेगा और क्या कुछ वेतन देगा। यदि आप मुझे पन्द्रह दिन की छुट्टी बिना वेतन के दे तो मै वहा भी अपनी किस्मत आजमाई करू ?"

मिस्टर खुराना को मोहन किसी प्रकार भी अनुकूल नही बैठ रहा था। उसे उसने सेठ लक्ष्मीचन्द के पुत्र की सहायतार्थ रखा हुआ था। इस कारण खुराना ने कह दिया, "नौ बजे कारखाने मे अपना काम अपने साथी के हवाले कर पन्द्रह दिन की छुट्टी पर जा सकते हो।"

इस प्रकार मोहनकुमार बारह बजे मिस्टर सिंह की कोठी पर पहुच गया। सवा एक बजे सिह ससद भवन से आया तो मोहन को कोठी के बरामदे मे खडा देखा तो उससे हाथ मिला पूछने लगा, "तो तुम आ गए हो ?"

"जी ।"

"अच्छा, इधर आओ ।" वह उसे अपने साथ कोठी के ड्राइग रूम मे ले गया ।

वहा सिद्धेश्वरी और विन्ध्येश्वरी बैठी बातचीत कर रही थी । सिह को मोहन के साथ आते देख दोनो स्त्रिया समझ गई कि मोहन से किसी प्रकार के काम का श्रीगणेश होने वाला है ।

रात मोहन के परिवार के वृत्तान्त और उनके मुकदमे का वृत्तान्त विन्ध्येश्वरी इत्यादि के सामने ही पता किया गया था । साथ ही मोहन को उसके परिवार के गुजर का आश्वासन भी उनके सामने ही दिया गया था । अत वह जानती थी कि मोहन किस कारण आया है ।

सिह ने नौकर को बुलाकर कह दिया, "मोहन के लिए भी मेज पर खाना लगेगा ।" अत मेज पर अधिक प्लेट लगा दी गई ।

सिह अपने कमरे मे गया और कपडे बदल भोजन के लिए आ गया । इस पर विन्ध्येश्वरी और सिद्धेश्वरी भी उठ पडी और बच्चे की नर्स भी आ गई । बच्चा सो रहा था । वह एक 'पिरैम्बूलेटर' मे लेटा हुआ था । नर्स 'पिरैम्बूलेटर' को धकेलती हुई डायनिंग हाल मे ले गई ।

मेज पर अब पाच व्यक्ति थे । नर्स पहले भी खाना-पीना परिवार के साथ करती थी ।

सिह ने बैठते ही मा को कहा, "मैंने एक ऐसा धधा मोहन के लिए ढूढा है जो बहुत कम पूजी से आरम्भ किया जा सकता है ।

"मैने उस काम के एक जानकार को साय पाच बजे बुलाया है और हम उसकी सम्मति से योजना बनाएगे । मेरी उस जानकार से टेलीफोन पर बातचीत हो चुकी है ।"

"और क्या काम करने वाले हो ?"

"इलैक्ट्रोनिक्स का ।"

"और जो बात मैने कल रात कही थी ।"

"उसका प्रबन्ध अब कर दूगा । अभी तक तो मै विचार कर रहा था कि मोहन मुझ पर विश्वास कर आएगा भी अथवा नही ।"

"ठीक है, करो । परमात्मा तुम्हारी सहायता करेगा ।"

इस पर सिद्धेश्वरी ने कह दिया, "मै आज दस महीने उपरान्त अपने कालेज मे गई थी और सुमन बहन जी से अपने पठन का विषय और उस पर पुस्तको की एक सूची तैयार कर आई हू। उसने एक बात कही है कि किसी भी विषय पर कार्य तब तक नही हो सकता जब तक विषय की भाषा का ज्ञान न हो।

"उसने मुझे भारत के प्राचीन इतिहास मे विवाह प्रथा पर स्वाध्याय करने की सम्मति दी है और उसका विचार है कि मुझे सस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।"

"तो अब देवी जी सस्कृत पढेगी ?"

"सुमन बहन ने स्वय ही पढाने का प्रस्ताव किया है। वे सप्ताह मे दो दिन यहा आकर पढा जाया करेगी।"

"ओह ! और क्या 'ट्यूशन फी' लेगी ?"

"मैने पूछा नही। उन्होने बताया नही । एक बात कही है कि उनके लाने और भेजने का प्रबन्ध मुझे अपनी गाडी मे करना होगा। उनकी अपनी गाडी दुकान के काम पर रहती है।"

"मैं समझता हू कि मुझे अब एक अन्य गाडी रखनी चाहिए। मेरा परिवार वृद्धि पा रहा है।"

"हा।" मा ने कह दिया, "हमको भी कभी बाजार मे जाना होता है तो तुम्हारे घर लौटने की प्रतीक्षा करनी पडती है। अन्यथा यहा की मार्केट पर सन्तोष करना पडता है।"

"सुमन और वीरेन्द्र तुम्हारे और तुम्हारी बूआ का बहुत मान करते प्रतीत होते है।"

"भाग्य की बात है। मैं कालेज मे बडी आयु की प्राध्यापिकाओ की हसी उडाती-उडाती आज उनकी कृपा की पात्रा बन गई हू। बूआ भी वहा बहुत सुखी और काम अपनी प्रकृति के अनुकूल पा अति प्रसन्न है।"

भोजन के उपरान्त सिह मोहन को लेकर अपने 'स्टडी रूम' मे चला गया। वहा उसे अपने सामने बैठा सिह ने कहा, "मैं एक सामान्य पूजी, जो सरकार देहातो की सहकारी समितियो को ऋण मे देती रहती है, से एक कारखाना निर्माण करना चाहता हू और दस वर्ष मे यह कारखाना

एक-दो करोड की पूजी वाला हो जाएगा। तुम मुझ पर विश्वास रखोगे तो हम काम मे सफल होगे।"

इसके उपरान्त उसने मोहन को कनाट प्लेस मे भिन्न-भिन्न दुकानो पर रेडियो और उनके सम्बन्धी सब यन्त्रो की सूचिया इकट्ठा करने के लिए भेज दिया। उसे दस रुपये का नोट दिया और कहा, "स्कूटर पर जाओ और स्कूटर पर लौट आओ। तुम्हे यहा छः बजे तक आ जाना चाहिए।"

"रात की आठ बजे की गाडी से मै तुम्हे वापस फरीदाबाद भेजने का प्रबन्ध कर दूगा।"

जब मोहन गया तो उसने कोठी के चौकीदार को दो सौ रुपया देकर फरीदाबाद भेज दिया और सामान की एक सूची दे दी। एक सौ रुपये का रसद-पानी और सौ रुपया नकद सुहागवन्ती को देने के लिए कह दिया।

छ बजे तक मोहन लौटा तो सिंह ने अपने 'स्टडी रूम' मे बुला लिया। वहा वह एक अन्य व्यक्ति से बातचीत कर रहा था।

यह व्यक्ति जानकीनाथ एक पजाबी युवक था जो बैगलोर से इलैक्ट्रोनिक्स का प्रशिक्षण ग्रहण कर आया था।

तीनो ने बैठकर निश्चय किया। इलैक्ट्रोनिक्स के पाच प्रकार के यन्त्र बनाने की योजना बना ली गई।

उस टैकनीकल शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जानकीनाथ से कहा गया कि वह इन पाचो यन्त्रो के 'ब्ल्यू प्रिट्स' तैयार करे। तदनन्तर वे 'ब्ल्यू प्रिट्स' सरकारी उद्योग विभाग से स्वीकार करवाए जाएगे और फिर उनके बनाने का और बेचने का प्रबन्ध किया जाएगा।

साढे सात बजे तक बातचीत होती रही और तुरन्त सिंह ने अपने ड्राइवर से दोनो को अपनी मोटर गाडी मे, एक को निजामुद्दीन स्टेशन पर और दूसरे को दरियागज मे छोडने के लिए भेज दिया।

मोहन को फरीदबाद पहुचकर पता चला कि एक महीने भर का राशन और एक सौ रुपया फुटकर व्यय के लिए सिह का चपरासी दे गया है। साथ ही वह कह गया है कि वह पन्द्रह दिन के उपरान्त फिर आएगा और उनकी आवश्यकताए जान जाएगा। यदि बीच मे किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ी तो मोहन के हाथ लिख भेजे।

चतुर्थ परिच्छेद

१

सन् १९७१ आ गया था। भारत मे राजनीतिक दृष्टि से क्रान्ति हो गई थी। काग्रेस के वे नेता जो स्वराज्य के पूर्व काल से सस्था पर और स्वराज्योत्तर काल मे देश के शासन पर एकाधिकार जमाये हुए थे, निकाल काग्रेस से बाहर कर दिए गए।

अन्य क्रान्तियो की भाति इस क्रान्ति मे भी अनियमित व्यवहार अपनाया गया। क्रान्ति कहते ही उसको है जो नियमबद्ध न हो। नियम के पालन करने वाले नियम, कायदे, कानून की दुहाई देते रहे, परन्तु क्रान्ति लाने वाले अपना 'स्टीम रोलर' चलाते रहे।

एकाएक प्रधान मन्त्री ने लोक सभा भग कर दी और एक वर्ष पूर्व ही लोक सभा के निर्वाचन कराने का निश्चय कर दिया।

कमलेश कुमार सिंह अपने को इन चुनावो के लिए तबसे ही तैयार कर रहा था जब से प्रधान मन्त्री ने अपने विचार के विरोधी काग्रेसियो को चुन-चुनकर काग्रेस से बाहर करना आरम्भ किया था। यह काम सन् १९६९ के अन्त मे आरम्भ हुआ था और तबसे कमलेश कुमार सिंह अपने निर्वाचन क्षेत्र के तीन दौरे लगा चुका था। यह वहा पर एक वर्ष मे एक सौ से अधिक सभाए कर चुका था।

अत जब यह घोषणा की गई तो मिस्टर सिंह प्रसन्न वदन दृढ सकल्प हो घर पहुचा।

सिद्धेश्वरी इस समय पुन गर्भ धारण कर चुकी थी, परन्तु उसका इतिहास का अध्ययन चल रहा था और वह इस विषय पर एक शोध लेख

लिख रही थी। विषय था कि रामायण का काल कब था ?

इस दिन वह अपने अध्ययन कक्ष मे बैठी पढ और लिख रही थी कि सिह वहा पहुचा और बोला, "सिद्धेश्वरी देवी। हमारे युद्धारम्भ की घोषणा हो गई है।"

सिद्धेश्वरी चिन्ता मे पति का मुख देखने लगी थी। उस समय कुछ चर्चा थी कि पाकिस्तान भारत पर आक्रमण की पुनः तैयारी कर रहा है। इस कारण उसने समझा था कि दोनो पडौसी देशो मे युद्धारम्भ हो गया है।

पत्नी के मुख पर चिन्ता की रेखाए देख मिस्टर सिह ने कह दिया, "लोक सभा भग हो गई है और नये निर्वाचन फरवरी मास मे होगे।"

सिद्धेश्वरी ने सुख का सास लेते हुए कहा, "कठिनाई मेरे लिए होगी कि मै आपके निर्वाचनो मे आपका सहयोग नही दे सकूगी।"

"पर तुम निर्वाचनो मे मुझे विजयी कराने से अधिक महिमा युक्त काम कर रही हो।"

"यह ठीक हो सकता है, परन्तु आपने तो विवाह ही निर्वाचनो मे एक स्त्री सहायक पाने के लिए किया था।"

"हा, यह तो था। परन्तु देवी जी, आप मुझसे अधिक चतुर सिद्ध हुई है। आपने ऐसा कार्य आरम्भ कर दिया है कि मै आपको निर्वाचनो मे चलने के लिए कह ही नही सकता।"

विन्ध्येश्वरी ने रात के खाने के समय कहा, "कमलेश! राजनीति को छोड नही सकते क्या ?"

"छोड तो सकता हू, मा। परन्तु विजय प्राप्त करने के उपरान्त बिना विजय प्राप्त किए मैदान छोड जाना तो क्षत्रियो का काम नही।"

"मै तो इस कारण कह रही हू कि अब तुमने इलैक्ट्रोनिक्स का कारखाना खोल रखा है। मै समझती हू कि एक व्यापारी की राजनीति मे गति नही होनी चाहिए।"

मिस्टर सिंह गम्भीर भाव मे विचार करने लगा। कुछ देर तक मौन रह वह बोला, "मा, मै ससद मे अब रुचि नही रखता। इस पर भी मै समझता हू कि यदि इस बार निर्वाचन न लडा गया तो काग्रेसी समझेंगे कि इन्दिरा गाधी के 'स्टीम रोलर' से भयभीत मै पहले ही मैदान छोड

गया हू। यह विचार अपने विषय मे मुझे स्वीकार नही।

"हा। मै निर्वाचित हो जाने पर भी लोक सभा मे शपथ ग्रहण करने नही जाऊगा।"

मा चुप रही। परन्तु रात सिद्धेश्वरी ने पुन इसी विषय पर कहा, "जब लोक सभा मे जाना ही नही, उसमे आपने शपथ ग्रहण तक नही करनी तो फिर लाखो रुपये की आहुति उसमे किस लिए की जा रही है?"

"मुझे इसमे रस आता है। देखो देवी जी, मेरे रक्त मैं यह है कि मैं मैदान छोड भागने वालो मे अपना नाम लिखाना नही चाहता।"

"परन्तु इन दो महीनो मे कारखाने का काम कैसे चलेगा? मोहन उत्पादन कार्य मे सिद्ध होता जाता है और आप इसमे बिक्री विभाग को चला रहे है।"

"चिन्ता नही करो, देवी जी। मेरे कारखाने मे कार्य न करने से इतनी हानि नही होगी जितना कुछ मै निर्वाचनो मे व्यय करने वाला हू।"

सिद्धेश्वरी क्षत्रिय हठ को स्मरण कर चुप कर रही और अगले ही दिन सिंह बिहार मे अपने क्षेत्र मे जाने को तैयार हो गया।

कारखाना मथुरा रोड पर एक अन्य कारखाने की बिल्डिग मे खोला गया था। पहले वहा यन्त्रो के भिन्न-भिन्न भाग भिन्न-भिन्न कारखानो से मगवाकर उनको जोडने का काम होता था, परन्तु तीन वर्ष मे कुछ भाग कारखाने मे भी बनाए जाने लगे थे। उन भागो को ये यन्त्रो से पृथक भी बेचते थे।

पूर्ण काम बीस सहस्र की लागत से आरम्भ किया गया था और अब इसकी पूजी तीन लाख रुपया हो गई थी।

अभी तक इनको पाच प्रकार के यन्त्र बनाने का सरकारी लायसैंस मिला था। इनमे से तीन प्रकार के तो रेडियो रिसीविंग सैट थे और दो प्रकार की 'इलैक्ट्रोनिक्स टैस्टिग मशीन' थी। इनमे बहुत ही ठीक ढग से बने हुए कल पुर्ज़ो की पैमाइश की जाती थी।

अधिक बिक्री इन पुर्जो को नापने के यन्त्रो की ही थी।

मोहन के घर का पूर्ण खर्चा दो वर्ष तक सिह अपनी जेब से देता रहा था। तीसरे वर्ष के हानि-लाभ का चिट्ठा बनाने के समय पाच सहस्र रुपया मोहन को लाभ का दिया गया था।

शिवकुमार का पता नही चला था कि वह कहा है। अब तक सब-जज ने यह निर्णय दे दिया था कि लक्ष्मीचन्द की सम्पत्ति मे शिवकुमार को भाग नही दिया जाएगा। वह पहले ही अपने भाग से अधिक चुरा कर भाग गया है। कारखाना बन्द था और उसकी मशीनरी इत्यादि का मूल्य तीन लाख रुपया लगाया गया था। शेष सम्पत्ति डेढ लाख की कूती गई थी। सब मिल-मिलाकर कारखाना दोनो बहनो को मिल गया और शेष सम्पत्ति मोहनकुमार को मिल गई।

सुहागवन्ती का विचार था कि राज की ओर से सैशन कोर्ट मे अपील की जाए, परन्तु सिह इसे पसन्द नही करता था। इस पर भी उसने एक अपील बनवाकर दायर करा दी। यह केवल समय प्राप्त करने के लिए थी।

निर्मला के पति शान्ति स्वरूप ने अपनी सास (निर्मला की मा) के पास यह प्रस्ताव भेज दिया कि राज का भी विवाह उसके छोटे भाई से कर दिया जाए। इससे कारखाना चालू हो सकेगा और दोनो भाई इसे चला सकेंगे।

परन्तु सिंह का विचार था कि मुकद्दमा अभी निर्वाचनो तक चलना चाहिए। पीछे वह इस विषय पर सम्मति करेगा।

राज का अपील मे यह कहना था कि उसे तो सम्पत्ति मे अपना भाग मिलना चाहिए। कारखाना उसकी बहन तथा भाई मोहन को मिले। सैशन कोर्ट मे पहली सुनवाई ही मार्च की बीस तारीख को पडी और सिंह का विचार था कि वह तब तक राजनीतिक कार्य से मुक्त हो जाएगा।

जब निर्वाचन जोरो पर था तो काग्रेस की ओर से प्रस्ताव आया कि यदि मिस्टर सिंह अपने को निर्वाचनो से बाहर कर ले तो उसे स्विट्जर-लैण्ड मे राजदूत बनाकर भेजा जा सकता है।

इस प्रस्ताव को लेकर बिहार काग्रेस के एक प्रमुख नेता आए थे। सिंह का यह कहना था कि यदि काग्रेस का प्रत्याशी निर्वाचन से अपना

नाम वापस ले ले तो निर्वाचन मे विजयी घोषित हो जाने के उपरान्त वह लोक सभा से त्याग-पत्र दे देगा। पीछे कांग्रेस पुन अपना प्रत्याशी खडा करेगी तो वह निर्विरोध जीत जाएगा।

कांग्रेस के प्रधान को यह कथन छलना समझ आया। वह कभी यह समझ ही नही सकता था कि लाखो रुपये व्यय कर निर्वाचन मे विजयी हुआ व्यक्ति क्यो त्याग-पत्र देगा ?

अत कांग्रेस ने अपनी पूर्ण शक्ति मुघेर जिला के क्षेत्र मे लगा दी।

ज्यो-त्यो कर निर्वाचन समाप्त हुए। इस क्षेत्र से इस बार पुन कमलेश कुमार सिह विजयी हुआ। इस बार इस क्षेत्र मे सात प्रत्याशी थे। उनमे से पाच की जमानत जब्त हुई और दूसरे दर्जा पर कांग्रेस का प्रत्याशी था। सिंह इस बार भी विजयी तो हुआ, परन्तु उतने अधिक मतो से नही जितने अधिक मतो से सन् १९६७ मे विजयी हुआ था।

इस पर भी सिंह की विजय पर महोत्सव मनाया गया और तीन दिन के जशन के उपरान्त जिस दिन इसे लोक सभा मे उपस्थित होने का निमन्त्रण आया उसने त्याग-पत्र लिखकर भेज दिया।

उसने स्पष्ट शब्दो मे यह लिखा कि मै अपने क्षेत्र के मतदाताओ का धन्यवाद करता हू कि उन्होने मुझे अपना मत दिया, परन्तु देशमे सामूहिक रूप से प्रगति की दिशा ऐसी है कि उसमे मेरे विचार का एक व्यक्ति जाकर किसी प्रकार का भी कल्याण नही कर सकेगा। इस कारण वह इस सभा मे जाकर, जहा अपने समय और शक्ति का अपव्यय मानता है वहा अपने क्षेत्र के लोगो के अनेको के मत को व्यक्त न कर सकने पर उनके साथ भी अन्याय करेगा।

अत वह अपने निर्वाचित पद से त्याग-पत्र देता है। उसने अपना पत्र स्पीकर लोक सभा को भेजा और उसे समाचार-पत्रो मे प्रकाशित करवा दिया।

यह त्याग-पत्र दिल्ली मे पहुचकर दिया गया था। उसकी मा और पत्नी ने उसके इस निश्चय पर प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु उस क्षेत्र के प्रमुख मतदाताओ ने इस पर रोष प्रकट किया।

कमलेश कुमार सिह ने सबको व्यक्तिगत पत्र लिखे। उन पत्रो मे

उसने उनका धन्यवाद लिखा और कहा, "पिछले पन्द्रह वर्ष तक मै आपसे प्रकट किए मुझ पर विश्वास का अपनी सामर्थ्यानुसार पालन करता रहा हू, परन्तु देश कोल्हू के बैल की भाति कोल्हू के घेरे मे ही चल रहा है। यह कोल्हू का चक्कर अग्रेजी सरकार के काल से आरम्भ हुआ था और आज एक सौ चालीस वर्ष व्यतीत होने पर भी देश उसी जुए मे अपनी गर्दन दिए एक ही स्थान पर चक्कर काट रहा है।

"देश समझ रहा है कि वह उन्नति कर रहा है। कोल्हू मे तेल दिन-प्रतिदिन अधिक और अधिक तैयार हो रहा है। मेरा अभिप्राय है कि औद्योगिक प्रगति हो रही है और इसे हम देशवासी कोल्हू मे जुते हुए बैलो को प्रगति कर रहे समझ रहे है।

"मैने पिछले पन्द्रह वर्ष तक बैल की आखो पर बधी पट्टी को खोल इसे यह बताने का यत्न किया है कि कोल्हू मे उत्पादन अधिक होने पर भी तुम तो वही के वही खडे हो। आर्थिक, बौद्धिक और सास्कृतिक विचार से तुम एक इच भर भी आगे नही बढे। परन्तु सन् १९७१ के निर्वाचनो ने यह सिद्ध कर दिया है कि बैल यह समझ रहा है कि उसने सन् १९४७ के उपरान्त बहुत उन्नति की है। वह बन्द आखो से कोल्हू मे पीडे जाने वाले तेल की सुगन्धि से अनुमान लगा रहा है कि वह अपनी जीवन यात्रा मे प्रगति कर रहा है।

"मै समझा हू कि देश की जनता का जो कोल्हू मे बैल का काम कर रही है, कल्याण ससद के द्वारा सम्भव नही। इस कारण मै इसे छोड रहा हू और आपको अपना नव प्रतिनिधि मुझसे अधिक योग्य यहा भेजना चाहिए जो आपको इस ससद द्वारा प्रगति की ओर ले जाने मे योग्य हो सके। मै तो इस उपाय से निराश हो अब अपने शक्ति का व्यय एक अन्य ढग से आपकी सेवा मे प्रयोग करने का यत्न करना चाहता हू।"

इस पत्र से कितनो को कुछ समझ आया, कहना कठिन था। कदाचित् किसी को भी समझ नही आया। उसी क्षेत्र मे से तीन मास उपरान्त काग्रेसी प्रत्याशी अपने सब प्रतिद्वद्वियो की जमानते जब्त करा सफल हुआ।

२

उसके पुराने लोक सभा के सहयोगी भी उसकी इस कार्यवाही पर विस्मय करते थे। एक श्री रघुनाथन आयगर जो मद्रास के किसी निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय रूप मे पुनः विजयी होकर आया था, मिस्टर सिंह से मिलने आया और उसके त्याग-पत्र पर विस्मय प्रकट करते हुए कहने लगा, "मिस्टर सिंह, मैदान छोडकर भाग गए हो। तुम तो अपने को क्षत्रिय कहा करते थे ?"

"वह तो मै हू। परन्तु एक दयालु क्षत्रिय की भाति जीते हुए साम्राज्य को दान मे दे रहा हू।"

"यह सब वागाडम्बर है। हम निर्दलीय भी देश की एक आवश्यकता की पूर्ति कर रहे थे। तुम उस कर्तव्य से भाग गए हो।"

"मिस्टर आयगर। ऐसा नही। मैंने अपना कार्य क्षेत्र बदल दिया है। मुझे विश्वास हो गया है कि प्रजातन्त्रात्मक पद्धति प्रजा की जडता को दूर करने मे असमर्थ सिद्ध हुई है। मै इसकी बीमारी का दूसरा इलाज करना चाहता हू।"

"तुम भूल कर रहे हो। पुराने परीक्षित उपाय को छोड नये उपायो की खोज मे तो और भी लक्ष्य से भटक जाओगे।"

प्राय मिस्टर सिंह के परिचित उसे एक फटे मस्तिष्क वाला 'क्रैक्ड ब्रेन' समझते थे। परन्तु घर मे मा और पत्नी अति प्रसन्न थे।

जब लक्ष्मीचन्द के परिवार के झगडे की सैशन कोर्ट से पेशी समीप आई तो उसने एक दिन मोहन को कहा, "मै समझता हू कि कारखाने की नीलामी हो जानी चाहिए। उससे जो कुछ भी प्राप्त हो, आधा-आधा दोनो बहने ले ले। यद्यपि इससे हानि होगी, परन्तु झगडा समाप्त होगा तो पुन उन्नति के लिए मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।"

परन्तु मिस्टर सिह अवाक् बैठा रह गया जब मोहन ने उसके निर्वाचनो मे व्यस्त रहने के दिनो मे बदली परिस्थिति का वर्णन किया। मोहन ने बताया, "भापा, राज की सगाई शान्ति स्वरूप के छोटे भाई ज्योति स्वरूप से हो गई है और विवाह बीस मार्च से पहले ही सम्पन्न होने वाला

है। तब राज अपनी अपील की याचिका वापस ले लेगी और कारखाना दोनो बहने चलायेगी।"

मिस्टर सिह कुछ क्षण तक विस्मय मे मुख देखता रहा और फिर खिलखिलाकर हस पडा।

मोहन इस हसी का कारण नही समझा और विस्मय मे मिस्टर सिह का मुख देखता रह गया।

दिल खोलकर हसने के उपरान्त सिह ने मोहन से पूछा, "और तुम इससे प्रसन्न हो?"

"भापा, एक दिन ज्योति स्वरूप घर पर आया था और मा की अनुपस्थिति मे राज से एक घण्टा भर बातचीत कर यह सब कुछ निश्चय कर गया। तदोपरान्त दोनो ने मा से मिलकर कहा कि पारिवारिक झगडे का इससे अच्छा हल अन्य हो ही नही सकता। मा दोनो को प्रसन्न देख मान गई।

"और भापा। अब तुम निर्वाचनो और लोक सभा के काम से छुट्टी पा गए हो। इस कारण मा कह रही थी कि वह एक दिन आयेगी और विवाह की तैयारी मे आप सबको सहयोग के लिए कहेगी।"

कमलेश सिह ने गम्भीर हो कहा, "ठीक है। मै सब प्रकार से सहयोग दूगा।"

सिह का एक परिचित ससद सदस्य जो इस बार निर्वाचन लडा ही नही था, स्विट्जरलैड भ्रमण से लौटा तो वहा एक हिन्दुस्तानी की हत्या का वृत्तान्त सुनाने लगा।

उसने बताया, "मै जनेवा मे था कि होटल के मैनेजर ने मुझ कहा कि एक हिन्दुस्तानी स्त्री मुझसे मिलना चाहती है। मैने उससे मिलना स्वीकार किया तो वह मुझे मिलने मेरे कमरे मे आ गई।

"स्त्री का नाम सुधा रानी है। वह फरीदाबाद के एक उद्योगपति की पुतोहू हे। उसका पति अपने पिता का बहुत-सा धन और उसे लेकर विदेश भाग गया था। वहा जाकर उसे एक पैरिस का रहने वाला मिस्टर के० टार्ड्यू मिल गया और उसने उसके पति से मिलकर वहा एक होटल ठेके पर ले लिया था। कुछ देर तक तो काम बहुत भली भाति चलता

रहा, परन्तु पीछे मिस्टर टार्ड्यू उस स्त्री को मिस्ट्रेस बनाने का यत्न करने लगा तो उसके पति से झगडा हो गया और दोनो मे एक दिन द्वद्व युद्ध हुआ। उस स्त्री का पति मारा गया। टार्ड्यू होटल की बहुत-सी पूजी लेकर भाग गया है। यह पूजी अधिकाश उस धन का भाग थी जो उस स्त्री का पति पिता की सम्पत्ति मे से चुरा कर भागा था।

"वह स्त्री उसी होटल को चला रही थी जिसमे ठहरा हुआ था और मेरा पता तथा नाम और यह विशेषण कि मै एक पहले का संसद सदस्य हू, मुझसे मिलने चली आई थी।

"अपना पूर्ण वृत्तान्त बता वह पूछने लगी, 'क्या आप किसी मिस्टर के० के० सिह ससद सदस्य को जानते है ?"

'मैने बताया, 'बहुत अच्छी प्रकार जानता हू।'

'तो आप जब भारत मे जाइएगा तो मेरा यह पता उन्हे बता दीजिएगा। मै यहा श्रीमती फ्रैसिस मूडी के नाम से इस होटलकी मालिक समझी जाती हू।'

"उसने यह भी बताया, 'मिस्टर टार्ड्यू के बहुव-सी पूजी लेकर भाग जाने से मुझे इस व्यवसाय के चलाने मे कठिनाई अनुभव होने लगी है। यदि मिस्टर सिह मेरी कुछ सहायता करना स्वीकार करे तो मै बहुत आभारी रहूगी।'

"मैने पूछा था कि उसका आपसे क्या सम्बन्ध है तो उसने बताया, 'मिस्टर सिह की पत्नी मेरी सहेली है और हम एक ही कालेज मे 'कॉलीग' थी।' "

मिस्टर सिह यह कथा सुन प्रसन्न नही था। उसी रात भोजन के समय उसने यह कहानी सिद्धेश्वरी को सुनाई तो वह हस पडी। हसकर बोली, "आप सत्य कहते है कि ससार के प्राय प्राणी कोल्हू के बैल की भाति जन्म के उपरान्त जन्म मे ससार रूपी कोल्हू चलाते है। वे समझते है कि वे प्रगति कर रहे है, परन्तु आदि सृष्टि से आज तक मानव वहा का वहा ही खडा खून-पसीना एक कर रहा है जहा उस आदि काल मे था।"

सुहागवन्ती पति-पत्नी मे हो रहे वार्त्तालाप को सुन रही थी। उसने कह दिया, "परन्तु इस कोल्हू के जुए से छूटने का एक ही उपाय है। वह है

इस ससार से निस्पृहता, निराशीर्यता और निष्काम भाव से कर्म करना।

'यहा अपने को ईश्वराधीन छोड उसकी कृपा का पात्र बनना है। बिना उसकी कृपा के कुछ हो नही सकता।

"मनुष्य प्रकृति के गुणो से सम्मोहित वासना रूपी जुए मे बधा हुआ जन्म-मरण के चक्कर मे घूमता रहता है। इससे छूटने का उपाय एक ही है।

"भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा है—

पुरुष प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारण गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु॥

○○○